सम्पादकीय

सृजनात्मक साहित्य में कल्पना का महत्त्व सर्वविदित है। कल्पना दृश्य का आकार ग्रहण करती है। आकार फिर शब्दों का रूप ग्रहण करता है। शब्द पुनः एक दृश्य उपस्थित करते हैं। अन्य विधाओं की अपेक्षा शब्द और दृश्य अभिनय के माध्यम से जब साकार होते हैं तभी नाटक आकार लेता है। नाटक, जिसे पंचमवेद कहा गया है। जिसकी उत्पत्ति वेदों की ऋचाओं और संवाद सूक्तों से हुई है। ऋग्वेद में लगभग 15 सूत्र् ऐसे हैं जिनमें संवाद का तत्त्व पाया जाता है। इन्द्र-मरुत संवाद, विश्वामित्र्-नन्दी संवाद, पुरूरवस्-उर्वशी, यम-यमी संवाद आदि। यह संवाद, सूक्त नाट्य कला के प्रारम्भ कहे जा सकते हैं। इन संवाद सूक्तों में नाटकीय कथोपकथन के गुण विद्यमान हैं। अतः हम वैदिक संवादों को नाटक का आदि रूप मान सकते हैं।

नाटक के उद्भव को सदा से ही वैदिक कर्मकाण्ड में नाटकीय तत्त्वों के माध्यम से ही खोजने का प्रयत्न रहा है। जब हम तत्त्वों को तलाशने लगते हैं तो उनकी सूक्ष्मता की तुलना लघु-नाटक से स्वतः हो जाती है। नाटक के आदि स्रोतों का धार्मिक अनुष्ठानों से जुडा होना सर्वविदित है। किन्तु वे अनुष्ठान स्वयं में नाटक नहीं थे। नाटक, अनुष्ठानों का ऋणी अवश्य है, किन्तु एकांकी से कोई विशिष्ट सम्बन्ध की कल्पना इनसे नहीं की जा सकती। नाटक ने प्राण चाहे वेदों से भले ही पाये हों, किन्तु शरीर पुराणों से पाया है। हमारे 'लीला नाटकों' का इसमें बहुत योगदान रहा है। यद्यपि लीला नाटकों में केन्द्रीय चरित्र् को आम आदमी के अनुरूप प्रस्तुत करने का प्रयास रहा है, किन्तु साथ ही साथ इनमें ऐसे प्रसंगों को भी बहुतायत से जोड लिया गया है जो लोकानुरंजन रहे हैं। उदाहरण के लिए हम रामलीला को ही लें तो 'लक्ष्मण-परशुराम' संवाद या 'राम केवट संवाद' जैसे प्रसंग स्वतन्त्र् रूप से प्रस्तुत होते रहे हैं। अपने स्वतंत्र् रूप में वे लघु नाटक या एकांकी के रूप समझे जा सकते हैं। किन्तु काल, स्वरूप और प्रासंगिकता में वे एकांकी की कोई पूर्व पीठिका का निर्माण नहीं करते हैं।

जहाँ तक एकांकी नाटकों का प्रश्न है, इसकी कोई शास्त्रीय-संगत निर्दिष्ट सीमा नहीं मिलती। नाट्य-विधा में अंक शब्द का प्रयोग और अर्थ मनमाने ढंग से हुआ है। नाट्य-शास्त्र् के 36 अध्यायों और हजारों श्लोकों में नाट्य-पक्ष पर विस्तृत विवेचना तो उपलब्ध है, किन्तु अंक के आधार पर नाटक के वर्गीकरण की कहीं चर्चा नहीं है।

नाट्य-शास्त्र् के प्रख्यात अध्येता डा. ब्रजवल्लभ मिश्र भी एकांकी की अवधारणा को नाट्य-शास्त्र् प्रणीत नहीं मानते हैं। वे रूपक को 'अंक' का समानार्थी मानने से सहमत नहीं हैं। धनञ्जय के 'दस रूपक' के आधार पर व्यायोगादि सत्रह रूपों की विशिष्टताओं में भी अंक की चर्चा नहीं है।

अतः कहा जा सकता है कि एकांकी का उद्भव शास्त्रीय सिद्ध नहीं है। नाटककारों, आलोचकों और विद्वानों ने इसे अलग-अलग तरीके से परिभाषित करने का प्रयत्न किया है।

डा. रामकुमार वर्मा का मानना था कि एकांकी में एक घटना होती है और वह नाटकीय कौशल से ही कौतुहल का संचय करते हुये चरम सीमा तक पहुँचती है। उसमें कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता। एकांकी की विशेषता के बारे में डा. सत्येन्द्र ने कहा था, "एकांकी में कथानक का रूप तब सामने आता है जब अधिक से अधिक घटना बीत चुकी होती है। एकांकी स्वतंत्र् टैक्निक वाला साहित्य का एक भेद है। सेठ गोविन्द दास 'एक मूल विचार' को एकांकी का आवश्यक तत्त्व मानते हैं।

प्रसिद्ध नाटककार उपेन्द्रनाथ अश्क ने एकांकी के लिए कहा है कि "एक एकांकी में संगीत स्पष्ट, कार्यगति क्षिप्र, अभिनय सुन्दर, संवाद चुस्त और चुटीले, चरित्र् चित्रण यथार्थ और मनोवैज्ञानिक और अवसर के अनुसार प्रकाश या छाया का प्रयोग होना चाहिये।"

नाट्य विधान की दृष्टि से नाटक की तरह एकांकी में भी उद्घाटन विकास चरमोत्कर्ष और अन्त का होना आवश्यक है। इसके साथ ही एकांकी का सबसे बडा गुण माना गया है 'संकलन-त्रय' अर्थात् समय, स्थान और कार्यगति की एकता। किन्तु आज का नाटक संकलन त्रय की सीमाओं से काफी आगे बढ गया है। नये-नये प्रयोगों ने नाट्य प्रस्तुति की सभी सीमाओं को तोड दिया है। एकांकी शब्द अब नाटक का 'विशेषण' बन कर रह गया है। एकांकी के स्थान पर अब लघु-नाटक शब्द प्रचलन में आ गया है।

जहाँ तक एकांकी की उत्पत्ति या प्रचलन में आने का प्रश्न है तो संस्कृत नाटकों में 'पूर्व-रंग' मंचन की शैली प्रचलित थी। नाटक प्रारंभ होने से पहले 'नट-नटी' या 'सूत्रधार' मंच पर आते थे और नाटक के विषय में दर्शकों से बात करते थे। हास-परिहास होता था। लंबी अवधि के नाटकों की तुलना में यह नाट्य-परिचय एक अंक का (छोटा) होता था। नाटक के मूल कथ्य से इसका संबंध नहीं होता था। कालान्तर में यही प्रथा लोकनाट्यों और पारसी रंगमंच के साथ भी जुड गई। लंबी अवधि के नाटकों के मध्य अतिरंजना से दर्शकों को राहत दिलाने के लिए एक अंक के छोटे-छोटे प्रहसनों को दिखाया जाता था, जिनका नाटक के मूल कथ्य से कोई संबंध नहीं होता था। इसी प्रकार यूरोप में व्यावसायिक रंगमंच में नाटकों की अवधि बढाने के लिए 'आफ्टर पीसेज' जोडने की प्रथा प्रचलित थी। शनैः-शनैः इस प्रथा ने अपना स्वतंत्र् अस्तित्व बना लिया।

इसके अस्तित्व में आने का एक महत्त्वपूर्ण कारण और भी था। एकांकी के शोधकर्त्ता डॉ. रामचरण महेन्द्र का मानना था कि "महासमर के बाद रोजी-रोटी की तलाश ने व्यक्ति को अधिक व्यस्त कर दिया। साथ ही प्रतिस्पर्धा, अशान्ति, अनिश्चतता, द्वंद्व आदि के भंवरजाल में फँसे व्यक्ति के पास मनोरंजन के लिए अधिक समय ही नहीं रहा। अतः ऐसे साहित्य की आवश्यकता अनुभव की गई जो कम से कम समय में अधिक से अधिक मनोरंजन कर सके।

अतः महाकाव्यों ने खण्डकाव्यों, कहानी ने लघु-कथा और पूर्णांकी नाटकों ने लघु-नाटक (एकांकी) को जन्म दिया।'' सभी क्षेत्रें में हुई खोज व शोध ने आधुनिक संवेदना को जन्म दिया। यूरोप में यह काल नाटक की प्रयोगधर्मी शैली का आदिकाल था। लंबी अवधि के नाटकों के स्थान पर लघुनाटकों का उद्भव हो रहा था। अतः एकांकी की यूरोपीय शैली के प्रभाव ने हमारे नाटककारों को भी प्रभावित किया।

विद्वानों ने हिन्दी नाट्य साहित्य का आरम्भ 1843 से 1866 ई. माना है। यह काल भारतेन्दु काल के नाम से जाना जाता है। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि हिन्दी नाटक की रंगमंचीय नाट्य परम्परा अभिनय और नाटक की कृति का साहित्यिक महत्त्व भारतेन्दु युग की ही देन है। भारतेन्दु जी ने नाट्य लेखन की नई परम्परा को जन्म दिया। नाट्य प्रस्तुति के शास्त्रीय नियम जैसे मंगलाचरण नान्दी, सूत्रधार व भरत वाक्य आदि की पुरानी परिपाटी को समाप्त कर हिन्दी नाटक के नये स्वरूप को जन्म दिया। एकांकी नाटकों की विकास यात्र प्रारंभ की। भारतेन्दु जी स्वयं एक प्रतिभाशाली लेखक निर्देशक और कलाकार थे। उन्होंने कई उत्कृष्ट नाटक लिखे और उनमें अभिनय किया। उनका 'अंधेर-नगरी' नाटक आज भी अपनी उसी नवीनता और ताजगी के साथ मंचित हो रहा है। इसके पश्चात् द्विवेदी युग में यद्यपि एकांकी यात्र की गति धीमी रही। किन्तु इसके पश्चात् प्रसाद युग के आते-आते इस यात्र ने अपनी एक मंजिल पूरी की। तत्पश्चात् तो एकांकीकारों की श्रृंखला बन गई। डॉ. रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर, कमलाकान्त वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, उपेन्द्रनाथ अश्क, उदयशंकर भट्ट, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, भारतभूषण अग्रवाल, चिरंजीत, सत्येन्द्र शरत, विष्णु प्रभाकर आदि एकांकीकारों ने एकांकी के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

नाट्य स्थापत्य नाट्य-विधान पर निर्भर है। नाट्य विधान भी संसार की सभी वस्तुओं की भाँति परिवर्तनशील है। इस पर भी युग का प्रभाव पडता है। युग बदलता है तो युग चेतना भी बदल जाती है। नई चेतना नये रूप की माँग करती है जिसके फलस्वरूप नाट्य विधान और नाट्य स्वरूप भी बदल जाते हैं।

चलचित्र् के आविष्कार और फिर दूरदर्शन के प्रसार ने मनोरंजन की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिये। उन परिवर्तनों से नाटक भी प्रभावित हुआ। अब प्रयोगों का युग प्रारंभ हुआ। आज जो नाटक लिखे जा रहे हैं वे कथ्य, शिल्प और संरचना आदि सभी स्तरों पर प्रयोगधर्मी हैं। इस दौर ने असंगत नाटकों के दौर को बहुत पीछे छोड दिया है। आज सभी समयावधि के नाटक लिखे जा रहे हैं। आज के दौर में नाटक को किसी एकांकी विशेषण की आवश्यकता शेष नहीं रह गई है। अतः उसे केवल नाटक कहना ही उचित होगा।

नवीन शैलियों और प्रयोगशीलता की पराकाष्ठा की बात करें तो अब नाटक पर्दे के पीछे भी किये जा रहे हैं। जापान ने इस प्रकार की शैली के नाटकों का सफल प्रयोग किया है। जिसे पर्दे के

पीछे छाया के रूप में लाइट और साउण्ड के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इन्हें 'शैडो-प्लेज' का नाम दिया गया है।

किन्तु यहाँ एक बात मैं विशेष रूप से कहना चाहूँगा कि क्या छाया नाटकों का यह प्रयोग नया है ? कम से कम हमारे देश के लिए तो बिल्कुल नहीं। क्योंकि हमारे यहाँ तो नाटक के विकास का एक कारण छाया-नाटकों को भी माना गया है। यह छाया-नाटक हमारे यहाँ वैदिककाल से ही अस्तित्व में थे। हमारे संस्कृत साहित्य में कई छाया नाटकों का उल्लेख है जिनमें 'दूताङ्गद' का विशेष रूप से उल्लेख है। यह नाटक छाया के रूप में पर्दे के पीछे उसी तरह प्रस्तुत किये जाते थे जिस प्रकार आज शैडो-प्लेज किये जा रहे हैं। अतः शैडो-प्लेज का आधुनिक प्रयोग हमारे लिये नया नहीं है।

जहाँ तक इस नाट्य-संकलन का प्रश्न है, तो मेरा प्रयास रहा है कि इसमें सभी नाट्य शैलियों के आलेखों का समावेश हो। उन ऐतिहासिक चरित्रें के जीवन पर आधारित नाटक हों जो आधुनिकता की आँधी में गुम हो रहे हैं। उन लोकनाट्य शैलियों के आलेख हों जो आज आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। गीति-नाट्य की बिसरी हुई परम्परा की कृति हो। प्रयोगशील नाटक हो। ध्वनि-नाटक हो। अतः मैंने इन सभी को एक स्थान पर समेटने का प्रयास किया है।

इस संकलन में एक ओर जहाँ 'वंश भास्कर' के रचयिता सूर्यमल्ल मिश्रण के आजादी के लिए उनके संघर्षपूर्ण जीवन पर आधारित ध्वनि नाटक 'कण्ठहार' है तो दूसरी ओर लोकनाट्य शैली 'तुर्रा-कलंगी' की विलुप्त होती परम्परा के नाटक के साथ-साथ जयपुर की प्रसिद्ध शैली 'तमाशा' का आलेख भी है। हमारे सामाजिक सरोकारों से संबंधित नाटक हैं तो हास्य-व्यंग्य प्रधान नाटक भी। बाल-मनोविज्ञान पर आधारित नाटक हैं तो कहानी को मंचित करने की नई परम्परा का एक पात्रीय नाटक भी। दिग-भ्रमित युवा वर्ग का मानसिक संघर्ष है तो भूमंडलीय और उपभोक्तावाद के युग में मीडिया कंपनियों द्वारा उत्पन्न की गई बाजारवादी संस्कृति में मानवीय संवेदनाओं का बाजारीकरण किये जाने के कुत्सित प्रयासों पर आधारित नाटक 'डॉलर अंडा' भी है। कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ हैं तो नारी के त्याग और बलिदान की दास्तां के साथ-साथ आधुनिक रंगमंच पर किये जा रहे प्रयोगों पर आधारित नाटक भी हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि इस संकलन में लोकनाट्य से लेकर एक्सपैरीमेन्टल प्ले तक सामाजिक सरोकारों से संबंधित हर मूड के नाटक हैं।

मैं उन सभी नाटककार बंधुओं को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने अपनी रचनाएँ भेजकर इस संकलन को सफल बनाया है।

मैं राजस्थान साहित्य अकादमी को धन्यवाद देते हुए अकादमी का आभार प्रकट करता हूँ।

मदन शर्मा

उमेश कुमार चौरसिया

जन्म ः 3 जनवरी 1966

शिक्षा ः बी.कॉम., एल.एल.बी., एम.ए. (हिन्दी)

साहित्य ः प्रेरक बाल एकांकी, देशभक्ति-नाटक, विद्यालय रंगमंच के देशभक्ति नाटक, अतिथि देवो भवः,चीं-चीं चिडया ः नवसाक्षर बच्चों के लिए तीन रोचक नाटिकाएँ,सिराध रो दिन।

पुरस्कार ः अ. भा. युवा साहित्य का सम्मान, कला साधक सम्मान और राज्यस्तरीय सम्मान।

सम्प्रति ः माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर में कार्यरत।

पता ः 50, महादेव कॉलोनी, नागफणी, बोराज रोड,
अजमेर (राजस्थान)-305001
दूरभाष ः 0145-2622256, सचल दूर. 9829482601

टूटता भ्रम

उमेश कुमार चौरसिया

पात्र्

यथार्थ (पुरुष)
कल्पना (स्त्री)
विनय
मधु
मि. वर्मा
मिसेज दास
कुछ स्त्री-पुरुष ।

(मंच के एक ओर प्रकाश के बडे घेरे में किसी पुराने मंदिर के अवशेष दो स्तंभों के पास उजले श्वेत-पीले वस्त्रें में एक पुरुष यथार्थ खडा है। प्रकाश होने पर वह प्रेक्षकों से बात करने लगता है)

यथार्थ ः मैं हूँ यथार्थ। हर कहीं, हर पल इस दुनिया में नजर आता हूँ बस मैं ही मैं। यथार्थ के सामने कोई टिक नहीं सकता, सब जगह खडा हूँ बस मैं ही मैं। एक अकेला विजेता। शेष सारी दुनिया है नश्वर। सभी स्त्री-पुरुषों को मरना है एक दिन। .....आप.....आप.....और आप सभी लोग जो इस प्रेक्षागृह में बैठे हैं, जानते हैं आप भी कि अंत सबका है निश्चित। मृत्यु के पहले भी और मृत्यु के बाद भी जीवित रहता हूँ

मैं ही मैं। मैं हूँ यथार्थ। मैं कभी मर नहीं सकता, मुझे कोई मार नहीं सकता, कोई झुठला नहीं सकता। सब जगह शाश्वत् खडा हूँ बस मैं ही मैं।.....

(तभी चमकदार-भडकीले वस्त्र् पहने एक स्त्री कल्पना आकर यथार्थ की बात काटते हुए बोलती है)

कल्पना ः क्या खूबसूरत है कल्पना.....

यथार्थ ः मैं यथार्थ की बात कर रहा हूँ.....

कल्पना ः और मैं कल्पना की। कितनी सुन्दर है कल्पना। हर व्यक्ति के भीतर जीती है कल्पना। सच कहूँ तो मानव को जीवित रखती है कल्पना।

यथार्थ ः किन्तु यथार्थ.....

कल्पना ः कौन है ये यथार्थ?

यथार्थ ः मैं हूँ यथार्थ। अनश्वर, अटूट हर कहीं खडा हूँ।

कल्पना ः मैं हूँ क..ल्प....ना। हर दिल पर राज करती हूँ बस मैं ही मैं।

यथार्थ ः गलत। इस सृष्टि का आधार हूँ मैं।

कल्पना ः मैं? ये 'मैं' भी तो एक कल्पना है। मैं भी स्वयं को कहती हूँ मैं और तुम भी.....। फिर ये 'मैं' आखिर है कौन? कम से कम यथार्थ तो नहीं। (तिरस्कार भरी हँसी)

यथार्थ ः कल्पना उडती-फिरती है इधर-उधर, निराधार-निरर्थक। मैं हूँ जमीनी सच्चाई.....

कल्पना ः ज.....मी.....नी.....और.....स.....च्चा.....ई। च च च च.....सच्चाई क्या है जानते हो? छू सकते हो? देख सकते हो? चख सकते हो? फिर कौन सा यथार्थ? कैसा यथार्थ?

(हर प्रश्न के साथ यथार्थ दूर होता हुआ मंच के दूसरे छोर पर चला जाता है)

यथार्थ ः बस.....बस.....तुम बात को तोड-मरोडकर.....

कल्पना ः कैसे तोडते हैं बात को? दिखाओ तो? कोई भुट्टा है बात या मिट्टी का खिलौना?

यथार्थ ः देखो, इस तरह तुम इन सबको उलझा रही हो।

कल्पना ः मैं कहाँ उलझा रही हूँ। उलझे हुए तो तुम हो। देख लो (प्रेक्षकों की ओर इशारा करते हुए) तुम्हारी किसी को परवाह नहीं, सभी आँखें फाडे मेरी ओर ताक रहे हैं।

यथार्थ ः इन्हें यथार्थ का पता नहीं है।

कल्पना ः यही तो। तभी तो कहती हूँ हर जगह केवल तुम ही नहीं हो। मैं भी हूँ।

यथार्थ ः किन्तु तुम्हारा होना धोखा है, मायाजाल है।

कल्पना ः धोखा, कैसा धोखा? मैं नहीं जाती मानव के पास, मानव ही मुझे बुलाता है। मैं नहीं पुकारती फिर भी, मेरी बाँहों में सो जाता है।

यथार्थ ः तुम ज्यादा देर न बहका सकोगी। याद रखो, अन्ततः उसे मेरी ओर आना ही होगा।

कल्पना ः कल्पना में मानव सुख पाता है, तुम्हारा दिया दुखः दर्द भूल जाता है।

यथार्थ ः कल्पना का सुख क्षणिक है, यथार्थ शाश्वत् है।

कल्पना ः मैं कैसे मान लूँ?

यथार्थ ः मैं सिद्ध कर दूँगा।

कल्पना ः कर सकोगे?

यथार्थ ः (तनिक हडबडाकर) हाँ, हाँ क्यों नहीं।.....तुम मुझे कमजोर मत समझो।

कल्पना ः मेरे आते ही सच स्वतः कमजोर पड जाता है।

यथार्थ ः गलत। हर कल्पना का अंत यथार्थ है। जहाँ तुम हो वहाँ अंततः मैं ही हूँ।

कल्पना ः और जहाँ तुम हो वहाँ तुमसे पहले मैं अवश्य हूँ। तो फिर तुमसे अधिक महत्त्वपूर्ण मैं ही हूँ। (प्रेक्षकों से) क्यों, मैं ही हूँ ना?

यथार्थ ः उनसे क्या पूछती हो। पहचान ही ले जीवन का यथार्थ ये मानव, तो तुम्हारा अस्तित्व कहाँ रह जाएगा। डिब्बे में बंद रह जाएगी कल्पना, बस सिर्फ यथार्थ ही रह जाएगा।

कल्पना ः आ हा हा.....। यह भी तुम्हारी कल्पना है। तुम भी मेरे शिकार हो रहे हो। कल्पना नहीं मरने वाली। जरा इन लोगों से तो पूछ लो, कल्पना की चाशनी चखेंगे या.....(तिरस्कारपूर्ण हँसी)

यथार्थ ः तुम फिर उलझा रही हो।

कल्पना ः तो कर लो मुकाबला।

यथार्थ ः कैसा मुकाबला?

कल्पना ः यही कि मैं बडी या तुम?

यथार्थ ः मुझे मुकाबले की क्या आवश्यकता। मैं सदियों से सतत रहा हूँ और रहूँगा। मानव के जीवन में मेरा क्या स्थान है यह मैं तुम्हें अवश्य दिखा सकता हूँ।

कल्पना ः अनदेखे-अनसुने चित्रें और चरित्रें को सपनों में सजाना तो मेरा काम है, फिर तुम कैसे दिखाओगे?

यथार्थ ः इस नाटक के माध्यम से।

कल्पना ः नाटक! (हँसती है) नाटक भी तो नकल है, बनावटीपन है, धोखा है।

यथार्थ ः नाटक सिर्फ नकल नहीं, यथार्थ का प्रतिबिम्ब है। नाटक धोखा नहीं, जीवन की सच्ची तस्वीर है। उस सच की तस्वीर जिसे मानव सामने देखकर भी समझ नहीं पाता है। मानव को वही सच्चाई समझने का अवसर देता है नाटक।

कल्पना ः अच्छा! तो दिखाओ नाटक का यथार्थ। (हँसती है)

यथार्थ ः (प्रेक्षकों से) आप भी कल्पना को घूरना बंद कीजिए और देखिए यह नाटक। किन्तु गौर से देखिये और फैसला कीजिए कि आप अपने जीवन में किसे महत्त्व देंगे यथार्थ को या कल्पना को।

(दृश्य बदलता है। मंदिर के अवशेष के स्थान पर अब पूर्ण प्रकाश में विनय का घर दिखाई पडता है विनय ऑफिस के लिए तैयार हो रहा है)

विनय ः (टाई पहनते हुए आवाज लगाता है) मधु.....मधु.....

(मधु भीतर से अस्त-व्यस्त सी आती है, लग रहा है कि वह रसोई में काम कर रही थी)

विनय ः मधु, कहाँ हो तुम, तुम्हें कब से पुकार रहा हूँ।

मधु ः (सहज शान्त भाव से) जी.....वो.....।

विनय ः बच्चे स्कूल गये?

मधु ः जी हाँ।

विनय ः उनके टिफिन में आज तो बर्गर रख दिये है ना, वरना आज भी बिना खाये लौटेंगे।

मधु ः जी रख दिये हैं।

विनय ः खाना तैयार है?

मधु ः जी तैयार है।

विनय ः टिफिन जल्दी रख देना, मुझे ऑफिस के लिए देर हो रही है।

मधु ः जी अभी लाती हूँ। (जाने को होती है)

विनय ः मधु, आज तुमने प्रेस ठीक से नहीं की है। देखो यहाँ पर सलवट साफ दिख रही है। (कमीज दिखाता है)

(मधु चुपचाप देखती है)

विनय ः और आज सुबह तुमने गीजर भी ऑन नहीं किया था। पता है फिर मुझे ही पानी गरम करना पडा। कितना टाइम वेस्ट हो गया। जरा ध्यान रखा करो, मुझे कितनी प्रॉब्लम होती है।

मधु ः जी ध्यान रखूँगी। नाश्ते और खाने की जल्दी में भूल गई थी।

विनय ः नाश्ते में भी तो तुम हलवा बनाना भूल गई थी। रोजाना वही ब्रेड बटर। मधु, तुम इतने से काम भी ठीक से नहीं कर पाती हो। तुम्हें नौकरी करनी पडे तो पता नहीं क्या हो। (तभी बाहर से मिसेज शर्मा की आवाज सुनाई देती है ''बाय रोहित! कार मैं ले जा रही हूँ। शाम को जल्दी आ जाऊँगी।'' रोहित की आवाज-''ओ.के. बाय।'' फिर कार स्टार्ट होने की और जाने की आवाज आती है) सुना तुमने। मिसेज शर्मा सुबह के सारे काम निपटाकर ठीक समय पर ऑफिस भी पहुँच जाती है, और दिन भर ऑफिस के काम करने के बाद शाम को लौटकर फिर से सारा काम संभालती है।

(मधु चुपचाप है। इस पूरे दृश्य में जहाँ विनय के भाव संवादों के अनुकूल कभी झुंझलाहट, कभी क्रोध में बदलते रहते हैं वहीं मधु सदैव सहज, शांत भाव में मुस्कराहट लिये ही दिखती है)

विनय ः अब जाओ मधु। टिफिन लेकर आओ।

मधु ः जी अभी लाती हूँ।

(मधु भीतर जाकर तुरन्त ही टिफिन लेकर लौटती है)

मधु ः ये लीजिए।

(विनय जूते पहन रहा है)

विनय ः यहाँ रख दो। .....अच्छा सुनो बच्चों को स्कूल से तुम ही ले आना, मैं आज मीटिंग में व्यस्त रहूँगा।

मधु ः जी ले आऊँगी।

विनय ः आते समय मोहित को डॉक्टर को भी दिखा आना। दो दिन से उसके दाँत में दर्द है।

मधु ः जी दिखा दूँगी।

विनय ः मेरा ब्रीफकेस तैयार है?

मधु ः जी, यहीं रखा है।

विनय ः दोनों फाइलें रख दी हैं ना?

मधु ः जी।

विनय ः एक गिलास पानी ला दो।

(मधु भीतर जाती है। तभी फोन की घंटी बजती है। विनय फोन उठाता है।)

विनय ः (फोन पर) हैलो.....ओ मिस रूपाली। हाऊ आर यू।.....ओ हाँ, मैं तो भूल ही गया था।.....श्योर, मोस्ट वेलकम.....नो नो.....डोंट वरी एबाऊट माय पूअर वाइफ.....शी इज वेरी सिम्पल.....यस ओल्ड फैशन हाऊस वाइफ.....क्या करें.....बस चला रहे हैं (मधु भीतर से पानी का गिलास लेकर आती है, विनय का ध्यान उसकी ओर नहीं है).....आपका कोई मुकाबला थोडे ही कर सकता है.....ओ नो डोंट टैल मी.....आप तो कमाल की सुन्दर हैं, हम तो क्या विश्वामित्र् भी होते तो डगमगा जाते.....वो तो किस्मत दगा दे गई वरना मैं तो आपसे ही शादी करता.....(यह सुनते ही मधु के हाथ से गिलास गिर कर टूट जाता है। विनय चौंककर मधु को देखता है, फिर फोन पर).....ओ सॉरी। मिस रूपाली। आई विल टॉक यू लेटर। (फोन बन्द करके मधु से) क्या हुआ.....गिलास कैसे तोड दिया.....थोडा ध्यान रखा करो.....और हाँ मैं तुम्हें बताना भूल गया था। परसों इतवार को कुछ दोस्तों को पार्टी दे रहा हूँ। तुमसे हो जाएगा ना?

मधु ः जी, हो जाएगा।

विनय ः देख लो, फिर मत कहना कि.....

मधु ः जी, नहीं कहूँगी।

विनय ः तो फिर मीनू मैं फाइनल कर दूँगा। तुम सब बना लेना।

मधु ः जी, अच्छा।

विनय ः कोई नौकर चाहिये तो मैं ऑफिस के चपरासी को.....

मधु ः नहीं, इसकी जरूरत नहीं है। मैं कर लूँगी।

विनय ः और देखो, तुम्हें डांस नहीं आता है ना तो फिर कोशिश भी मत करना। पिछली बार तुम भी गिर गयी थी और मि. राजन को भी गिरा दिया, कितनी इन्सल्ट हुई थी।.....डांस तो मिसेज दास करती हैं। ऐसा डांस की सब झूमने लगते हैं। पता है क्लब की पार्टी में हर कोई मिसेज दास के साथ डांस करने के लिए उनके पीछे मंडरा रहा था। रिक्वेस्ट कर रहा था। गोल्डन-ब्लू ड्रेस में क्वीन लग रही थी वो। (मधु चुप है)

विनय ः तुम लेटेस्ट म्युजिक की सीडी बाजार से ले आना।

मधु ः जी, ले आऊँगी।

विनय ः स्कॉच की बोतल रखी है या नहीं।

मधु ः जी, रखी है।

विनय ः ठीक है मैं जाता हूँ।

(विनय ब्रीफकेस और टिफिन लेकर जाता है)

(मंच पर अँधेरा हो जाता है। मंच के एक छोर पर प्रकाश के घेरे में यथार्थ और कल्पना दिखाई देते हैं।)

कल्पना ः तो ये है तुम्हारा यथार्थ। बिल्कुल बोर।

यथार्थ ः यथार्थ तो यथार्थ है उसमें बोर जैसा क्या है? जैसा भी है, सच है जीवन का।

कल्पना ः अधूरा सच।

यथार्थ ः नहीं पूरा सच। दाम्पत्य में यही दृश्य तो रोजमर्रा की जिंदगी है।

कल्पना ः यही तो। कितना बोर, कितना अरुचिकर है जीवन तुम्हारे संग। और जरा मेरी तरफ देखो, कितनी सुंदर हूँ मैं, कितनी मनमोहक।

यथार्थ ः किसी कवि ने बिल्कुल ठीक लिखा है-सुंदर स्त्रियाँ दिमाग से नहीं शरीर से सोचती हैं।

कल्पना ः होने लगी ना ईर्ष्या मेरी खूबसूरती से।

यथार्थ ः जो न कभी थी, न रहेगी, उससे मुझे भला ईर्ष्या क्यों होने लगी।

कल्पना ः कल्पना के बिना मानव जीवन बेस्वाद है।

यथार्थ ः हवा में कहीं स्वाद होता है?

कल्पना ः कौन हवा?

यथार्थ ः तुम। कल्पना हवा का एक झोंका ही तो है। पल भर में छूमंतर।

कल्पना ः ये तुम कहते हो। मानव तो मुझे हर पल गले लगाये रहता है। मानव के जीवन में मधु रस हूँ मैं तभी तो यह मानव प्यासे हिरण की तरह मेरे पीछे दौडता रहता है।

यथार्थ ः और फँस जाता है मृगतृष्णा में।

कल्पना ः नहीं मानते तो देख लो, तुम्हारे ही इस नाटक में क्या हो रहा है, कल्पना का मायाजाल कैसे सर चढ कर बोल रहा है।

(दृश्य बदलता है। विनय के घर में पाश्चात्य संगीत बज रहा है। मधु साडी का पल्ला कमर से बाँधे घर में ही नृत्य का अभ्यास कर रही है। नृत्य करते-करते वह कभी लडखडा जाती है, कभी पैर मुड जाता है, कभी हाँफ जाती है। किन्तु थोडी देर रुककर फिर से अभ्यास करने लगती है। विनय बाहर से आता है। मधु को डांस करते देखकर दरवाजे के निकट ही रुककर देखने लगता है। मधु एक बार फिर लडखडाती है तो विनय जोर से हँस पडता है।)

मधु ः (विनय को हँसता देखकर) इसमें हँसने की क्या बात है ?

विनय ः (संगीत बंद कर हँसते हुए ही) ये तुम क्या कर रही हो?

मधु ः डांस सीख रही हूँ।

विनय ः डांस और तुम ! रहने दो डांस तो आएगा नहीं, पाँव में मोच आ जाएगी। डांस के लिए एकदम स्मार्ट और फिट होना जरूरी है जैसे मिसेज दास। शादी के 8 साल बाद भी बिल्कुल स्लिम एण्ड ब्यूटीफुल। (ब्रीफकेस रखकर सोफे पर बैठ जाता है)

मधु ः (तुनककर) उसके बच्चा नहीं है इसलिए। तुम्हें तो बडी जल्दी थी ना बच्चों की, फिर फिगर ठीक कैसे रहता।

विनय ः तुम कुछ भी बहाना कर लो, पर मेरी गारंटी है तुम डांस नहीं कर सकती।

मधु ः (आत्मविश्वास के साथ) तुम्हारी गारंटी अपने पास रखो और देखो।

(मधु पाश्चात्य संगीत पुनः चालू करती है। कमर पर हाथ रख सीधी खडी होती है। हाथ जोडकर भगवान से प्रार्थना करती है। फिर डांस करना शुरू करती है। अब मधु कुछ ठीक डांस कर रही है। विनय उसे देखकर आश्चर्यचकित सा उठकर मधु के पास जाता है। कुछ देर उसे डांस करते देखता रहता है। मधु डांस करना बंद करती है और संगीत भी बंद करती है)

विनय ः कमाल है मधु। इतना अच्छा डांस कर लेती हो तुम। कहाँ से सीखा?

मधु ः बस, सीख लिया अपने आप।

विनय ः मेरे लिए?

मधु ः तुम्हारे लिये क्यूँ? अपने लिये। हर व्यक्ति अपनी ही खुशी के लिए नाचता है। दूसरों को ऐसा लगता है कि वह उसके लिए नाच रहा है।

विनय ः (ब्रीफकेस टेबिल पर रखकर खोलते हुए) अच्छा ! कहाँ से सीखी यह भाषा।

मधु ः जिन्दगी से।

विनय ः ये टेबिल पर किताबें किसकी हैं?

मधु ः मेरी।

विनय ः मेरी मतलब? अब तुम्हें किताबों से क्या काम? (ब्रीफकेस में कोई पेपर देख रहा है)

मधु ः क्यूँ नहीं हो सकता? खाना बनाने, कपडे धोने, बर्तन माँजने और तुम और तुम्हारे बच्चों के काम में जुटे रहना क्या यही मेरी जिंदगी है। मैं भी और पढना चाहती हूँ।

विनय ः तुम पढोगी ! (ब्रीफकेस जोर से बन्द करता है) पर क्यूँ?

मधु ः पढना जरूरी है इसलिए। मि. विनय रॉय तुम ही तो कहते हो ना, कम पढी लिखी बीवियाँ बोर होती हैं। समाज में उनसे इज्जत नहीं बढती। (मुँह बनाकर विनय की नकल करते हुए) बीवी हो तो मिसेज वर्मा जैसी जो मि. वर्मा के बगैर अकेली ही मुम्बई में डेढ महीने का कोर्स करके आई है, नौकरी भी करती है और पी-एच.डी. भी कर रही है और मिसेज दास जैसी, जो क्लब में हर किसी मर्द के साथ क्या खूब नाचती है।

विनय ः ओफ्फो मधु। इस सबका क्या मतलब? तुम उनके जैसी बन सकती हो क्या?

मध ः क्यूँ नहीं बन सकती। कोशिश तो कर रही हूँ। यदि तुम्हें बनावटी वही जीवन पसंद है, तो तुम्हारी खातिर मैं उन जैसी बन सकती हूँ।

विनय ः सिर्फ किताबें पढकर।

(तभी दरवाजे की घंटी बजती है। मधु जाकर दरवाजा खोलती है। डाकिये से लिफाफा लेकर खुश होते हुए उसे खोलती है।)

विनय ः किसका लेटर है?

मधु ः मेरा। (पत्र् पढती है)

विनय ः तुम्हारा ! तुम्हें किसने लेटर भेज दिया?

मधु ः (प्रसन्नता से) मैंने नौकरी के लिए फॉर्म भरा था, यह इन्टरव्यू के लिए लैटर है।

विनय ः नौकरी ! अरे तुम्हें कौन नौकरी देगा !

(हँसते हुए) बगैर इन्टरव्यू लिये ही भगा देगा।

मधु ः भगा देगा तो दूसरी जगह कोशिश करूँगी। मिसेज विनय रॉय बनकर मैं मधु को भुला चुकी थी। अब मैं मधु बनकर जीना चाहती हूँ। मैं सब कुछ सीखना चाहती हूँ, डांस, म्यूजिक, बडे-बडे तराशे नाखून, कोमल हाथ, फिट फिगर, माडर्न कपडे, हाय-हैलो वाली कल्चर, सब कुछ जानना-अपनाना चाहती हूँ मैं। मधु अब सिर्फ मधु बनकर जीना चाहती है।

विनय ः मधु, तुम आज ये कैसी बातें कर रही हो।

मधु ः क्यूँ, तुम्हें तो खुश होना चाहिये मि. विनय रॉय। तुम भी तो यही चाहते हो ना?

विनय ः मैं? मैं चाहता हूँ?

मधु ः हाँ तुम। तुम ही तो हर बात में कहते हो ना कि.....

विनय ः अच्छा-अच्छा ठीक है। जो तुम्हें अच्छा लगे कर लो। करती रहो कोशिश। मुझे क्या करना है। (विनय भीतर जाने लगता है।)

(मंच पर अँधेरा हो जाता है। मंच के एक छोर पर प्रकाश के घेरे में यथार्थ और कल्पना दिखते हैं।)

कल्पना ः मेरे मायाजाल का असर हो रहा है। हर कोई इस भँवर में घूम रहा है। .....कल्पना है ही इतनी मोहक।

यथार्थ ः आकर्षक दिखने वाली हर चीज श्रेष्ठ नहीं होती। जो यह जानते हैं वे तुम्हारी माया पर मोहित नहीं होते।

कल्पना ः पर तुम्हारे नाटक की यह मधु तो स्वयं ही कूदना चाहती है कल्पना के सुंदर संसार में।.....

यथार्थ ः तुमने मेरे नाटक के पात्रें को फँसाया है। उन्हें विवश किया है।

कल्पना ः मैंने विवश किया है या वे स्वयं ही तुमसे दूर भागना चाहते हैं।

यथार्थ ः तुम उन्हें खींच रही हो जबरन।

कल्पना ः मैंने कब खींचा। तुमने देखा क्या। (प्रेक्षकों से) क्या आप लोगों ने देखा मुझे?

यथार्थ ः यही तो मुश्किल है, तुम कहाँ किसी को दिखती हो। इसी का फायदा तो उठा रही हो तुम।

कल्पना ः रोक सको तो रोक लो मुझे।

यथार्थ ः अवश्य रोक लूँगा। तुम जितना चाहे चक्कर चला लो, भ्रम के बादल में भले उलझा लो। यथार्थ को कभी भूला नहीं जा सकता, कभी छोडा भी नहीं जा सकता।

कल्पना ः लगता है अपनी हार देखकर घबरा रहे हो।

यथार्थ ः बिल्कुल नहीं। मैं कल्पना की धुंध से नहीं डरता। धुंध हटने पर मैं ही खडा दिखूँगा अटल।..... अब तुम चुपचाप नाटक देखो। बार-बार बीच में आकर बाधा मत डालो। (कल्पना कुछ कहना चाहती है पर यथार्थ मुँह फेर कर मंच की ओर देखने लगता है।)

(दृश्य बदलता है। क्लब में कुछ जोडे पाश्चात्य संगीत की धुन पर नृत्य कर रहे हैं। विनय मिसेज दास के साथ और आधुनिक वस्त्र् पहने मधु मि. वर्मा के साथ नृत्य कर रही है। रंगीन प्रकाश की किरणें भी संगीत के साथ नाच रही हैं। कुछ समय के बाद एक श्वेत प्रकाश का घेरा मधु व मि. वर्मा पर आकर ठहर जाता है)

मि. वर्मा ः (नृत्य करते हुए) आप तो गजब ढा रही हैं मिसेस रॉय।

मधु ः मि. वर्मा मेरा नाम मधु है।

मि. वर्मा ः ओ हाँ, मधु जी। आप तो सारी की सारी बदल गयी हैं। आखिर इसका राज क्या है?

मधु ः राज कुछ नहीं मि. वर्मा। बस मैंने जीना सीख लिया है।

मि. वर्मा ः और साथ ही इतना खूबसूरत डांस भी सीख लिया है। रीयली बहुत अच्छा डांस कर रही हैं आप?

मधु ः (लापरवाही से) ओ.....थैंक्स मि. वर्मा।

मि. वर्मा ः मधु जी कैसे सीख लिया ये सब? इट्स रीयली वण्डरफुल। मैं तो सोच भी नहीं सकता था कि इस सादगी के भीतर इतनी खूबसूरती छिपी हुई हो सकती है।

मधु ः कोई नहीं सोच सकता, किसके भीतर क्या छिपा है।

मि. वर्मा ः आप तो फिलासफी भी कर लेती हैं।

(मधु इतरा कर गोल घूम कर नाचती है)

मि. वर्मा ः ब्यूटीफुल। आज इस क्लब में सबसे सुन्दर डांस सिर्फ आपका ही है।

(मधु के नजदीक आने का प्रयास करता है)

मधु ः (दूर करते हुए) डांस तो ठीक है मि. वर्मा। पर ज्यादा नजदीक आने की कोशिश मत कीजिए।

मि. वर्मा ः ओह.....सॉरी मधु जी।.....

(मधु मि. वर्मा का हाथ पकडकर डांस करने लगती है, तो लडखडा कर गिरने लगती है। मि. वर्मा उसे थाम लेते हैं)

मि. वर्मा ः अरे आप तो अभी से लडखडाने लगीं मधु।

मधु ः (संभलने का प्रयास करते हुए) ऊँ हुँ.....। मधु नहीं मधु जी।

मि. वर्मा ः ओह हाँ, मधु जी आप तो दो पैग में ही.....

मधु ः मैंने पहली बार पी है ना।

मि. वर्मा ः आपने आज कई काम पहली बार किए हैं। मॉडर्न ड्रेस, डांस और ड्रिंक्स.....इतना सब पहली बार।

मधु ः हाँ, पहली बार.....।

(अचानक संगीत बन्द हो जाता है।)

मधु ः व्हाट हैप्पन। म्यूजिक क्यूँ बन्द कर दिया यारों.....(नशे में) चलाओ.....कोई लव सांग चलाओ.....आय वांट म्यूजिक.....ओनली म्यूजिक.....।

(सभी लोग भी शोर करने लगते हैं। क्लब के लोग इधर-उधर जाकर खराबी ढूँढते दिखते हैं, फिर पाश्चात्य संगीत पुनः चालू होता है)

मधु ः यस.....आय लाइक इट.....गीत के साथ-साथ गाने लगती है)

मि. वर्मा ः आज बहुत खुश हैं ना आप?

मधु ः हाँ, बहुत खुश। जैसे पंछी पिंजडे से निकलकर खुले आकाश में उडने लगता है, वैसे ही मैं भी अपने घर की चारदीवारी की घुटन, संस्कार और मूल्यों के बन्धन से मुक्त होकर आ गई हूँ.....। कितना सुखद है यूँ पंख फैलाकर स्वछन्द उडना।

मि. वर्मा ः आप सही कह रही हैं, पर फिर भी वापिस जल्दी लौट आइयेगा।

मधु ः क्यूँ? वापिस क्यूँ?

मि. वर्मा ः (हँसकर) थककर गिरने से तो अच्छा ही है, स्वयं लौट आना।

मधु ः (गुस्से से) गलत समझते हैं आप। पहले पंछी को उडने के लिए विवश करते हैं, फिर जब वह पिंजडा छोडकर आसमान में उडने लगता है तो उसे फिर पिंजडे में लौटने को कहते हैं। (हँसकर) स्वाधीन होकर उडने वाला पंछी वापिस पिंजडेे की गुलामी में क्यूँ लौटेगा?

मि. वर्मा ः लेकिन मधु जी, वह बाहर भी कितने दिन रह पाएगा?

मधु ः जितने भी दिन रह सके। जीवन अपना हो तो चार दिन ही काफी हैं, वरना तो सारी जिंदगी बेमानी है।

मि. वर्मा ः आप ऐसी बातें मि. विनय रॉय से भी करती हैं?

मधु ः नहीं.....सिर्फ अपने आप से.....।

(अचानक बिजली बन्द हो जाती है। मंच पर अँधेरा सा छा जाता है। लोगों के स्वर सुनाई देते हैं)

पुरुष स्वर ः ओफफो ये लाईट कैसे बन्द हो गई.....अँधेरे में कुछ दिख नहीं रहा है।

स्त्री स्वर ः रास्कल डोंट टच मी.....मैनेजर कैंडल्स मँगाओ.....।

पुरुष स्वर ः सॉरी, अँधेरे में टकरा गया.....

स्त्री स्वर ः डोंट माइंड, आय लाईक इट.....। (कुछ लोगों के इधर-उधर जाने की आवाजें आती हैं। क्लब के लोग कुछ बडी-बडी जलती मोमबत्तियाँ लेकर आते हैं और कुछ जगहों पर

लगाते हैं। अब मंच पर मद्धिम श्वेत प्रकाश का घेरा अब नृत्य कर रहे विनय और मिसेस दास पर आकर ठहर जाता है।)

मिसेस दास ः मि. विनय आप मि. वर्मा को देख रहे हैं?

विनय ः (नृत्य करते हुए) नहीं। मैं तो सिर्फ आपको देख रहा हूँ।

मिसेज दास ः किसी खूबसूरत चिडया के साथ डांस कर रहे हैं।

विनय ः आपसे सुन्दर नहीं हो सकती मिसेज दास और इस कैंडिल लाईट में तो आप ब्यूटी क्वीन लग रही हैं।

मिसेज दास ः (विनय की बात पर ध्यान न देकर) देखो कितना अच्छा डांस कर रही है।

विनय ः डांस में आपका मुकाबला और कौन कर सकता है?

मिसेज दास ः ज्यादा चढाओ मत।

विनय ः सच कह रहा हूँ।

मिसेज दास ः देखो, मि. वर्मा तो उस पर लट्टू ही हुए जा रहे हैं।

विनय ः छोडो ना उनको, अपनी बात करो। हम भी तो आफ दीवाने हैं।

मिसेज दास ः तो? उसमें नया क्या है? बट, आय थिंक आय नो हर.....कहीं वो म.....धु.....।

विनय ः (बात काटते हुए) होगी कोई। क्लब सभी का है, उन्हें भी एन्जॉय करने दो।

मिसेस दास ः ठीक कहते हो। सबको अपने तरीके से जीने का हक है।

विनय ः हाँ, जिंदगी मजे के लिए है। खुल के मौज करो।

मिसेस दास ः मजे ! (हँसती है) मि. रॉय ये पार्टीज, ये नाच-गाने, ये वेस्टर्न म्यूजिक क्या यही जिंदगी का मजा है।

विनय ः और क्या।

मिसेस दास ः गलत। (नृत्य करना बन्द कर देती है) आप गलत समझते हैं।.....दरअसल असली जिंदगी तो हम सबसे कहीं खो गई है और हम उसे इन डांस-पार्टियों में ढूँढ रहे हैं।

विनय ः ये आप क्या कह रही हैं मिसेज दास?

(विनय मिसेज दास का हाथ पकडने लगता है तो वह उसे झटक देती है)

मिसेस दास ः मैं सच कह रही हूँ। हर मर्द यहाँ दूसरी स्त्रियों में सुख ढूँढ रहा है। हर स्त्री यहाँ सज-सँवर कर दूसरे मर्द में सुख ढूँढ रही है।.....पर यहाँ सुख है कहाँ? सुख तो हम घरों की चारदीवारी में बंद कर आए हैं। (मिसेज दास धम्म से कुर्सी पर बैठ जाती है। विनय उसके पीछे आता है)

विनय ः मिसेज दास। लगता है आपको चढ गई है।

मिसेस दास ः चढी नहीं है मि. विनय रॉय। अब तो उतर रही है। जाने कितने भ्रम, सपनों और मिथ्या-विश्वासों की शराब उतर रही है।

विनय ः तो और पी लो। मेरा नशा क्यूँ खराब कर रही हो?

मिसेज दास ः नशा। तुम्हारा भी नशा उतर जाएगा मि. रॉय। ये सपनों की दुनिया सिर्फ एक धोखा है।

विनय ः कैसा धोखा? मुझे तो यहाँ बडा सुकून मिलता है।

मिसेज दास ः अपने घर से दूर रहकर सुकून .....।

विनय ः और नहीं तो क्या, घर में वही बीवी की किचकिच और बच्चों का हैडेक।

मिसेज दास ः बच्चों को हैडेक कह रहे हो।.....तुम्हें फुर्सत भी है अपने बच्चों को जानने-समझने, उनसे बात करने की।.....तुमने कभी सोचा कि क्या संस्कार दे रहे हो तुम अपने बच्चों को।.....

विनय ः तो ये सब आप क्यूँ नहीं सोचती?

मिसेज दास ः मैं.....मैं तो बे-औलाद हूँ.....जब माँ बनने की उम्र थी तब तो आधुनिकता के नशे में झूमती रही.....और फिर जब भ्रम टूटा तो मैं इस लायक ही नहीं रही.....अब तो मेरे जीवन में ये कमबख्त नशा ही रह गया है.....।

विनय ः .....।

मिसेस दास ः इस नशीली दुनिया में रिश्ते कब दूर होते जाते हैं पता ही नहीं चलता.....मि. रॉय तुम्हारा भ्रम भी टूट जाएगा.....।

विनय ः देखा जाएगा।.....अभी तो नशे में आप और भी हसीन लग रही हैं।

(मिसेज दास खिलखिलाकर हँस पडती है)

(तभी बिजली चालू हो जाती है। रंग-बिरंगी प्रकाश की किरणें फिर से मंच पर नाचने लगती हैं) अब तक धीमा हुआ संगीत फिर तेज हो जाता है। क्लब के लोग मोमबत्तियाँ हटा

लेते हैं। नृत्य पूर्ववत् जारी है। अब सभी और उत्साहित होकर नाच रहे हैं। विनय मिसेज दास को जबरन डांस के लिए खींचता है।

विनय ः आओ ना डांस करें।

मिसेज दास ः (छुडाते हुए) मि. रॉय छोडो मुझे।

विनय ः इतनी हसीन बला को कोई कैसे छोड सकता है। (फिर हाथ पकडकर खींचता है) आओ ना।

मिसेज दास ः (हाथ को झटकते हुए) तुम्हें चढ गई है मि. रॉय। मुझसे दूर रहो। (विनय अत्यधिक नशे में मिसेज दास से जबरदस्ती करने लगता है। मिसेज दास दो-तीन बार उसे दूर करती है। विनय नहीं मानता तो गुस्से में आकर मिसेज दास विनय के गाल पर थप्पड मार देती है। थप्पड की आवाज के साथ ही संगीत बन्द हो जाता है। नाच रहे सभी लोग फ्रीज हो जाते हैं। विनय स्तब्ध देखता रह जाता है)

(दृश्य बदलता है। विनय नशे में बहकती मधु को सहारा देते हुए घर में लाता है।)

मधु ः (नशे में) मुझे दुनिया वालों.....शराबी ना.....।

विनय ः तुम्हें शर्म आनी चाहिये मधु इस तरह नशे में बहकते हुए।

मधु ः कौन कमबख्त होश में है। सभी तो नशे में बहक रहे हैं।.....तुम भी तो.....।

विनय ः मेरी तो आदत है। तुम्हें पीने की क्या जरूरत थी।

मधु ः मुझे मॉडर्न बनना है ना इसलिए। बिना पीये मुझे कौन मॉडर्न कहता।

विनय ः पीकर बेशर्म हो जाना कैसी आधुनिकता है?

मधु ः क्लब में कौन बेशर्म नहीं होता? पार्टीज बेशर्मी के लिए ही तो होती हैं। सभी आधुनिक बने लोग क्लब में यही तो करते हैं।

विनय ः सबसे अपनी तुलना मत करो।

मधु ः तुलना मैं नहीं तुम करते हो विनय। हर बार तुमने ही इन मॉडर्न कही जाने वाली कमजोर औरतों से मेरी तुलना की है। कभी तुम्हें मेरे गँवारूपन पर एतराज होता है, कभी मेरी बोल्डनेस पर।

विनय ः मैं मानता हूँ मैं गलत था। मैंने तुम्हें हर पल ताने दिये हैं। लेकिन तुमने तो हद ही कर दी। बोल्डनेस का मतलब ये तो नहीं कि हर कोई तुम्हें छू ले और गले लगाकर डांस करे।

मधु ः मुझे कहाँ कोई छू पाया है। मेरा मन तो सदैव अनछुआ ही रहा है।

विनय ः तुम्हें मालूम होना चाहिये कि स्त्रियों की कोई सामाजिक मर्यादा भी होती है।

मधु ः सिर्फ स्त्रियों की.....? तुम्हारी नहीं? तुम जो दूसरों की बीवियों के साथ बेशर्म हरकतें करते हो, उस समय मर्यादा कहाँ खो जाती है? तुम्हें इसके पहले तो मर्यादा का ख्याल नहीं आया। क्या पत्नी का सम्मान तुम्हारा कर्त्तव्य नहीं है, बच्चों की देख-रेख क्या तुम्हारी जिम्मेदारी नहीं है।.....तुम्हें तो मॉडर्न ड्रेस में तडक-भडक करती, हर किसी के साथ डांस करने वाली, मेकअप में पुती स्त्रियाँ ही पसंद हैं ना। फिर मैंने ये सब अपना लिया तो तुम्हें तकलीफ क्यूँ होने लगी?

विनय ः आई एम सॉरी मधु। मुझे माफ कर दो। मिसेज दास के थप्पड ने मेरा आधुनिकता का नशा उतर दिया है। बनावटी खोखले सपनों की दुनिया से मेरा भ्रम तोड दिया है। मैं जान गया हूँ कि जीवन का असली सुख सिर्फ अपने परिवार में है। अपनी संस्कृति में है। इस असीम सुख के आकर्षण को मैंने कभी तलाश ही नहीं किया। सिर्फ चारदीवारी का नाम घर नहीं। घर होने के लिए रिश्तों में प्यार होना आवश्यक है। नशे और परायी स्त्रियों में सुख नहीं सिर्फ स्वार्थ और तिरस्कार है। उनमें अपनापन तलाशना मेरी मूर्खता थी। मैं अपने ही बनाये भ्रम के कल्पना लोक में डोल रहा था। अति आधुनिकता के नशे में अपनी गौरवपूर्ण संस्कृति से भटकते ये लोग खुद भ्रमित हैं। अपनी कमजोरियों को दूसरी संस्कृति की आड में छुपाने की विकृति में उलझ गए हैं ये। इन्हें पता ही नहीं कि खुशी क्या होती है। बस चेहरों पर मुखौटे लगाये बहकते जा रहे हैं।.....मधु तुम नहीं, मैं ही बहक गया था।.....पर अब तुम कभी उस दुनिया में मत जाना मधु।

मधु ः उस दुनिया से लौटना क्या इतना आसान है विनय?

विनय ः है मधु, अगर हमारा निश्चय दृढ हो और स्वयं पर विश्वास हो।

मधु ः तो फिर तुम्हें भी आधुनिकता की इस अंधी दौड से अलग होना होगा।

विनय ः मैं वादा करता हूँ मधु। अब कभी भी उधर मुडकर नहीं देखूँगा।

(दोनों फ्रीज हो जाते हैं। मंच का प्रकाश मद्धिम हो जाता है। मंच में एक छोर पर प्रकाश के घेरे में यथार्थ और कल्पना दिखाई देते हैं। कल्पना अब कुछ मायूस है)

यथार्थ ः देखा। मैंने कहा था ना। तुम्हारा मायाजाल मानव को कुछ देर के लिए बहका सकता है, किन्तु फिर उन्हें यथार्थ तक लौटना ही होता है।

कल्पना ः ठीक है। मानती हूँ। किन्तु यदि कल्पना न हो तो जीवन बिल्कुल नीरस नहीं हो जाएगा। कल्पना ही तो मानव की सृजनात्मकता है। कल्पना के माध्यम से ही तो वह अनदेखे, अनसुने संसार की रचना करता है। कल्पना ही तो वह शक्ति है जो सपनों में ही सही मन में उत्पन्न नई और अनोखी बातों के स्वरूप को उपस्थित करती है।.....

यथार्थ ः हाँ, और उसी काल्पनिक दुनिया के स्वप्न से जागकर वह यथार्थ के महत्त्व को पहचान पाता है।

कल्पना ः (आश्चर्य से) तो तुम यह मानते हो कि.....

यथार्थ ः हाँ, मैं मानता हूँ कि जीवन में कल्पना और यथार्थ दोनों आवश्यक हैं।

(यथार्थ और कल्पना दोनों एक दूसरे का हाथ थामते हैं)

कल्पना ः (हँसकर).....पर तुम्हारे इन पात्रें का क्या होगा?

यथार्थ ः तुम ही देख लो।

(मंच पुनः प्रकाशित होता है)

विनय ः (पुनः प्रारम्भ वाला व्यवहार) अब जाकर खाना बनाओ भई.....। मुझे बडी भूख लगी है।

मधु ः (पुनः पूर्ववत् सहज-सरल) जी अभी बनाती हूँ।

विनय ः और तुमने ये सब क्या कपडे पहन रखे हैं। इन्हें तुरन्त बदलकर साडी पहन लो।

मधु ः (मुस्कुराकर) जी पहनती हूँ।

विनय ः और सुनो, सब्जी में मसाला ठीक डालना। तुम्हें पता है मिसेज वर्मा ऐसा खाना बनाती है कि .....

(दोनों ठहाका लगाकर हँस पडते हैं)

नसरुल्लाह

जन्म ः 04, जनवरी, 1962

शिक्षा ः एम.ए.एम.फिल (हिन्दी साहित्य)

साहित्य ः लघु नाट्य संग्रह 'सहमी उम्मीदें' प्रकाशित और साहित्य अकादमी उदयपुर की मासिक पत्रिका 'मधुमती' सहित विभिन्न पत्रिकाओं में नाटक, कहानी लेखों का प्रकाशन।

मंचन ः नाटकों का जवाहर कला केन्द्र, रवीन्द्र मंच आदि पर मंचन।

सम्प्रति ः दि न्यू इंडिया एश्योरेन्स कं.लि. (भारत सरकार), जयपुर में कार्यरत

सम्फ ः 2 घ 15, जवाहर नगर, जयपुर - 302 004

डॉलर अंडा

नसरुल्लाह

पात्र्

स्त्री - 1 (अमली)- उम्र बीस वर्ष, मजदूरन

पुरुष - 1 (लखमीचन्द)- उम्र बाईस वर्ष, मजदूर

स्त्री - 2 (मंगू ताई)- प्रौढा दाई

पुरुष - 2 (हरीश)- उम्र पच्चीस वर्ष-मीडियाकर्मी

पुरुष - 3 उम्र चालीस वर्ष के लगभग-मीडिया ग्रुप का सी.ई.ओ.

नाटक के बारे में

प्रस्तुत नाटक डॉलर अंडा - भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के युग में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कम्पनियों द्वारा उत्पन्न की गयी बाजारवादी संस्कृति में मानवीय संवेदनाओं का बाजारीकरण किये जाने के कुत्सित प्रयासों की कथा है। जहाँ उसके लिए सामाजिक मूल्य, मान्यताएँ एवं स्त्री की भावना और उसकी अस्मिता मात्र् एक कमोडिटी है। जिसे बेच कर अथाह धन कमाया जा सकता है।

जहाँ मीडिया के लिए अमली का अंडे के रूप में पैदा हुआ विकार (भ्रूण) स्त्री की नैसर्गिक प्रक्रिया, उसकी पीडा और दर्द नहीं होकर महज एक चटपटी स्टोरी है, जिसे हाइप देकर धन कमाया जा सकता है। वहीं दूसरी तरफ वह धन की चकाचौंध पैदा कर उसके पति लखमी के लालच को उकसा कर उसे अपनी पत्नी से दूर कर देता है। वह अपनी पत्नी की अस्मिता, मर्यादा, भावना और संवेदनाओं को नजरअंदाज कर मीडिया कम्पनी के जाल में फँस जाता है, जहाँ वह पति ना रह कर व्यापारी बन जाता है।

नाटक की स्त्री पात्र् अमली उनकी इस चाल को समझते हुए स्त्री जाति के मान-सम्मान, मर्यादा और अस्मिता की रक्षा के लिए उनके इरादों को ध्वस्त कर देती है।

(पर्दा खुलता है। मंच दो भागों में विभाजित। पहले भाग में झोंपडी का दृश्य। मजदूर वर्ग को इंगित करती वस्तुएँ। दूसरे भाग में बहुराष्ट्रीय कम्पनी का कार्यालय। पहला भाग प्रकाश से आलोकित होता है। स्त्री घरेलू कार्य में व्यस्त। पुरुष-1 का प्रवेश। हाथ में औजारों का थैला।)

स्त्री-1 ः आ गया काम से.....। हाथ-मुँह धो ले.....। रोटी बना देती हूँ.....।

पुरुष-1 ः (अंगडाई लेते हुए).....आज बहुत थक गया हूँ.....।

स्त्री-1 ः मैंने तो कही थी तुम से। आज शरीर गरम हो गया है। ना जा काम पे.....।

पुरुष-1 ः ना जाता तो आटे-दाल का जुगाड कैसे होता.....। ये जो पल रहा है तेरे पेट में.....इसका क्या होता.....।

स्त्री-1 ः (सकुचाते हुए).....क्या होता.....? सब ठीक तो है.....।

पुरुष-1 ः अरी बावली। यही तो टेम है अपना ख्याल रखने का।

स्त्री-1 ः ज्यादा ना इतरा। क्या दूसरी औरतें बच्चे नहीं जनतीं।

पुरुष-1 ः क्यूँ नहीं जनतीं। पर देखी है उनकी हालत। मरियल घोडी सी पडी रहे हैं। दवा-दारू.....ना खुराक.....।

स्त्री-1 ः मेरी दवाइयों पर बहुत पैसा खरच हो रहा है। ऐसे खुले हाथ से खरचेगा तो माँ-बापू को क्या भिजवायेगा गाँव। बापू की खाँसी अभी तक ठीक ना हुई है। उधर अम्मा भी ठीक से चल नहीं पाती.....।

पुरुष-1 ः पिछले महीने तेल भिजवाया तो था। लगाये तो दरद भी घटे.....।

स्त्री-1 ः दरद कैसे घटे। सीने में मुन्नी के ब्याह का दरद लिये जो घूमती है। ब्याह हो जाये तो सारे कष्ट खतम हो जाये उसके।

पुरुष-1 ः हो जायेंगे खतम। चिन्ता क्यूँ करती है। (स्त्री के पेट पर हाथ लगाता है) ये दुनिया में आयेगा तो हमारी किस्मत पलट देगा।

स्त्री-1 ः कितने दिन बीत गये मुझे भी काम पे गये हुए। तेरा हाथ नहीं बँटा पा रही। कमाई आधी रह गयी है।

पुरुष-1 ः ऐसे हाल में तेरा काम करना ठीक नहीं है। तू तो जानती है ठेकेदार को। क्या मजाल कि कोई एक पल बैठकर सुस्ता ले। बीडी हम पिये हैं तो धुआँ उसके सीने में घुटे है। हाड तोड

मेहनत करवाये है। वो तुझे कहाँ से सुस्ताने देगा। और फिर उसकी ललचाती नजरों को देखकर मेरा खून खौल जाये है।

स्त्री-1 ः जी मत जला अपना। किसी दूसरी जगह काम देख ले।

पुरुष-1 ः इतना आसान है काम तलासना। चौकटी में जाना पडेगा। वहाँ। मजदूरों की ऐसी बोली लगे है जैसे गुलाम खरीदे जा रहे हों। गुलामों की मंडी। एक-एक चीज नाप-तौल के।

स्त्री-1 ः अब गरीबी में जनम दिया है भगवान ने तो सारे करम करने पडेंगे।

पुरुष-1 ः ईश्वर भी हमारे जैसों का भाग न जाने क्यों फोडे है? इतनी मेहनत मजदूरी के बाद भी सिरफ सौ रुपल्ली हाथ लगे हैं। जिन्दगी गुजर जायेगी ससुरी जिन्दा रहने की कोसिस में।

स्त्री-1 ः चिन्ता क्यों करे है। बस थोडे दिनों की बात है। मैं भी काम पे चलूँगी तेरे साथ। दोनों मिल कर चलायेंगे जीवन की गाडी। और फिर ये सैतान भी तो अपना भाग लेकर आयेगा। दिन फिरते टेम ना लगे।

पुरुष-1 ः अपना ख्याल रखा कर। खरचे की चिन्ता ना कर। पूरे दिन से है तू। रात में भी नींद में कसमसा रही थी। अब कैसा है दरद।

स्त्री-1 ः है तो सही। ऐसा लगे है जैसे पेट में कोई गोला सा घूम रहा है। इधर-उधर लुढकता सा।

पुरुष-1 ः मंगू ताई को दिखा आती।

स्त्री-1 ः दिखाया था कह रही थी अभी टेम है। एक महीना और लगेगा।

पुरुष-1 ः तू चिन्ता ना कर। बस हिम्मत रख।

स्त्री-1 ः अब बातें ना बना। सारे दिन थका-हारा आया है। रोटी खा ले। अन्न पेट में जायेगा तो ताकत आ जायेगी सरीर में।

पुरुष-1 ः आऊँ हूँ। पहले दीया-बाती जोड दूँ। अन्धेरा ठीक ना लगे।

(पुरुष-1 लालटेन जलाता है, बरतन से पानी निकाल पैरों पर डालता है और चारपाई पर बैठ जाता है। स्त्री चूल्हा जलाने लगती है। अचानक दर्द से कराह उठती है।)

पुरुष-1 ः क्या हुआ.....? (दौड कर उसके पास आ जाता है)

स्त्री-1 ः बहुत दरद हो रहा है। जाँघ फटी जा रही है। आज सारा दिन हुआ। चटके से चलते रहे सारे सरीर में।

पुरुष-1 ः पहलू क्यूँ नहीं बताया.....?

स्त्री-1 ः क्या करती बता के.....। ऐसा तो चलता ही रहे है।

पुरुष-1 ः चल उठ। चारपाई पे लेट जा।

स्त्री-1 ः (कराहते हुए) तू जा। मंगू ताई को बुला ला।

पुरुष-1 ः जाऊँ हूँ। तू घबरइयो मत। (बाहर जाता है। स्त्री-2 प्रवेश होता है।)

स्त्री-2 ः कहाँ दौडे जा रहा है लखमी। सब ठीक तो है।

पुरुष-1 ः तुझे ही बुलाने जा रहा था ताई। अमली के दरद उठ गया है। तडप रही है दरद के मारे-।

स्त्री-2 ः लेकिन अभी तो टेम है बच्चा जनने में। मैं देखू हूँ.....। अरी अमली क्या हुआ तुझे। (स्त्री-1 उठने लगती है) उठे मत। लेटी रह। अब मैं आ गयी हूँ। सब ठीक हो जावेगा।

स्त्री-1 ः मंगू ताई। जाँघ दरद से फटी जा रही है। पेट में भी कसक हो रही है। ऐसा लगे है जैसे कोई चीज बाहर आवेगी।

स्त्री-2 ः कितनी बार कहा तुझ से। काम पे मत जा। पर तू माने जब ना।

स्त्री-1 ः बहुत दिन हुए काम पे गये। अब ना जाऊँ हूँ।

स्त्री-2 ः मैं देखूँ हूँ क्या माजरा है। ऐसा कर लखमी। तू बाहर जा।

पुरुष-1 ः ठीक है ताई। कोई फिकिर की बात तो ना है।

स्त्री-2 ः देख तो रही हूँ।

(पुरुष-1 बाहर चला जाता है। स्त्री-2 दरवाजा बन्द कर लेती है। पुरुष-1 दरवाजे के बार बेचैनी से चक्कर लगाता है। झोंपडी में से बार-बार स्त्री-1 के कराहने की आवाज आती है। पुरुष बार-बार दरवाजे के पास पहुँच जाता है।)

पुरुष-1 ः (घबराकर) क्या हुआ मंगू ताई। सब ठीक तो है। (स्वकथन) बच्चा जनमना किसी दूसरे जनम से कम नहीं। कितनी पीडा हो रही है अमली को। पर जैसे बच्चा सामने होगा। सब दुख-दरद भूल जायेगी। (स्त्री-1 के कराहने की आवाज बढने लगती है। पुरुष की बेचैनी भी बढती जाती है) क्या हो रहा है मंगू ताई। अमली इतना कराह क्यूँ रही है?

(स्त्री-1 के कराहने की आवाज तेज होकर अचानक शान्त हो जाती है। कुछ देर बाद झोंपडी का दरवाजा खुलता है। मंगू ताई भारी कदमों से बाहर आती है।)

पुरुष-1 ः (कन्धा पकड कर) मंगू ताई क्या हुआ.....? लडका या लडकी.....? अमली ठीक तो है। जल्दी बता ताई.....।

स्त्री-1 ः कुछ ठीक नहीं।

पुरुष-1 ः कुछ ठीक नहीं। क्या मतलब है तेरा। अमली जो इतना कराह रही थी वो सब.....।

स्त्री-2 ः अमली बच्चा ना जन सकी लखमी।

पुरुष-1 ः बच्चा ना जन सकी। क्या मतलब है तेरा।

स्त्री-2 ः हाँ.....। बच्चा ना जना उसने.....। उसने अंडा दिया है। निरा एक अंडा.....

पुरुष-1 ः अंडा.....? निरा अंडा.....। ये कैसे हो सके है ताई। एक इन्सान के अंडा। हम कोई पसु-पक्षी थोडे हैं? तू कहीं मजाक तो नहीं कर रही।

स्त्री-2 ः नहीं लखमी। मैं सच कह रही हूँ। तू खुद भीतर जा के देख ले।

पुरुष-1 ः अमली पे ना जाने क्या गुजरी होगी। वो ठीक तो है।

स्त्री-2 ः अंडा देखकर आँखें पथरा सी गयी हैं उसकी। सदमा लगा है उसे।

(दोनों अन्दर जाते हैं। स्त्री-1 गुमसुम इक टक अपने सामने पडे अंडे को देख रही है। पुरुष अंडे को देखकर हतप्रभ रह जाता है।)

पुरुष-1 ः अमली.....। अमली.....। (स्त्री-1 शांत रहती है) इसे क्या हो गया मंगू ताई।

स्त्री-2 ः गहरे सदमे में है। ऐसा कर पहले इस अंडे को ठिकाने लगा दे। जब तक इसके सामने रहेगा ये अपने अधूरे होने का अहसास करती रहेगी। अजीब ख्याल आते रहेंगे इसके दिमाग में।

पुरुष-1 ः (स्त्री को पकड कर) ये क्या हो गया अमली। ये क्या जन दिया तूने। हमने तो एक बच्चा चाहा था ईसवर से। ये क्या जादू-टोना हो गया हमारे साथ।

स्त्री-2 ः हिम्मत रख लखमी.....।

पुरुष-1 ः क्या हिम्मत रखूँ। कोई सुनेगा तो क्या कहेगा। औरत ने अंडा दिया है। लोग हँसेंगे हम पे। जादूगरनी..... डायन कहेंगे इसे.....।

स्त्री-2 ः ऐसे दिल छोटा ना करे।

पुरुष-1 ः तो क्या करूँ। अमली का क्या होगा। कोई उपाय नहीं सूझ रहा मुझे।

स्त्री-2 ः उपाय है तो सही। मैं कह रही हूँ ना। पहले इस विकार को ठिकाने लगा दे.....। जब तक इसके सामने रहेगा ये खामोस रहेगी-।

पुरुष-1 ः तू ठीक कह रही है ताई। जब तक रहेगा इसके सामने ये अंडा। ये बद हवास रहेगी। ऐसा कर तू चुफ से इसे थैली में डालकर घूरे पे फेंक आ। (रुक कर)..... नहीं-नहीं। वहाँ तो कुत्ते फाड खायेंगे इसे। ऐसा कर। यहीं गड्ढा खोद कर गाड दे इसे। कोई पूछेगा तो कह देंगे कि मरा बच्चा हुआ था।

स्त्री-2 ः हाँ। यह ठीक रहेगा। वैसे भी किस काम का है ये।

(स्त्री-2 अंडे को उठाने लगती है तभी स्त्री-1 चेतन अवस्था में आती है।)

स्त्री-1 ः वहीं रुक जा मंगू ताई। खबरदार जो इसे हाथ लगाया।

(स्त्री-2 और पुरुष-1 भौंचक्के रह जाते हैं)

पुरुष-1 ः क्या हुआ तुझे.....। ऐसा क्या कर दिया हमने।

स्त्री-1 ः इसके हाथ ना लगा। अगर हाथ बढाया तो मुझ से बुरा ना होगा।

पुरुष-1 ः पागल हो गयी है तू। इसे तो फेंकना ही पडेगा। किस काम का है ये।

स्त्री-1 ः ये बच्चा है मेरा.....।

पुरुष-1 ः होस में आ अमली। तू बच्चा न जन सकी है। तूने अंडा दिया है। विकार जनमा है तूने.....। इसे तो फेंकना ही पडेगा।

स्त्री-1 ः नहीं मैं इसे फेंकने नहीं दूँगी।

पुरुष-1 ः बेकार की हाय तौबा मचा रही है। क्यूँ कर रही है ये सब।

स्त्री-1 ः क्यूँ कर रही हूँ (रोती है) रखा है इसे मैंने अपनी कोख में पूरे आठ महीने। हिस्सा है मेरे सरीर का। बंदरिया भी अपने सरीर से चिफ मरे बच्चे को ना फेंके। मैं तो इन्सान हूँ।

पुरुष-1 ः लेकिन अब तो सब खतम हो गया। अब इसका क्या मतलब। क्या करेगी इसका।

स्त्री-1 ः रखूँगी इसे अपने पास। अपने सीने से लगाके।

पुरुष-1 ः किसलिए। चिडया का अंडा है, जो तू इसे गरमी देकर बच्चा निकाल लेगी।

स्त्री-1 ः हाँ, निकाल लूँगी। दूँगी अपनी गरमी। सेऊँगी इसे अपनी ममता से।

पुरुष-1 ः (गुस्से से) और इसमें से कोई चूजा निकल आया तो? क्या कहेंगे लोगों से कि किसी मुर्गे का आना-जाना था इस घर में। दिमाग खराब हो गया है तेरा।

स्त्री-1 ः मैं कहूँगी लोगों से। मैंने जना है इसे।

पुरुष-1 ः पागल मत बन अमली। हमें तमासा न बनना। .....तू जानती है बस्ती वालों को। न जाने क्या-क्या बातें बनावेंगे। कहाँ-कहाँ मुँह छिपाते फिरेंगे हम।

स्त्री-1 ः क्या कहेंगे वो।

पुरुष-1 ः मेरी मरदानगी पर छींटाकसी करेंगे। तेरे बारे में बुरा कहेंगे। तुझे डायन कहेंगे।

स्त्री-1 ः कोई कुछ भी कहे। अलग ना होने दूँगी इसे। .....इसमें आस है मेरी।

पुरुष-1 ः ये बात किसी से छिपी ना रहेगी। दुनिया को पता चला तो बखेडा खडा हो जायेगा।

स्त्री-1 ः हो जाये बखेडा खडा। पर मैं इसे अपने से अलग ना होने दूँगी। चला जा यहाँ से। छोड दे अकेला मुझे.....मेरे दुर्भाग के साथ.....।

पुरुष-1 ः लेकिन ये अंडा.....।

स्त्री-1 ः (गुस्से से) मैंने कह दिया ना। ये मेरे पास रहेगा। जो होगा उसे मैं भोगूँगी।

स्त्री-2 ः देख अमली.....। बात को समझने की कोसिस कर।

स्त्री-1 ः बस, बहुत हुआ। अब मैं किसी की एक न सुनूँगी। मुझे अकेला छोड दो। छोड दो मुझे अकेला। (रोने लगती है।)

(प्रकाश लुप्त होकर पुनः आलोकित होता है। पुरुष-1 सिर झुकाये बैठा है। दरवाजे पर दस्तक होती है।)

पुरुष-1 ः कौन है.....?

स्त्री-2 ः मैं हूँ मंगू ताई। दरवाजा खोल लखमी।

पुरुष-1 ः (रोष से) क्या करने आयी है अब। सारे जमाने में तो ढिंढोरा पीट दिया तूने। जीना मुहाल हो गया है हमारा। जहाँ भी जाऊँ हूँ लोगों की मुस्कराती नजरें पीछा करे हैं। कोई कसर बाकी रह गयी है जो....।

स्त्री-2 ः चली जाऊँगी। पर दरवाजा तो खोल। कोई मिलने आया तुझसे। कहता है किसी बिदेसी कम्पनी से आया है।

पुरुष-1 ः नहीं मिलना मुझे किसी से।

स्त्री-2 ः अरे, खोल तो सही। किस्मत खडी है तेरे दरवाजे पर। तेरे सारे दुःख दर्द हरने.....।

पुरुष-1 ः कौन हरेगा मेरे दुःख। जब दुःख हरने वाले ने ही दुःख दिया है।

स्त्री-2 ः सारे दिन एक समान ना होवें लखमी।.....तू दरवाजा तो खोल।

(पुरुष-1 दरवाजा खोलता है। स्त्री-2 ओर काले सूटवाला पुरुष-2 दिखाई देते हैं।)

पुरुष-1 ः कौन हैं आप.....?

पुरुष-2 ः जी मेरा नाम हरीश है। लोग मुझे हैरी कहते हैं। अमेरिका से आया हूँ। हिन्दुस्तानी हूँ। वहाँ एक बहुत बडी मल्टीनेशनल कम्पनी में काम करता हूँ। जो कई तरह के बिजनेस करती है। मसलन दवाइयाँ बनाना.....। अस्पताल चलाना.....। न्यूज पेपर निकालना.....। कम्पनी का अपना एक विश्व प्रसिद्ध टी.वी. चैनल भी है.....।

पुरुष-1 ः लेकिन आप मेरे पास किसलिए आये हैं। मेरा इन सब से क्या वास्ता।

पुरुष-2 ः वास्ता है.....। हम यहाँ आफ फायदे के लिए.....।

पुरुष-1 ः (उत्सुकता से) मेरे फायदे के लिए.....।

पुरुष-2 ः जी हाँ.....। (झिझकते हुए) न्यूज पेपर के थ्रू हमें पता चला कि आपकी वाईफ यानी पत्नी ने अंडा दिया है। इट्स मिरेकल। यह एक आश्चर्यजनक घटना है। हमारा मेडिकल रिसर्च डिपार्टमेन्ट मानवता की भलाई के लिए अनुसन्धानरत है। यदि यह अंडा हमें मिल जाये तो हम पता कर पायेंगे कि ऐसा कैसे और क्यूँ हुआ। इससे स्त्री चिकित्सा को नयी दिशा मिलेगी.....।

पुरुष-1 ः यह तो निर्जीव है साब। आफ किस काम का?

पुरुष-2 ः ऐसा तुम्हें लगता है। मानव शरीर बहुत जटिल है। दिन-प्रतिदिन.....क्षण-प्रतिक्षण न जाने क्या-क्या घटता रहता है इसमें। क्या पता उसमें जीव हो।

पुरुष-1 ः इसमें जीव हो सकता है?

पुरुष-2 ः यह तो टेस्ट से ही पता चलेगा। इसीलिए तो हम यह अंडा लेना चाहते हैं। हम देखना चाहते हैं कि ऐसा क्यूँ हुआ। क्या इसमें मानव भ्रूण है या फिर कुछ और.....।

पुरुष-1 ः कुछ और.....?

पुरुष-2 ः कुछ और से मतलब है..... इंसान से हटकर कोई जीव.....।

पुरुष-1 ः यानी कोई पक्षी..... पशु..... साँप या झींगुर.....।

पुरुष-2 ः ईश्वर की लीला अपरम्पार है लखमीचन्द जी। कई वर्ष पहले इसी प्रकार का एक केस अफ्रीका में हुआ था। वहाँ भी एक औरत ने इसी तरह अंडा दिया था। जब अंडा फूटा तो उसमें से मुर्गी का चूजा निकला था। ये दृश्य उस समय कैद नहीं किया जा सका था। क्योंकि उस समय तकनीक इतनी विकसित नहीं थी। लेकिन आज हमारे पास हर तरह से मॉडर्न कैमरे मौजूद हैं। जिनसे एक-एक पल को कैद दिया जा सकता है। घटना को लाइव अर्थात् जीवन्त दिखाया जा सकता है।

पुरुष-1 ः आप यह कहना चाहते हैं कि इस अंडे में से भी कोई मुर्गी का चूजा...। इसमें तो हमारी बहुत बदनामी हो जायेगी साब। ऐसा हम नहीं कर सकते। हम उसे नष्ट कर देंगे साब।

पुरुष-2 ः (कुटिल मुस्कराहट) तुम्हें इसकी पूरी कीमत चुकायी जायेगी। इतनी जो तुमने सपने में भी नहीं सोची होगी।

पुरुष-1 ः कीमत...। इस निर्जीव चीज की भी कोई कीमत होगी? क्या कीमत देंगे आप लोग इसकी?

पुरुष-2 ः यही कोई पचास हजार डॉलर।

पुरुष-1 ः पचास हजार डॉलर। ये कितने रुपे होते हैं साब।

पुरुष-1 ः भारत की मुद्रा में लगभग बीस लाख रुपये।

पुरुष-1 ः (आश्चर्य से) बीस लाख रुपे....।

पुरुष-2 ः हाँ, बीस लाख रुपया। यह कोई छोटी रकम नहीं है बस तुम्हें अंडा हमें सौंपना होगा।

पुरुष-1 ः (चिंतित) लेकिन साब मेरी घरवाली इसके लिए तैयार ना होगी। कई रातों से वो इसलिए नहीं सो पायी है कि कहीं उस अंडे को मैं तोड ना दूँ....। फेंक ना दूँ।

पुरुष-2 ः सोच लो लखमीचन्द। एक बार मौका गया तो समझो लक्ष्मी गयी। अंडे का क्या। किसी भी पल टूट सकता है। एक बार टूट गया तो समझो किस्मत रूठ गयी तुमसे। ये लो मेरा पता और टेलीफोन नंबर। मैं आज और कल यहीं हूँ। तुम फोन करके मुझे बता सकते हो। कोई भी निर्णय करने से पहले इतना जरूर ध्यान रखना कि इतना पैसा बार-बार नहीं मिलने वाला।

पुरुष-1 ः ठीक है साब। मैं बताता हूँ आपको।

(पुरुष-2 बाहर चला जाता है। स्त्री-1 आवाज सुनकर आती है)

स्त्री-1 ः कौन था ये आदमी.....।

पुरुष-1 ः बडे अच्छे बखत पर आयी अमली। हमारे तो भाग ही खुल गये हैं। किसी बिदेसी कंपनी का साब आया था। अंडा चाहता है तेरा।

स्त्री-1 ः तूने क्या कही?

पुरुष-1 ः तेरे से पूछे बिना क्या कहता.....।

स्त्री-1 ः (सवालभरी नजरों से देखती है।).....।

पुरुष-1 ः वो कल तक इस शहर में है। फोन करने की कही है मुझसे। वैसे सौदा बुरा नहीं.....। एक बार तूने ही कही थी कि हमारा बच्चा हमारा भाग पलट देगा। मुझे तो लगे है किस्मत हमारे दरवाजे पर खडी है। इसे अंदर आने दे अमली। एक ही झटके में गरीबी का कोढ खतम हो जावेगा। सारे कष्टों से छुटकारा मिल जावेगा। तू ठंडे दिमाग से सोच।

स्त्री-1 ः क्या सोचूँ। मुझे दुःख हो रहा है कि मेरा मरद भी मुझे ना जान पाया। मेरे दरद को नहीं समझ पाया।

पुरुष-1 ः मैं समझूँ हूँ तेरे दरद को अमली।

स्त्री-1 ः दुनिया की नजर में औरत की क्या कोई इज्जत नहीं? कोई मरजादा नहीं? कोई मान सम्मान नहीं.....? जानवर और औरत में क्या कोई फरक नहीं?

पुरुष-1 ः मान सम्मान से पेट ना भरे अमली। दिमाग से पेट भरे है और दिमाग यही कहे है कि मौका ना चूक और साब से समझौता कर ले। बच्चा तो फिर हो जावेगा। हमारी जिन्दगी सँवर जावेगी। लत्ते-कपडे.... गहने ...जायदाद...। क्या नहीं होगा हमारे पास...। वो सब जो आज हमें सपना लगे है।

स्त्री-1 ः ये सब किस काम के। औरत का गहना तो उसका मान... उसकी कोख होये है। अगर वो ही फूटी निकल गयी तो संसार के सारे सुख किस काम के। ऐसा लगे है... तेरी नजरें बदल गयी हैं। तुझे पैसे के अलावा कुछ ना सूझ रहा। तेरे लिए ये अंडा सोने का बन गया है। जो मुझ जैसी मुर्गी ने दिया है और तू एक ही बार में सारा पैसा हासिल कर लेना चाहे है...।

पुरुष-1 ः ऐसा मत सोच अमली। बखत की बात है। आज अच्छे दिन हमारे सामने हैं। तू मेरी बात मान ले। ये अंडा उस साब के हवाले कर दे। मैं उस साब से फोन कर बात करूँ हूँ।

(पुरुष-1 स्त्री-1 के कंधे पर हाथ रखता है। स्त्री-1 उसके चेहरे की तरफ शून्यभरी नजरों से तकती है। प्रकाश लुप्त होकर पुनः आलोकित होता है। कार्यालय केबिन का दृश्य। पुरुष-3 कुर्सी पर बैठा हुआ लेपटॉप पर कार्य कर रहा है। पुरुष-2 का प्रवेश होता है।)

पुरुष-2 ः मे आई कम इन सर...।

पुरुष-3 ः येस...। अरे आओ हैरी.....। एनी गुड न्यूज।

पुरुष-2 ः जी सर। आपने जैसा कहा वैसा ही मैंने किया। उम्मीद तो है। अपना कॉन्टेक्ट नंबर दे आया हूँ।

पुरुष-3 ः गुड। वेरी गुड। डॉलर में बहुत ताकत है हैरी। इन्सान इसके लिए क्या कुछ नहीं कर गुजरता।

पुरुष-2 ः मुझे एक बात समझ में नहीं आयी सर.....?

पुरुष-3 ः कौनसी बात।

पुरुष-2 ः यही कि एक अंडे के लिए कंपनी पचास हजार डॉलर खर्च करने को तैयार है। ऐसा क्या है इस अंडे में।

पुरुष-3 ः (कुटिल मुस्कान) अथाह पैसा। इतना कि तुम सोच भी नहीं सको।

पुरुष-2 ः अथाह पैसा.....?

पुरुष-3 ः हमारे पास इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की ताकत है। सच और झूठ के घालमेल का अद्भुत वैज्ञानिक प्रयोग। हम इस प्रयोग से निर्जीव अंडे को डॉलर अंडे में बदल देंगे। सच पूछा जाये तो

इस अंडे में कुछ भी नहीं है। ज्यादा से ज्यादा एक मरा हुआ अविकसित भ्रूण होगा जो कैल्शियम के खोल से ढक गया होगा और अंडे की शक्ल में निकल आया होगा। पर हम मीडिया में इस खबर को इस तरह हाइप देंगे जैसे कोई आश्चर्यजनक घटना घटित होने वाली है। हम इसे सनसनीखेज और उत्तेजक बनाने के लिए आउट ऑफ प्रोपोशन पेश करेंगे। यानी जरूरत से कई गुना बढाकर रोमांच पैदा करेंगे।

पुरुष-2 ः (प्रसन्नता से) सर हम इस घटना की प्रस्तुति में मनोरंजन और मेलोड्रामा का छोंक डालेंगे। मसलन अधूरी औरत की कहानी। मैं कासे कहूँ। या फिर मेरा दर्द न जाने कोय.....।

पुरुष-3 ः स्मार्ट बॉय-। हैरी..... हम इस घटना को एक्सक्लूसिव रिपोर्ट बनाकर पेश करेंगे। हम व्यूअर्स को मजबूर कर देंगे कि.... वे इसे देखने के लिए अपने काम काज छोड दें। देखना तुम। जब भी यह स्टोरी टी.वी. पर आयेगी। हमारे चैनल की टी.आर.पी. आसमान छूने लगेगी।

पुरुष-2 ः वाह सर क्या आईडिया और क्या प्लानिंग है आपकी।

पुरुष-3 ः यह आइडियाज को एक्सप्लोर करने का ही युग है हरीश। तुम देखना स्पान्सर्स की लाईन लग जायेगी। तुम सोच सकते हो कि जब इस घटना का पूरी दुनिया में लाइव टेलीकास्ट किया जायेगा तो आसमान से धन बरसने लगेगा। यह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की अजीब ताकत है कि आदमी वही देखता है जो हम दिखाना चाहते हैं। एक ही झूठ को इतनी बार बोला जाये कि वह सच लगने लगे।

पुरुष-2 ः (झिझकता हुआ) लेकिन सर। आपको नहीं लगता कि यह काम नैतिकता के खिलाफ है। हमारे पेशे के प्रति बेईमानी है। एक औरत की कोख का इस तरह से अपमान। उसका ऐसा मजाक...। सिर्फ धन के लिए।

पुरुष-3 ः तुम भावुक हो रहे हो हैरी। हमारे लिए यह अंडा महज एक स्टोरी है। नैतिकता और धन इस बदलते आर्थिक युग में दो विपरीत ध्रुव हैं। दोनों के बीच कोई कनेक्शन नहीं। हमारे लिए हर चीज एक कमोडिटी है। तुम ज्यादा मत सोचो। बस उस आदमी को जल्द से जल्द मनाओ। चाहे इसके लिए कुछ और डॉलर भी खर्च करने पडे तो खर्च करो। इससे पहले कि किसी और चैनल को इस आइडिया की भनक लगे हमें यह काम पूरा कर लेना है। चाहे तो उन लोगों को बेवकूफ बनाकर अपने साथ ले चलो ताकि कोई दूसरा चैनल उसके पास पहुँच भी ना सके। लेकिन जरा सावधानी से।

पुरुष-2 ः आप आश्वस्त रहें सर। अगर जरूरत पडी तो उन्हें अपने साथ ले चलेंगे। यह प्रोजेक्ट हमारा है और हमारा ही रहेगा। (पुरुष-2 के मोबाईल की घंटी बजती है) हैलो.....हैलो.....। कौन.....। ओह लखमीचन्द जी.....। हाँ, बोलें। अच्छा..... आप तैयार हैं। ..आप उसकी चिन्ता ना करें.....। हम आप लोगों को अमेरिका ही ले चलेंगे.....। क्या कहा.....कोई टी.वी. वाले आये

थे.....। आप किसी से मिलियेगा मत.....। कोई धोखा ना कर दे आपसे.....। आपने उन्हें कुछ बताया तो नहीं..। वेरी गुड...। आप किसी से ना मिलें...। हम कल आफ घर आ रहे हैं। आप तैयार रहियेगा। ठीक है..रखता हूँ.....। ओके...।

पुरुष-3 ः क्या कुछ गडबड है...?

पुरुष-2 ः सर लगता है अन्य चैनल्स को भी इसकी भनक लग गयी दिखती है।

पुरुष-3 ः हैरी...। किसी भी तरह इन्हें कल तैयार करके अमेरिका ले चलो। वहीं सारे काम कर लेंगे।

पुरुष-2 ः सर क्या वो इतना जल्दी तैयार हो पायेंगे?

पुरुष-3 ः हमारे व्यवसाय में लालच और दबाव से कुछ भी करवाया जा सकता है।

पुरुष-2 ः आप चिन्ता ना करें सर। सब ठीक होगा। मैं सिचुऐशन पर नजर रखूँगा।

(प्रकाश लुप्त होकर पुनः आलोकित होता है। पुरुष-1 झोंपडी के सामने बेचैनी से टहल रहा है। पुरुष-2 का प्रवेश)

पुरुष-1 ः आइये साब...।

पुरुष-2 ः आप लोग क्या तैयार हैं.....?

पुरुष-1 ः हाँ, उसी की तैयारी है।

पुरुष-2 ः हमारे पास समय नहीं है। हमारी टीम आती होगी।

पुरुष-1 ः कैसी टीम?

पुरुष-2 ः इस घटना को कवर करने वाली टीम। इस टीम में डॉक्टर्स... कैमरामैन... टेक्नीशियन्स होंगे जो अपना-अपना कार्य करेंगे। अंडे को ले जाने के लिए अत्यंत सावधानी की जरूरत है। इसलिए इस बात का खास ख्याल रखा गया है कि उसे किसी प्रकार की क्षति ना पहुँचे। (पुरुष चिंतित मुद्रा में) आप सुन रहे हैं ना जो मैं कह रहा हूँ..।

पुरुष-1 ः ..... (चुप रहता है)

पुरुष-2 ः आप चुप क्यों हैं लखमीचन्द जी। कहीं आपका इरादा बदल तो नहीं गया।

पुरुष-1 ः ऐसी बात नहीं साब जी। गई रात से अमली ने दरवाजा नहीं खोला है।

पुरुष-2 ः तो फिर क्या बात है? कहीं मना तो नहीं कर दिया उसने। कोई मिला तो नहीं था उनसे?

पुरुष-1 ः कोई टी.वी. वाला आया था। वही कुछ कह गया है। तभी से बन्द है अन्दर।

पुरुष-2 ः कुछ बोली थी तुमसे...।

पुरुष-1 ः नहीं। पर ऐसा लगे है जैसे भीतर ही भीतर किसी बात से सुलग रही है।

पुरुष-2 ः कहीं यह आग हमें ना जला दे लखमी जी। इस प्रोजेक्ट पर हमारे लाखों डॉलर फँस चुके हैं। हम दुनिया में अपना प्रचार शुरू कर चुके हैं। अगर समय से कुछ नहीं हुआ तो हमारा कितना नुकसान होगा इसका अंदाजा तुम्हें नहीं है।

पुरुष-1 ः और मेरा नुकसान। वो सपने जो आप लोगों ने मुझे दिखाये हैं। टूट नहीं जायेंगे।

पुरुष-2 ः तुम कुछ करो। हमारी ओ.बी. वेन आती होगी। उसे बाहर बुलाओ। दरवाजा तोडो। सख्ती करो। कुछ भी करो पर जल्दी करो।

पुरुष-1 ः अगर सख्ती की तो हम अंडे से हाथ धो बैठेंगे। मैं कोसिस करता हूँ। (दरवाजा खटखटाता है) अमली... दरवाजा खेल। देख वो लोग आ गये हैं। बाहर निकल।

पुरुष-2 ः (अधीरता से)। अमली जी बाहर आइये। हम आफ दुःख में साथ हैं।

पुरुष-1 ः पागल मत बन अमली। तुझे समझाया तो था। जब अच्छे दिन हमारे द्वारे खडे हैं तो ऐसा अपसकुन मत कर। बाहर आजा।

(दरवाजा धीरे से खुलता है। स्त्री-1 बोझिल कदमों से बाहर निकलती है। बाल खुले हैं। कपडे अस्त-व्यस्त हैं।)

पुरुष-1 ः (आगे बढकर थाम लेता है) तू ठीक तो है अमली। मेरी तो जान ही निकल गयी थी। क्या करती रही सारी रात। आँखें लाल हो रही हैं और चेहरा सूजा हुआ है।

स्त्री-1 ः अपने आप से लडती रही। (रो पडती है।) सोग मनाती रही अपने अधूरेपन का।

पुरुष-2 ः तू रो क्यूँ रही है बावली।

पुरुष-2 ः आप रोये नहीं अमली जी। जल्दी से नये कपडे पहन लें। सारी दुनिया आपको टेलीविजन पर देखने वाली है। अपने बाल सँवार लें और हाँ, मुँह को धो लें।

पुरुष-1 ः हाँ, अमली जल्दी कर। टेम नहीं है अपने पास। मैं अन्दर से अंडा लेकर आता हूँ।

पुरुष-2 ः जी संभाल कर लाइयेगा।

पुरुष-1 ः आप चिन्ता न करें साब.....।

पुरुष-2 ः (अमली की तरफ देखकर) आप ठीक तो हैं अमली जी। आप नहीं जानती कि हमें अपना अंडा सौंप कर आप मानवता की कितनी बडी सेवा कर रही हैं। (अधीरता से) क्या हुआ लखमी जी? अन्दर ही जाकर बैठ गये क्या?

पुरुष-1 ः (बाहर आता है) कहाँ रखा है तूने अंडा। मुझे तो दिखाई नहीं दिया।

पुरुष-2 ः क्या कह रहे हैं आप.....? अंडा नहीं मिला....? जरा ध्यान से देखिये वहीं रखा होगा।

पुरुष-1 ः (स्त्री-1 की तरफ देखकर) कहाँ रख दिया है तूने अंडा। कहीं छिपा तो नहीं दिया।

स्त्री-1 ः मुझे नहीं पता।

पुरुष-1 ः तुझे नहीं पता? तो फिर किसे पता? मेरी परीक्षा ना ले अमली। तू जाने है मैं कितना गन्दा आदमी हूँ। जब अपनी पे आ जाऊँ हूँ तो.....।

स्त्री-1 ः मुझे पता लग गयी है तेरी गन्दगी.....। जान गयी हूँ कि तू कितना गन्दा आदमी है...। अपनी औरत की मरजादा को नीलाम करने वाला.....।

पुरुष-1 ः चुप हो जा बदजात। (बाल पकड लेता है) फिर नाचने लगी है..। एक बेकार अंडे के लिए इतना तमासा.....।

स्त्री-1 ः (बिफरते हुए) तेरे लिए होगा बेकार। मेरे लिए क्या है ये बात तू कभी नहीं समझ पायेगा। आदमी जो है।

पुरुष-1 ः मेरा खून नहीं है वो?

स्त्री-1 ः नहीं। मैंने रखा है उसे इस पेट में। सींचा है अपने खून से। अपनी साँसों से। अपनी ममता से।

पुरुष-1 ः बातें ना बना। टेम खोटी मत कर।

स्त्री-1 ः (शान्त रहती है).....।

पुरुष-1 ः चुप ना खडी रह। कुछ कर। तू मेरी उम्मीदों का गला इस तरह ना घोंट सके।

पुरुष-2 ः जरा संभल कर लखमीचन्द। कहीं बात बिगड न जाये। ऐसा करते हैं कि एक बार फिर हम दोनों उसे तलाशते हैं।

(दोनों झोंपडी के सामान को उलटने-पलटने लगते हैं। अंडे को ढूँढते हैं। नहीं मिलने पर हताश हो जाते हैं। पुरुष-1 स्त्री-1 को मारने लगता है।)

पुरुष-1 ः बता। कहाँ छिपा रखा है तूने उस अंडे को। जान ले लूँगा मैं तेरी।

स्त्री-1 ः हाँ। ले ले मेरी जान। गला घोंट दे मेरा। मार डाल मुझे। मुझे भी कलंक के साथ जिन्दा नहीं रहना।

पुरुष-1 ः हाँ। मार ही डालूँगा। जो अपने आदमी की ना माने उसका मरना ही बेहतर है।

स्त्री-1 ः चाहे तू मुझे मार डाल। लेकिन मैं अपनी कोख का मजाक नहीं बनवा सकती। नहीं बेचूँगी अपने हिस्से को मैं। औरत हूँ। औरत जात की मरजादा से समझौता नहीं कर सकती। नहीं कर सकती उसकी इज्जत को सरे बाजार नीलाम।

पुरुष-2 ः बहुत नुकसान हो जायेगा हमारा अमली जी। ऐसा मत करो।

स्त्री-1 ः (गुस्से से झपटती है) तू इन्सान है के हैवान। व्यौपारी कहीं का। चला है औरत की मरजादा खरीदने। उसका तमासा बनाने को। चला जा यहाँ से। छोड दे हमें अपने दुःख, दरद और सुख के साथ।

पुरुष-2 ः आप गलत समझ रही हैं। हम तो दुनिया को एक नई दिशा..... नई खोज देना चाहते हैं।

स्त्री-1 ः तुम सिर्फ खेलना चाहते हो। उघाडना चाहते हो एक औरत की मरजादा को। पैसा कमाना चाहते हो। औरत के मान को तुम क्या जानो।.....रुपयों का जाला पडा है तुम्हारी आँखों में।

पुरुष-2 ः प्लीज अमली जी ...।

स्त्री-1 ः वो अंडा तुम्हें कभी नहीं मिलेगा ब्यौपारी।

पुरुष-2 ः (हाथ जोडकर) ऐसा ना करें अमली जी। हम बर्बाद हो जायेंगे।

स्त्री-1 ः मुझसे ज्यादा क्या बर्बादी होगी। जिसकी दुनिया ही उजड गयी। बच्चा जो गया सो गया। मेरा तो पति भी मेरा ना रहा। उसे भी ब्यौपारी बना दिया तूने।

पुरुष-2 ः ऐसा ना करें। आप हमें वो अंडा दे दें। प्लीज...। प्लीज।

स्त्री-1 ः अब वो अंडा तुम्हें कभी नहीं मिलेगा क्यों कि.....

पुरुष-1 ः क्या किया तूने.....?

स्त्री-1 ः औरत जात के मान-सम्मान ..... उसकी कोख की लाज रखने के लिए मैंने उस अंडे को तोडकर जमीर में हमेसा-हमेसा के लिए दफन कर दिया।

पुरुष-1 व 2 ः (दोनों चीखते हैं) न... हीं..... हीं..... ही.....। (मंच पर गिर पडते हैं।)

(प्रकाश लुप्त हो जाता है। परदा गिरता है)

मृदुला बिहारी

जन्म ः 1 फरवरी, 1949

शिक्षा ः पटना वीमेन्स कॉलेज से स्नातक, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र और अंग्रेजी साहित्य (1996)

साहित्य ः उपन्यास - पूर्णाहुति-1990, कुछ अनकही-2007

नाटक संग्रह - दिल्ली अँधेरे से आगे-1993, सूर्यास्त से पहले, दीप से दीप जले, सीता-1994 (चरित)

कहानी संग्रह - अंतिम बिन्दु-1997, आखिर ये प्यार होता है क्या-2002

अनेक कहानियाँ एवं लेख धर्मयुग, सारिका, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कादम्बिनी, भाषा, दैनिक हिन्दुस्तान, आजकल, राजस्थान पत्रिका, आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

रचनाओं का उर्दू, तेलगू और गुजराती में अनुवाद।

पता ः बी-6-बी, पृथ्वीराज रोड, सी-स्कीम
जयपुर-302001 राजस्थान। फोन ः 94148-58930

दुआ

मृदुला बिहारी

पात्र्

सीमा ः नाटक की नायिका उम्र लगभग 32 वर्ष

संजय ः सीमा का पति उम्र लगभग 36 वर्ष

रोहन ः सीमा का पुत्र् उम्र लगभग 8 वर्ष

राधिका ः सीमा की पुत्री उम्र लगभग 6 वर्ष

मोची ः वृद्ध, जूते मरम्मत करने वाला

राजू ः एक गरीब लडका, स्वभाव से
मस्त और प्रसन्न रहने वाला उम्र लगभग 12 वर्ष

राजपाल ः एक चतुर धूर्त व्यक्ति उम्र लगभग 40 वर्ष

(सीमा दफ्तर से लौटकर बस से उतरती है। चलते-चलते उसकी चप्पल टूट जाती है। वह रुककर अपने रूमाल से चप्पल को पैर में बाँधती है। वहीं से वह देखती है कि सामने एक पेड के नीचे मोची बैठा जूता बना रहा है। उसके पास राजू बैठा है।)

सीमा ः (स्वगत) चलो, घर के पास टूटी, ऑफिस में टूटती तो एक और मुसीबत। (सीमा मोची के पास जाती है। उसे देखकर मोची के चेहरे पर ऐसी मुस्कान उभरती है जिससे स्पष्ट होता है कि मोची उसे भली-भाँति जानता है) मोची ! जल्दी से चप्पल में एक कील ठोंक दो..

मोची ः नौंस्कार मीम सा। अभी लो। एइ राजू। मीम-सा को पैर रखने के लिए फट्टा दे...

(राजू सीमा को फट्टा देता है। मोची दूसरे कामों को छोडकर उसका काम करने लग जाता है।)

सीमा ः (मोची से) रोहन के जूते बना दिये ?

मोची ः जरा-सा काम बाकी है उसमें। आप घर चलो, मैं लेकर आता हूँ...

(अब तक चप्पल तैयार हो जाती है) ये लो मीम सा। कल फुरसत से भेज देना, चमडा लगाकर पक्का कर दूँगा... (सीमा पर्स से दस रुपये निकालकर मोची को देती है। मोची अपने बटुए से खुले पैसे वापस करता है) ई लो छह रुपये।

सीमा ः (चप्पल पहनते हुए) रखो भाई।

मोची ः इसके सिरफ चार रुपये बनते हैं...

सीमा ः (जाते-जाते) रहने दो...

(सीमा चली जाती है।)

मोची ः राजू। ये मीम सा बडी भली हैं...

मोची ः (दार्शनिक अन्दाज में) छोरा। लोगों के अंदर बहुत गुस्सा जमा रहता है, जहाँ अपने से कमजोर पाया कि बस... (काम करते-करते मोची अपनी आँखें मलने लगता है।)

(दृश्य समाप्त)

(सीमा घर पहुँचती है। रोहन और राधिका स्कूल से लौटे हैं। वे स्कूल यूनीफार्म में ही हैं।)

रोहन ः मम्मी। आज देर क्यों कर दी?

सीमा ः मेरी चप्पल टूट गयी थी...

राधिका ः (शिकायत के स्वर में) मम्मी। तुम भैया से कह दो...

रोहन ः मम्मी। आज एक्जाम का रूटीन मिल गया। मण्डे को मेरा मैथ्स है...

सीमा ः रोहन। राधिका। अब पढो मन लगाकर।... पापा नहीं आये...?

राधिका ः नहीं।

सीमा ः उन्हें सारी दुनिया के लिए टाइम है। दोस्तों से बात करने का वक्त है, बस घर के लिए टाइम नहीं है...

(सीमा गैस पर दूध रखती है। फ्रिज खोलकर सब्जियाँ निकालती है, खाना बनाने की तैयारी करती है। कॉलबेल बजती है। रोहन दरवाजा खोलता है। संजय अंदर आता है।)

रोहन ः मम्मी। पापा आ गये...

सीमा ः आज बहुत देर कर दी? (राधिका पास आकर अपने पापा को प्यार से देखती है। सीमा राधिका को डाँटकर कहती है) पढने जाओ... (सीमा संजय को देखती है। उसका चेहरा कुछ उतरा हुआ है) तुमको क्या हुआ? तबीयत तो ठीक है न?

संजय ः हूँ... तबीयत तो ठीक है... इन दिनों नया अफसर आया है। एक-एक फाइल पर एक नयी तलब। ऑफिस में सब के नाक में दम किये रहता है...

सीमा ः जाने दो..., इस दफ्तर में अब रहना ही कितने दिन है।

सीमा ः आज राजपाल खाने पर आ रहा है...

संजय ः कौन राजपाल?

सीमा ः तुम्हें तो कुछ याद ही नहीं रहता...। हडसन एण्ड हडसन के एम.डी. का पी.ए. राजपाल। पन्द्रह को वहाँ तुम्हारा इण्टरव्यू है, इसने मदद कर दी तो...

संजय ः (कोफ्त होकर) सीमा, ये सब मुझे...

सीमा ः (समझाते हुए) जानती हूँ तुम्हें ये पसन्द नहीं... पर सोचो, यह जॉब तुम्हें मिल गयी तो हर महीने पूरे दस हजार ज्यादा मिलेंगे...

(लेकिन संजय के चेहरे का भाव नहीं बदलता है)

संजय ः तुमने उसे बुलाया क्यों?

सीमा ः ...तुम केवल अपना सोचते हो। यह नहीं सोचते कि घर में दो पैसे आएँगे तो हम सबको आराम होगा... (प्यार से) कभी-कभी मन मारना पडता है. (ठहरकर) तुम देखना, बहुत इण्टरेस्टिंग आदमी है...

संजय ः (ठण्डी साँस लेकर) अच्छा।

(सीमा साथ-साथ सब्जियाँ भी काट रही है और खाना बनाने की तैयारी भी कर रही है)

सीमा ः (प्यार से) संजय। जानते तो हो आजकल हर काम के लिए कितना पुश-पुल चाहिए...

(कॉल-बेल बजती है। सीमा दरवाजा खोलती है। बाहर मोची खडा है।)

मोची ः ये लो जूते। पालिस भी कर दिया है...

सीमा ः (व्यस्त भाव से) ठीक है। पैसे बाद में दे दूँगी, अभी तो.....

मोची ः कोई बात नहीं मीम सा।

(मोची चला जाता है। सीमा खाना बनाने लगती है। संजय बच्चों के पास आता है। दोनों बच्चे पढाई कर रहे हैं।)

राधिका ः पापा। एक्जाम के बाद हमारा स्कूल बन्द हो जाएगा...

(संजय वहीं बैठ जाता है)

संजय ः कितने दिन की छुट्टी है?

रोहन ः एक महीने की...

राधिका ः पापा। छुट्टी में कहीं घूमने चलिए न।

रोहन ः नहीं पापा। मेरे लिए एक साइकिल...

राधिका ः पापा। मेरे स्कूल में एक लडकी है मिलिसा, उसको क्रिसमस के गाने आते हैं... वे लोग क्रिसमस मनाते हैं... पापा। क्रिसमस क्यों मनाते हैं?

संजय ः इस दिन ईसा का जन्म हुआ था, लोगों को कष्टों से मुक्ति दिलाने वह सूली पर चढे थे। इस दिन सब ईसा की याद में अपने प्रियजनों के साथ खुशी मनाते हैं, उन्हें सौगात देते हैं...

रोहन ः पापा। इस बार हम लोग भी क्रिसमस मनायें...

संजय ः जरूर मनायें...

(संजय मुँह बनाये आता है, उसे ये सब इंतजाम पसंद नहीं)

सीमा ः फिर वही संजय। आखिर कोशिश से ही लोग आगे बढते हैं...

संजय ः ...लोग मेहनत और ईमानदारी से आगे बढते हैं...। ये...

सीमा ः यह मैं कब नहीं मानती संजय। पर अब कह दिया है तो... (कॉल बेल बजती है)... आ गया राजपाल।

(संजय दरवाजा खोलता है। राजपाल प्रवेश करता है)

संजय ः आइए।

सीमा ः नमस्ते।

संजय ः (बेमन से, स्वागत से शून्य, मात्र् औपचारिक भाव से) नमस्ते। बहुत राह दिखाई आपने...

राजपाल ः (हँसकर, खुले स्वर में) नमस्ते। माफी चाहता हूँ बन्धु।...क्या बताऊँ। महानगर की भाग-दौड, गमे-जन्दगी, गमे जॉब... यहाँ आ ही रहा था कि एम.डी. ने गाडी भेजकर बुलवा लिया, सोचा फोन करके आपसे माफी माँग लूँ, फिर ख्याल आया यहाँ तो...

संजय ः (कुछ-कुछ व्यंग्य से) आप तो बहुत बिजी रहते होंगे?

राजपाल ः (सीमा खाने की मेज ठीक कर रही है। ...इत्मीनान से, सोफे पर पैर फैलाकर) लोगों की भलाई करने में, उनका सही सम्फ कराने में मुझे लगता है कुछ कर रहा हूँ।

(संजय राजपाल से चिढ रहा है, पर साथ ही अपनी चिढ पर अंकुश भी लगा रहा है। सीमा ठण्डा पेय लेकर आती है)

संजय ः आप ठण्डा लेंगे?

राजपाल ः (बेतकल्लुफी से) जो आप खिला-पिला दें, मैं तो बस होस्ट की मेहरबानी पर जन्दा रहता हूँ... (सीमा लौट जाती है) संजय बाबू। यहाँ आपको क्या मिल रहा है?

संजय ः ज्यादा नहीं। बस गुजारे लायक...

राजपाल ः आफ यहाँ बुरी बात ये लगती है कि वहाँ जूनियर को ज्यादा दे रहे हैं, और जो पहले से हैं उन्हें आठ हजार पर लगा रखा है, उसमें फ्यूचर नहीं है...

(अब संजय का रुख बदलता है। वह राजपाल की बातों में कुछ रुचि लेता है।)

संजय ः हाँ, इसीलिए तो आपकी कंपनी में जाना चाहता हूँ...

राजपाल ः येस, येस। दिस इज अ प्रोफेशन ऑफ जेण्टलमैन। इसमें स्कोप भी बहुत है...

संजय ः हूँ... स्कोप है, मगर होगा तब न।

राजपाल ः ओफ्फोह। गजब करते हैं बन्धु। मैं हूँ न। सब होगा, कैसे नहीं होगा.? इसमें इतनी परेशानी की क्या बात है?

संजय ः हाँ, इण्टरव्यू की तैयारी तो कर रहा हूँ...

राजपाल ः कैसी तैयारी?

संजय ः पढ रहा हूँ...

राजपाल ः (बात काटते हुए) बन्धु। पढकर क्या करोगे? क्या होता है पढकर?

(भेद भरे स्वर में) यही तो आप नहीं जानते बन्धु। यह इण्टरव्यू वगैरा सब ढोंग है... एक फार्मेलिटी है... खानापूरी। मेहनत और योग्यता की बात तो दिखावा है, पर यह नाटक भी जरूरी है। मुझे तो सीधी बात मालूम है, चुने जाने वाला कैण्डिडेट पहले से तय होता है... (बीच-बीच में कोल्ड ड्रिंक पीता है)

संजय ः मैं तो बोर्ड में किसी को जानता नहीं...

राजपाल ः (लापरवाही से) उसकी आप क्यों चिंता करते हैं? अपने मिस्टर महेन्द्रा हैं न।

संजय ः मिस्टर महेन्द्रा?

राजपाल ः अरे वही। एम.डी. साहब। मैंने उनसे आफ बारे में बात की है। हण्ड्रेड परसेण्ट चांस है आपका।

संजय ः मगर बोर्ड में तो और भी मेम्बर्स होंगे...

राजपाल ः मिस्टर महेन्द्रा हैं चेयरमैन बोर्ड के। उनकी मर्जी के खिलाफ थोडे ही कोई जा सकता है। पार्टनर, बात ये है कि... (भेद भरे स्वर में, धीरे से) हर जगह अपना आदमी बिठाना पडता है। (सीमा आती है।)

सीमा ः आइए, खाना तैयार है...

(सभी खाने की मेज की तरफ बढते हैं।)

राजपाल ः (हँसकर) भाभी जी मुझे कल बुला रही थीं, मैंने कहा कल क्यों? कल किसने देखा है? (खाने की तरफ एक दृष्टि डालते हुए) ओह। खुशबू से लग रहा है कि खाना बहुत अच्छा बना है...

सीमा ः अच्छा क्या। बस यों ही...

राजपाल ः भाभी जी। मैं बहुत सोशल हूँ, भाई साहब को बता रहा था कि दूसरों के जीवन को सुंदर बनाने में मुझे बहुत खुशी होती है, मेरे जरिये मानवता की सेवा हो जाय...

सीमा ः पूड़ी लीजिए...

राजपाल ः (पूड़ी लेता है। सीमा को देखकर) क्या बताऊँ, इस दिल्ली शहर में हर संबंध के पीछे कोई-न-कोई स्वार्थ होता है। लोग रसातल में जा रहे हैं... आदमी का आदमी पर से विश्वास उठ गया है... (स्वर बदल कर सीमा से) अपने बन्धु बहुत सीधे हैं। इन्हें कुछ नहीं पता है कि नौकरी कैसे ली जाती है? रिकमेण्डेशन क्या होती है? (संजय से) बन्धु। दुनिया का भी होश किया करो।

(सीमा-संजय चुपचाप राजपाल की बातें सुनते हैं। संजय अब फिर बोर होने लगता है)

सीमा ः इसीलिए तो आपसे...

राजपाल ः आपने भी क्या बात कही। कोई और बडी बात कही होती।

संजय ः खीर लीजिए राजपाल साहब। (सीमा से) इन्हें खीर दो।

(सीमा खीर देती है।)

राजपाल ः आप दे रही हैं तो दीजिए... दीजिए साहब। मैं इन मामलों में नहीं शरमाता। (खाता है) मजा आ गया। (तृप्ति की डकार लेकर) अब उठा जाय...।

संजय ः हाँ।

(वापस दोनों ड्राइंग रूम में जाते हैं। सीमा टेबुल साफ करने लग जाती है।)

राजपाल ः क्या बजा है?

संजय ः सवा दस।

राजपाल ः (हल्का सा चौंककर) सवा दस।

(राजपाल जाने के लिए एकदम से उठ खडा होता है।)

संजय ः बैठिए। अभी जल्दी क्या है?

राजपाल ः बन्धु। ग्यारह बजे एक जगह पहुँचना है, यहाँ सब चाहते हैं कि हाजिरी बजाओ। वहाँ जाने का जरा भी मन नहीं... पर अपनी जरा-सी झक पर। (सीमा आती है) अच्छा भाभी जी। इजाजत दीजिए।

सीमा ः आपने यहाँ आने का कष्ट किया...

राजपाल ः ओफ्फोह। आप तो तकल्लुफ करने लगीं...

संजय ः (कुछ चिढकर) इतने बिजी होने के बावजूद...

राजपाल ः पार्टनर। यही सब बातें सुनकर बुरा लगता है... (बनावटी गुस्से में) ऐसे कहिएगा तो मैं इस घर में कदम नहीं रखूँगा। (स्वर बदलकर) कल को कोई मुसीबत मेरे ऊपर आती है तो क्या मैं आपसे मदद की आशा न करूँ? कहिए।...(सीमा-संजय चुप हैं)... इण्टरव्यू सत्रह को है न?

सीमा ः नहीं, नहीं, पन्द्रह को।

राजपाल ः (गलती महसूस करते हुए) ओह भूल जाता हूँ... (सोचते हुए) हम लोग का कोई टाइम तो रहता नहीं है, पता नहीं किस समय किधर... (दिमाग पर जोर देते हुए) कल। कल तो तीन-चार एपॉइण्टमेण्ट हैं। सर को कांफ्रेंस प्रिसाइड करना है,... उनका स्पीच लिखना है। कल तो काम इतना है कि मरने तक की फुरसत नहीं। अच्छा। ऐसा करते हैं इण्टरव्यू नौ बजे है न।

संजय ः नहीं दस बजे।

राजपाल ः (सोचते हुए) हूँ... दस बजे। ऐसा कीजिए आप ठीक नौ बजे वहाँ पहुँच जाइएगा, मैं आपको वहीं मिलूँगा। (आँखें झपकाकर) मैं सब करवा दूँगा... आपका इण्टरव्यू ऐसा शानदार होगा कि बाकी मेम्बर्स देखते रह जाएँगे... ठीक। अच्छा तो बन्धु, चलूँ। नमस्कार।

(संजय अविश्वास और विश्वास के बीच फँसा राजपाल को देख रहा है।)

(दृश्य समाप्त)

(सोने के कमरे में सीमा और संजय)

संजय ः यह आदमी यों ही बोल रहा था, कुछ करेगा-वरेगा नहीं।

सीमा ः विश्वास भी कोई चीज होती है...

संजय ः मुझे तो उसकी किसी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था, नम्बरी चालाक और घाघ लग रहा था। कैसी काइयाँ आँखें थीं उसकी।... कहाँ से पकड लायी इसे? यह तुम्हें मिल कहाँ गया?

सीमा ः मेरे दफ्तर में आया था किसी काम से... बात चली तो...

संजय ः मुझे ऐसे आदमियों से चिढ है। कहाँ से बात शुरू करता था और कहाँ पहुँचा देता था। इस तरह बोल रहा था जैसे मंच पर खडा भाषण दे रहा है... इस तरह बोलना अच्छा नहीं लग रहा था मुझे...

सीमा ः उसने ऐसा तो कुछ नहीं कहा...

संजय ः सब कुछ कहा नहीं जाता। लाइनों को पढ लेना ही पढना नहीं होता। बिटवीन द लाइन्स भी कुछ होता है...

सीमा ः (बिगडकर) असंतुष्ट रहना तुम्हारा स्वभाव बन गया है। कभी कहोगे मुझे तुम्हारे कैरियर के बारे में परवाह नहीं, कभी कहोगे तुम मुझे लेकर इतना परेशान क्यों रहती हो? (स्वर बदलकर) संजय। मुझे खुद यह सब पसंद नहीं, पर इस व्यवस्था और परिस्थिति ने हमें कुछ इस तरह का बना दिया है कि हम जहाँ समझौता नहीं करना चाहते वहाँ भी समझौता करना पडता है...

संजय ः (सीमा की बात से असहमत है, पर बात खत्म करने के अंदाज से) हूँ.

(सीमा अपने में खोई बोल रही है। संजय उठकर अपनी किताबें देखने लग जाता है। वह सीमा की बातों पर ध्यान नहीं देता। सीमा अपनी ही धुन में है)

सीमा ः हर महीने दस हजार हमारे लिए बहुत मायने रखता है... (कल्पना में खोकर) यह नौकरी तुम्हें मिल गयी न, तो छुट्टियों में कश्मीर जाएँगे, मुझे बर्फ से ढके पहाडों को देखने का बहुत मन है...

संजय ः मैं उस कमरे में पढने जा रहा हूँ, तुम बहुत थक गयी हो, सो जाओ।

(किताब लेकर संजय दूसरे कमरे में जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

(संजय और सीमा अपने कमरे में। संजय तैयार हो रहा है। आइने के सामने बाल बना रहा है। सीमा नहा-धोकर तैयार है। उसके हाथ में पूजा की एक छोटी-सी थाली है। संजय सीमा को बिना देखे पूछता है।)

(सीमा पूजा की थाली लिए खडी है।)

(संजय की नजर सीमा पर पडती है।)

संजय ः तुम्हें ऑफिस नहीं जाना क्या?

सीमा ः आज तुम्हारा इण्टरव्यू है न। इसीलिए छुट्टी ले ली। लो, प्रसाद खा लो।

संजय ः पूजा भी कर ली। (सीमा प्रसाद देती है। संजय प्रसाद खाता है) मेरे कपडे कहाँ हैं?

सीमा ः (कपडे लाकर देती है) ये लो। ड्राईक्लीनर से अच्छी तरह प्रेस करवा दिया है... (हल्की घबराहट के साथ) तुमने सब पढ तो लिया है न?

संजय ः (कपडे पहनते हुए हँसकर) इण्टरव्यू मेरा है और नर्वस तुम हुई जा रही हो... (टाई लगाते हुए) देखो। टाई का नॉट ठीक है न?

सीमा ः रुको (नॉट ठीक करते हुए) अँ... हँ... ठीक हो गया। खूब शान्त मन से इण्टरव्यू देना... अब जाओ, राजपाल ने तुम्हें नौ बजे बुलाया है...

(संजय कमीज की बाँह उठाकर घडी देखता है।)

संजय ः मॉय गॉड। साढे आठ। (संजय निकलता है।) ...ओ.के.

(संजय जाता है। सीमा हँसकर उसे विदा करती है।)

सीमा ः (स्वगत, पूरी आंतरिक सद्भावना के साथ) प्रभु इन्हें सफलता दे... (सीमा अंदर आती है। संजय के फैलाये सामान-तौलिया, चप्पल आदि ठीक करती है। बच्चों की पढाई की मेज साफ करती है। पर यह सब करने में उसका मन नहीं लग रहा है। वह एक किताब लेकर पढने बैठ जाती है। वह सोचती है-इससे अच्छा होता मैं दफ्तर ही चली जाती। उसका सारा ध्यान संजय के इण्टरव्यू की ओर है। इसी समय कॉल-बेल बजती है।)

सीमा ः (स्वगत) कौन हो सकता है इस वक्त?

(उठकर दरवाजा खोलती है। सामने दीन-हीन कातर अवस्था में वही मोची खडा है।)

सीमा ः तुम। मुझे तो कोई जूते नहीं बनवाने।

मोची ः (याचना-भरे स्वर में) नौंस्कार मीम सा। एक बिनती है आप से...

सीमा ः बिनती। किसलिए।

मोची ः (बहुत संकोच और दैन्य भाव के साथ) म्हारी घराली बहुत बीमार है, उसके खातीर दवाई चाहिए, बहुत मेहरबानी होगी जो आप पाँच सौ रुपये उधार दे दो...

सीमा ः पाँच सौ रुपये?

मोची ः (गिडगिडाकर) जी मीम सा। मजबूरी मा हूँ... (जेब से डॉक्टर का कागज निकालकर) जे देखो डागदर का रुक्का... दवाई न मिली तो... (सीमा असमंजस में पड जाती है।) आप बहुत दयावान हो, इस गरीब पर रहम करो... (सीमा सोचती है। संजय इण्टरव्यू देने गये हैं, आज के दिन)

सीमा ः पाँच सौ रुपये तो बहुत ज्यादा हैं।

मोची ः (अत्यंत दीन होकर)... बहुत मुसीबत में हूँ मीम सा...

सीमा ः हूँ... अच्छा। (सीमा अंदर से रुपये लेकर आती है।) ये लो पाँच सौ हैं पूरे...

मोची ः (अति कृतज्ञ भाव से) आपने गरीब दुःखियारे की अरज सुन ली, भगवान आपका भला करे... आपको सुख नसीब हो...

(सीमा उसे रुपये देकर जैसे सोच में पड जाती है।)

सीमा ः (कुछ रूखे स्वर में) कब तक वापस करोगे?

मोची ः (अति कृतज्ञ भाव से) चार-पाँच दिनों में जरूर लौटा दूँगा... भगवान आपका भला करे...

(मोची चला जाता है)

(दृश्य समाप्त)

(शाम चार-पाँच बजे का समय है। सीमा दोनों बच्चों को पढाकर उठती है। वह किताबें समेटती है। बच्चे खेलने जाने को उतावले हैं। रोहन के हाथ में हॉकी का बैट है। राधिका जूता पहन रही है।)

सीमा ः जाओ खेलने, मगर जल्दी आ जाना। इम्तिहान में केवल चार दिन रह गये हैं। मेहनत नहीं करोगे तो कैसे होगा...?

राधिका ः अच्छा...

(सीमा बच्चों के जाने के लिए दरवाजा खोलती है। बच्चे दौडकर भाग जाते हैं। उसी समय संजय आता है।)

सीमा ः (उत्कण्ठित स्वर में) आ गये संजय। कैसा हुआ इण्टरव्यू...। राजपाल मिला था? उसने कुछ हेल्प की। (संजय चुप है। उसके चेहरे पर एक तरह का निराशा भाव है।) क्या हुआ? कुछ बताते क्यों नहीं? सब ठीक हुआ न?

संजय ः (स्वर में ठण्डापन है) हूँ... नहीं, अच्छा नहीं हुआ...।

सीमा ः (अधीर होकर) क्यों? तुमने इतनी पढाई की थी? फिर वो राजपाल भी तो...

संजय ः सारी चीजें इतनी आसान और सीधी नहीं होती जितना तुम समझती हो.

सीमा ः राजपाल ने कुछ नहीं किया?

संजय ः राजपाल? मैं तो पहले ही जानता था, वो कुछ नहीं करेगा। वहाँ कहीं राजपाल का अता-पता भी नहीं था, वहाँ तो लोग इस नाम के आदमी को जानते तक नहीं... वो तो उस दिन बकवास कर रहा था, गलती तुम्हारी है...

सीमा ः (गलती स्वीकारते हुए) मैं कब कह रही हूँ कि मेरी गलती नहीं है। पर बताओ न। इण्टरव्यू कैसा हुआ?

संजय ः हूँ... जैसा जवाब देना चाहिए, वैसा नहीं दे पाया...

सीमा ः मुझे डर लग रहा था कि कहीं ऐन मौके पर कुछ गडबडी न हो जाय... (ठहरकर) कुछ उम्मीद है?

संजय ः नहीं, मुझे नहीं लग रहा। वहाँ मुझसे बहुत ज्यादा क्वालीफाइड कैण्डीडेट थे... और एक-दो तो बडी ऊँची सिफारिश लेकर पहुँचे थे.

सीमा ः फिर?

संजय ः (खीझकर) फिर क्या? सब तो बता दिया...

सीमा ः (जैसे अपने आप से कह रही हो) मैंने तो सपने देखने भी शुरू कर दिये थे... तुम्हें ये नौकरी मिल गयी और... (वहीं बैठकर संजय जूते और टाई खोलता है।)

संजय ः कितनी आसानी से राजपाल ने तुम्हें ठग लिया, यों तो बहुत अक्लमन्द बनती हो, पर पता नहीं कैसे चलते-फिरते पर विश्वास कर लेती हो...

सीमा ः (बिगडकर) तुम तो एक बात के पीछे पड जाते हो। अब जो हो गया उसे लेकर क्यों जान खाये जा रहे हो? (पश्चाताप के स्वर में) आज का दिन ही वैसा है... ठीक कहते हो, लोग मुझे बहुत आसानी से ठग लेते हैं। आज मैं... (बोलते-बोलते रुक जाती है।)

संजय ः अब बोलो भी...

सीमा ः वो बूढा मोची है न।

संजय ः जो फुटपाथ पर पेड के नीचे बैठता है?

सीमा ः हाँ, वही। आज मुझसे पाँच सौ रुपये उधार माँगकर ले गया।

संजय ः पाँच सौ रुपये। पर उसे उधार देने की जरूरत क्या थी?

सीमा ः वह इतना फटेहाल दिखता है, सारी तो पसलियाँ निकली हुई हैं उसकी.

संजय ः एण्ड यू आर सो लार्ज हार्टेड...

सीमा ः यह बात नहीं संजय। उस समय तुम इण्टरव्यू देने गये थे, सोचा ऐसे समय में अपने दरवाजे से किसी को निराश नहीं लौटना चाहिए। क्या पता इसी की दुआ लग जाय... मेरी माँ कहा करती थी कि गरीबों की दुआ-बददुआ लग जाती है...

संजय ः तुम कैसी इलॉजिकल बातें कर रही हो?

सीमा ः अब कैसे बताऊँ। तर्क की कसौटी पर ये भावनाएँ नहीं परखी जातीं, ये अनुभव की बातें हैं...

संजय ः ये किस जमाने की...

सीमा ः (सोचते हुए जैसे संजय ठीक कह रहा है) ...हूँ... एक बार मेरे मन में भी आया कि ना कर दूँ, लेकिन उसके कहने में 'कुछ' था, लगा सच कह रहा है...

संजय ः अरे यों ही शक्ल बनाकर आँखों में धूल झोंकते हैं लोग।

सीमा ः ठीक कहते हो। मैं बेकार उसके चक्कर में आ गयी...। पर ये मोची जाएगा कहाँ? कल ही जाकर उससे रुपये वापस ले लूँगी, कह दूँगी मुझे नहीं सुनना उसकी बीवी का बहाना-वहाना।

संजय ः (उकताकर) खत्म करो ये किस्सा। अभी न दिमाग साफ है, न मन का चैन। जरा एक प्याला चाय देना। बहुत थक गया हूँ...

सीमा ः अभी लायी...

(सीमा रसोई में जाती है।)

(दृश्य समाप्त)

(उस घटना के नौ-दस दिन बाद। रात का समय। बच्चे सो गये हैं। संजय और सीमा अपने कमरे में सोने की तैयारी में हैं।)

संजय ः रोहन, राधिका सो गये?

सीमा ः हूँ...

(संजय साइड-टेबुल पर रखी एक किताब उठाकर पढने लगता है।)

सीमा ः सुनो।

संजय ः क्या है?

सीमा ः देखो न। मैं पिछले दिनों से लगातार मोची की दुकान पर जा रही हूँ। उसने तो आना ही बंद कर दिया।...लगता है वहाँ से दुकान उठा ली...

(संजय इस बात पर ध्यान नहीं देता, वह फिर से किताब खोलकर पढने लगता है।)

संजय ः (पढते-पढते) अब क्या आएगा वह? रुपये लेकर चम्पत हुआ...

सीमा ः पडोस की मिसेज सलूजा बता रही थीं कि उनके पास भी गया था, उनसे भी पाँच सौ रुपये माँगे... पर उन्होंने दिये नहीं...

संजय ः सब तुम्हारे जैसे बेवकूफ थोडे ही होते हैं...

सीमा ः वो कह रही थी कि वह एकदम छाती पर सवार हो गया था, बडी मुश्किल से पीछा छुडाया...

संजय ः (किताब का पन्ना पलटते हुए) हमारे यहाँ गरीबी इतनी है कि...

सीमा ः (चिढकर) इसलिए शरीफों की जेब काट लो, लूट लो। (एकदम से क्रोधित होकर) आज वो राजपाल और बुड्ढा मोची मिल जाये तो शूट कर दूँ दोनों को। चोर, चार सौ बीस। हमें समझ क्या रखा है? (संजय किताब बंद कर सीमा को देखता है।) तुम नहीं समझ सकते संजय। इन अनुभवों ने मेरे भीतर की कोमलता को किस तरह कुचला है?

संजय ः दोष तुम्हारा है सीमा। उस नौकरी को लेकर तुम खुद इतनी कमजोर हो गयी थी कि उस वक्त कोई भी तुम्हें नौकरी के नाम से हिप्नोटाइज कर सकता था... (प्यार से समझाते हुए) लेकिन सीमा। ये पाँच सौ रुपये क्यों तुम्हें बोझ बन गये हैं?... सौ-दो सौ रुपये हम इधर-उधर खर्च कर देते हैं, समझ लो किसी गरीब की मदद कर दी।... मदर टेरेसा कहती हैं न, गरीब की सेवा भगवान की सेवा है...

सीमा ः बात रुपये की नहीं संजय। मुझे जिस चीज से चिढ है वह है रवैया..एटीट्यूड।

संजय ः अब जो हो गया उसे लेकर कब तक रोती रहोगी? छोडो... भूल जाओ उसे...

सीमा ः (क्रोध के आवेश में) नहीं, मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। गुस्सा, नफरत, हिकारत, धिक्कार... सब चलता रहता है, मैं तो...

संजय ः (बीच ही में, तंग आकर) तो क्या करोगी?

सीमा ः जो भी करना है, वह करना तो होगा न।

संजय ः सीमा। इतनी-सी बात के लिए...

सीमा ः इतनी-सी बात नहीं है संजय। लोग हमें धोखा दिये चले जाये और हम मुँह ताकते रहें। मैं मोची से रुपये लेकर रहूँगी, साफ-साफ कहूँगी मुझे रुपयों की जरूरत है... उसके दिमाग ठिकाने लगा दूँगी।

संजय ः (सीमा का क्रोध देखकर शांत भाव से) इस तरह भडकने से कोई फायदा नहीं... अब वो तुम्हें मिलेगा कहाँ? तुम भी कभी-कभी बेवकूफों जैसी बात करती हो।

सीमा ः इसमें बेवकूफी की क्या बात है? मैं मोची के घर जाऊँगी।

संजय ः (चौंककर) आर यू मैड। दिसिज ए लिमिट। रियली। हद करती हो। कोई ऐसी बात कहो जो समझ में आये।

(संजय उठकर वहाँ रखे पानी का जग उठाता है। गिलास में पानी डालकर पीता है।)

सीमा ः मोची के पास एक लडका अक्सर दिखता था, राजू। आज दिन में मेरी उससे बात हुई, उसे मोची के घर का पता मालूम है, कल मैं उसके साथ जाऊँगी। उसको मैंने झूठ कह दिया है कि मैं उसकी बीमार औरत को देखना चाहती हूँ...

संजय ः (कडे स्वर में) तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं...

सीमा ः (जिद के स्वर में) कुछ भी हो, मैं जाऊँगी... कहीं भीतर यह अपमान जैसा लगने लगा है मुझे...

संजय ः फिर वही बात। जान-बूझकर क्यों उलझनें पैदा करती हो? इस मुगालते में मत रहना कि वह रुपये लौटा देगा...

सीमा ः न दे रुपया। मगर उस खूसट को खरी-खोटी सुनाकर मन का गुबार तो निकाल लूँगी। कहूँगी इंसानियत धोकर पी गये हो? आदमियत मर गयी है?...

संजय ः डाँट-डपट से क्या होगा। बहुतों की जिन्दगी में ऐसी घटनाएँ घट जाती हैं।... अब क्या उसी को लेकर घुलती रहोगी?

सीमा ः (निश्चय के स्वर में) मैंने तो सोच लिया है, कल चार बजे राजू के साथ जाऊँगी...

संजय ः (बिगडकर) जो तुम्हारे जी में आये सो करो... लेकिन इससे कोई फायदा नहीं...

सीमा ः इन घटनाओं ने मेरी आत्मा पर चोट की है। इस झूठ और फरेब से मेरी सारी भावुकता उड गयी है।

संजय ः ये सारी फिलासफी अभी जरूरी है क्या? अब लाइट बुझा दो...।

(सीमा लाइट बुझा देती है) आओ इधर आओ।

(दृश्य समाप्त)

(सीमा बस स्टॉप पर खडी राजू की प्रतीक्षा कर रही है। उधर से राजू प्रसन्न मुद्रा में आ रहा है। राजू बातूनी किस्म का एक मस्त और अच्छा लडका है।)

सीमा ः आ गए राजू।

राजू ः हाँ।

सीमा ः मोची की बीवी क्या बहुत बीमार है...?

राजू ः हूँ, बेमार होगी, नहीं तो बाबा लागा (नागा) कभी नहीं करते। धूप हो या बरखा... आते जरूर हैं...

सीमा ः किसी दूसरी जगह तो दुकान नहीं लगा ली तुम्हारे इन बाबा ने?

राजू ः ना, ना, ओर जगा किदर है? इदर उनका जमा-जमाया धंधा है इसे छोडकर...

(इसी समय बस आ जाती है। बस आकर रुकती है। दोनों चढते हैं। सीमा एक सीट पर बैठती है। बगल में राजू बैठता है। सीमा यों राजू से बातें कर रही है, पर उसका ध्यान कहीं

ओर है। चेहरे पर गुस्से का भाव है, जिसे राजू बिलकुल नहीं समझ रहा है। वह तो सीमा को ले जाने के उत्साह में है।)

राजू ः बाबा बहुत अच्छे हैं, और काकी तो और भी अच्छी हैं...

सीमा ः (दोहरे अर्थ में) हूँ... इसीलिए तो देखने जा रही हूँ...

राजू ः एक बार मेरे पैर में जंग खायी एक कील चुभ गयी थी, बाबा ने कील निकालकर घाव साफ कर दिया, फिर पट्टी बाँधी, बाद में मेरे वास्ते एक पुरानी चप्पल की जोडी बनाकर दी, (अपने दोनों पैर उठाकर दिखाता है) जे रही... बाबा मुझे बहुत मानते हैं, जानते हैं न। मैं अनाथ छोरा हूँ। अब तो... (बात अधूरी रह जाती है) मीम सा आ गया इसटाप।

(बस से उतरते हैं। दोनों एक गंदे इलाके में पहुँचते हैं। इधर-उधर कूडे के ढेर... बदबू फैली हुई है। सीमा को गन्दगी महसूस होती है। पर राजू इनसे बेखबर गाइड बना आगे-आगे चल रहा है।)

इधर से... उधर कचरा है... बच के... यहाँ कीचड है। (वहाँ एक सार्वजनिक नल है। औरतें कपडे धो रही हैं। एक झोंपडी को दिखाकर) वो रहा बाबा का घर। (राजू और सीमा मोची के घर में प्रवेश करते हैं। मोची का घर एक दरिद्र आदमी के घर जैसा है। जो थोडा-बहुत सामान है वह बिखरा हुआ अस्त-व्यस्त पडा है। दीवार पर भगवान की तस्वीर वाला एक पुराना कैलेण्डर टँगा है। मोची बीमार, कमजोर, अवश-सा अपनी खाट पर पडा है। धीमे से)

राजू ः बाबा।

मोची ः (बिस्तर पर पडे-पडे) कौन? (खाँसने लगता है।)

राजू ः मैं हूँ राजू। जे मीम साब आयी हैं काकी को देखने...

मोची ः (आश्चर्य से विस्मित स्वर में) मीम सा...?

(सीमा खामोशी से चारों ओर नजरें घुमाकर देखती है। सीमा का सारा आक्रोश बहने लगता है।)

सीमा ः तुम्हारी औरत कैसी है मोची?

मोची ः (रोने लगता है) उसका तो भगवान के घर से बुलावा आ गया...

(रोते-रोते) मुझे अनाथ कर गयी...

सीमा ः (अत्यंत दुःखी होकर) क्या sss?

राजू ः हौसला रखो बाबा। तुम तो खुदई बेमार हो। देखो कित्ता झटक गये हो?

मोची ः मुझे कुछ नहीं होगा रे, मेरा मरना इत्ता आसान नहीं भाई... जाने कित्ते थपेडे और खाने हैं (दम फूलने लगता है)।

सीमा ः ये कैसे हो गया?

मोची ः (भर्रायी आवाज में) ओफ्फ। बडी तकलीफ पायी बेचारी ने। थी तो कमजोर, बेमारी का जुलुम बरदास ना कर सकी। ऊपर से दलिद्दर जाने का नाम नहीं, गरीब की लुगाई कहाँ तक झेले...

राजू ः क्या बेमारी थी?

मोची ः साँस की।

सीमा ः कब से बीमार थी?

मोची ः (कुछ सँभलकर) महीना से ऊपर हुआ, डागदर को दिखाया, उसने चार सौ रुपये की दवा लिख दी, कहाँ से लाता इत्ते रुपये। वो तो उस दिन आपने पाँच सौ रुपये दिये तब जाके एक सीसी दवाई खरीदी। दवाई ले के घर आया तो देखूँ उसकी साँस बुरी तरह चल रही है, बोल-वोल करीब-करीब बंद हो चुके... जाने मेरे लिए परान अटके थे...। जिया धक। अब क्या हो? कहूँ-अरी बोल न बावरी... झटपट मूँ में दवाई घाली। मीम सा। दवाई देते उसे चैन पड गया... (धीरे से मुस्कुराकर मानो कल्पना में लौटकर वहीं पहुँच गया हो) फेर मैंने उसको बताया कि एक भली-सी मीम सा ने रुपये दिये, उसी से दवाई लाया हूँ... आपको बहुत दुआएँ देने लगी... (खाँसी का दौर आता है। सीमा मौन स्तब्ध-सी सब सुनती है और संवेदना से भर उठती है) उसकी मौत ने बहुत थका दिया मुझे... (सीमा की आँखों से आँसू गिरते हैं) आप रो रही हैं।... आप तो साछात देवी हो, बखत पर...

सीमा ः नहीं, नहीं ऐसा मत कहो...

मोची ः दो दिन बाद उसकी हालत फेर गिरने लगी, वो चाहे मैं उसके पास बैठूँ, अब धन्धे पर ना जाऊँ तो पैसे कहाँ से आयें...? याँ तो रोज कमाना रोज खाना...

राजू ः डागदर को सस्ती दवाई लिखने के वास्ते क्यों नहीं कहा?

मोची ः कहा था राजू। उसने कहा-जैसा मरज है वैसी दवा लिख दी है... बहुत नाक रगडी रे... एक बार आ के बेचारी को देख लो... वो आने लायक नहीं है, मगर डागदर नहीं आया, देने के लिए पैसे नहीं थे न। लोग गरीब पर रहम नहीं करते रे...

(सीमा जो ये सब देख-सुन रही है, एकदम से द्रवित हो उठती है। यहाँ की भयावह सच्चाई को देखकर उसका पहले वाला भाव बिलकुल जाता रहा है। ...इधर राजू खडा-खडा सब सुन रहा है। मोची के दुःख से उसका भोला बालपन दुःखी होता है।)

सीमा ः (धीरे से, भीगे स्वर में) और रुपये उधार क्यों नहीं ले लिये...?

मोची ः बहुतों के आगे झोली फैलायी मीम सा। आफ पडोस में भी गया था (साँस फूलती है।) सभी साफ मुकर गये... हम छोटे मिनख हैं, किसके पास जायें? दुनिया में आप जैसी नेक औरतें सभी नहीं होतीं, आप देवी के औतार...

सीमा ः नहीं... नहीं...

मोची ः आफ रहम से चार दिन जी गयी लुगाई। बस याँ पडा-पडा वा (दवा की शीशी दिखाकर) खाली सीसी देखता रहता हूँ...वो खरीद पाता तो... (एक ठण्डी साँस लेकर चुप हो जाता है। ठहरकर, खोया-खोया ऐसे कहता है मानो अपने आप से कह रहा हो)...जिनगी बहुत प्यारी थी उसे... जानती थी उसके पीछे मैं अनाथ हो जाऊँगा... म्हारे वास्ते अपनी जिनगी झोंक दी।

राजू ः किस दिन मौत हुई?

मोची ः सोमवार को। मैं याँ था भी नहीं। लौटा तो देखा निसपरान पडी है... छुआ तो ठण्डी बेजान... (आँखों से आँसू गिरने लगते हैं) फिर बस्ती वालों ने जुटकर सब किया, मुझे होस कहाँ था? (ठहरकर) आफ रुपये वापिस करने हैं मीम सा।

सीमा ः नहीं, नहीं रुपये की कोई बात नहीं। तुम काम पर नहीं आये तो मुझे फिकर हुई इसलिए...

मोची ः (अभिभूत होकर) आप मेरे वास्ते भगवान का रूप धरकर आये हो, मेरे खातिर इस गरीब की मडई में आये, धन्न भाग म्हारे। और मैं ऐसा पागल पडा-पडा सोचूँ जरूर... मीम सा मेरे लिए गालियाँ निकाल रही होंगी, मैंने टैम से रुपये नहीं लौटाये, मुझे बेइमान समझ रही होंगी...

(सीमा विमूढ-सी खडी सुन रही है।)

सीमा ः नहीं, ऐसी बात नहीं। ...मुझसे बोलो, क्या करूँ कि तुम्हारी तकलीफ कम हो...

(मोची खाँसता है।)

मोची ः दमे ने फेर जोर कर दी... राजू। इधर तो आ। (राजू मोची के पास आता है।) मेरी धोती की अण्टी में सौ रुपये हैं, निकालना जरा... (राजू मोची के कमर में बँधी धोती से एक तुडा-मुडा सौ का नोट निकालता है। मोची राजू से रुपये लेकर सीमा की ओर बढाता है) मीम सा। ये लो। काट-छाँट के रुपये बचाये हैं, रख लो, बाकी के काम पर जाऊँगा तो पूगता कर दूँगा, आपकी रकम कहीं नहीं जाएगी...

(अब सीमा मोची को मोची नहीं कह पाती। मुँह से स्वतः बाबा निकलता है।)

सीमा ः अभी रहने दो बाबा। पहले तुम ठीक हो जाओ...

मोची ः (आँसू पोंछते हुए) बाल सफेद हो गये, पर आज तक ऐसी मीम सा ना देखी...

(मोची को मितली आती है।)

राजू ः बाबा। भूखे हो? ऐसी मितली तो खाली पेट आती है...

मोची ः (खोखली हँसी हँसकर) तू जानता है... तीन दिन से पेट में अन्न का दाना नहीं गया... (खाँसने लगता है।)

राजू ः तुम्हें तो भूख लगी होगी। ठैरो पानी देता हूँ... (राजू घडे की तरफ जाता है) यहाँ कोई पानी तक को नहीं पूछता...

मोची ः रे छोरा। याँ अपना पेट पालने से लोगों को फुरसत नहीं है, फेर मेरा...

(राजू घडे से पानी निकालता है। उसमें बिलकुल पानी नहीं है।)

राजू ः घर में पानी तक नहीं...

मोची ः (अत्यंत कातर होकर) क्या घर। घर तो घरैतिन के साथ गया...

(सीमा अपना बैग खोलकर सौ रुपये का नोट निकालती है)

सीमा ः (राजू से) राजू। ये लो रुपये। बाबा के लिए डबल रोटी और बिस्कुट ले आओ... और इस घडे में पानी भरकर रख दो....।

(राजू रुपये लेकर निकल जाता है। इधर सीमा की चेतना लौटती है। वह विमूढता की स्थिति से उबरती है। वहाँ पडी अस्त-व्यस्त चीजों को जगह पर रख देती है। ये देखकर मोची अभिभूत हो जाता है। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगते हैं। नाक बहने लगती है। वह अवरुद्ध कण्ठ से कहता है।)

मोची ः मीम सा।...

सीमा ः (बहुत प्यार से सांत्वना देते हुए) बाबा। इस तरह हिम्मत नहीं हारते। दिल छोटा मत करो... जल्दी अच्छे हो जाओ... (ठहरकर, संकोच से, मानो पूछना मुनासिब है भी या नहीं) तुम्हारे बच्चे...?

मोची ः थे। दो छोरा, दो छोरी हुए थे, सब भगवान के प्यारे हो गये...

सीमा ः (उस दुःख को समझते हुए) ओह।

(राजू एक पैकेट डबल रोटी, छः-सात छोटे बिस्कुट के पैकेट, एक पोलीथीन में और दूसरे हाथ में पानी से भरा घडा लेकर अंदर आता है। सीमा उसके हाथ से डबल रोटी और बिस्कुट के सारे पैकेट लेकर मोची के सिरहाने रख देती है। राजू घडे से एक गिलास पानी लेकर

रख देता है। राजू खुले पैसे सीमा को देता है, उसे भी सीमा मोची के सिरहाने रख देती है। मोची आश्चर्य, प्रसन्नता और कृतज्ञता की मिली-जुली भावना से देखता है।)

सीमा ः अब चलती हूँ बाबा। राजू से अपना हाल-चाल भिजवाते रहना...

मोची ः (खुशी और अहसान से भीगे स्वर में) आपने इस दीन-दुःखियारे पर इत्ती किरपा की। भगवान आपका भला करे। (आवाज जैसे दिल की गहराई से निकल रही हो) आपको मेरी दुआ लग जाय...

(धीरे-धीरे सीमा और राजू वहाँ से निकलते हैं।)

(दृश्य समाप्त)

(सीमा घर पहुँचती है। संजय बाहर ही खडा उसका इंतजार कर रहा है। सीमा के चेहरे पर एक गंभीरता है। वह अभी भी मोची के घर हुए अहसासों से मुक्त नहीं है।)

संजय ः सीमा। कहाँ चली गयी थी। कितनी बडी खुशखबरी लाया हूँ...

(सीमा को देखते ही वहाँ रोहन और राधिका आ जाते हैं।)

सीमा ः (न समझ पाते हुए) कैसी खुशखबरी, संजय...?

संजय ः (बहुत खुश होकर) मुझे हडसन एण्ड हडसन में नौकरी मिल गयी...

सीमा ः (आश्चर्य से) क्या? सच? सच। सच कह रहे हो?

संजय ः हाँ, हाँ। विश्वास नहीं हुआ क्या? (अपनी जेब से ऑफिस का पत्र् निकालकर दिखाते हुए) ये देखो, एपाइण्टमेण्ट लेटर। अगले महीने की पहली तारीख को ज्वॉयन करना है... (सीमा खामोश खडी है। उसके कानों में मोची की आवाज गूँजती है। 'आपको मेरी दुआ लग जाय...') तुम चुप क्यों हो? (सीमा मौन है।) तुम मोची के घर गयी थी। मैंने मना किया था। रुपये नहीं लौटाये न। छोडो भी, क्यों तुम...

सीमा ः (बीच में ही गंभीर होकर) नहीं, संजय। हम ही भीतर से स्वार्थी हैं, अपने ही सुख-दुख में अंधे हुए रहते हैं... (सीमा की आँखों से आँसू गिरने लगते हैं।)

संजय ः तुम रो रही हो...? (सीमा को अपनी बाँहों में घेरकर संजय अंदर लाता है। सीमा की अनुभूति से अनजान वह अपनी सफलता की खुशी में डूबा कहता है) सीमा। मैं हैरान हूँ। समझ नहीं पा रहा हूँ कि आखिर इतने दिग्गज प्रत्याशियों में से मेरा सलेक्शन कैसे हो गया?

सीमा ः (अपने में खोयी कहती है... आवाज मानो हृदय की अतल गहराई से आ रही हो) ...हूँ...वे-पाँच शब्द। (सीमा के कानों में मोची के शब्द गूँजते हैं..... 'आपको मेरी दुआ लग जाय..... आपको मेरी दुआ लग जाय...')

(आवाज ध्वनित-प्रतिध्वनित होकर गूँजती है।)

कंठहार

डॉ. ओंकारनाथ चतुर्वेदी

वंश भास्कर के रचयिता सूर्यमल्ल मिश्रण के जीवन पर आधारित (ध्वनि-नाटक)

प्रथम दृश्य

(पार्श्व में नगाडे और तुरही का वादन)

(शहनाई-नगाडों की पार्श्व ध्वनि)

संगीतमय ः इला न देणी आपणी, हालरियाँ हुलराय,

वाचन पूत सिखावै पालणे, मरण बडाई माय।

घोडा घर, ढालाँ पटल भाला थम्भ बणाँय।

जे ठाकुर भोगे जमी, और किसो अपणाँय।।

बिण मरियाँ बिण जीतियाँ धणी आविया धाम।

पग पग चूडी पाछटूँ, तो रावतरी जाम।।

उद्घोषिका ः टोटे सरका भीतडा, घाते ऊपर घाँस।

स्वर वारी जै भटझूँपडा, अधपतिया आवास।।

वाचक स्वर ः महाकवि सूर्यमल्ल, राजस्थान की काव्य परम्परा के वे अद्वितीय जगमगाते मणि रत्न हैं, जिनकी आभा डेढ शताब्दी बीत जाने के बाद भी साहित्य कानन को सुवासित कर रही है। वरेण्य वीर रसावतार महाकवि सूर्यमल्ल, आन-बान-शान पर मर मिट जाने वाली उस राजस्थानी संस्कृति के प्रतीक हैं, जिनकी कविता में खून की गरमाहट है, शब्दों में ओज है।

उद्घोषिका ः अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक शब्द के बीच में झाँकता हुआ उनका राष्ट्र प्रेम है, जिसकी स्वतंत्रता के लिए ही कवि ने जन्म लिया था और जिसकी स्वतंत्रता के लिए ही उसने अपने जीवन का समस्त अर्जित यश, साधन सुविधा, राज्याश्रय और आजीविका को देश की आजादी के सपने के लिए न्योछावर कर दिया।

(वाचन के साथ क्रमशः मंच पर प्रकाश बढता जाता है)

(समय रात्र्-दूर कुत्तों और सियारों के रोने की आवाज, वायलिन की करुण ध्वनि)

वाचक स्वर ः 10 मई, 1857 की शुभ घडी में मेरठ की फौजी छावनी में जिस क्रांति या बगावत का सूत्रपात हुआ, उसकी परिणिति अत्यंत निराशाजनक रही। समयपूर्व-असंगठित,

नेतृत्वहीन यह जन आक्रोश हजारों निरपराध लोगों की अमानुषिक हत्याओं के काले साये में सिमट गया।

(वायलिन की करुण ध्वनि)

(दरवाजे का कुंडा खटखटाने की आवाज चूँ..... चर्र र र..... के साथ दरवाजा खुलने की आवाज..... फिर पदचाप का स्वर)

सूर्यमल्ल ः (टूटा हुआ, उदासी भरा स्वर) कौन? भीतर लिवा लाओ।

एक स्वर ः हुकुम! दीवान जी पधारे हैं।

सूर्यमल्ल ः (पदचाप का स्वर)

इस वक्त! आधी रात के बाद!! मुझे ही कहलवा दिया होता।

जीवण लाल ः आप पधारते ही कहाँ हैं? कविराज! पिछले दो साल से आफ दर्शन ही

(दीवान) दुर्लभ हो गये हैं।

सूर्यमल्ल ः अब सब कुछ समाप्त हो गया है। सदैव सुलभ रहूँगा। कैसे कष्ट किया आपने? (उदासी के साथ)

दीवान ः पिछले कुछ दिनों से 'वंश भास्कर' की लिखावट दरबार के पास नहीं पहुँच रही है। इसी विषय को लेकर महाराव जी बहुत चिन्तित हैं।

सूर्यमल्ल ः वंश भास्कर तो मैं इस देश की आजादी के लिये लिख रहा था। मैं सोचता था, देश आजाद हो जावेगा। 'वंश भास्कर' स्वतंत्र् भारत का प्रथम इतिहास ग्रंथ बनेगा, प्रथम पृष्ठ बनेगा, लेकिन वह तो भूमिका मात्र् रह गया। (टूटे स्वर में) सारा सपना छिन्न-भिन्न हो गया। क्या करूँगा लिखकर.....? चाहो तो उसे नष्ट कर देना।

दीवान ः यह क्या कह रहे हैं आप? हाडा वंश के इस गाथा गायन के साथ आपकी प्रतिभा की अक्षय कीर्ति भी जुडी हुई है। उस महान् कृति को पूर्णता के आशीर्वाद से क्यों वंचित कर रहे हैं आप।

सूर्यमल्ल ः कैसी पूर्णता? कौनसा आशीर्वाद? दासता के अपयश से मंडित, इस खंडित यश कीर्ति को लेकर मैं क्या करूँगा? (तीखे स्वर में, सच बताना दीवान जी, क्या वास्तव में हम इतने कमजोर हैं, जो सात समन्दर पार से आये मुट्ठी भर फिरंगियों के सामने टिक नहीं सके? क्या हमने एक दूसरे की पराजय में हिस्सा नहीं बँटाया? क्या कोटा की क्रांति को करौली की सेना ने नहीं कुचला? कौन राजा स्वामी भक्त है और कौन है गद्दार, इसका निर्णय कौन करेगा? इस जन क्रांति ने तो सारे प्रजापालकों को बेनकाब कर दिया है-क्या इस सत्य को लिखवा सकोगे?)

दीवान ः सारा विद्वत् समाज आफ अगाध ज्ञान और पांडित्य के सामने नतमस्तक है, यह बूँदी का सौभाग्य है कि आप जैसा महान् कवि उस कालजयी रचना में संलग्न है। मैं दरबार की ओर से यह अनुरोध लेकर आया था कि अब आप स्वस्थ्य मन से 'वंश भास्कर' को पूर्णता प्रदान करने की कृपा करें।

सूर्यमल्ल ः दीवान जी! मैंने वंश भास्कर लिखने से पूर्व एक प्रमुख शर्त रखी थी कि मैं सत्य ही लिखूँगा। मुझे चापलूसी और 'ठकुर सुहाती' के लिए मजबूर नहीं किया जायेगा। इस पर भी आप सन् 1857 की क्रांति के कडवे सच को हूबहू सुनना चाहें तो मैं प्रस्तुत हूँ, लेकिन उम्मेद सिंह और बुद्ध सिंह चरित्र् लिखने के बाद कायरों का उपसंहार लिखने में मन नहीं लगेगा।

दीवान ः ऐसा क्यों सोचते हैं आप? कुछ अंतराल के बाद सब ठीक हो जायेगा।

सूर्यमल्ल ः नहीं दीवान जी, नहीं। एक प्रश्न मुझे रात दिन नहीं सोने देता और शायद जीवन भर नहीं। क्या वास्तव में हम इतने कमजोर और शक्तिहीन थे जो मुट्ठी भर फिरंगियों के सामने भी नहीं टिक सके?

(कुछ देर का मौन थोडा रुककर)

सूर्यमल्ल ः इस विराट् देश की एकता और अखंडता के लिए इन विलासी शासकों ने ओछे अहंकार को विसर्जित क्यों नहीं किया? विराट् परिवर्तन की उस बेला में ये खोखले सामंत महलों की मुंडेरों पर ही क्यों खडे रह गये? कौन उत्तर देगा इनका? भविष्य ही कलुषित कर दिया देश का, इन लोगों के असहयोग ने।

दीवान ः स्वस्थ्य चित्त बनने की कोशिश कीजिये कविराज।

सूर्यमल्ल ः कैसे? बतलाओ कैसे? निरन्तर पराजय के समाचारों ने मुझे भीतर से तोड दिया है, जीवन भर जिस वीरत्व की उन्मेष भरी छवि की कल्पना करता रहा, लेकिन एक क्षण भी उसके दर्शन नहीं कर सका। मेरी प्रतीक्षा निष्फल गई..... निष्फल गई..... (बुदबुदाता है)

दीवान ः अब आप कुछ दिनों के लिए किले में ही निवास करें। थोडा वातावरण बदल जायेगा।

सूर्यमल्ल ः लेकिन इतिहास के पृष्ठों पर जो गुजरा है, क्या वह भी बदल जायेगा? क्या घटनायें बदल जायेंगी? क्या उनके निष्कर्ष बदल जायेंगे? मैं तो नर सिंहों की अभ्यर्थना में पूजा की थाली सजाकर खडा था, मुझे क्या मालूम था कि मैं जिस युग में जन्मा उसमें नरसिंह नहीं, सियार और गीदड पैदा होते हैं। दीवान जी! इतिहास सिर्फ रक्त की स्याही में तलवार की धार डुबोकर लिखा जाता है। मुझसे अब असत्य, निष्प्रभ गाथा गायन नहीं हो सकेगा। क्षमा करना।

(संगीत की करुण ध्वनि-घोडों की टापों का स्वर)

दीवान ः मैं दरबार को आज की भेंट का सार, उनसे अर्ज कर दूँगा।

(चलने को तत्पर हो जाते हैं-सूर्यमल्ल टोकते हुए)

सूर्यमल्ल ः ठहरो! दीवान जी ठहरो!! सच बतलाना कि दरबार तक मेरे पत्र् क्यों नहीं पहुँच रहे हैं? दरबार से मुझे अपनी भेंट करने का समय क्यों नहीं दिया गया? यह कौन बीच में बाधा डाल रहा है? कौन मेरे और अन्नदाता के बीच दूरी पैदा कर रहा है?

(कुछ देर मौन रह जाते हैं और फिर सूर्यमल्ल के दोनों कंधों पर अपना हाथ रखकर बोले)

दीवान ः क्या करोगे जानकर? वो तो बीते कल की बातें हैं?

सूर्यमल्ल ः मुझे सच्चाई जानने का अधिकार है और बताने का दायित्व आप पर।

दीवान ः छोडो पुरानी बातों को जो बीत गई सो बात गई।

सूर्यमल्ल ः वह बीता हुआ कल ही तो मुझे शूल की तरह चुभ रहा है।

दीवान ः तो सुनो! अप्रगट रूप से हमारे ही सामंतों और बूँदी राजघराने को जो मदद पहुँचाई गई थी उस घटना ने स्वतंत्रता संग्राम असफल होने पर रावराजा के सामने गहन दुविधा और अपमान की स्थिति पैदा कर दी है।

सूर्यमल्ल ः क्या हुआ?

दीवान ः कंपनी सरकार का हुक्म था कि बागियों को किसी प्रकार की मदद न की जाय, न ही रसद मुहैया की जाये। लेकिन तात्या टोपे ने बूँदी नगर में प्रवेश किया था-किले के दरवाजे तक बागियों की फौज आई थी-चुगलखोरों ने सारे प्रमाण कंपनी सरकार को भेज दिये। फलस्वरूप दरबार को अपमानित होना पडा और बूँदी रावराजा का ओहदा घटा दिया गया।

सूर्यमल्ल ः मेरी जागीर जब्त करके मुझ पर 300/- रुपये का आर्थिक दंड क्यों लगाया गया? क्या मैं बूँदी रियासत का भगौडा मुजरिम हूँ?

दीवान ः नहीं! बिल्कुल नहीं!! दरबार की दृष्टि में तो आप तब भी देव मंदिर के अक्षत दीपक थे और आज भी हैं। जिससे स्वतंत्रता का देव मंदिर आज भी प्रकाशमान है। अन्नदाता ने सार्वजनिक रूप से घोषित आर्थिक दंड का भुगतान तो अपने जेब खर्च से किया है।

सूर्यमल्ल ः तो मुझे हवेली छोडने को क्यों मजबूर किया गया? मुझे माँ जी साहब के रावले के तहखाने में क्यों रखा गया?

दीवान ः आपकी सुरक्षा के लिये? कंपनी सरकार ने जो बागियों की लिस्ट दरबार को भेजी थी उन सात बागियों में आपका भी नाम था, जिनको फाँसी देनी थी। जागीर जब्त कर तोप से उडा देने का फरमान था। लेकिन उस लिस्ट में आपका नाम सूरज सिंह राजपूत लिखा था और दरबार हर कीमत पर आफ प्राणों की रक्षा करना चाहते थे।

सूर्यमल्ल ः तो क्या सातों बागियों को तोप से उडा दिया गया?

दीवान ः हाँ! एक नाटक के रूप में। शाम के अँधेरे में आटे के सात पुतले किले की दीवार खडे करके-पॉलिटिकल एजेंसी के कारिन्दे के सामने तोप से उडाने की रस्म अदा कर दी गई और छः मरजीवणों को रात के अँधेरे में रियासत पार करा दिया गया और आपको हवेली से निकाल कर रावले में सुरक्षित जगह पर। दरबार बराबर आपकी देखभाल के प्रति सतर्क रहे हैं।

सूर्यमल्ल ः मैं देख रहा हूँ और सुन भी रहा हूँ कि फिरंगियों ने बगावत को बडी बेरहमी से कुचल दिया है। मुझे इसी बात का डर था कि यदि इस बार फिरंगी को पराजित कर बाहर नहीं कर सके तो राष्ट्रीय अस्मिता संकट में पड जायेगी और वही हुआ। अब तो मुझे भी अकेले ही भटकने दो।

दीवान ः आप अभी यहीं राजकीय देखभाल में विश्राम करें। यही दरबार की इच्छा है। कोटा में दीपावली के रात से ही फिर खूनी संघर्ष हो गया है। पोलिटिकल एजेन्ट बर्टन का अपने पुत्रें और नौ कारिन्दों सहित कत्ल कर दिया गया है। कोटा के बागी महराब खाँ और मुंशी जयदयाल को कंपनी सरकार बगावत के सहयोगियों को बूँदी में ढूँढ रही है। दरबार पर भयंकर दबाव है। इन दिनों आप शांत रहें, विश्राम करें। चारों तरफ चुगलखोर घूम रहे हैं।

सूर्यमल्ल ः अब मुझे 'वीर सतसई' की रचना पूर्ण करने के लिए स्वतंत्र् कर दिया जाये। मैं आज भी उसी रजवट का उत्कर्ष देखने को लालायित हूँ।

दीवान ः उस रजवट का उन्मेष देखने के लिए अब आप शांत मन से 'वंश भास्कर' को पूर्णता दें। जिसे आपको बारह राशियों में लिपिबद्ध करना था। 'वंश भास्कर' का सूर्य तो छठी राशि पर ही अटका पडा है।

(एक क्षण तक दीवान जी का चेहरा ताकते हुए मौन रहते हैं)

(फिर बोले)

सूर्यमल्ल ः उस पर स्वतंत्र्ता संग्राम की विफलता का सूर्यग्रहण लग गया है। दीवान जी! 'वंश भास्कर' मात्र् राजवंशों का गाथा गायन नहीं है वह भारतीय राष्ट्रीय चेतना का 'आल्हाखंड' है। सूर्य के आलोक में असत्य का अंधकार टिक नहीं सकता। लेकिन अभी तो अंधकार ही जीत रहा है। स्वतंत्र्ता की भोर बहुत दूर खिसकती जा रही है।

दीवान ः दरबार आफ यशस्वी ग्रंथ को पूर्ण रूप में देखना चाहते हैं। ताकि आफ काव्यत्व की प्रतिमा सुरक्षित रह सके।

सूर्यमल्ल ः मैं एक पराधीन, पराजित भारत का महाकवि बनकर क्या करूँगा? मेरे सपनों की राख पर यशस्वी बन, जी कर क्या करूँगा? दीवान जी! इस असफलता ने सामन्ती व्यवस्था के भाग्य पर कील ठोक दी है-परतंत्रता की।

दीवान ः आप तो सदैव उल्लास, उमंग और नित्य नूतन प्रेरणा के प्रेरक रहे हैं। आफ काव्यत्व में ओज है, उत्साह है, देश का भविष्य है, संस्कार और संस्कृति के सुरक्षित बीज हैं, उन्हें विकसित कीजिये।

सूर्यमल्ल ः दीवान जी! अन्नदाता से कहना कि कुछ लोगों को पेडों पर लटका कर कुछ को तोपों के गोलों से उडाकर 'बागी' कहकर बदनाम किया जाता है मैं उनकी शहादत को प्रणाम करता हूँ। मैं रोज उनकी दिवगंत शहीद आत्माओं के लिए तर्पण करता हूँ।

(थोडा रुककर-उत्तेजना में टहलते हुए)

सूर्यमल्ल ः मैं जानता हूँ जो आज के बागी हैं वे भावी भारत के स्वतंत्रता सेनानी कहलायेंगे और जो आज कंपनी सरकार के फरमाबरदार बने सुरक्षा प्रदान कर रहे वो क्या कहलायेंगे? ये इतिहास जाने! लेकिन देशी राजे-रजवाडों ने जनता को इस बार भयंकर रूप से निराश किया है। अगली बार जब भी स्वतंत्रता आंदोलन होगा-कमान जनता के हाथ में होगी और राजा महाराजा परिचारक के रूप में।

दीवान ः कविराजा! आप भविष्य द्रष्टा हैं। आप भारत के भविष्य को पढ सकते हैं-आप इतिहासकार हैं, हम तो आफ सामने बहुत बौने हैं, जो कल के 'मलबे' में ही भविष्य ढूँढ रहे हैं, सुरक्षित हैं, इसलिये खुश हैं और आज आपकी सुरक्षा में ही हम सबकी खुशी है।

(दीवान जी ताली बजाते हैं-परिचारक प्रणाम करता है)

परिचारक ः जी हुकुम! पालकी तैयार है।

(दीवान जी प्रणाम कर लौट जाते हैं)

(सारंगी का करुण स्वर फिर उभरता है)

दृश्य परिवर्तन

उद्घोषक ः प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कुशल नेतृत्व के अभाव में बिखर गया। क्रूर दमन स्वर चक्र का दौर चला। स्वतंत्रता सेनानियों को बागी करार करते हुए सरे आम पेडों पर लटका कर फाँसी दी गई या तोपों से उडा दिया गया। सामंती व्यवस्था स्तब्ध तथा मौन रह गयी।

द्वितीय वाचकः कंपनी सरकार का चहेता बनने के लिए पद और धन के लालच ने चुगलखोरों को सक्रिय कर दिया। अपनी वफादारी दिखाने के लिए वे एक से बढकर एक सनसनीखेज अफवाहें फैलाने लगे। सर्वत्र् डर था कि कंपनी सरकार सहयोग के अभाव में किसी भी राजा को बेदखल कर सकती है। भय और आतंक के उस दौर में दोनों के बीच 10 साल तक भेंट नहीं हुई।

प्रथम स्वर ः रावराजा को सुरक्षित रखने के लिए गढ में अपने पास बुला लिया और आग्रह करने के बाद उन्हें पुनः हवेली लौटा दिया। एक दिन जीवन की संध्या में सूर्यमल्ल ने दरबार को पत्र् लिखा था-थाँ के ताँई इष्ट की सपथ छे, अंतिम दर्शन देबा की, कृपा करो-और रावराजा राम सिंह हवेली पधारे.....

(क्रमशः प्रकाश मंच पर बढता जाता है-सूर्यमल्ल सरस्वती के चित्र् के सामने मौन खडे हैं-दीपक जल रहा है)

(संगीत की करुण ध्वनि)

टनाटन टन टन टन टन टन टन, घंटे की आवाज

सूर्यमल्ल ः (कवि का स्वगत कथन-बडबडाते हुए)

सबके सब हिमालय के गडे ही निकले। वक्त आने पर सब मुँह छिपा गये। अरे कहाँ गये वो बप्पारावल, राणा सांगा, प्रताप के उत्तराधिकारी? कहाँ गये वो सुरजन, भोज, भाव सिंह के बेटे-जो मुगलिया सल्तनत के परचम को लाशों पर ढोने वाले वे वीर राजपूत किस माँद में जाकर छिप गये? तुम्हारे ही देश में, तुम्हारी ही धरती पर मुट्ठी भर फिरंगियों को नहीं उखाड सके? (खाँसते हुए) धिक्कार है तुम्हें, तुम्हारी शूरता को, जिसने कंपनी सरकार की चौखट पर राजमुकुट गिरवी रख दिये और तलवारों को रेत में गाड दिया-जैसे शतुरमुर्ग अंधड से बचने के लिए रेत में चोंच सहित गर्दन छिपा लेता है और समझता है कि वह अब सुरक्षित है, पर कब तक सुरक्षित रहेगा। क्या यह राजा सुरक्षित है? हे भगवती! वीरत्व का कैसा परिहास है यह?

(कुछ लोगों के चलने की आवाज-पालकी के कहारों का स्वर-फिर पदचाप)

सूर्यमल्ल ः कौन? (थका हुआ स्वर) ये ढेर सारी मशालें क्यों ले आये हो? कौन आया है?

चौकीदार ः कविराज! राजवैद्य मनसराम जी के साथ दरबार भी इधर ही पधार रहे हैं।

(कुछ लोगों के पदचापों की आवाज-ताली का स्वर-पदचापों के लौटने की आवाज)

रामसिंह ः कैसे हो कविराज जी? राजवैद्य कह रहे थे, पिछली कुछ रातों से तुम

(दरबार) सो नहीं पाते हो, अनिन्द्रा रोग का विकार हो गया है। क्या बात है? क्या मन में.....

सूर्यमल्ल ः नहीं रावराजा जी। मन के संशय तो सब समाप्त हो गये हैं। (काँपते स्वर में) यह आखिरी समय होता ही ऐसा है। पूरा जीवन, उसकी घटनायें, गली-गलियारे, शिकार, महफिलें पलकों पर झूलती रहती हैं, आँखें खुली रह जाती हैं। गये बीते दिन-सभी तो खडे रहते हैं, यादों की तिजोरी का कर्ज चुकाने के लिये? रात-दिन बाँटता रहता हूँ फिर भी पात्रें की भीड खडी रह जाती है-मैं अपलक सबको देखता रहता हूँ। (प्रलाप करता है) लो बारात आ गई है, वे मुझे बाराती बनाकर ले जाना चाहते हैं। (हँसने का उपक्रम करता है-खाँसी आ जाती है)

राजवैद्य ः शांत कविराज! शांत!! रुग्ण अवस्था में मन पर बोझ नहीं डालना चाहिए अब आप विश्राम करें।

सूर्यमल्ल ः वैद्य महाराज! अब अल्पविश्राम की घडी तो बीत गई, अब तो पूर्ण विराम की घडी नजदीक आ गई है। मैं खुद भी पिछले दस वर्ष से अनंत विश्राम की शीतल छाया ढूँढ रहा हूँ (काँपते स्वर में) थक गया हूँ, बेहद थक गया हूँ।

राजवैद्य ः अब आप औषधि का सेवन करें और आराम करें। दरबार अब लौट जाना चाहते हैं।

सूर्यमल्ल ः ठहरो अन्नदाता! ठहरो श्री हुजूर रावराजा जी!! मेरे मन पर बढ रहे बोझ को तो उतारते जाओ। मुझे बेहद अफसोस है कि मैं अपना वचन पूरा नहीं कर सका (अटकते हुए) 'वंश भास्कर' अपूर्ण ही रह गया। यश किसे अच्छा नहीं लगता? लेकिन मेरा मन ही देश की पराजय से समझौता नहीं कर सका। देश की आजादी ही मेरा स्वप्न था, मेरा लक्ष्य था और मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए में जिस भास्कर की, सूर्य की आराधना कर रहा था (रुँधे कंठ) उसे खग्रास लग गया। सचमुच फिरंगी 'राहू' मेरे देश की आजादी के सूर्य को निगल गया। घोर अंधकार है, देश पराभूत, पराधीन है, माँ गुलामी की बेडयों में कसमसा रही है और हम जीवित हैं?

रामसिंह ः शांत हो जाओ कविराज! मन से ग्लानि दूर करो।

सूर्यमल्ल ः ये ग्लानि कैसे दूर होगी? हम तो भावी पीढी के भी अपराधी हैं। तुच्छ, क्षुद्र स्वार्थों ने हमें बौना कर दिया, देश खण्ड-खण्ड हो गया। इतिहास हमें भीरु, डरपोक के रूप में याद करेगा। धिक्कार है हमें! धिक्कार है!!

रामसिंह ः शांत हों कविराज! शांत!! यह उत्तेजना दुःखदायी होती है। वक्त के सामने सबको घुटने टेकने पडते हैं और हमें भी (लंबी श्वास खींचकर) लेकिन सच बतलाओ क्या बूँदी की रियासत समग्र देश की आजादी की लडाई लड सकती थी? जब सारे देश की बगावत थम गई

तब कोटा में भी सिपाही विद्रोह हुआ, लेकिन उस प्रयास का क्या अर्थ निकला? सारे बलिदान, सारे प्रयत्न बेकार गये। एक और पराजय, और बर्बादी। क्या तुम भी-

सूर्यमल्ल ः नहीं, महाराज जी, बिल्कुल नहीं। मैं तो सामंतों की भूमिका देख रहा हूँ।

वक्त आने पर हम सभी कायर निकले। देश के प्रति अपना फर्ज पूरा नहीं कर सके। कुछ राजा जीवन का मोह तो पहले छोडते-देश स्वयं संगठित हो जाता। हजारों बागी प्राण न्योछावर कर देने को तैयार थे पर वक्त पर कोई सामने नहीं आया। तात्या भूखे चीते की तरह उत्तर से दक्षिण तक दौडता रहा-लेकिन इन बडे राजघरानों ने कोई मदद नहीं की। भविष्य की अंधकारमय कर दिया इन्होंने देश का.....

वैद्यराज ः लेकिन बूँदी से तो तात्या जी को पर्याप्त सहायता दी गई थी-आपसे तात्या जी की भेंट.....

(बीच में टोकते हुए)

रामसिंह ः रुग्ण व्यक्ति को विश्राम करना चाहिए और आप औषधि नियमित रूप से लें।

सूर्यमल्ल ः मेरी औषधि तो आप हैं, श्री जी। मेरी समस्त दुर्बलताओं और पूर्वाग्रहों के साथ आपने मुझे निभाया है। आभारी हूँ। (खाँसता है)

रामसिंह ः तुम मेरे गुरु भाई, सहयोगी मित्र् हो कविराज। तुम ही तो हाडा वंश की प्रतिष्ठा हो। राजपूताने के इतिहास के साथ जो न्याय कर्नल टाड नहीं कर सका, वह न्याय तुमने पूरी निष्ठा के साथ किया है।

सूर्यमल्ल ः लेकिन वह अपूर्ण कृति है, खण्डित प्रतिमा पूजनीय नहीं होती।

रामसिंह ः वह अपूर्णता ही, पूर्णता का परिचायक होगा। तुमने जिस मयूख पर अपने इतिहास को छोडा है, शायद उसके बाद का इतिहास लिखा जाने वाला ही नहीं है, तुम बिल्कुल सही थे सूर्यमल्ल, सौ प्रतिशत सत्य थे, तुम्हारी सत्यनिष्ठा को प्रणाम करता हूँ। तुम राजकवि नहीं, महाकवि वीर रसावतार हो, आने वाली पीढयाँ इसी रूप में तुम्हारा स्मरण बडे फक्र से करेंगी।

सूर्यमल्ल ः (विगलित स्वर) यह मेरा सौभाग्य है कि आपने मुझे अपना सान्निध्य दिया।

रामसिंह ः यह सौभाग्य हमारा है, इस शताब्दी का है, इस भूमि का है, जिसने महाकवि वीर रसावतार सूर्यमल्ल मिश्रण को जन्म दिया है-जो सरस्वती का वरद पुत्र् है और हाडा कुल वंश का गौरव भी।

सूर्यमल्ल ः अन्नदाता। क्षमा करना। मैं इस महान् भाव की रक्षा नहीं कर सका।

रामसिंह ः (भारी कंठ से) नहीं महाकवि नहीं, हम जैसे साधारण व्यक्ति तुम्हारे महान् गरिमामय व्यक्तित्व को नहीं पहचान सके। क्षमा तो हमें माँगनी है तुमसे, आने वाले युग से, जिसके तुम प्रेरणा स्रोत बनोगे।

(विनम्रता से सूर्यमल्ल के दोनों हाथ अपने हाथ में पकड लेते हैं)

रामसिंह ः कविराज! मैं हृदय से क्षमा प्रार्थी हूँ और आज दीपावली की रात को क्षमा पर्व मनाने आया हूँ।

सूर्यमल्ल ः अन्नदाता! आप यह क्या कह रहे हैं? आप तो मेरे आश्रयदाता हैं, मेरी प्रेरणा हैं, मेरा सर्वस्व हैं। क्षमा तो बार-बार मुझे माँगनी चाहिये कि मैं अपना वचन पूरा नहीं कर सका।

रामसिंह ः और हम इसलिये माँग रहे हैं कि विगत वर्षों में तुमने बहुत पीडा भोगी है और हम चाहते हुए भी नहीं मिल सके। हमारी विवशताओं को समझना-पर हर पल, हर क्षण हम तुम्हारे हित की मंगल कामना करते रहे हैं। (गला भर आता है)

(सूर्यमल्ल अपना मस्तक खुली हथेलियों पर रख देते हैं)

सूर्यमल्ल ः स्वतंत्रता के लिए लडी गई इस जंग ने मुझे आंदोलित किया था। मैं समझ रहा था कि आजादी की भोर अब बहुत निकट है। पर नैराश्यपूर्ण पराजय और अवसान ने मुझे भीतर से तोड दिया है। आपका विश्वास पाकर आज जीवन धन्य हो गया है।

रामसिंह ः यह तो दिख रहा है कि तुमने तो उस निराशा में, पीडा में अपना ही शरीर गला लिया है। स्वास्थ्य का ध्यान रखना।

सूर्यमल्ल ः मैं हवेली के एकांत में आत्मनिर्वासित सा जी रहा हूँ। जिसका कवि रूठ कर चला गया है। असत्य लेखन वाचन के लिए माँ सरस्वती ने वर्जित कर दिया है। मेरी पीडा को भी समझना। (गला भर आता है)

(सारंगी का करुण संगीत)

रामसिंह ः वास्तव में तुम सही थे-मुट्ठी भर राजा महाराजा भी न्योछावर हो जाते तो इतिहास की दिशा ही बदल जाती, जनता का बलिदान व्यर्थ नहीं जाता। वास्तव में तुम अपने चिंतन से कालातीत हो गये और हम जीते जी काल कलवित।

(संगीत ध्वनि) (चलने की मुद्रा में प्रणाम करते हैं)

सूर्यमल्ल ः (मनुहार के स्वरों में) ठहरो अन्नदाता! आप पहली बार हवेली पधारे हैं। आज दीपावली की रात है। कल दरीखाना सुशोभित होगा। मेरी तरफ से नजर भेंट भी तो लेते जाओ।

(उठकर लाल कपडे में लिपटी एक पोथी कुछ सिक्के रखकर भेंट करते हैं)

सूर्यमल्ल ः यह मेरी आत्मबलिदानी वीरों के लिए लिखी गई अंतिम भेंट है और आपकी मेरी मित्रता की सौगात भी।

रामसिंह ः (उत्सुकता से पोथी खोलते हैं और देखते ही हर्षित हो जाते हैं।) अरे, यह तो आपकी यशस्वी ग्रंथ 'वीर सतसई' है। आपकी कीर्ति का अमर स्तम्भ है।

सूर्यमल्ल ः हाँ अन्नदाता! यह मेरी आरतीमाला है, जो नरपुंगवों के अभिनंदन के लिए लिख रहा था। यह भी अधूरी रह गई-माँ सरस्वती रूठ गई।

रामसिंह ः सूर्य कभी अस्त नहीं होता, निरंतर प्रकाशमान रहता है। तुम्हारी अखण्ड प्रतिभा का प्रकाश स्तंभ 'वंश भास्कर' सदा प्रकाशमान रहेगा। वक्त हमें भूल जायेगा-परन्तु युग-युग के सहचर बने प्रकाशदीप के रूप में स्मरण किये जाओगे, तुम सत्य ही युग पुरुष हो! युग निर्माता!! वास्तव में तुम सरस्वती पुत्र् हो। माँ शारदा के कंठहार हो। (यह कहकर रामसिंह अपने गले से कंठहार उतार कर सूर्यमल्ल के गले में डाल देते हैं) दोनों गले मिलते हैं।

(नाटक समाप्ति की सूचना)।

खुर्शीद नवाब

जन्म ः 5 अक्तूबर, 1938 ई. (उदयपुर)

शिक्षा ः एम.ए., बी.एड., अदीब, माहिर, कामिल (उर्दू उपाधि)

साहित्य ः सपनों की सौगात (गीत संग्रह), खार भी गुलजार भी (गजल संग्रह), फूल भी कुछ शूल भी (काव्य संग्रह), पूत सपूत (कहानी संग्रह), कौन हमारा राजा? (बाल कहानी संग्रह), अदालत शाला, हम दुश्मन संसार के (बाल नाट्य संग्रह), हम खयाल (उर्दू नाटक संग्रह), प्रेरणा, खून के आँसू, अनिर्णित (हिन्दी संपूर्ण नाटक), अन्य समस्या (हास्य व्यंग्य नाटक संग्रह), बंधनों के बीच (लघु नाटक संग्रह) हुकम, बडे-हुकम (हास्य व्यंग्य राजस्थानी नाटक), नूर-ए-नबी (नात संग्रह धार्मिक)।

सम्फ ः 54, वर्मा कॉलोनी (ओल्ड), सेक्टर न. 9, हिरण मगरी, उदयपुर

मो. 9214465301

साक्षात्कार

खुर्शीद नवाब

(हास्य-व्यंग्य लघु नाटक)

पात्र्

पुरुष पात्र्

वल्लभदासवरिष्ठ लिपिक

कन्हैया वल्लभदास का बडा पुत्र्

छितर लाल वल्लभदास का दूसरा पुत्र्

भवानी कार्यालय का चपरासी

पोस्टमैन डाकिया

नायर मद्रासी युवक

जगपाल सिंह पंजाबी युवक

कन्नु भाई पाठक गुजराती युवक

अफगान खाँ राजस्थानी युवक

स्त्री पात्र्

जानकी वल्लभदास की पत्नी

सुरजीत कौर जगपाल की पत्नी

बीना बहन कन्नु भाई की पत्नी

स्टेज का पर्दा खुलने पर सामने एक मामूली सरकारी कार्यालय की सेटिंग नजर आती है। कुर्सी, टेबल व अन्य कार्यालय की सामग्री अस्त-व्यस्त दिखाई पडती है। कुछ समय पश्चात् वल्लभदास (हेड क्लर्क) का प्रवेश होता है जो केवल धोती-बंडी पहने हुए है। लगता है कार्यालय व मकान पास-पास ही है। इनका तकिया कलाम है 'जानकी वल्लभ सीता राम' और अनायास मुख से निकलने वाले वाक्य में प्रमुख शब्द की भाषा का नाम जैसे हिन्दी में..... उर्दू में..... अंग्रेजी में आदि-आदि अवश्य उच्चारित करते हैं।

वल्लभदास ः (प्रवेश करते हुवे) जानकी वल्लभ सीता राम... (इधर-उधर कार्यालय में देखकर चौंकते हैं)..... मैं कहीं अन्य कार्यालय में तो नहीं आ गया हिन्दी में... मेरा मतलब है, ये कोई दिगर दफ्तर तो नहीं उर्दू में... आई, मीन, इट इज नोट माई ऑफिस अंग्रेजी में... (पेड, पेन स्टेण्ड, फाइल आदि उठाते हुए आवाज लगाता है) अरे छीतर लाल... (गुस्से में) जानकी वल्लभ सीता राम...

छीतर ः (हकलाते हुवे प्रवेश) ज ज ज ज जी पिता जी...

वल्लभदास ः (छीतर का कान पकड कर) तुम लोगों ने फिर गधामस्ती करके, कार्यालय की रूपरेखा ही बदल दी हिन्दी में...

छीतर ः म म म म मैंने कुछ नहीं किया प प पिता जी...

वल्लभदास ः तब फिर क्या तेरे पिताश्री ने किया है गुस्से में?

छीतर ः ज ज जी पिता जी... नहीं-नहीं... ब ब बडे भैया ने किया है...

वल्लभदास ः (मुँह चिढाकर) बडे भैया ने किया है... कहाँ है वो दुष्ट उद्दण्डी हिन्दी में...

छीतर ः अ अ अपने क क कमरे में पप पढ रहे हैं...

वल्लभदास ः (दोहराते हुए) अपने कमरे में पढ रहे हैं... उसके पिता जी ने भी पढाई की है कभी... ठहर जा, अभी खबर लेता हूँ उसकी... (आवाज लगाकर) अब ओ काँडयाँ.....

(स्वयं कुर्सी टेबल ठीक करने लगते हैं)

कन्हैया ः (गुस्से में प्रवेश करते हुए) क्या है...?

वल्लभदास ः अबे, तेरे बाप के सामने कैसी आँखें निकालता है, ऐसी आँखें तो तेरे पिताश्री ने भी आज दिन तक किसी को नहीं दिखाईं...

कन्हैया ः तो फिर आप काँडयाँ-काँडयाँ किसे कहते हैं...?

वल्लभदास ः तेरे बाप को...

कन्हैया ः मेरा नाम कन्हैया है...

वल्लभदास ः (मुँह बिगाड कर) कन्हैया है... जानकी वल्लभ सीता राम... ये कुर्सी टेबल अस्त-व्यस्त आपने किये हैं हिन्दी में.....

कन्हैया ः (खामोश किताब के पत्ते उलटता रहता है)

वल्लभदास ः ये तेरे बाप के बैठने की कुर्सी है... जो तूने चपरासी की जगह बैठने को रख दी है, और ये स्टूल चपरासी के बैठने का तेरे बाप के बैठने की जगह रख दिया..... चल..... उसको उठाकर इधर ला (कन्हैया से) एण्ड पुट इट देयर, अंग्रेजी में...

(छीतर स्टूल उठाकर चपरासी के बैठने की जगह व कन्हैया कुर्सी को बाप के बैठने की जगह पर रखते हैं,)

वल्लभदास ः (कुर्सी पर बैठने के बाद) आपकी वार्षिक परीक्षाएँ कब से आरम्भ होने जा रही ह हिन्दी में...

कन्हैया ः अभी डेट नहीं आई है...

वल्लभदास ः डेट आए न आए, परन्तु तुम कक्षा में लेट न जाया करो... तुम्हारे आचार्यश्री ने मुझ से लिखित अनुरोध किया है हिन्दी में, कि मैं अपने सुपुत्र् की उपस्थिति तथा शिक्षा पर पूर्ण ध्यान दूँ...

कन्हैया ः मैं तो बराबर कॉलेज जाता हूँ...

वल्लभदास ः शकल देखी है आइने में...बराबर कॉलेज जाते हो तो, सीनीमा के टिकिट ब्लेक करने कौन...तुम्हारे पिताश्री जाते हैं हिन्दी में...

कन्हैया ः (चुपचाप खडा रहता है)

वल्लभदास ः जाओ... जाकर पढो... आपकी प्रथम पंचवर्षीय योजना का यह अंतिम वर्ष है हिन्दी में...जानकी वल्लभ सीता राम... (कन्हैया चला जाता है)

वल्लभदास ः (कुछ कागजात देखने के बाद) अरे छीतर लाल

छीतर ः ज ज ज ज ज ज...

वल्लभदास ः अबे जल्दी-जल्दी मत बोला कर...तेरी माँ कहाँ गई है जानकी ...जानकी वल्लभ सीता राम...

छीतर ः ब ब - ब ब - ब ब...

वल्लभदास ः बर्तन साफ कर रही है...?

छीतर ः जज जी नहीं... ब ब - ब ब...

वल्लभदास ः बाजार गई ...क्यूँ... प्रश्नवाचक चिह्न हिन्दी में

छीतर ः स स स स स स

वल्लभदास ः क्या ...सोना खरीदने...?

छीतर ः नन नहीं ...स स स स...

वल्लभदास ः अच्छा...अच्छा...सब्जी खरीदने... ... ...आए तो मेरे पास भेजना

छीतर ः जज - जज - जज ...जी पिता जी... (छीतर लाल का प्रस्थान)

(दरवाजा खटखटाने की आवाज आती है)

वल्लभदास ः कौन...?

आवाज ः पोस्टमैन...

वल्लभदास ः अभी साहब नहीं हैं...

आवाज ः कुछ चिट्ठियाँ हैं...

वल्लभदास ः हाँ, कह दिया न हिन्दी में, छुट्टियाँ हैं सेकण्ड सेटर्डे, सण्डे, दोनों दिनों की..... और साहब कश्मीर गए हैं, हनीमून मनाने अंग्रेजी में...

पोस्टमैन ः (अन्दर आकर) तो आप ही ले लीजिये...

वल्लभदास ः (गुस्से में चश्मा उतारकर खडा होकर) व्हाट अंग्रेजी में... मैं भी छुट्टियाँ ले लूँ... परन्तु क्यूँ हिन्दी में (टेबल ठोक कर) हू आर यू टू टेल मी दिस अंग्रेजी में...

पोस्टमैन ः सरकार.... मैं छुट्टियों के लिये नहीं कह रहा हूँ... चिट्ठियों के लिये बक रहा हूँ...

वल्लभदास ः तो सीधे कहो न ... कौन से कार्यालय से आए हो...

पोस्टमैन ः पोस्ट ऑफिस से...

वल्लभदास ः (चश्मा चढाते हुवे) पोस्ट ऑफिस ...?

पोस्टमैन ः डाकघर से...

वल्लभदास ः (समझते हुवे) अच्छा-अच्छा... डाकिये हो हिन्दी में...

पोस्टमैन ः तीन चार रजिस्ट्रियाँ हैं...

वल्लभदास ः रजिस्ट्रियाँ ... कहाँ से आई हैं...?

पोस्टमैन ः (पता पढते हुवे) ये आई हैं... ऊँ sss मैसोर, मद्रास से...

वल्लभदास ः (पत्र् लेकर साइन करते हुवे) मद्रास से... वहाँ तो मेरा कोई सम्बन्धी नहीं है हिन्दी में... हो सकता है, साहब का एक आध ससुराल हो वहाँ ...

पोस्टमैन ः ये ... अमृतसर ...पंजाब से आई है...

वल्लभदास ः अमृतसर पंजाब ... साहब के कोई मित्र् होंगे हिन्दी में...

पोस्टमैन ः बडौदा गुजरात में आफ करीबी रिश्तेदार कोई होंगे ... शायद...

वल्लभदास ः हिन्दी में... वहाँ मेरा कोई निकटतम सम्बन्धी नहीं है...

पोस्टमैन ः (चिट्ठी को उल्ट-पल्ट करते हुवे) इस पर तो कोई छाप ही नहीं लगी है...

वल्लभदास ः (कुछ सोच कर) तब तो अवश्य ही राजस्थान प्रान्त ही की होगी... लाओ ... अब तो नहीं कोई पत्र् हिन्दी में...

पोस्टमैन ः नहीं। तो सरकार अब मैं जाऊँ...?

वल्लभदास ः अवश्य-अवश्य ... मैं स्वयं यही निवेदन करने वाला था हिन्दी में कि अब आप प्रस्थान कीजिये...

पोस्टमैन ः सरकार कुछ इनाम ... ?

वल्लभदास ः इनाम नहीं ... पारितोषिक कहो हिन्दी में ... परन्तु किस बात का... ?

पोस्टमैन ः इतनी सारी रजिस्ट्रियाँ लाया हूँ सरकार ...

वल्लभदास ः तो क्या सरकार तुम्हें वेतन नहीं देती हिन्दी में ...

पोस्टमैन ः देती तो है सरकार ..... परन्तु इतना कम ..... कि गुजारा नहीं होता उर्दू में ...

वल्लभदास ः हियर लाईज द प्वॉइन्ट अंग्रेजी में...परन्तु अब आम चुनाव निकट भविष्य में होने जा रहे हैं...यही समय है सरकार से जो माँगोगे, मिलेगा...

पोस्टमैन ः अच्छा सरकार तो मैं जाऊँ ...

वल्लभदास ः अवश्य-अवश्य ... मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं हिन्दी में... जानकीवल्लभ सीताराम (पोस्टमैन सलाम करके चला जाता है। वल्लभदास रजिस्ट्रियों के लिफाफे फाड-फाड कर पढने लगता है)

वल्लभदासः जानकी वल्लभ सीता राम ... एक भी पत्र् समझ में नहीं आया ... (पहला पत्र्) इस श्रीमान् अथवा श्रीमती ने गुजराती में पत्र् लिखा है... (दूसरा पत्र्) महोदय अथवा महोदया आपने,

लगता है पंजाबी में घसीटा है... (तीसरा पत्र) आप मिस्टर और मिसेज, अवश्य इंग्लैण्ड रिटर्न लगते हैं...ऊँ हूँ हूँ ... क्या क्लिष्ट अंग्रेजी लिखी है हिन्दी में, के जानकी वल्लभ सीता राम ... (चौथा पत्र् पढकर खुश होते हुए) आ हा हा ये पत्र् है हिन्दी में ... आप मान्यवर कौन हैं... ? (पत्र् पढते हुए) अफगान सिंह पिता जंगदाद खाँ ... जानकी वल्लभ सीताराम ... अफगान सिंह जिला खेतवाडी मोहल्ला गायवाडी, शहर धुंदवाडी राजस्थान ... आप क्या लिखते हैं -

श्रीमान्

सहायक अधिकारी जी,

आदिवासी शोध संस्थान

उदयपुर (राजस्थान)

विषय ः कनिष्ठ लिपिक के पद पर नियुक्ति हेतु साक्षात्कार बाबत्।

वल्लभदास ः (खुद से) परन्तु आपको साक्षात्कार हेतु किस मूर्ख मण्डल ने निमन्त्रण दिया है हिन्दी में...

(गुजराती भाषा में लिखे दूसरे पत्र् को अटक-अटक कर पढने का प्रयास करते हैं) क क कन्नूभाई फ फ फाटक, नहीं-नहीं पाठक-रिलिफ सर्कस, नहीं सर्कल, बडोदरा गुजरात... जानकी वल्लभ सीताराम... भारत में रहकर - भारतीय नागरिक भारतीय भाषा, सर्वप्रिय हिन्दी में पत्र् लिखने में कठिनाई अनुभव करते हैं... (दूसरा पत्र्) आपको क्या कष्ट है हिन्दी में... श्री सहायक अधिकारी महोदय जी, आदिवासी शोध संस्थान ... सप्रेम वन्दना

मैं पन आपने पहेला पत्र्, छोकरी बाबत्, जानकी वल्लभ सीता राम... नहीं-नहीं नौकरी बाबत् आपेलो हतो ... ते ना उत्तर माँ आपे पाछो कागळ लखयो... पण, ते पत्र् म्हारी भूल थी, पेन्ट साथे धोबी ने त्याँ धोवाई गयो छे... एनो मने बहुत खेद (दुःख) छे... पंण वूँ तमने विश्वास आपूँ छूँ के तारीख - - ना पहेलाँ साक्षात्कार नी बद्धी इन्फोरमेशन, जे आप माँगी छे, आपी देइस...आपनो सेवक" कन्नू भाई फाटक, नहीं-नहीं पाठक...

जानकी वल्लभ सीता राम... सब के सब साक्षात्कार के लिये निमन्त्रण लिये बैठे हैं हिन्दी में...? अवश्य कोई न कोई भ्रान्ति हुई है इन महानुभावों को ... अरे भई हमने तो किसी को साक्षात्कार के लिये नहीं बुलाया ... हमारे कार्यालय में तो केवल एक कुर्सी, एक टेबल, एक स्टूल, एक कलम, एक दवात, एक चपरासी, एक क्लर्क, एक अफसर और मेरे पहनने के लिये एक कोट के अलावा अन्य किसी वस्तु के लिये स्थान रिक्त नहीं है हिन्दी में...

(तीसरा पत्र् पढते हुवे)

वल्लभदास ः भई पंजाबी तो अपने बिल्कुल पल्ले नहीं पडती... वैसे भाषा ये भी बहुत कर्णप्रिय है हिन्दी में... लगता है संत फतह सिंह जी को बुलाना ही पडेगा... परन्तु महाशय, मैं आपकी आन्तरिक भावनाओं को पूर्ण रूप से समझ चुका हूँ ... अवश्य ही आपको भी इन्टरव्यू का ही भूत सवार होगा ... हाँ sss ...

(चौथी चिट्ठी देखकर फेंक देता है)

वल्लभदास ः (खुद से) अंग्रेजी से तो मुझे सख्त नफरत है उर्दू में... गोरे चले गए परन्तु अपनी काली छाप यहाँ छोड गए ... जानकी वल्लभ सीताराम ... (आवाज लगाकर) कन्हैया ओ कान्है...

कन्हैया ः (आता है) क्यूँ चिल्ला रहे हैं आप ...?

वल्लभदास ः (गुस्से में) बुद्धि भ्रष्ट हो गई है इसलिये ...

कन्हैया ः किसको बुला रहे हैं ... ?

वल्लभदास ः अपने पिता जी को... स्वर्ग लोक से हिन्दी में...

कन्हैया ः (चुप खडा रहता है)

वल्लभदास ः तेरी माँ क्या कर रही है...?

कन्हैया ः (नाराजगी के अन्दाज में) रोटी बना रही है ...

वल्लभदास ः (चौंक कर) रोटी बना रही है... जानकी वल्लभ सीता राम...

कन्हैया ः (कुछ देर चुप रहने के बाद) अब आपको क्या चाहिये ...?

वल्लभदास ः (चिढ कर) 'अक्ल' उर्दू में... जाओ अपना काम करो ...

(कन्हैया का प्रस्थान... चपरासी भवानी का प्रवेश)

भवानी ः (हाँफते हुए) अरे साहिब बहुत खोटी खराबी होय गई...

वल्लभदास ः न सलाम न कलाम, न जयराम जी की, न नमस्कार...

भवानी ः साहेब नाही पूछौ... रात से हमारा मन माँ बहुत खटापटी होय रही...

वल्लभदास ः पर हुवा क्या... ?

भवानी ः नाहीं पूछौ साहेब... हमारा बुरा दिन आय गए...

वल्लभदास ः परन्तु कुछ बताओगे भी सही...

भवानी ः (ढोंग में विलाप करते हुवे) नांही पूछौ साहेब नांही पूछौ...

वल्लभदास ः (क्रोध में) कैसे नहीं पूछूँ...एक तो दस बजे की बजाय बारा बजे, दो घण्टे विलम्ब से आए आए हो हिन्दी में... दूसरे लगे पहेलियाँ बुझाने...

भवानी ः पिछली रात हम बहुत खराब सपना देखे हूँ... का देखे हूँ... हमार दामाद निखट्टू, हमार सामने हमारा बिटयन को मार-मार के ओका भुर्ता बनाय रहा ... ई जुलम जादती, हमसे सहन नाहीं हुई साहेब... गुस्सा-गुस्सा मां, घुमाए के दिये हूँ ओ के माथे पे लट्ठ ... तो ऊ हुंआई ठण्डा हुई गवा ... ई उधेड बुन मां ... कल्वा की माँ, नजीक आय के चिल्लाए पडी (औरत की आवाज में) अजी उट्ठो-उट्ठो... गैया के बछडा पैदा हुवा है ... ... हम सोचे, लौ, ई और लुक्सान ... ... छिन भर मां, हम ओको अपने- सपना की बात सुनाय दी ... ई सुनके ... ऊ लागी डुसुक - डुसुक रोने ... बोली (औरत की आवाज में) फौरन हमार बिटिया को हियां लै आओ।

अब आपई बताओ साहेब ... ऊ रही हजारन कौस दूर ... कौन ऊ मुम्बई नगरी हियां रही का सरकार...

वल्लभदास ः (बात काट कर) सुन भवानी ... मैं ऐसे किस्से कहानियाँ बहुत पढ चुका हूँ जवानी में ... परन्तु अब मैं अधिक दिन तेरी दाल नहीं गलने दूँगा हिन्दी में ... साहब के आते ही तेरा कल्याण न कर वा दूँ तो मेरा नाम भी वल्लभदास नहीं ... जानकी वल्लभ सीता राम...

भवानी ः सरकार आप खामखां खफा होय रहे ... बडे साहब हमका कछू सन्देस दै के गए आपकी खातिर ... परे, हमार बुद्धि भ्रष्ट होय गई ... हमार भेजा मां भूसा भर गवा साहेब ... हम ओको कहना ही को भूल गए...

वल्लभदास ः (गुस्से में) क्या कह गऐ थे साहब ...?

भवानी ः आप कुछ गुस्सा थूकें, तो हम कछू कहें सरकार...

वल्लभदास ः (मुस्कुरा कर) अच्छा-अच्छा बोल, क्या कह गए थे साहब ...

भवानी ः बडे साहेब कह गए सरकार ... के कौनऊ लोग आय रहे बाहिर से, इन्टर वी के खातिर... ऊ लोगन को मना लिखन को कह रहे...

वल्लभदास ः अरे भवानी...तू ने यूं ही काट दी जवानी... अरे दस दिन हुबे साहब को गए... ना जाने साहब ने भी मेरे बगैर पूछे किस बात का इन्टरव्यू आई मीन साक्षात्कार रख लिया हिन्दी में, और उसकी तिथि भी कल ही है ... बेचारे लोग बाहर से, न जाने कहाँ-कहाँ से आकर परेशान होंगे..

भवानी ः हमसे भारी भूल होय गई सरकार...

वल्लभदास ः अरे भवानी... तूने कैसी की नदानी...?

(अन्दर से जानकी बडे बाबू की पत्नी की आवाज आती है)

आवाज ः भवानी... ... ओ भवानी ...

भवानी ः साहेब ... मालकिन हमका बुलाय रही ...

वल्लभदास ः तुम बैठे रहो शान्ति से हिन्दी में... सरकारी नौकर हो... मालकिन के नहीं...

भवानी ः अरे सरकार...खामखां, हियां आय के, हमका दुई बात सुनाय देई है..

वल्लभदास ः अच्छा जा... परन्तु स्मरण रहे हिन्दी में... बाजार नहीं जाओगे, सौदा सलफ खरीदने

(जानकी का प्रवेश)

भवानी ः मालकिन हमका भेज देते हैं तो सरकार...

वल्लभदास ः (काम में ध्यान होने से) अरे कुछ बहाना बना लेना हिन्दी में...

(यह सुनकर जानकी आग बगूला हो जाती है)

जानकी ः (गुस्से में) हाँ हाँ ... खूब सिखाओ पढाओ अपने रट्टू तोते को...

वल्लभदास ः (घबराते हुवे) ए जानकी ...जरा बात कर भान की... कसम भगवान की ...मैंने तुम्हारे विरुद्ध इसे कुछ नहीं भडकाया हिन्दी में...

जानकी ः सब सुन चुकी हूँ ... दिन ब दिन बुढापे मे - मति भ्रष्ट होती चली जा रही है... और बस नहीं चला, तो अब लगे नौकरों को मेरे खिलाफ बहकाने

वल्लभदास ः जानकी वल्लभ सीता राम ... अरे मैं तो स्वयं इसे तुम्हारी सेवा में भेजने का मानस बना रहा था हिन्दी में ... के तुम्हारा मधुर सुरीला कन्ठ सुनाई पडा कानों में ... सोचा तुमसे आवश्यक वार्तालाप करना है हिन्दी में तो ... ...?

जानकी ः (बात काट कर) आवश्यक वार्तालाप ऑफिस में ही करने की फुर्सत मिलती है तुम्हें... घर नहीं है...

वल्लभदास ः अरे सौभाग्यवती... अर्थात् श्रीमती... मेरी वार्ता का तनिक तो भाव समझने का यत्न कर हिन्दी में ... (भवानी को देख) भवानी, तू घर में जा...

जानकी ः (जाते हुवे) जो हुकम सरकार...

वल्लभदास ः और सुन... मालकिन जो कार्य कहे, दौड कर करना, तेरा परम कर्त्तव्य है हिन्दी में...

(भवानी का सिर हिलाते हुए प्रस्थान)

जानकी ः सुन... गोकुल के यहाँ सब्जियों का थैला रखा है, उसे लेते आना... उससे पहले कॉपरेटिव पर केरोसिन की लाईन में लग कर, उल्टे पाँव वापस आना...आटा पिसवाना है...

जानकी ः कहो... क्यूँ बुलवा रहे थे... बार-बार बच्चों से...

वल्लभदास ः आज की चर्चा का विषय कोई विशेष तो नहीं हिन्दी में... परन्तु फिर भी तुम्हारी सूचना के लिये... घर में राशन पानी की व्यवस्था तो सम्पूर्ण है न हिन्दी में...

जानकी ः क्यूँ... कोई अकाल पडने वाला है... भारी वर्षा के समाचार हैं, या युद्ध छिड गया है...

वल्लभदास ः अरे जानकी... बात है ईमान की... तू तो देवी है भगवान की...

जानकी ः चलो-चलो... मतलब की बात करो... मुझे और भी काम हैं...

वल्लभदास ः भई वास्तव में कहने का तात्पर्य यह है हिन्दी में कि कल हमारे यहाँ कुछ अतिथि आने वाले हैं...

जानकी ः (अचरज से) अतिथि आने वाले हैं... मेरा न ससुराल में कोई है न पीहर में... फिर ये अनजाने अतिथि आ कहाँ से रहे हैं...?

वल्लभदास ः यह न पूछ देवी... केवल हाँ या ना में उत्तर चाहिये इस सेवक को... ... हिन्दी में... फिर आज सम्पूर्ण भारत निवासी एक सम्पूर्ण परिवार के सदस्य हैं... अतिथि चाहे कहीं से आएँ,- सत्कार हमारा परम धर्म है.

जानकी ः तुम्हें तो हरी-हरी सूझती है... महीने का आखरी सप्ताह है... तुम्हारे कोई मेहमान हो तो ठहराना उन्हें होटलों में... और करते रहना उनकी सेवा... चाकरी...

वल्लभदास ः जानकी वल्लभ सीता राम...

जानकी ः और कोई काम...?

वल्लभदास ः (ठण्डी साँस भर के) जानकी वल्लभ सीता राम...

जानकी ः (जाते-जाते) मगर ध्यान रहे... तन्खा- में से ऐक पैसा कम नहीं लूँगी. समझे...

वल्लभदास ः (गर्दन हिलाते हुवे) जानकी वल्लभ सीता राम...

जानकी ः और कोई काम...

वल्लभदास ः (नहीं में सिर हिलाते हुवे) जानकी वल्लभ सीता राम...

जानकी ः चलो भोजन तैयार है...

वल्लभदास ः मैं तनिक डाक देख आया...

जानकी ः (आदेशात्मक) चलो...

(धीरे-धीरे रोशनी कम होते-होते, अँधेरा हो जाता है)

दूसरे - दिन

(वही कार्यालय की सेटिंग... लाईट फुल होने पर एक काला सा नौजवान मद्रासी ड्रेस पहने प्रवेश करता है)

मद्रासी ः (इधर-उधर घूमकर स्वयं से) इविडे आरेयुम काणुन्नी क्काल्लो...

(इधर तो कोई नहीं है)

(मद्रासी अपना सूटकेस नोक करता है, थोडी देर में कन्हैया का प्रवेश)

कन्हैया ः (मद्रासी से) आप कौन हैं... ?

मद्रासी ः ज्ञान-नायर...

कन्हैया ः आपको किससे मिलना है... ?

नायर ः सार विइट्टिल उन्डो (साहब घर में हैं)

कन्हैया ः (झुंझला कर) आप कहाँ से आए हैं... ?

नायर ः कायम कुल्लम... मड्रासिन्न... इन्टरव्यू वान्नता...

कन्हैया ः आपकी भाषा समझ में नहीं आती... डू यू नो इंगलिश... ?

नायर ः यस, यस बाई ऑल मीन्स...

कन्हैया ः देन...हूम डू यू आस्क फोर...?

नायर ः इज योअर फॉदर हियर...?

कन्हैया ः यस, यस, ही इज टेकिंग हिज मील...

नायर ः आई वान्ट टू मीट हिम...

कन्हैया ः श्योर, श्योर...यू केन.....बट...यू डोन्ट नो हिन्दी...

नायर ः नो-नो... आई नो लिटिल बिट ऑफ हिन्दी... बट आई हेट इट...

डजन्ट मेटर... आई शेल स्पीक इन इंगलिश...

कन्हैया ः प्लीज सिट हीयर... ही इज जस्ट कमिंग...

नायर ः थैंक यू...थैंक यू...आई शेल वेट फोर हिम...

कन्हैया ः यस प्लीज.....आई एम गोइंग सम वेयर...विथ माई मदर...

नायर ः आई शेल...आई शेल...

(कन्हैया का प्रस्थान। मद्रासी अखबार पढने में व्यस्त हो जाता है, एक पंजाबी युवक-युवती का प्रवेश)

नायर ः (पंजाबी युवक को ऑफिसर समझते हुए) गुड मोरनिंग सर...

पंजाबी ः (मद्रासी युवक को अफसर समझकर) गुड मोरनिंग...

पंजाबी युवती ः (युवती, पंजाबी भाषा में युवक से पूछते हुए) बन्दा ते भला ही दिखाई देंदा है...

पंजाबी ः मैं ताँ तेनू पहलां ही दसिया सी के अज्ज ताँ अस्सी इंटरव्यू विच फेल नहीं हो सक दें...

नायर ः (पंजाबी भाषा नहीं समझने पर) एक्स क्यूज मी सर... आई हेड फोर डेज जरनी... सो आई एम वैरी टायर्ड...

पंजाबी ः (युवती से कान में) ए...की केंहदा है...?

युवती ः ऐ केंहदे हन, के अे चार दिन दे सफर तौं अज्ज ही आए ने, अते बहुत थके हुए ने,

पंजाबी ः (मद्रासी से) मेनू बहुत दुःख है जी... के मैं तुहानू बेवकत तकलीफ दीती है...

नायर ः (कुछ नहीं समझा) (कुछ देर दोनों तरफ शांति)

पंजाबी ः (मद्रासी युवक को बैठने का इशारा करते हुवे) तुसी बैठो न...

नायर ः (इशारा समझ कर बैठ जाता है) थैंक यू... थैंक यू...

पंजाबी ः अगर तुहानू एतराज न होवे... ताँ मैं एथे बैठ जावाँ...

नायर ः (बात का कुछ अर्थ समझते हुवे) यस-यस यू केन...

पंजाबी ः (युवती से कुर्सी पर बैठने के लिये) तुसी ऐथे बैह जाओ जी...

युवती ः नहीं-नहीं... तुसी बैठो... मैं स्टूल तै ही बैठ जावाँगी...

पंजाबी ः (तनिक जोर देकर) नहीं-नहीं तुसी ऐथे बैठो ना...

युवती ः (तनिक गर्म लहजे में) जित्थे बैणां ए...उत्थे बै जाओ...

क्यूँ दूजआँ अग्गे बेइज्जती कराँन्देओ...

पंजाबी ः (युवती का हाथ पकड कर स्टूल पर बिठाते हुवे) तुसी एथे बैठो जी..

(कुछ देर तीनों आमने-सामने बैठे, एक दूसरे का मुँह ताकते रहते हैं कि कौन पहले बोले...)

नायर ः एक्स क्यूज मी सर... हाऊ मेनी केन्डीडेट्स आर टेकिंग पार्ट टू डे...

पंजाबी ः (पुनः युवती से) ए... की केह रहे ने...?

युवती ः (युवक को डाँटते हुवे) मैं तोहनू हजार वेरी केहा... के अंग्रेजी सिख लवो-सिख लवो पर तुसी मन्दे ही नहीं...

पंजाबी ः ओ...तू इस बहस नूं छड... तू ताँ हुणे दस... की केह रहे हन...

युवती ः कह रहे ने... के अज्ज कितने लोकी हिस्सा लै रहे हन...

पंजाबी ः (बात समझ कर, नायर को जवाब देता है) मेनू पता नहीं जी...

(फिर कुछ देर दोनों ओर खामोशी)

नायर ः एक्स क्यूज मी... वन मोर थिंग...वॉट इज द एक्जेक्ट टाईम ऑफ इन्टरव्यू सर...

पंजाबी ः (फिर युवती की ओर प्रश्नवाचक नजरों से देखता है)

युवती ः (युवक का भावार्थ समझते हुवे) पूछ रहे हन... के इन्टरव्यू दा सही टाईम की है...?

पंजाबी ः (काना फूसी करते हुवे) ऑफिसर होके-सानू टाईम पुछदा ए...

युवती ः (धीमे स्वर में) मैं नू लग दा ए-एह ऑफिसर नहीं ए...

पंजाबी ः तू...अंग्रेजी विच पुछ ना...

युवती ः मैं नू शरम आवदी ए...

पंजाबी ः ओ... इस विच शरम दी की गल ए... पुछ ना...

युवती ः (साहस करके) वी डोन्ट नो सर...यू नो बेटर...बिकॉज यू आर द ऑफिसर...

नायर ः ओ नो-नो-नो...आई एम नोट द ऑफिसर...आई एम सिम्पली ए पार्टीसिपेन्ट ...इट मीन्स यू आर ऑलसो नोट द ऑफिसर...

युवती ः नो-नो-नो..... वी आर ऑलसो केन्डीडेट्स..... देन वेयर इज द ऑफिसर...

नायर ः ही सेन्ड मी अ मेसेज... देट ही इज जस्ट कमिंग...

पंजाबी ः (आतुरता से, युवती से) दस ताँ सही... की गल होई...?

युवती ः ओहवी... साडीतराँ, इन्टरव्यू देण आया है... ऑफिसर ने अखवाया है के ओ हुणे आऊंदा है...

पंजाबी ः (किसी के आने के पदचाप सुनकर) तक-तक, शायद हो आरै हन...

युवती ः (नायर से) आई थिंक-ही इज कमिंग...

(एक अन्य युवक-युवती का प्रवेश तीनों खडे होकर, आगन्तुकों को नमस्कार करते हैं।)

आगन्तुक ः (दोनों सबसे नमस्ते करते हैं, फिर गुजराती भाषा में मद्रासी से) आदिवासीआ नो कार्यालय आज छे न...

(बिना उत्तर दिये...सब एक दूसरे की ओर देखते हैं)

कन्नू भाई ः (पंजाबी से) आजे...साक्षात्कार अयांज थावा नो हतो ने...

(फिर कोई उत्तर नहीं...मन ही मन सब हँसते हैं)

कन्नू भाई ः बीनू...आजे तो आपणे अजायब घर ना पांजरा मां फँसी गया छिये

बीना बहन ः तमे तो के ता हता ने...के उदयपुर ना बद्धाए माणस प्रेम भाव, अने शिष्टाचार माटे प्राण दे छे...

कन्नू भाई ः अवे हूँ सूँ कहूँ... ताराज बापोजी अयां पहेल्यां आवेला हता...अने ते नेज

उदयपुर नो बखाण करी-करी ने म्हारू मगज बगाडयो हतो...

बीना बहन ः तरे सूँ...वळी पण...तपास कर वी होत तो करी लो...अने इन्टरव्यू जो होत तो सारू नहीं तो-चालो...आपणे तो मस्ती मां उदयपुर नां रमणिक स्थलों ने जोइये...अने-मजा लेइए...

कन्नू भाई ः तारे म्हें पूसिये... (मद्रासी से) साहेब आजे हइंया इन्टरव्यू नी डेट हती न... जो तमे साँचा समाचार आपी सकता होत तो आपो...

नायर ः एक्सक्यूज मी सर...आई डोन्ट अन्डरस्टेण्ड यूअर लेंग्वेज...इफ यू केन स्पीक इन इंगलिश...आई केन इजीली रिपलाई...

कन्नू भाई ः यस-यस...आई केन स्पीक इन इंगलिश...

नायर ः देन सर...प्लीज टेल मी...व्हाट डू यू वान्ट टू नो...?

कन्नू भाई ः आई एम फ्राम बरौडा...गुजरात स्टेट...आई थिंक...टू डे देयर इज इन्टरव्यू हीयर...

इफ यू नो अबाउट इट...प्लीज टेल मी...

बीना ः (बीच में टोकती हुई पंजाबी से) आ माणस तमने सूं कहे। अने तमे एने सूँ उत्तर आप्यो...?

कन्नू भाई ः जे भाषा आपणे पल्ले न पडे...ते बाबत् चुप रे वा मांज सार छे...

युवती ः इट मीन्स यू आर आलसो नोट...द ऑफिसर...

कन्नू भाई ः नो-नो... हाऊ इट केन बी...बट...वाट इज द मेटर...?

नायर ः वी ऑल आर वेटिंग फोर हीम...

बीना ः अवे मने वताडो...वात सूं छे...ने तो हूँ...एकली फर्वा जाती रईस...

कन्नू भाई ः गांडी...तू बहु नादान छे...जो हूँ तमने साथे नथी लावतो तो केवो मजो थातो...

बीना ः जो तमे-तमे साथे नथी लावता, तो वूँ तमोने अंइया आवाज नथी देती.मारा बापोजी पासे बहु-पैसो छे...तमोए नौकरी नी आवश्यकताज नथी.

कन्नू भाई ः अरे चुप करे ना... त्यां बैसीये...

(सब अपनी-अपनी जगह बैठते हैं...कुछ ही क्षण बाद भवानी चपरासी आता है)

भवानी ः (टेबल कुर्सी साफ करते हुए स्वयं से) लौ...कौनऊ हम अजायब घर मा तो नाहीं आय गए...सवेर-सवेर...का बनमानुसन के दर्सन हुवे है...हे ईश्वर...तुही नय्या पार लगाई है हमार...(आगन्तुकों से) सरकार कौनऊ कष्ट नाहीं होय तो छिन भरमां आफिस का झाडू लै लें...

(कार्य से निवृत्त होकर एक तरफ पडे अपने स्टूल पर बैठ कर पहले बीडी माचिस निकाल कर सुलगाने लगता है, परन्तु वस्तुस्थिति भाँपते हुवे पुनः जेब में रख लेता है और...तम्बाकू बनाने लगता है)

नायर ः (भवानी से) आर यू द पियोन हियर...?

भवानी ः अरे साहेब...पीओना-पीओना कह के हमारा मजाक बनाए रहे का...?

कन्नू भाई ः ना तमे हमज्या नथी...ए माणस तमने पूछियो हतो के...तमे अइयांज सर्विस मां छो...

भवानी ः (सिर खुजलाते हुवे) हमारा खुपडया माँ कछु नाहीं बैठत साहेब...कौनऊ आदमियन की भासा बोलौ न...

कन्नू भाई ः (तनिक गुस्से में) तारे सूं...हूँ तमने आदमी नथी जोवडतो...

बीना बहन ः ए घैडा नो मजग फरी गयो छे...

नायर ः लेट मी नो...व्हाट आर यू टोकिंग विथ द पिओन...?

भवानी ः (गुस्से में) देखौ साहेब...हम कौनऊ बात का लिहाज कर रहे...आप लौग, अपनी-अपनी भासा मां हमका भौदूं बनाय रहे...ई हम खूब समझत हैं...

पंजाबी ः (अपनी संगिनी से) ए लोग किस गल से झगड रहे हन...?

युवती ः रहे बुद्धू-दे-बुद्धू... किसे गल दा ढंग नहीं...

भवानी ः देखौ मेम साहब...हम औरत मरद कुछ नाहीं समझत हैं...छिन भरमा इज्जत उतार दिये हैं...हाँ...

पंजाबी ः (गुस्से में खडा होकर भवानी से कहता है) अरे...औरत नाल की गल करनाएँ... असा नाल टक्कर लै न...इक मुक्के विच दम कड दिऊँगा.

भवानी ः (गुस्से में तम्बाकू फेंककर कर गुजराती का गला पकड लेता है) बाबू साहेब, जमाए के धरे हूँ रेपटा तो जाय के गिरे हो ऊ गटर मां...

बीना बहन ः (छुडाते हुवे) अरे-अरे रे...ए वो सू छे...

नायर ः (भवानी का हाथ छुडा कर) यू इडियट...लेट-योअर ऑफिसर कम...आई विल कम्पलेन्ट अगेंस्ट यू...

भवानी ः (मद्रासी का गला पकड लेता है) तिहार जैसे हजारन देखे हैं हम...जड दिये हूँ न माथा मां लठ...तो राम नाम सत्त होय जात हो बाबू...हम भी अखाडा का पहल्वान रहे हूँ...हाँ...

(इसी दौरान एक हिन्दी भाषी नवयुवक फटा कुर्ता पायजामा पहने, हाथ में बडी सी फाईल लिये प्रवेश करता है, लोगों को लडते देख)

युवक ः (भवानी का हाथ छुडाते हुवे) अरे अरे रे रे श्रीमन्...यह तो घोर पाप है ...प्राणी मात्र् को कष्ट पहुँचाना, न्याय के विरुद्ध एवं भारतीय संविधान को चुनौती है...

भवानी ः अरे साहिब...ई हम का उल्लू बनाय रहा...हम अनपढ गंवार हैं तो का ...ई लोगन की अफसरी नाहीं चलन दैत हैं...

युवक ः बडा खेद का विषय है... हम शांति प्रिय देश-भारत के वासी...यदि तुच्छ सी घटनाओं को इतना उग्र रूप दे देंगे...तो हमारी परंपराओं एवं मर्यादाओं को कटु आघात पहुँचेगा...अहिंसा परमोधरम का नारा छिन्न-भिन्न हो जाएगा...

कन्नू भाई ः पण वूँ कऊँ सूँ के ए माणस ने लडवानो कौन तूतरो आप्यो छे...

नायर ः आई हेड सिम्पली आस्क्ड हिम...वेदर यू आर वरकिंग हियर और नोट...

पंजाबी युवती ः मैं ताँ आपणे हसबेंड नाल गल कर रही सां...ते एह उन्हा नाल उलझ गया...

भवानी ः (फिर गलत समझते हुवे) देखल्यो साहेब...इ हमका फिर गाली देत है.

बीना बहन ः ऐ घैडा बाबा ने कोई नी वातज समझमां आवती नथी...

भवानी ः (गुस्से में लाल होकर) देखो-देखो....ए को चुप कराय दो

युवक ः बन्धुवर...मैं आप महानुभावों की सम्पूर्ण-गाथा का अर्थ शीघ्र ही समझ चुका हूँ... विषय के पक्ष में बोलता हुवा, केवल इतना ही स्मरण करा देना चाहता हूँ कि भारत अंग्रेजों के आधिपत्य से स्वतंत्र् अवश्य हुवा, परंतु भारतीय नागरिकों के हृदय एवं मस्तिष्क अभी तक पराधीनता की श्ाृंखलाओं में जकडे पडे हैं...

(वल्लभदास का प्रवेश)

वल्लभदास ः (अपनी कुर्सी की और बढते हुवे) जानकी वल्लभ सीता राम...

भवानी ः सलाम साहेब...

वल्लभदास ः हिन्दी में...

भवानी ः (वल्लभदास की कुर्सी साफ करते हुवे) गलती होय गई सरकार...

वल्लभदास ः गलती नहीं...त्रुटि...अब बोलो जय राम जी की...

भवानी ः जय हनुमान जी की...

युवक ः (वल्लभदास से) जय भारत...

वल्लभदास ः (गौर से देखते हुवे) जय भारत-जय भारत...

गुज. युगल ः साहेब नमस्कार...

वल्लभदास ः (गुजरातियों को देखकर) नमस्कार-नमस्कार...

पंजाबी युगल ः सत् श्री अकाल जी...

वल्लभदास ः (पंजाबियों की ओर देखकर) सत् श्री अकाल...

नायर ः गुड मोरनिंग सर...

वल्लभदास ः हिन्दी में...

नायर ः नोमुस्कारम्...

वल्लभदास ः (मुस्कराते हुवे) नमस्कार...अरे भवानी...तूने अकल की बात कभी नहीं मानी...दूर-दूर से आए आगन्तुकों का आतिथ्य सत्कार न सही...सम्पूर्ण लोगों के बैठने की व्यवस्था भी न हो सकी तुझसे...साहब के कमरे में दो चार कुर्सियाँ ही उठा लाता... खैर श्रीमन् आप अपने-अपने स्थान पर बैठने की कृपा करें...

नायर ः थैंक यू...थैंक यू...

वल्लभदास ः क्या आप इंग्लैण्ड से पधारे हैं या हॉलीवुड से ...आई मीन, आर यू एंग्लो इंडियन अंग्रेजी में...

नायर ः नो-नो...आई एम प्योरली इंडियन सर...

वल्लभदास ः तब आप मुझसे अंग्रेजी में वार्तालाप क्यूँ कर रहे हैं...उत्तर दीजिये हिन्दी में...इट मीन्स यू डोन्ट नो इंडियन नेशनल लेंगवेज...

नायर ः नो-नो...आई नो सर...बट वी प्रीफर इंग्लिश...

वल्लभदास ः (कुछ गुस्से में) व्हाई...यू डोन्ट प्रीफर हिन्दी...उत्तर दीजिये अंग्रेजी में..

नायर ः बिकोज आई कॉन्ट राईट इन हिन्दी सर...

वल्लभदास ः इट मीन्स यू केन स्पीक हिन्दी...आई थिंक सो...

नायर ः यस सर...लिटिल बिट...

वल्लभदास ः देन यू विल स्पीक इन हिन्दी नाऊँ...

नायर ः आई शेल ट्राई सर...

वल्लभदास ः नो ट्राई हियर अंग्रेजी में...यू विल पोजेटिवली स्पीक इन हिन्दी समझे ...जानकी वल्लभ सीता राम ...बोलिये एक बार आप सब सज्जन...जानकी वल्लभ सीता राम...

सब लोग ः (धीमे स्वर में व भवानी जोर से बोलता है) जानकी वल्लभ सीताराम..

वल्लभदास ः ऊँ हूँ हूँ...चित्त प्रसन्न नहीं हुआ हिन्दी में... एक बार और...तनिक मधुर कंठ से उच्च स्वर में बोलिये (लगभग गाते हुए) जानकी वल्लभ सीता राम...

सब लोग ः (गाने के स्वर में जोर से बोलते हैं) जानकी वल्लभ सीता राम...

वल्लभदास ः हाँ...अब हृदय गद्-गद् हो गया हिन्दी में...भवानी...तेरी मालकिन जानकी तो अतिथियों का समाचार सुनकर तीन दिन के आकस्मिक अवकाश पर कहीं चली गई है...तू तनिक अंदर जाकर सहायता ही कर दे, चाय बनाने में...

भवानी ः (जाते-जाते) आप जो हुकम दै हैं सरकार...

वल्लभदास ः यदि समय नष्ट न हो तो मैं आप सज्जनों का सूक्ष्म-सूक्ष्म परिचय प्राप्त कर लूँ... हिन्दी में...

युवक ः अवश्य-अवश्य...

वल्लभदास ः (पंजाबी युवती से) क्षमा चाहता हूँ, सुश्री आपका शुभ नाम हिन्दी में...

पंजाबी युवती ः सुरजीत कौर है जी...

वल्लभदास ः बडा सुंदर नाम है (पंजाबी हेतु) संभवतया ये आफ पिताश्री हैं हिन्दी में...

पंजाबी ः (तनिक रोष में) जी नहीं...ए साडी धर्म पत्नी है जी...

वल्लभदास ः आप सज्जन कहाँ के रहने वाले हैं...?

पंजाबी ः असी अमृतसर पंजाब दे रहण वाले हाँ जी...

वल्लभदास ः क्या आपको भी हिन्दी से दुश्मनी है उर्दू में...

पंजाबी ः जी नहीं...सानू बोलणां नहीं आऊंदा...जी...

वल्लभदास ः (हिन्दी वाले युवक से) क्या कह रहे हैं ये पंजाबी में...

युवक ः जी इनका भावार्थ यह है कि ये हिन्दी बोलने के अभ्यस्त नहीं हैं...

वल्लभदास ः जानकी वल्लभ सीता राम...यदि हिन्दी बोलने के अभ्यस्त नहीं, तो राजस्थान राज्य के कार्यालयों में इनका निर्वाचन कठिन ही नहीं असंभव होगा हिन्दी में...

पंजाबी युवती ः असी सिरफ, गुरुमुखी नू ही लिखणां अते पढना, अपणां धर्म समझ दे हाँ जी...

वल्लभदास ः आपने कुछ कहा...?

युवक ः इनका तात्पर्य है, ये केवल गुरुमुखी को ही प्रोत्साहन देते हैं...

वल्लभदास ः जानकी वल्लभ सीता राम (युवक से) आपका परिचय...

युवक ः (खडा होकर) जी मुझे आवारा, बदमाश, निकम्मा, नाकाबिल, नाकारा कहते हैं लोग...मैंने अपने जीवन के 25 वर्षों में सभी भाषाओं का अध्ययन करने की जो मूर्खता की है, उसका पारितोषिक, इनाम या, प्राईज मुझे यह मिला है कि आज मैं दर-दर की ठोकरें खाता फिरता हूँ...मेरी योग्यता, काबिलियत, एबीलीटी के अनुसार किसी भी कार्यालय, दफ्तर, ऑफिस में जगह खाली नहीं...क्योंकि मेरे पास लुटाने को दौलत नहीं...मैं संबंधी, रिश्तेदार या साला नहीं...प्राईवेट फर्मों में मेरा कोई बहनोई या ससुर मैनेजर नहीं...इसलिये मेरी सीक्यूरिटी या जमानत देने वाला नहीं मिलता...मैंने पेट के खातिर अपने आपको अफगन खाँ से अफगान सिंह तो बना लिया, लेकिन कागजी चिथडों में ...प्रमाण पत्रें में...युनिवर्सिटीज के सर्टिफिकेटों में अपने बाप के नाम, जंगदाद खाँ, को न बदल सका...इसलिये फटे लिबास एवं जर-जर अवस्था देखकर हर कोई मुझसे कतराता है श्रीमन्... मेरा परिचय बहुत लंबा है जनाब...आप दूसरों से परिचय पूछ लीजिये...(बैठ जाता है)

वल्लभदास ः अत्यंत खेद का विषय है...

युवक ः हिन्दी में...

वल्लभदास ः हम आफ बारे में और मालुमात करना चाहेंगे...

युवक ः उर्दू में...

वल्लभदास ः श्योर-श्योर.....

युवक ः अंग्रेजी में...

वल्लभदास ः (गुजराती युवक से) आपने उदयपुर जैसी ऐतिहासिक एवं रमणिक नगरी में कब आगमन किया हिन्दी में...

कन्नू भाई ः काले सवार मां हमें अहीं आविया हता...अने पूरा दिवस पीछोला नी पाल माटे बेसी ने प्राकृतिक सौंदर्य नो रस पान करता हता...

वल्लभदास ः लगता है आपको भी हिन्दी से विशेष प्रेम नहीं है...

कन्नू भाई ः न...बैर तो नथी... परन्तु बद्धा गुजरात मां गुजरातीज पोपुलर छे, अने आफिसाओं नो...अने शालाओं नो बद्धो काम गुजराती मांज थाय छे...एटला माटे हमने गुजराती भाषा बहु प्रिय छे...

वल्लभदास ः यदि आपको हमारे कार्यालय में नियुक्त कर दिया जाय तो समस्त हिन्दी का लेखा-जोखा किस प्रकार सम्पन्न करेंगे...?

कन्नू भाई ः वूं हिन्दी थोडी, भंणी सकूं छूं...पण लखतो नथी आवड तो...

वल्लभदास ः आपका शुभ नाम...?

कन्नूभाई ः कन्नू भाई पाठक...

वल्लभदास ः कन्नू भाई पाठक... नोऊ आई अन्डरस्टेण्ड...आपका पत्र् प्राप्त हुआ था हिन्दी में (युवती से) आपका...

गुज. युवती ः बीना बहन पाठक...

वल्लभदास ः आपको उदयपुर कैसा लगा...?

बीना बहन ः बहु सरस छे...

वल्लभदास ः (मद्रासी से) आपका इन्ट्रोडक्शन क्या है अंग्रेजी में...

मद्रासी ः (मद्रासी टोन में) ह म... ना य र ...

वल्लभदास ः आप हिन्दी बिल्कुल लिख पढ नहीं सकते...?

नायर ः (अटक-अटक कर) हम, इन्दी लिकने को नहीं सकता, तोडा-तोडा बोलने को सकता जी...

वल्लभदास ः यदि आपको हिन्दी लिखना पढना नहीं आता...तो आपको विशेष रूप से यहाँ के कार्यालयों में अवसर प्राप्त करना असंभव होगा...

नायर ः हमको, जिधर भी सर्विस मिलेंगा जी...हम मळयाळम में काम करेगा जी.

वल्लभदास ः सज्जनो... आप महानुभावों के सूक्ष्म-सूक्ष्म परिचय से जो अनुभव प्राप्त हुआ है उससे हृदय को कठोर आघात पहुँचा है हिन्दी में...देश की अन्य समस्याओं के संलग्न, एक समस्या यह भी है कि पढे लिखे युवक-युवतियों को समय पर रोजगार नहीं मिलता उर्दू में...इसका मुख्य कारण यह है कि हम संपूर्ण भारतवासी विभिन्न प्रांतों की विभिन्न भाषाओं से परिचित नहीं हैं।

एक गुजरात का निवासी, केवल गुजरात प्रांत में ही नौकरी का लाभ प्राप्त कर सकता है हिन्दी में...क्योंकि वह मद्रासी नहीं जानता, पंजाबी नहीं जानता, बंगाली नहीं जानता, मराठी नहीं जानता...ठीक इसी प्रकार, एक मद्रासी या मराठी युवक-युवती, गुजरात, राजस्थान, पंजाब प्रांतों में भाग्य आजमाने में सक्षम नहीं होते... इसलिये हमें व सरकार को चाहिये कि राष्ट्रीय भाषा के अलावा, ऐसी व्यवस्था भी होनी चाहिये कि भारत की सभी प्रमुख भाषाएँ, स्कूलों, कॉलेजों आदि में सिखाए पढाए जाने का सु प्रबंध हो...ताकि राजस्थान का हिन्दीभाषी तमिल, तेलगु, मलयालम का ज्ञान होने से वहाँ के किसी कार्यालय में अवसर प्राप्त कर सके...पंजाबी भाषा का बोलने वाला युवक, गुजराती भाषा का ज्ञान रखने से गुजरात प्रांत में भी भविष्य आजमा सकता है...जानकी वल्लभ सीता राम...

(तनिक रुककर)

मैंने व्यर्थ में आप सज्जनों का समय नष्ट किया...इसके लिये मैं क्षमा का पात्र् हूँ हिन्दी में...

नायर ः (तनिक रोष में) तुम इदर हमको इन्टरव्यू को बोलाया...क लेक्चर देने को...

कन्नू भाई ः तमे जेटली वातां कई हती...तेनो तो साक्षात्कार मां कछु संबंधज नथी...

पंजाबी ः साडा टाइम बर्बाद क्यों कीता जा रिया है जी...इंटरव्यू क्यूं नहीं लें दे..

वल्लभदास ः (जरा घबरा कर) जानकी वल्लभ सीता राम...अरे भाई इंटरव्यू तो मेरे बाप ने भी कभी नहीं लिया...जब मैं तेरह बरस का था, तब हमारे पिता जी स्वर्ग लोक सिधार गए...पाँच साल मुझे उनकी पेंशन का लाभ मिलता रहा...तब एक अफसर ने मेरी दयनीय स्थिति पर तरस खाकर ...पिता जी के स्थान पर मुझे नियुक्त कर दिया हिन्दी में...उस समय इंटरव्यू का सिस्टम नहीं था अंग्रेजी में...तब से अब तक जीवन की नौका को हाथों की पतवार से खेता चला आ रहा हूँ सज्जनों...

कन्नू भाई ः तारे तमे, इंया, हमने बोलाव्यो केम...?

वल्लभदास ः अरे सज्जनो, क्रोधित होने की आवश्यकता नहीं...मैंने नहीं बुलाया आप लोगों को...

नायर ः (अधिक गुस्से में) तब क्या तुमारे बाप ने बुलाया जी...

वल्लभदास ः (अधिक घबराहट में) हाँ-हाँ... मेरे बाप ने बुलाया है...

पंजाबी ः दस ओ मूंडिया किधर है...?

वल्लभदास ः वो हनीमून मनाने गए हैं स्विटजरलैण्ड...

बीना बहन ः तारे तमे साहेब नथी...

वल्लभदास ः (गिडगिडाता हुआ) नहीं बीना बहन...मैं तो केवल यहाँ वरिष्ठ लिपिक के स्थान से सेवामुक्त होने जा रहा हूँ हिन्दी में...

पंजाबी ः साडा पैसा बर्बाद होयाजी...ओ कोण देसी...?

वल्लभदास ः (काँपते हुवे) भगवान...

नायर ः अमारा फोर डेज जर्नी और टू थाउजेन्ड रुपीज स्पेन्ट हुवा...

पंजाबी ः साडा आंणे जांणे दा पंज हजार खर्च होयगा जी ...मैं ते थूं लै के रवांगे...

(वल्लभदास का कोट पकड लेता है)

वल्लभदास ः (लगभग रोते हुवे) मम मम मैं बिल्कुल निर्दोष हूँ हिन्दी में...

कन्नू भाई ः (अत्यंत क्रोध में) वूँ प्लेन थी अईयाँ आव्यो...अने प्लेन थी जाइस...तेना दस हज्जार रिप्या तारा ती वसूल करीस...

सब लोग ः मारो...इसे मारो...इसे मारो... ... ...

वल्लभदास ः (रोते गिडगिडाते हुवे) मुझे मत मारो-मुझे मत मारो...

हिन्दी युवक ः (सबको शांत करते हुए छुडाते हुवे)... परन्तु...देवियो...सज्जनो एवं साथियों...हमें एक वृद्ध, एक निर्दोष व्यक्ति पर अपना रोष प्रकट करने से कुछ हासिल नहीं होगा...इन सारी परिस्थितियों की जिम्मेदार है आज की व्यवस्था, मेरा तो अनुभव यहाँ तक कहता है कि हमारी पोलीसी ही डिफेक्टिव है...जिसके कारण आज देश की युवा पीढी, कुंठित मानसिकता लिये हुए, भ्रम जाल में फँसी हुई है...हमारे सामने भटकाव के सिवा और कोई रास्ता ही नहीं है...इसलिये...बेकार हैं ये इंटरव्यू...व्यर्थ हैं ये साक्षात्कार...जिनको नौकरी मिलनी है उनका चयन, इंटरव्यू से पूर्व ही हो चुका होगा...इसलिये जब तक जीवित है भ्रष्टाचार ...तब तक नहीं हो सकता उद्धार (दोनों हाथ जोडते हुए) 'जय-हिन्द'.

पटापेक्ष

लइक हुसैन

जन्म ः 27 अक्टूबर, 1957

नाटककार-निर्देशक-अभिनेता

शिक्षा ः पोस्ट ग्रेजुएट, डिप्लोमा ड्रामा-नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली

कई नाटकों का निर्देशन एवम् अनेक नाटकों में अभिनय।

कई सुप्रसिद्ध विदेशी नाटककारों-निर्देशकों के साथ कार्य किया।

सम्प्रति ः पश्चिमी क्षेत्र् सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर

पता ः चटर्जी बंगला, शास्त्री सर्कल, उदयपुर मो. 9413976261, 2523858

रूपमती

लइक हुसैन

मंच पर प्रकाश उभरता है। मधुर संगीत के साथ नट-नटी गाते एवं नृत्य करते मंच पर आते हैं।

गीत ः एक जाजम पे गाने को आए हैं
हम तो नाटक दिखाने को आए हैं
सारे इंसान बराबर हैं सच मानिए
एक हैं हर बशर इसको पहचानिए
हम तो मिलने मिलाने को आए हैं
हम तो नाटक दिखाने को आए हैं।

दर्शक ः अरे ओ नट-नटी बंद करो तुम्हारा मिलना मिलाना और सीधे-सीधे नाटक शुरू करो।

नट ः वही तो कर रहे हैं।

दर्शक ः क्या कर रहे हो।

नटी ः नाटक कर रहे हैं।

दर्शक ः नाटक कर रहे हो? तुम्हें कुछ तमीज भी है?

नट ः क्यों? कमीज तो पहना है ना।

दर्शक ः कमीज नहीं तमीज।

नटी ः तमीज! अब इसमें तमीज की क्या बात हुई?

दर्शक ः नहीं हुई? अरे तुम कैसे नाटक वाले हो? ना भगवान की प्रार्थना, ना दर्शकों की मनौती, सीधे ही नाटक शुरू कर दिया।

नट ः क्षमा करें दर्शक महाराज गलती हो गई, पर क्या करूँ... ये नटी मेरी सुनती ही नहीं, मैंने इसे इतना समझाया पर ये है कि...।

नटी ः क्यों मैंने क्या किया?

दर्शक ः चलो-चलो अब तुम्हारे घर का ड्रामा बंद करो और अच्छा सा सामाजिक नाटक चालू करो।

नटी ः जी.....वहाँ बिराजिए। मैंने पहले ही कहा था, परंपरा के अनुसार पहले प्रार्थना करते हैं पर मेरी सुनो तब ना।

नट ः तो अब कर लेते हैं ना।

नटी ः हाँ.....अब तो करोगे ही। पहले कर लेते तो तुम्हारी मूँछ नीची हो जाती।

नट ः क्यों.....मूँछ क्यों नीची हो जाती?

नटी ः जोरू की बात माननी पडती इसलिए।

नट ः अच्छा अब दर्शकों को देखकर इतरा मत प्रार्थना शुरू कर।

नटी ः हाँ, शुरू करो।

नाटक में रंग बरसाओ, आओ जी गजानंद आओ
पार्वती के पुत्र् गजानंद, पार्वती के पुत्र् गजानंद रिद्धि-सिद्धि ने लारे लावो, आओ जी गजानंद आओ रणत भंवर गण आप विराजो, नीचे नगर बसाओ आओ जी गजानंद आओ, आओ जी गजानंद आओ

गजानंद की प्रार्थना के साथ एक कलाकार गजानंद तथा दो रिद्धि-सिद्धि के वेश में पधारते हैं। नृत्य करते हैं तथा प्रार्थना की समाप्ति पर प्रस्थान कर जाते हैं।

नटी ः देवों के आशीष से हम शुरू करें अभियान (अभियान)।

नट ः मन में हो आस्था तो सब कारज पूरण करे भगवान।

नटी ः मन में कोई गिरह न रखना सनम
कद्रदानों में अपने आए हैं हम

नट ः कद्रदान ? कैसे कद्रदान

नटी ः अरे दर्शक ही हमारे कद्रदान हैं।

''कुछ करोगे बेहतर तो मेहरबान कद्रदानी करेंगे।
और करोगे कमतर तो तमाशबीन पानी-पानी करेंगे।''

नट ः तो.....।

नटी ः तो.....हम करने को नाटक करें क्या सनम।

नट ः चल के लाते हैं कोई कहानी गरम

नटी ः उधर देख.....रंग-बिरंगे लोग मेला सजाए हैं। उन्हीं से पूछते हैं, हम कहाँ निकल आए हैं।

नट ः धोरों की धरा की उर्वर गोद में बसा क्या गाँव है, क्या परिचय, पहचान और क्या नाम है ?

नटी ः अरे ! यह तो राजस्थान है।

नट ः हाँ.....हाँ, यह तो राजस्थान है।

नटी ः चलो राजस्थान से ही कोई कहानी लेकर दर्शकों को सुना देते हैं।

नट ः सही है.... पर कहानी कौनसी सुनाएँ ?

नटी ः कोई ऐसी कहानी जिसके लिए राजस्थान मशहूर है।

नट ः कैसी कहानी ?

नटी ः रूपमती की कहानी

नट ः ठीक है। रूपमती की कहानी...., अरे....अरे रुक....रुक रूपमती की कहानी में ये कौन आ रहा है।

नटी ः अरे पागल ये रूपमती का वो आ रहा है।

नट ः वो.....

नटी ः धत्.....इतना भी नहीं समझता.....चल....मंच खाली कर.....। और रूपमती के उसको आने दे।

(वीर सिंह घोडा दौडता हुआ आता है कि एक आवाज आती है।)

आवाज ः प्रणाम राजन्।

वीर सिंह ः राजन्....कौन राजन् और तुम कौन हो भाई ?

आवाज ः मैं तुम्हारा शुभचिंतक हूँ राजन्।

वीर सिंह ः मेरे शुभचिंतक हो तो छिप क्यों रहे हो....सामने आओ।

भूतनाथ ः लो आ गए राजन्.....।

वीर सिंह ः राजन्.....फिर राजन्.....आपको धोखा हुआ है महाराज, मैं कोई राजा नहीं बल्कि राजकुमार हूँ।

भूतनाथ ः भूतनाथ की आँखें धोखा नहीं खा सकतीं राजन्। तुम आज को देख रहे हो और मैं कल को देख रहा हूँ।

वीर सिंह ः क्या खाक देख रहे हो ? एक परेशान आदमी का मजाक बना रहे हो।

भूतनाथ ः नहीं राजन्.....।

वीर सिंह ः मत कहो मुझे राजन्।

भूतनाथ ः तो तुम क्या राजघराने से नहीं हो?

वीर सिंह ः पिता जी राजा हैं, उनके बाद मेरे बडे भाई राजा होंगे।

भूतनाथ ः तुम अपने बडे भाई के होते हुए ही राजा होंगे।

वीर सिंह ः ऐसा कहना भी पाप है महाराज, क्यों मुझे फँसाना चाहते हो ?

भूतनाथ ः नहीं.....नहीं फँसोगे, और ऐसा लगे तो मुझे याद करना.....मैं तुम्हारी मदद करूँगा। जाओ अपने घर जाओ।

वीर सिंह ः क्या घर जाओ.....भाई के बिना घर जाऊँगा तो भाभी क्या सोचेंगी ?

(प्रकाश बंद होकर पुनः आता है।)

गीत

आठ पहर मन पंछी भटके
आठ पहर रोये नैन हाँ
ना कोई पाती खबर संदेशा
ना कोई बैन ना चैन हाँ
आठ पहर मन पंछी भटके
आठ पहर रोये नैन हाँ।

(भाभी गीत पर विरह भाव एवं दुःख प्रकट करती है, उसके हाथ में पूजा की थाली है और अचानक वीर सिंह का प्रवेश)।

भाभी ः वीर सिंह आ गया तू.....तेरे भैया कहाँ हैं।

(वीर सिंह चुप रहता है।)

तू बोलता क्यों नहीं वीर सिंह, क्या तेरे भैया।

वीरसिंह ः नहीं भाभी.....भैया जीवित हैं पर रास्ते में कहीं भटक गए हैं.....वो आते ही होंगे।

भाभी ः आते ही होंगे.....अरे तुझे उन्हें साथ लाना था।

वीर ः आ जाएँगे भाभी। बस आते ही होंगे।

भाभी ः आते ही होंगे। तुझे पता है, आज करवा चौथ है, आज के दिन सुहागिन स्त्री अपने सुहाग के दर्शन करके ही अपना उपवास पूरा करती है। पर तुझे क्या? तू तो कुँवारा है इसलिए सुहागिन की पीडा तू क्या जाने।

वीर ः अब बस भी करो भाभी.....मैंने कहा ना आते ही होंगे।

भाभी ः कैसे बस करूँ.....मैंने सुना है रूपनगर में रूपमती की सवारी निकल रही है, तेरे भैया उधर चले गए तो.....।

वीर ः तो !

भाभी ः अगर उन्होंने उसे देख लिया तो

वीर ः तो !

भाभी ः गजब हो जाएगा.....वो उन्हें मरवा देगी।

वीर ः ऐसे कैसे मरवा देगी?

भाभी ः सुना है वो सुंदर है और आज के दिन उसकी शोभा यात्र निकलेगी। राजकुमारी स्वयंवर कर ब्याह रचायेंगी। यूँ ही चलते-चलते किसी को हार पहनायेंगी।

वीर ः मेरे मन में कैसी हूक सी उठी है.....मानो प्रेम कोकिला कूकने लगी है।

अब रूपमती को देखने जाएँगे हम
रास्ते के लिए कलेवा बना दीजिए
राह है दुश्वार और लंबा सफर
अपने हाथों से मट्ठा पिला दीजिए
मैं दिखूँ खानदानी अमीरे वतन
मेरी पगडी में कलंगी लगा दीजिए

भाभी ः बोल तो ऐसे रहा है जैसे रूपमती को देखने नहीं, ब्याहने जा रहा है। जा.....जा अगर कुव्वत है तो रूपमती को ब्याह कर ले आ.....फिर हुक्म चलाना उस राजकुमारी पर।

वीर ः ऐसा है तो मैं चला। अब रूपमती को ब्याह कर ही घर लौटूँगा, नहीं तो आपको अपना मुँह नहीं दिखाऊँगा।

भाभी ः वीर सिंह.....वीर सिंह.....यह मैंने क्या कह दिया। थका-मांदा आया था.....भूखा था बेचारा.....उसे यूँ ही रवाना कर दिया.....वीर सिंह .....वीर सिंह.....।

भाई हीर सिंह ः (प्रवेश करके) क्या हुआ.....ऐसी बदहवास कहाँ भागी जा रही हो?

भाभी ः क्षमा करें स्वामी.....मुझसे एक बहुत बडी गलती हो गई

हीर ः पहले गलती करती हो फिर पछताती हो। बोलो क्या हुआ?

भाभी ः मैंने मजाक ही मजाक में वीर सिंह को रूपमती से ब्याह का उलहाना दे दिया।

हीर ः क्या.....क्या तुम्हें पता नहीं कि रूपमती की शोभा यात्र मौत का पैगाम है। उसे नजर उठाकर देखना गुनाह है। अगर पकडे गए तो रथ के पहिये से कुचलकर मौत की सजा देती है। रूपमती जितनी सुंदर है उतनी ही जहरीली है।

भाभी ः अब क्या होगा स्वामी?

हीर ः होगा क्या ? राजकुमारी रूपमती बहुत ही होशियार है। वह कतार में खडे लोगों पर फूलों के गुच्छे फेंकती है। गुच्छों में अक्सर ईंट और पत्थर होते हैं। अपनी ओर गुच्छों को आता देखकर जो कोई भी बचने की कोशिश करता है उसकी चोटी पकडी जाती है और सजा-ए- मौत मिलती है।

भाभी ः यह मैंने क्या कर दिया। प्यारे देवर को मौत के मुँह में धकेल दिया।

हीर ः हाँ....., मौत के मुँह में ही धकेल दिया तुमने उसे।

भाभी ः परन्तु मैंने तो मजाक किया था। मुझे क्या पता था कि वो वास्तव में ही वहाँ चला जाएगा।

कृपया जल्दी जाएँ स्वामी.....।

(प्रस्थान, नट-नटी का प्रवेश)

नटी ः बडा गजब हुआ.....बेचारा हीर सिंह इतने समय बाद थका हारा अपने घर आया।

नट ः और लौटते पाँव वापस भूखा प्यासा वीर सिंह को लौटाने के लिए चला गया।

नटी ः अब क्या होगा?

नट ः होगा क्या.....वही होगा जो मंजूरे खुदा होगा।

नटी ः अरे.....अरे.....देख.....देख.....वो कौन तूफान की तरह घोडा दौडाता आ रहा है।

नट ः यह जरूर वीर सिंह होगा। घोडे की ऐसी रफ्तार तो सिर्फ वीर सिंह की ही हो सकती है।

नटी ः चलो.....चलो रास्ते से हटो.....कहीं हम उसके घोडे के पैरों तले दब जायेंगे।

नट ः हाँ, जल्दी चलो।

(वीर सिंह तेजी से घोडा दौडाता हुआ आता है।)

हीर ः (प्रवेश कर) वीर सिंह.....वीर सिंह रुको वीर सिंह

वीर ः नहीं भैया.....अब मैं नहीं रुकूँगा।

हीर ः सुनो तो सही वीर सिंह। जो ज्ञानी पुरुष होते हैं वो औरतों की बात का बुरा नहीं माना करते हैं। इसलिए कहता हूँ रुक जाओ वीर सिंह.....तुम्हारी भाभी ने तुमसे मजाक किया था.....और अब वो पछता रही है वीर सिंह।

वीर ः नहीं भैया.....मैंने प्रण किया है अब मैं रूपमती को ब्याह कर ही लाऊँगा नहीं तो घर नहीं लौटूँगा।

हीर ः हठ छोड मेरे भाई। राजकुमारी रूपमती को ब्याहना इतना आसान नहीं है। उसे ब्याहने के चक्कर में ना जाने कितने राजकुमार अपने प्राणों की आहुति दे चुके हैं।

वीर ः चाहे जो हो भैया। अब तो मैं अपना प्रण पूरा करूँगा।

हीर ः नहीं, वीर सिंह नहीं। सुनो वीर.....

(वीर सिंह घोडा दौडाता हुआ आँखों से ओझल हो जाता है।)

नहीं माना। अपनी जिद का पक्का है। अब मैं क्या करूँ। वीर मत जा, वो नागिन है.....डस लेगी.....विष कन्या है मार डालेगी। रुक जा.....अरे कोई रोको उसे ? देखो मेरा भाई पगला गया है। मौत से मुहब्बत कर बैठा है.....कोई तो रोको उसे।

(खडा-खडा देखता रहता है, थ्पक व्नज बहुत तेज संगीत बजता है, रूपमती की शोभा यात्र आती है, वीर सिंह मुँह पर कपडा लपेटे एक ओर खडा है। रूपमती इधर-उधर देखती हुई पालकी में चलती है। वो एक फूलों का गुच्छा उठाकर फेंकती है जो वीर सिंह के लगता है। वीर सिंह चोट लगने से गिरता है शोभायात्र निकल जाती है।)

वीर ः हाय.....उस हुस्न मुजस्सम का नजारा ना पूछिए।

''रेशम के पेरहन में था मखमली बदन
ख्वाबों का अंजुमन या महका-महका चमन
इतना तो मुझे इल्म है उनसे मिली नजर
बाद उसके क्या हुआ कुछ नहीं खबर।''

चम्पा ः (रोती हुई आती है, वीर सिंह को देखकर।)

कौन हो तुम.....इस शाहीबाग में कैसे घुस आए ?

वीर ः तुम अपनी बताओ.....रोती क्यों हो ?

चम्पा ः "शाही मालन हूँ, है यह शाही चमन
नाम चम्पा मेरा, मुल्तान मेरा वतन
हार अंतिम मैं शायद बनाने चली
कल का सूरज मैं शायद देखूँ नहीं।"

वीर ः मैं समझा नहीं.....अंतिम हार क्या किसी मुर्दे पर चढाना है।

चम्पा ः जिस्म जिन्दा है उसका, जमीर मुर्दा है। राजकुमारी है वह। सख्त, बेरहम।

वीर ः कौन ? राजकुमारी रूपमती ?

"उनका ख्याल उनका तसव्वुर है जिन्दगी
लब पे उन्हीं का नाम है मेरी बन्दिगी।"

चम्पा ः शी.....धीरे बोलो। जुबान पर नाम आने से पहले जुबान काट ली जाती है। राजकुमारी के लिए फूलों का हार बनाती हूँ। आज शोभायात्र देखने के कारण देर हो गई और मुझे राजकुमारी के श्ाृंगार के लिए माला बनानी थी जो मैंने नहीं बनाई। राजकुमारी नाराज होकर अब मुझे सीधे सजा-ए-मौत देंगी।

वीर ः तुमने मुझ पर भरोसा कर मुझे अपनी विपदा सुनाई। इसलिए अब हार मैं बनाऊँगा, तुम मेरा बनाया हार ले जाकर राजकुमारी को देना। कहना तुम्हारी भतीजी ने बनाया है इसलिए देर हो गई।

चम्पा ः उससे क्या होगा देर तो हो ही गई ना, अब राजकुमारी मुझे नहीं छोडेंगी।

वीर ः तुम मेरा कहना मानकर तो देखो।

चम्पा ः ठीक है हार बना दो।

वीर ः लाओ, फूल मुझे दो और तुम जाकर तैयार हो जाओ, तब तक मैं हार बनाता हूँ। (हार बनाता है।)

(चंपा अंदर जाकर बाहर आती है।) लो बन गया हार।

चम्पा ः लाओ जल्दी दो.....मैं हार देकर अभी आती हूँ.....तब तक तुम घर का ध्यान रखना।

वीर ः ठीक है.....तुम जाओ।

गीत

ऊँचा रूपमती का गोखडा रे,

कैसा यह जालिम हार, ओ चम्पा,

मारी जासी रे.....

(राजकुमारी गुस्से से आग बबूला होकर टहल रही है, चम्पा प्रवेश कर चुपचाप खडी हो जाती है।)

चम्पा ः हे भगवान ! अब क्या होगा.....रक्षा करना मेरी।

रूपमती ः (देखते हुए) आ गई तू.....कहाँ मर गई थी ? तुझे पता भी है, क्या समय हुआ है ?

चम्पा ः जी !

रूपमती ः जी की बच्ची.....तुझे पता है आज मेरी सखी-सहेलियाँ मेरी राह देख रही होंगी और मैं तुझ बेशर्म की राह देख रही हूँ। बता, कहाँ मर गई थी ?

चम्पा ः जी राजकुमारी जी।

रूपमती ः अब बताती क्यों नहीं ? क्या गूँगी हो गई है ?

चम्पा ः जी राजकुमारी जी मेरी भतीजी दूर देश से आई है। उसने आफ लिए हार बनाने की जिद की इसलिए देर हो गई।

रूपमती ः तुझे पता है, मैं हर किसी के हाथ का हार नहीं पहनती।

चम्पा ः जी पता है, पर वो हार इतना सुंदर बनाती है कि.....एक बार देख लेती तो.....।

रूपमती ः अच्छा ला दिखा.....(देखकर) अरे हार तो बहुत ही सुंदर बनाया है.....ऐसा सुंदर हार तो मैंने पहले कभी नहीं देखा।

चम्पा ः इसीलिए तो मैं.....।

रूपमती ः अच्छा.....अच्छा ठीक है.....अब ज्यादा बातें मत बना और अपनी भतीजी को मेरे पास भेज। मैं देखना चाहती हूँ कि इतना सुंदर हार बनाने वाली खुद कितनी सुंदर होगी। जा जल्दी और उसे भेज। रात होने से पहले वो आ जानी चाहिए।

चम्पा ः हे भगवान! अब मैं यह और किस नई मुसीबत में फँस गई।

वीर ः क्या हुआ चम्पा? हार पसंद आया कि नहीं राजकुमारी को।

चम्पा ः यही तो मुसीबत है कि राजकुमारी को हार बहुत ही पसंद आया।

वीर ः तो फिर

चम्पा ः उसने तुम्हें बुलाया है।

वीर ः यह तो बहुत अच्छी बात है।

चम्पा ः अच्छी बात है। भूल गए तुम मेरे भतीजे नहीं भतीजी हो।

वीर ः यह तो मैं भूल ही गया। अब.....। लेकिन तुम परेशान मत हो। मैं कोई तरकीब जरूर निकाल लूँगा।

चम्पा ः तो जाओ वीर सिंह, भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे। (चम्पा जाती है।)

वीर ः भगवान तो रक्षा करेंगे ही। पर आपका अब मैं क्या करूँ।

भूतनाथ की शरण में जाता हूँ शायद वो ही कुछ मदद करें। मेरी रक्षा करो भूतनाथ.....मेरी रक्षा करो।

भूतनाथ ः (भूतनाथ प्रसन्न होकर) चिंता मत करो राजन्, तुम्हारी मंजिल करीब आ रही है।

वीर ः मैं मुसीबत में हूँ भगवान, बडी मुसीबत में हूँ।

भूतनाथ ः जानता हूँ.....सब जानता हूँ। यह ओढनी लो। इसे ओढते ही रूपमती तुम्हें स्त्री समझेगी। लेकिन खबरदार इसे शरीर से मत हटाना नहीं तो तुम्हारा भेद प्रकट हो जाएगा।

(एक तरफ से चम्पा एवं वीर सिंह और दूसरी तरफ से रूपमती का प्रवेश।)

रूपमती ः ले आई अपनी भतीजी को।

चम्पा ः जी राजकुमारी जी। यही है मेरी भतीजी 'फुलवा'।

रूपमती ः ठीक है तू जा। आज रात फुलवा हमारे साथ ही रहेगी।

चम्पा ः जो आज्ञा।

रूपमती ः आओ फुलवा आओ। मेरे पास आओ। इतना सुंदर हार तुमने किससे बनाना सीखा?

फुलवा ः जी, हार बनाना तो स्वयं ही सीखा है और यह हार तो कुछ भी नहीं है। मैं तो इससे भी सुंदर हार बना सकती हूँ। पर क्या करूँ चाची ने इतनी जल्दी मचाई कि मैं ठीक से कुछ कर ही नहीं पाई।

रूपमती ः सच.....तुम इससे भी सुंदर हार बना सकती हो।

फुलवा ः सच.....। यकीन नहीं आए तो अभी बनाकर दिखाऊँ।

रूपमती ः नहीं.....अभी नहीं। अभी तो यह हार ही ठीक है कल बना देना। अभी तो तुम अपने बारे में बताओ।

फुलवा ः ठीक है। पूछो।

रूपमती ः तुम कहाँ रहती हो.....तुम्हारा देश कैसा है?

फुलवा ः मैं पठानकोट में रहती हूँ। मेरे देश में बुलबुल गाती है, मोर नाचते हैं, हंस उडते हैं, हिरण दौडते हैं.....।

रूपमती ः बहुत खूब। बिल्कुल स्वप्न जैसा। और फुलवा क्या तुम्हारे यहाँ औरतें इतनी कद्दावर होती हैं।

फुलवा ः यह मत पूछिये राजकुमारी। सूरत जनानी और सीरत मर्दानी। आखिर पठानकोट जो ठहरा।

रूपमती ः लेकिन फुलवा.....तुमने मेरे लिए हार बनाने की जिद क्यों की ?

फुलवा ः सुना था रूपनगर की राजकुमारी रूपमती बहुत ही सुंदर है.....उसका हुस्न बेमिसाल है।

रूपमती ः तो क्या देखा ?

फुलवा ः दुनिया झूठ बोलती है।

रूपमती ः क्या मेरा हुस्न बेमिसाल नहीं है ?

फुलवा ः माफ कीजिये राजकुमारी साहिबा, छोटा मुँह बडी बात। आपका हुस्न ही नहीं, आपकी हर चीज बेमिसाल है, हर अदा बेमिसाल है, हर बात बेमिसाल है।

रूपमती ः बोलती रहो अच्छा लगता है। आज तक मेरे शयन कक्ष में कोई गैर औरत या मर्द नहीं आया। बस तुम आई हो। और तुमने मेरा दिल जीत लिया है। आज रात तुम मेरी हमदम हो, हम नवाँ हो। तुम इतना मीठा बोलती हो और तुम हो भी कितनी सुंदर, काश तुम मर्द होती तो मैं तुमसे ब्याह रचा लेती।

वीर सिंह ः क्या वास्तव में मैं आपको इतनी सुंदर लगी।

रूपमती ः हाँ !

वीर सिंह ः कहते हैं अगर सच्चे दिल से भगवान से यदि कुछ माँगा जाए तो भगवान माँगने वाले की मनोकामना अवश्य पूरी करता है।

रूपमती ः सच में ऐसा हो सकता है।

वीर सिंह ः हाँ, सच में.....।

रूपमती ः तो फिर भगवान से प्रार्थना करते हैं -

"अर्जी सुन ले जगदम्बे हमारी जी
हो मरद दोनों में एक नारी जी
हाल दिल का मैया मैं कैसे कहूँ

उम्र बीत रही पूरी हमारी जी
अर्जी सुन लो जगदम्बा हमारी जी।''

(वीर सिंह सिर पर ओढी हुई चुनरी उतारकर मर्द बन जाता है।)

वीर ः राजकुमारी जी.....राजकुमारी जी.....मैया ने हमारी सुन ली देखिए मैं मर्द बन गया।

रूपमती ः अरे पाजी.....मुझे तो पहले ही पता था कि तू मर्द है और मुझे छलने आया है।

वीर ः यह आप कैसे कह सकती हैं ?

रूपमती ः औरत के हाथ की नजाकत और मर्द के हाथ की ताकत फूल खुद-ब-खुद बयाँ कर रहे थे।

''छलने मुझे मक्कार तू महलों में आया है
होते हैं मर्द फरेबी साबित कर दिखलाया है।''

वीर ः ''तिरिया चरित्र् की बात सच्ची याद आती है
करके पति का खून, सती खुद कहलाती है।''

रूपमती ः ''समझता है खिलौना नारी को, अय्याशी देखी मर्दों की
बगुला भगत ये कहता है, गंगा में नहाया है।''

वीर ः ''तेरी इस तोता चश्मी से, कई बर्बाद हो बैठे
नजर के तीर चलते हैं, किसी की जान जाती है।''

रूपमती ः अरे, मक्कार.....पाजी.....भेष बदलकर मेरे महलों में आ गया.....अब मरने के लिए तैयार हो जा।

वीर ः जब तुम्हें पता था कि मैं मर्द हूँ, तो मुझे महलों में बुलाया ही क्यूँ। और बुलाकर मुझे भरमाया क्यूँ। अब अपना चरित्र् दिखा रही हो।

केसर सिंह ः (प्रवेश कर) क्या बात है यह महलों की शांति क्यों भंग कर रखी है ?

रूपमती ः देखिए पिता जी.....यह मक्कार.....बहुरूपिया स्त्री का वेष बनाकर मेरे महलों में घुस आया है।

केसर सिंह ः यह नौजवान कोई बहुरूपिया नहीं बल्कि इंद्रगढ का राजकुमार वीर सिंह है। इसने हमारे राज्य की सीमा में प्रवेश किया तभी हमें पता चल गया था कि वीर सिंह हमारे राज्य में तुमसे ब्याह करने के लिए आया है। हमने इसे तुम्हारा घमण्ड चूर करने के उद्देश्य से ही स्त्री वेष में तुम्हारे महलों में आने दिया।

रूपमती ः पर पिता जी.....।

केसर सिंह ः पर वर कुछ नहीं.....तुम बहुत राजकुमारों की जान ले चुकी हो। अब तुम्हारी कोई बात नहीं सुनी जाएगी। हमने इसे तुम्हारा वर मान लिया है और हमारी इच्छा है कि अब तुम भी हमारी आज्ञा को मानकर इसे अपना पति मानो।

रूपमती ः जैसी आपकी आज्ञा।

केसर सिंह ः तो ठीक है फिर शादी की तैयारियाँ हो जाएँ।

(संगीत उभरता है)

अजय अनुरागी

जन्म ः 1 जुलाई, 1967

शिक्षा ः एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल., पीएच.डी., शिक्षा में स्नातक डिग्री तथा पत्रकारिता एवं जनसम्फ में स्नातकोत्तर डिग्री

साहित्य ः व्यंग्य ः आदमी से सावधान, चरणम् शरणम् गच्छामि, साहित्य में पूँजी निवेश, चापलूसी का अनुशासन, दबाव की राजनीति।

कविता ः इस सदी के अंत में

आलोचना ः नयी कविता ः गिरिजा कुमार माथुर

बाल साहित्य ः जंगल की कहानियाँ, जंगल की कविताएँ

इसके अतिरिक्त शिक्षा, समाज आदि विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित विभिन्न पत्र्-पत्रिकाओं में नियमित व्यंग्य लेखन।

सम्फ ः 1, न्यू कॉलोनी, झोटवाडा-पंखा,
जयपुर-302012

फोन ः 98870-69878, 99293-65732

गृहस्थी के गुलगुले

अजय अनुरागी

पात्र्

मनोज ः सरकारी नौकर, उम्र 38 वर्ष

सोहनलाल ः मनोज का पिता, उम्र 62 वर्ष

मोहिनी ः अध्यापिका, मनोज की पत्नी, उम्र 35 वर्ष

सुशीला देवी ः मनोज की माँ, उम्र 58 वर्ष

सिद्धि ः मनोज व मोहिनी की पुत्री, उम्र 8 वर्ष

उमाकान्त ः मोहिनी का पिता, उम्र 60 वर्ष

सौष्ठव ः मनोज व मोहिनी का पुत्र्, उम्र 5 वर्ष

अंगूरी देवी ः मोहिनी की माँ, उम्र 55 वर्ष

स्थान ः डायनिंग हॉल

समय ः सायं 6 बजे

दृश्य एक

(हाल के बीचोंबीच डायनिंग टेबल तथा उसके चारों ओर छः कुर्सियाँ लगी हुई हैं। उनमें से एक पर मनोज बैठा-बैठा अखबार पढ रहा है। दूसरी कुर्सी पर सिद्धि बैठकर चित्रकला की कॉपी में चित्र् बना रही है एवं तीसरी पर सौष्ठव बैठा हुआ है तथा वह टी.वी. देख रहा है। मनोज रह-रहकर घडी पर एक नजर डाल लेता है तथा फिर अखबार पढने लगता है। उसकी बेचैनी उसके हाव-भाव से साफ झलक रही है।)

सिद्धि ः (चित्र् में रंग भरते-भरते) पापा, मम्मी अभी तक नहीं आयी, क्या बात है ? अँधेरा होने वाला है।

मनोज ः (अँधेरे की बात सुनकर उसके मन में कई तरह की शंकाएँ-आशंकाएँ घिर आयीं। वह डायनिंग हॉल में चहल-कदमी तेज कर देता है। मोहिनी के स्कूल में फोन मिलाता है। कोई उठाता नहीं है तो गुस्से से फोन पटक देता है। 'शायद सब चले गये होंगे' (बडबडाने लगता है) फिर ध्यान हटाने के लिए सौष्ठव की ओर तथा टी.वी. की ओर देखता है।)

मनोज ः सौष्ठव इसे बंद कर दो। समाचार आ रहे हैं। कार्टून आए तब चला लेना। अभी स्कूल का काम कर लो। चलो उठो।

सौष्ठव ः काम तो मैंने स्कूल से आते ही पूरा कर लिया है।

मनोज ः तो जाओ, बाहर खेल आओ। हमेशा टी.वी. के आगे चिफ रहोगे, तो आँखें खराब हो जायेंगी।

सौष्ठव ः हमारी मैडम कहती है कि टी.वी. से दिमाग भी कमजोर हो जाता है।

मनोज ः ठीक कहती है तुम्हारी मैडम। टी.वी. देखने वाले बच्चे अपना दिमाग कम ही लगाते हैं। सब कुछ देखते रहने से उनकी कल्पना शक्ति कमजोर हो जाती है। सोचने-समझने की शक्ति पर भी कुप्रभाव पडता है।

सिद्धि ः पापा, मम्मी को नौकरी करने मत भेजा करो। सबकी मम्मी घर पर मिलती है और हमारी.....। सुबह भी हम बस तक अकेले जाते हैं। शाम को भी अकेले आते हैं। सबकी मम्मियाँ स्कूल बस से उतरते ही मिल जाती हैं। सुबह बच्चों को छोडकर आती हैं।

मनोज ः बेटा, तुम्हारी मम्मी नौकरी करती है न इसलिए तुम्हें नहीं मिल पाती है, परन्तु तुम्हें घर में दादा, दादी तो मिलते ही हैं न!... अब नौकरी करना भी तो जरूरी है बेटा। (बात बदलते हुए) सौष्ठव, तुम स्कूल का काम करो बेटा, पढाई में अव्वल आना है।

सौष्ठव ः काम कर लिया पापा मैंने।

मनोज ः काम कर लिया है तो याद भी तो करना है।

सौष्ठव ः याद तो मम्मी आएगी तब करूँगा।

सिद्धि ः पापा, मम्मी को देखने चलें क्या?

मनोज ः कहाँ चलें ? स्कूल की छुट्टी 4.30 बजे हो जाती है। वहाँ कौन होगा ? मैंने फोन करके देख लिया कोई उठा ही नहीं रहा है। इसका मतलब है कि सब चले गये हैं।

(सुशीला देवी का प्रवेश)

सुशीला देवी ः बहू अभी नहीं आयी क्या?

सौष्ठव ः (एक स्वर में) नहीं आयीं अभी।

सुशीला देवी ः (अनसुनी करके) रोज तो पाँच तक आ जाती थी। आज सवा छः बज गये हैं। अभी तक नहीं आयी। मेरे मन में तो बहुत बुरे-बुरे विचार आ रहे हैं।

(सोहनलाल का प्रवेश)

सोहनलाल ः स्कूल में शायद कोई काम हो गया हो ?

मनोज ः स्कूल में मैंने फोन किया है कई बार, कोई उठा नहीं रहा। शायद सब चले गये हैं।

सोहनलाल ः कहीं ऐसा तो नहीं स्कूल का फोन खराब हो और घंटी जा रही हो?

सुशीला देवी ः आजकल खूब एक्सीडेन्ट हो रहे हैं। मेरा तो दिल बैठा जा रहा है। औरतों का तो अँधेरे में घर से बाहर निकलना ही बुरा है। अपनी कॉलोनी की गीता के साथ क्या हुआ पता है ?

सोहनलाल ः ठीक है-ठीक है, तुम चुप रहो। फालतू बात मत किया करो। शहर में नौकरी-पेशा औरतें रात तक ऑफिस से लौटती हैं। इसमें क्या हो गया ?

सुशीला देवी ः कितनी बार कहा है कि हमें नौकरी की जरूरत नहीं है। लेकिन मानती ही नहीं है। क्या कमी है मनोज के पास ? हमारी सारी सम्पत्ति अकेले मनोज के लिए ही तो है। फिर क्यों इतनी भागमभाग ?

सोहनलाल ः तुम्हें पढी-लिखी बहू चाहिए थी न, पढी-लिखी बहू घर में बैठकर भाड थोडे ही झोंकेगी।

सुशीला देवी ः भाड न झोंके, किन्तु घर की देखभाल तो ढंग से कर सकती है। पढा-लिखा होने का मतलब नौकरी करना थोडे ही होता है। मैं भी उस जमाने की बी.ए. हूँ नौकरी थोडे ही कर ली है मैंने।

सोहलाल ः तुम्हारा जमाना और था। तब जरूरतें भी कम होती थीं। थोडे में ही काम चल जाता था। अब खर्चे बहुत बढ गये हैं। सुविधाओं का विस्तार होने से आदमी की व्यय क्षमता बढ गयी है।

सुशीला देवी ः देख रही हूँ जी, आज के जमाने में कर्ज लेना भी शान बन गया है। भले ही कर्ज ना चुके तो कुर्की हो जाये।

सोहनलाल ः तुम्ही बताओ अकेले आदमी की कमाई से पार कैसे पड सकती है। घर में दो कमाते हैं तो सहारा मिलता है।

सुशीला देवी ः आग लगे ऐसे सहारे को। न ढंग से खा सकते हैं, न ढंग से बैठ सकते हैं और न ढंग से बच्चों को पाल सकते हैं। देखा नहीं तुमने मनोज और मोहिनी को सुबह जागते ही नहाने की जल्दी रहती है शाम को आते ही रोटी-पानी की जल्दी और बच्चों की समस्या रहती है सो अलग। दिनभर छोटे-छोटे बच्चे अकेले रहते हैं। बीमार भी हो जाएँ तो छुट्टी नहीं कर सकते। हम गाँव चले जाएँ तो दोनों में से एक को छुट्टी लेनी पडती है। ऐसी भी क्या नौकरी?

सोहनलाल ः यह नया जमाना है। महिला बंधनों को तोडकर बाहर निकल रही है। वह भी स्वतंत्रता चाहने लगी है। घर गृहस्थी के अलावा भी अपना व्यक्तित्व विकसित करना चाहती है।

स्त्री का दायरा बढ रहा है। वह कोल्हू का बैल नहीं है कि घर की घानी के चारों ओर चलती रहे और अन्त में किसी मंजिल पर भी नहीं पहुँचे। अब अपनी मंजिल खुद तलाश रही है स्त्री, वह आत्मनिर्भर होना चाहती है। अपने अस्तित्व की स्थापना में लगी हुई है।

सुशीला देवी ः तभी तो मैं देख रही हूँ अपने पडोस में शर्मा जी की बहू तो नौकरी करने जाती है और उनका लडका घर में बच्चों को रखता है। वह अपने पति की भी परवाह नहीं करती है। घर का सामान भी खुद ले आती है।

सोहनलाल ः यही तो न ! जो कमाता है उसी की चलती है। आत्मनिर्भर स्त्री किसी की गुलाम नहीं होती, वह अपनी मर्जी की मालिक है। गुलाम तो तब होती है जब वह आर्थिक रूप से कमजोर होती है।

सुशीलादेवी ः सब पैसों की माया है।

सुशीलादेवी ः अपने बच्चों की परवाह भी नहीं है उसे। अँधेरे में ऐसी कौन सी नौकरी चल रही है। उसकी कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारी नाक कटवा दे ?

सोहनलाल ः तुम फालतू बात करती हो। कभी-कभार काम में देर हो ही जाती है।

सुशीला देवी ः मुझे तो लगता है बहू के लक्षण ठीक नहीं हैं। मनोज तो सीधा है। वह नहीं जानता त्रिया-चरित्र्।

सोहनलाल ः तुम कैसी बात करती हो सुशीला ? बहू सब जानती है और मनोज कुछ नहीं जानता ?

सुशीला देवी ः जान भी गया हो तो क्या कर सकता है वह ? आजकल औरतें कई तरह की धमकी देकर अपनी मनमानी करती रहती हैं।

सोहनलाल ः जैसे तुम कर लिया करती हो।

सुशीला देवी ः (चिढते हुए) जब देखो तब तुम्हारे पास मेरी ही बात रहती है। मैंने तो तुम्हें बहुत धमकी दी है। मेरी धमकियों से डरने वाले भी बहुत हो न। ... देखो कैसे थर-थर काँप रहे हो ? मैं तुम्हारी हर बात मानती रही हूँ, इसी का परिणाम है कि तुम मुझ पर ही ये फिकरे कस रहे हो। (आँखों से आँसू पोंछते हुए) भगवान जानता है मैंने कभी तुम्हें परेशान किया हो। अडतीस साल हो गये हमारी शादी को आज तक एक साडी के लिए कभी जिद की हो तो बता दो।

सोहनलाल ः तुम तो मजाक की बात का ही बुरा मान गयी हो। रोकर क्यों नौटंकी कर रही हो ?

सुशीला देवी ः (उठते हुए) मैं तो तुम्हें नौटंकी ही लग रही हूँ बुढापे में। जवानी में नहीं कही कभी यह बात तुमने। शादी से पहले देखने गये थे तब तो मुझे देखते ही लार टपकाने लगे थे। जबरन मुझसे शादी की हाँ करवा ली थी। आज मैं नौटंकी हो गयी हूँ। अब तुम्हारे सब काम हो गये। मेरी जरूरत ही क्या रही है ?

सोहनलाल ः (हाथ पकडकर बिठाते हुए) कैसी बात कर रही हो सुशीला ? तुम्हारी जरूरत इस घर को जितनी पहले थी उतनी ही अब है। पर आँसू तो पोंछ लो।

सुशीलादेवी ः मेरी जरूरत इस घर को है, तुम्हें तो है ही नहीं। मैं आज मरूँ या कल, क्या फर्क पडेगा तुम्हें ? उस चुडैल से मिलने का रास्ता और खुल जायेगा।

सोहनलाल ः किस चुडैल की बात कर रही हो तुम ?

सुशीला देवी ः वो जो तुम्हें हर साल होली, दीवाली पर शुभकामनाएँ भेजती है।

सोहनलाल ः तुम भी छीः-छीः कैसी बातें करती हो। इस उम्र का भी ख्याल तुमने नहीं किया। वह तो हमारी क्लब की हैड है। उसका काम मुझे ही नहीं सभी सदस्यों को शुभकामनाएँ देना है। कितने पुराने युग में जी रही हो सुशीला ?

सुशीला देवी ः हाँ-हाँ, क्यों नहीं तुम इक्कीसवीं सदी के राजकुमार हो, मैं अठारहवीं सदी की मध्यकालीन महिला हूँ। मैं क्या जानूँ आधुनिक सभ्यता। (तभी मोहिनी का प्रवेश होता है।)

सोहनलाल ः इतनी देर कैसे हो गयी बहू ? हमारा तो चिंता से बुरा हाल हो गया था ?

मोहिनी ः पिता जी हमारे स्कूल का वार्षिकोत्सव है पन्द्रह दिसम्बर को। उसी की तैयारी में लगे हुए थे सभी।

सोहनलाल ः फोन पर सूचना तो देनी ही चाहिए न। तुम्हें लेने मनोज चला जाता।

मोहिनी ः फोन खूब किये पिता जी लेकिन उठाया नहीं। शायद डैड हो गया है। घंटी जाती रहती है। (वह आगे बढकर फोन को उठाकर कान पर लगाती है।)

सुशीला देवी ः पडोस में शर्मा जी के यहाँ कर देना था फोन। मजबूरी में तो किया ही जा सकता है।

मोहिनी ः मेरे पास उनका नंबर नहीं था, वरना कर देती।

मनोज ः ऐसी इमरजेंसी के लिए एक मोबाइल लेना ही पडेगा।

सुशीला देवी ः क्यों खर्च करता है बेटा पाँच-सात हजार रुपये ? कभी जरूरी हुआ तो शर्मा जी के घर कर देगी। सूचना मिल जाएगी।

मनोज ः फिर भी जरूरी है मम्मी। स्टेटस के लिए भी मोबाइल होना चाहिए।

सोहनलाल ः इसका हर महीने कम से कम तीन-चार सौ रुपये बिल तो आया ही करेगा ?

मनोज ः केवल सुनने के ही दो सौ रुपये कम से कम आएँगे। बाकी जितना करेंगे उतना आएगा।

सोहनलाल ः मीठे खर्चे हैं ये। एक बार शौक लग गया तो आदत ही बन जाएगी।

मनोज ः क्या करें पिता जी ? समय के साथ-साथ सब करना पडता है।

सुशीला देवी ः जा बहू हाथ-मुँह धो ले। तब तक मैं चाय बना लाती हूँ। (कहकर रसोई की ओर चली जाती है और मोहिनी अपने कमरे की ओर। मनोज वहीं बैठकर जूते खोलने लगता है। सिद्धि और सौष्ठव मोहिनी के साथ-साथ चले जाते हैं। थोडी देर बाद सुशीला देवी ट्रे में चाय के कप लेकर आती है। ट्रे को टेबिल पर रखते हुए)

सुशीला देवी ः मनोज बेटा चाय पी ले। (एक कप सोहनलाल को देती है। दूसरा कप अपने बाएँ हाथ में उठा लेती है। दाहिने हाथ से उठाकर मनोज को देती है। सिद्धि प्याली में रखी नमकीन अपनी ओर सरका लेती है। सौष्ठव बिस्किट की प्लेट खींच लेता है। मोहिनी तौलिये से हाथ पोंछती हुई आती है और चाय का कप उठा लेती है।)

सुशीला देवी ः (चाय का घूँट भरते हुए) बहू अगर हमारी माने तो यह नौकरी-वौकरी का चक्कर छोड दे। तू थक जाती है। बाहर भी काम करके आती है फिर घर में भी करना पडता है। मनोज की भागदौड हो जाती है। बच्चे अनाथ की तरह घूमते हैं। ऐसी नौकरी किस काम की ?

सोहनलाल ः हमारा बंधन हो गया है। कहीं रिश्तेदारी में भी जा नहीं सकते हैं। अगले महीने तीन-धाम यात्र का रिजर्वेशन हो गया है। 25 दिन बाद लौटेंगे। गाँव जाकर कभी-कभार तो रहना ही पडेगा। वहाँ का मकान भी मरम्मत माँग रहा है। दो-चार साल वहाँ रहकर खेती करवा ली जाए तो ठीक रहेगा। कोई जाकर देखेगा नहीं तो जमीन को दूसरे ही कब्जा लेंगे। पुरखों की जमीन है। हमारे जीते जी तो बेचेंगे नहीं। आगे तुम लोग जानो।

मनोज ः पिता जी, मैं भी यही कह रहा हूँ कि अभी दो चार साल बाद नौकरी कर लेना। तब तक बच्चे बडे हो जाएँगे और जिम्मेदारियाँ कम हो जाएँगी। नौकरी कहीं भागे तो जा नहीं रही है।

मोहिनी ः तुम्हें मेरी नौकरी से बहुत चिढ है। बहुत मुश्किल से अच्छा स्कूल मिला है। सिफारिश से भी नहीं मिलती है नौकरी। ....जब मैं नौकरी करना नहीं चाहती भी तब तो सभी ''नौकरी कर ले, नौकरी कर ले'' की रट लगाए रहते थे। घर में बैठे-बैठे बोर होती है, कोई नौकरी क्यों नहीं कर लेती है। ऐसी भी क्या पढी-लिखी कि दिन भर घर में घुसी रहती है। आज मैंने नौकरी कर ली है तो नौकरी छोडने की रट लगा रहे हैं सब।

सुशीला देवी ः कौन कहता था तुझे, नौकरी कर ले-नौकरी कर ले ?

मोहिनी ः आप भी कहती ही थीं। जब भी कोई जान-पहचान वाली महिला आती थी, उसी के सामने राग अलापा करती थीं आप।

सुशीला देवी ः देखो कैसा झूठ बोल रही है ? मैं क्यों कहूँगी नौकरी के लिए ? तेरी इच्छा हो तो नौकरी कर, नहीं हो तो मत कर।

मोहिनी ः मैं अपने दम पर कर रही हूँ नौकरी। सुबह घर का सारा काम करके जाती हूँ और शाम को आकर करती हूँ। किसी पर अहसान नहीं करा रही हूँ। रहा बच्चों का, तो बच्चे सबके पल जाते हैं। कोई घर में नहीं होता तो भी पल जाते हैं। दुनिया नौकरी कर रही है तो उनके बच्चों को दादा-दादी ही तो नहीं पाल रहे हैं न।

सुशीला देवी ः देखो कैसी महारानी की तरह बातें कर रही है। सालभर से नौकरी क्या करने लगी है किसी को कुछ समझती ही नहीं है। चलो जी कल गाँव चलो। वहीं रहेंगे। एक तो यहाँ रहो, ऊपर से ताने सुनो।

मोहिनी ः अगर आपको हमारे साथ नहीं रहना है तो मत रहो। बेशक चली जाओ गाँव, लेकिन मुझे धमकी मत दो।

सुशीला देवी ः कैसी धमकी ? अभी तूने सास वाली धमकियाँ देखी ही कहाँ हैं। देख लेती तो अक्ल ठिकाने आ जाती।

मोहिनी ः वो भी दिखा दो। मन में क्यों रखती हो। मैं भी तो देखूँ क्या दिखाना चाहती है आप। इतनी सीधी मिल गयी हूँ, इसलिए मुझे दबा लेते हैं सब, दूसरी औरतों की तरह होती तो दिन में तारे दीख जाते।

सुशीला देवी ः तारे दिखाने में तू कौनसी कमी छोड रही है ? दूसरी औरतों की तरह तू भी जो दिखाना चाहती है वह दिखा ही दे। हमें जेल करा दे। फाँसी चढवा दे। और तेरी इच्छा हो जो करवा दे। (आँसू पोंछते हुए) यह सब हमारे बेटे की सिर पर चढाई हुई है। देखो तो सही कैसी जबान लडा रही है।

मोहिनी ः कौन लडा रहा है जबान सही बात बोलना भी जबान लडाना हो गया। इसका मतलब तो यह हुआ कि गूँगे की तरह सब सहन करते रहो।

सोहनलाल ः बस-बस बहुत हुआ। बात बढाने की जरूरत नहीं है। बहू तू अपनी जीभ बंद रख और नरमी से बात कर,..... और तुम भी शति से बात करो लडाई करके तुम क्या सिद्ध करना चाहती हो ?

सुशीला देवी ः मैंने तो सब समझ लिया है। यहाँ रहेंगे तो दबकर ही रहना होगा।...मैं किसी की कमाई नहीं खा रही हूँ जो दबकर रहूँ। सुनो जी मनोज के पिता जी, अब मैं यहाँ एक पल भी नहीं रुक सकती। तुम बेटे-बहू के पास रहना चाहो तो शौक से रहो, मैं तो गाँव जा रही हूँ। (उठकर अपने कपडे बटोरकर बैग में रखने लगती है। मोहिनी अपने कमरे में चली जाती है।) (परदा गिरता है।)

दृश्य दो

स्थान ः बाहर का बैठकनुमा कमरा।

(एक तरफ खाट बिछी हुई है। चार प्लास्टिक की कुर्सियाँ रखी हैं। खाट के एक कोने पर रजाई-गद्दे तह किये हुए रखे हैं। शेष पर कपडे बिखरे हुए हैं। सुशीला देवी अपने कपडे इकट्ठे करके बैग में जमा रही है। तभी सिद्धि आती है।)

सिद्धि ः दादी जी आप क्या कर रही हैं ?

सुशीला देवी ः देख नहीं रहो हो कपडे बैग में रख रही हूँ।

सिद्धि ः कपडे क्यों रख रही हैं, आप बैग में? क्या कहीं जा रही हो ?

सुशीला देवी ः जाऊँ नहीं तो क्या करूँ? तेरी माँ यहाँ रहने ही नहीं देती है।

सिद्धि ः नहीं, आप कहीं नहीं जाएँगी। आफ साथ मैं भी चलूँगी।

सुशीला देवी ः तू रहने दे। तेरी माँ नाराज हो जाएगी।

सौष्ठव ः (दौडकर आता है) मैं भी जाऊँगा दादी जी के साथ। (हाथ पकड कर खींचते हुए) चलो दादी जी चलते हैं। इस सिद्धि को नहीं ले चलेंगे।

सिद्धि ः (मुँह बनाकर चिढाते हुए) देख लो दादी जी यह मान नहीं रहा है। मैं इसकी पिटाई कर दूँगी तो आप मुझे डाँटेंगी।

सुशीला देवी ः मैं कौन होती हूँ डाँटने वाली ? तेरी माँ ही डाँट सकती है सबको।

(मनोज का कमरे में प्रवेश होता है, सौष्ठव कमरे से बाहर चला जाता है)

मनोज ः क्या कर रही हो माँ ?

सुशीला देवी ः कपडे जमा रही हूँ। (बैग की चैन बंद करते हुए कहा।)

मनोज ः बैग में क्यों जमा रही हो ?

सुशीला देवी ः गाँव जा रही हूँ। वहाँ भी कई काम करने हैं। यहाँ तेरी बहू है ही।

मनोज ः अरे माँ, तुम उसकी छोडो। उसका दिमाग ठिकाने पर नहीं है। वह भी अपने मायके जाने के लिए सामान जमा रही है।

सुशीला देवी ः वो क्यों जा रही है। नौकरी कौन करेगा उसकी ?

मनोज ः सब कर लेगी वो खुद ही।

सौष्ठव ः दादी, दादी मम्मी रो रही है (कमरे में आकर सूचना देता है)

सुशीला देवी ः क्यों रो रही है ?

(सिद्धि मम्मी के कमरे की ओर चली जाती है)

सौष्ठव ः मुझे नहीं पता, पापा ने कुछ कह दिया है शायद।

सुशीला देवी ः तूने कुछ कह दिया है क्या ?

मनोज ः कह क्या दिया है, ताना दिया है उसको, अपने आगे किसी की चलने ही नहीं देती है।

सुशीला देवी ः अच्छा नहीं किया तूने। बीवी पर हाथ नहीं उठाना चाहिये। मारने-पीटने से मान थोडे ही जाएगी। ऐसा करने से तो उसका भय और मिट जाएगा।

मनोज ः क्या करता माँ ? अपनी ही बात रखती है, मुझे तो वह कुछ नहीं समझती।

सुशीला देवी ः परन्तु तुझे हाथ नहीं उठाना चाहिये था।

मनोज ः हाथ नहीं उठाया है मैंने, बस हाथ दिखाया ही था।

(मोहिनी का आगमन होता है)

मोहिनी ः हाथ उठाया नहीं है तो अब उठा लो हाथ, सब मिलकर मार डालो मुझे। यहाँ मेरा कोई नहीं है इसलिए.....।

मनोज ः जहाँ तुम्हारे सब कुछ हों, वहाँ चलकर हाथ उठाकर दिखा दूँ क्या ?

मोहिनी ः हाँ, हाँ, यह इच्छा भी पूरी करके देख लो। शादी भी तुमने इसीलिए की थी कि तुम्हारे हाथों की खुजली मिटती रहे। ...औरत तो तुम्हारे लिए पैरों की जूती है, जूती।

मनोज ः हाँ, जूती से ज्यादा कुछ नहीं होती औरत।

मोहिनी ः नहीं होती तो मार डालो, जला दो, देखती हूँ कौन हाथ लगाता है ? हाथ न तोड डाले तो मेरा नाम नहीं।

मनोज ः धीमे स्वर में बात करो। मोहल्ले को सुनाने से कोई फायदा नहीं है।

मोहिनी ः सुनने दो मोहल्ले वालों को, उनको भी पता चले कि तुम्हारी असलियत क्या है ? बाहर तो महिलाओं की स्वतंत्रता और अस्मिता की आवाज उठाते हो और घर में स्त्री के साथ दुर्व्यवहार करते हो। क्या ये दोगलापन नहीं है तुम्हारा ?

मनोज ः तो रो क्यों रही हो ? रोकर तुम क्या सिद्ध करना चाहती हो ? कि तुम्हें हम काट रहे हैं, मार रहे हैं ?

मोहिनी ः इससे ज्यादा और क्या मारोगे तुम ? ...और मारना क्या होता है ?

मनोज ः बिना हाथ लगाए ही इतना बवाल खडा कर दिया है। हाथ लगाने पर तो तुम हथकडी ही डलवा देती।

मोहिनी ः ऐसे लोगों को हथकडी लगनी ही चाहिए।

मनोज ः हाँ हाँ, जाओ, थाने जाकर रिपोर्ट लिखवा दो। मेडिकल करवा लो। हम जल्लाद हैं तुम्हारे लिए। तुम्हें मारने के लिए ही तो बैठे हैं हम।

मोहिनी ः और नहीं तो क्या है ?

सुशीला देवी ः मनोज, तू इसके माँ-बाप को फोन कर दे। उन्हें भी पता चल जाए उनकी बेटी की हकीकत। पिछले दस साल से उसे हम कैसे ढो रहे हैं, हम ही जानते हैं। ज्यादा बात बढे उससे तो अच्छा है कि इसके माँ-बाप आकर इसे समझा जाएँगे। (कहते हुए बाहर चली जाती है।)

मोहिनी ः नहीं, मेरे माँ-बाप को कुछ कहने की जरूरत नहीं है। मैं खुद ही सुलट लूँगी।

मनोज ः ठीक है, ठीक है, सुलट लेना। परन्तु देवी जी, तमाशा करने की जरूरत नहीं है। घर में बच्चों पर क्या असर पडेगा, इसे भी सोचो जरा।

मोहिनी ः मुझे कुछ नहीं सोचना है। ...मैं दबाने लायक हूँ। ...चुपचाप अत्याचार सहन करने के लायक हूँ। ...मैं कहाँ सोच सकती हूँ ? तुम्हारे बराबर मुझमें दिमाग कहाँ है ? तुम विद्वान् हो। भगवान ने सारा दिमाग तुम्हारे भीतर ही तो भर दिया है। हम तो गोबर खाते हैं, दिमाग ही नहीं है।

मनोज ः तुम चुप होती हो या....?

मोहिनी ः नहीं होती चुप कर लो क्या करते हो ? पिछले दस साल से चुप ही रहकर सब कुछ सहन करती आ रही हूँ। अब चुप नहीं रहूँगी। मैं भी दिखा दूँगी।

मनोज ः क्या दिखा दोगी तुम ?

मोहिनी ः तारे दिखा दूँगी मैं। सब बँधे-बँधे फिरोगे। मुझसे ज्यादा मत कहलवाओ, नहीं इन बूढे-बुढयाँ के साथ जेल में चक्की पीसोगे समझे।

मनोज ः चल-चल, धमकी देने की जरूरत नहीं है। जो करना हो कर लेना।

मोहिनी ः मान जाओ, मैं फिर कहे देती हूँ, मुझे उकसाओ मत। वरना मैं करके भी दिखा दूँगी। (अँगुली दिखाते हुए)

मनोज ः पहले तुम करके ही दिखा दो। असल बाप से पैदा हो तो आज ही कर डालो। मैं तो कहता हूँ अभी कर डालो। (बाँहें चढाते हुए।)

मोहिनी ः मत उकसाओ मुझे। ये बच्चे दर-दर की ठोकरे खाते फिरेंगे। ...तुम्हें तो क्या है ? दूसरा ब्याह कर लोगे और दहेज ले लोगे। लालची कीडे हो।

मनोज ः जुबान सँभाल कर बात कर। नहीं तो अभी बता दूँगा।

मोहिनी ः बता दो क्या बताना चाहते हो? आप लोगों ने मेरी जिंदगी बर्बाद कर दी है। अच्छा है फैसला आज ही हो जाए। ...रुक क्यों गये बताओ..बताओ।

मनोज ः मैं भी चाहता हूँ फैसला आज ही हो जाए, तो रोज-रोज की झिक-झिक तो मिट जायेगी। जब देखो तब घर में लडाई-लडाई।

मोहिनी ः लडाई करते तो तुम ही हो न। शादी से पहले तो बहुत प्यार की बातें किया करते थे और अब मुँह से कभी प्यार के दो बोल भी नहीं फूटते हैं कभी ?

मोहिनी ः दूसरी औरतों की तरह मैं भी चाटती-खाती, घूमती-फिरती, खरीदती-लाती तो क्या होता। सीधी-सादी पल्ले पड गयी हूँ न। पिछले दस साल में एक बार भी पिक्चर दिखाने नहीं ले गये हो। एक साडी भी कभी नहीं दिलवायी है, मैरीज एनीवर्सरी की। घर से निकलकर एक बार भी ट्यूर, पर नहीं ले गये हो। और तो और तुमने कभी घूमने के नाम पर जयगढ, नाहरगढ की आऊटिंग भी नहीं कराई है। शादी के बाद हनीमून पर जा रहे थे, उसमें भी अडचन लगा दी, बाद में चलेंगे कहकर। वो बाद में आज तक आया ही नहीं कभी। शादी करके लाये हो या बंधुआ मजदूर बनाकर लाये हो।

मनोज ः मैं कहता हूँ तुम प्यार के काबिल हो ही नहीं। जब देखो तब एक ही रामायण है तुम्हारे पास। ये नहीं किया, वो नहीं किया, ये नहीं दिलाया, वो नहीं दिलाया। इसके अलावा भी तुम्हारे पास बातें हैं क्या ?

मोहिनी ः (रोकर, चिढते हुए) हाँ-हाँ, मैं तो प्यार के काबिल हूँ ही नहीं। ...छोड क्यों नहीं देते। तलाक दे दो। प्यार के काबिल जो हो उसे ले आना। (फिर सुबकने लगती है।)

मनोज ः हाँ-हाँ, ले लूँगा तलाक। ऐसी जिल्लत भरी जिंदगी से तो तलाक ही बेहतर है।

मोहिनी ः (सुर बदलते हुए) दे दो तलाक। मैं भी देखती हूँ कैसे देते हो तलाक ? इस घर में आग लगा दूँगी, तब होगा तलाक। मैंने इस घर के लिए अपनी जवानी होम कर दी है, अब तलाक की धमकी दे रहे हो। उसके लिए कुछ सुख-सुविधाएँ भी बनानी पडती हैं। खरीद कर भैंस नहीं लाए हो, बीवी लाए हो। मेरे बाप ने दो लाख रुपये नकद दिये थे, दहेज में। कह लो, तुम्हारी जिंदगी सुधर गयी, स्तर बढ गया। वरना कोई दो कौडी का भी नहीं पूछता। मैंने तुम्हारी इज्जत ही बढाई है समाज में। आज उसी का इनाम है कि मुझे तलाक मिल रहा है। मुझ पर हाथ उठाया जा रहा है। बहुत अच्छा कर रहे हो तुम। ...करते जाओ। भगवान सब देख रहा है। (जोर-जोर से रोने लगती है) मेरी तो किस्मत ही फूटी है जो ऐसे आदमी से पाला पड गया है।

मनोज ः किस्मत को मत कोसो, अपने लक्षणों को कोसो।

मोहिनी ः हाँ-हाँ, मेरे तो लक्षण खराब हैं। साफ-साफ क्यों नहीं कह देते कि मेरे चाल-चलन भी खराब हैं। ये इल्जाम भी लगा दो। जो भी दोष मुझमें ढूँढने हैं वो सब ढूँढ लो, कोई रह न जाए। (सुबकने लगती है। सोहनलाल का कमरे में प्रवेश होता है।)

सोहनलाल ः अब बहुत हो गया, आरोप-प्रत्यारोप बंद करो। मिल बैठकर समस्या का समाधान क्यों नहीं निकालते हो ? रोने-झींकने से बात बढती रहेगी। इसके परिणाम भी दुखद निकलेंगे। मैं तो कहता हूँ कि तुम प्रेम से रहो। इससे हमें भी खुशी होगी।

मोहिनी ः शुरुआत इन्होंने की है, लडाई की। इन्हीं से पूछो क्या चाहते हैं मुझसे ?

मनोज ः शुरुआत तुमने की है, मैंने नहीं। मैं तो घर में शांति चाहता हूँ, लेकिन शांति रह ही नहीं पाती है ससुरी। जीवन नर्क बन गया है ससुरा।

मोहिनी ः ये ससुरा, ससुरी करने की जरूरत नहीं है, माता जी-पिता जी कहा करो।

मनोज ः तुम्हारे माँ-बाप को बुलाकर साथ भेज देता हूँ। वहीं रहना प्रेम से, उन्हीं की छाती पर मूँग दलना, तब पता पडेगा उनकी बेटी कितनी महान् है।

मोहिनी ः वहाँ क्यों रहूँगी मैं ? कुछ देकर भूल गये हो क्या उनको ? शादी के समय ही दहेज की माँग बढा-बढाकर निचोड लिया था, अब क्या सारी जिंदगी ही उनका खून चूसोगे ?

मनोज ः खून तो तुम चूस रही हो हमारा। जो कभी चैन से रहने ही नहीं देती हो।

मोहिनी ः मैं चूस रही हूँ, मैं ?

मनोज ः हाँ, तुम चूस रही हो, तुम।

मोहिनी ः क्यों झूठ बोल रहे हो, अबला समझकर दबाना चाह रहे हो मुझे ?

मनोज ः बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ। ...अपना भला चाहती हो तो माँ से माफी माँग लो। वो गाँव जाने के लिए तैयार हो रही है।

मोहिनी ः मैं क्या करूँ ? जा रही है तो जाने दो।

मनोज ः जाने नहीं दो, तुम्हारे कारण ही जा रही हैं।

मोहिनी ः मेरे कारण तो तुम भी जा रहे हो। चले क्यों नहीं जाते ?

मनोज ः मैं फिर कह रहा हूँ। जाकर माफी माँग लो नहीं तो बहुत बुरा हो जायेगा।

मोहिनी ः इससे बुरा क्या होगा, जो अभी हुआ है। जो बुरा होना हो सो आज ही हो जाए। मैंने तो उन्हें जाने के लिए कहा नहीं है और मैं रोकूँगी भी नहीं। जब मेरी कोई गलती है ही नहीं तो माफी किस बात की ?

मनोज ः मोहिनी मान लो मेरी बात। माँ को जाकर मना लो।

मोहिनी ः बहुत मान ली तुम्हारी बात। तुम्हारी बात मानते-मानते दस साल बीत गये। क्या मिला मुझे ? ये आँसू, ये दमन, ये तलाक।

मनोज ः तुम जाती हो कि नहीं जाती हो ?

मोहिनी ः नहीं जाऊँगी। तुम क्यों नहीं मना लेते अपनी माँ को ? गलती न हो तो भी माफी। दूसरा गलती करे तो भी माफी...। नौकर हूँ क्या मैं ? मेरा भी वजूद है कि नहीं ?

(मनोज दाँत किट-किटा कर, भुन भुनाता हुआ कमरे से बाहर निकल जाता है। मोहिनी सिर पकड कर वही बैठ जाती है।)

(परदा गिरता है।)

दृश्य तीन

स्थान ः ड्राईंग-रूम।

(सोफे पर उमाकान्त और अंगूरी देवी बैठे हुए हैं। सोहनलाल उमाकान्त की बगल में बैठे हैं। चारों के दिमाग में तनाव की बेचैनी है। कॉलबेल बजती है। सुशीला देवी उठकर बाहर जाती है।)

उमाकान्त ः कौन होगा इस समय ?

सोहनलाल ः साक्षी और सौष्ठव होंगे। उनके स्कूल से आने का समय हो गया है।

अंगूरी देवी ः कितनी दूर होगा इनका स्कूल ?

सोहनलाल ः लगभग पन्द्रह किलोमीटर पडता है यहाँ से।

अंगूरी देवी ः किस साधन से जाते हैं दोनों ?

सोहनलाल ः पहले तो स्कूल बस से आते-जाते थे। मगर आने-जाने में समय बहुत खराब होता था। लगभग डेढ घंटा पहले बस आ जाती थी तथा छुट्टी के डेढ घंटे बाद यहाँ उतारती थी। तीन घंटे तो आने-जाने में ही व्यर्थ जाते थे। पिछले महीने एक टैक्सी लगवा दी है। स्कूल समय के आधे घंटे पहले ले जाती है तथा छुट्टी के आधा घंटे बाद घर छोड देती है। पैसे जरूर ज्यादा लेती है लेकिन समय की बचत हो गयी है।

(सिद्धि और सौष्ठव एक हाथ में बस्ता तथा एक में पानी की बोतल लेकर कमरे में आते हैं। उमाकान्त और अंगूरी देवी को देखकर चौक पडते हैं)

सिद्धि और सौष्ठव ः (सामूहिक स्वर में) नाना जी नमस्ते। नमस्ते नानी जी। (अपने-अपने बस्ता और टिफिन वहीं छोडकर नाना, नानी से लिपट जाते हैं)

सोहनलाल ः अरे, क्या करते हो ? अपना सामान तो अपने कमरे में रखकर आओ।

सिद्धि ः नहीं रखेंगे दादा जी। नाना जी के साथ मस्ती करेंगे हम तो।

सौष्ठव ः हाँ दादा जी, आज तो बहुत मजा आएगा। कल संडे है, आज होमवर्क भी नहीं करना है। कल कर लेंगे।

उमाकान्त ः पहले अपने हाथ-पैर धोकर आओ फिर मिठाई मिलेगी तुम्हें।

सौष्ठव ः मैं नहीं धोऊँगा। पहले मिठाई खाऊँगा।

अंगूरी देवी ः जाओ बेटे, अच्छे बच्चों की तरह यूनीफार्म बदल कर आओ। तब मिलेगी मिठाई।

सुशीला देवी ः (द्वार बंद करके भीतर आती है तथा बच्चों के बस्ते, टिफिन तथा पानी की बोतलें उठाकर) चलो-चलो, स्कूल के कपडे उतारकर घर के कपडे पहनकर बैठना यहाँ। नहीं तो तुम्हारे नाना जी, नानी जी चले जाएँगे।

सिद्धि ः (नाना जी की बाँह पकडते हुए) नहीं जाने देंगे हम।

सौष्ठव ः (नानी के कंधे से लटक कर) हम नहीं जाने देंगे।

(अंगूरी देवी दोनों बच्चों को कपडे बदलवाने भीतर ले जाती है। एक चुप्पी वातावरण में बनी रहती है। स्कूल से मोहिनी आती है। उमाकान्त और अंगूरी देवी को देखकर चौंक पडती है।)

मोहिनी ः अरे पापा आप। और मम्मी भी। आपने आने की कोई सूचना भी नहीं दी। परसों तो फोन पर बात हुई थी, तब तो आपने आने का बताया ही नहीं था।

उमाकान्त ःबस कुछ ऐसे ही जल्दी में कार्यक्रम बन गया था। आगरा जा रहे थे मुकेश के पास। सोचा बीच में तुम से भी मिलते चलें।

मोहिनी ः सोमवार को भैया का भी फोन आया था। उसने तो बताया ही नहीं कि आप आने वाले हैं।

उमाकान्त ः भूल गया होगा। नवीन को देखने की भी इच्छा हो रही थी, सोचा चलते हैं। अगले महीने सर्दी बढ जाएगी तो जाना नहीं होगा।

मोहिनी ः अच्छा किया। मैं चाय बनाकर लाती हूँ।

अंगूरी देवी ः चाय पी ली है बेटी। बहिन जी ने बना दी थी। नाश्ता भी कर लिया है। बस तेरा ही इंतजार कर रहे थे। स्कूल से आते हुए बहुत देर हो जाती है बेटी।

मोहिनी ः साढे चार बजे छुट्टी होती है, आधा घंटा आने में लग ही जाता है।

अंगूरी देवी ः नौकरी की क्या जरूरत आन पडी बेटी तुझे ? बच्चे बडे हो जाते तब कर लेती।

मोहिनी ः मम्मा आप भी वही कह रही हैं जो सब कहते हैं। जब तक दोनों नहीं कमाते तब तक स्टैण्डर्ड नहीं सुधर पाता है। बडे शहरों में खर्चे बहुत होते हैं मम्मी।

अंगूरी देवी ः परन्तु तुम्हें क्या चिंता है ? घर का मकान है। मनोज की अच्छी खासी नौकरी है। गाँव में खेती-बाडी है। फसल पर पैसा व अनाज आ जाता है, कितना खर्चा है तुम्हारा? अभी कोई जिम्मेदारी भी नहीं है तुम पर।

मोहिनी ः जब पढाई की है तो नौकरी करने में क्या हर्ज है ? औरतों को रसोई से बाहर निकलना ही होगा मम्मी। तभी हमारे विचारों में नयापन आएगा।

अंगूरी देवी ः अरे तो बेटी, अपनी सुविधा और परिस्थितियों का भी ध्यान रखा जाता है। जिस तरह तुम नौकरी में सुनने की सामर्थ्य रखती हो वैसे ही घर में भी सुनने की सामर्थ्य रखा करो। परिवार वाले तुम्हारा बुरा थोडे ही चाहते हैं।

मोहिनी ः (सोचकर) मम्मी आपको किसी ने कुछ कहा तो नहीं है। .....या फोन करके बुलवाया गया है ?

उमाकान्त ःहम तो खुद ही आए हैं बेटी। हमें कुछ नहीं पता। न हमें किसी ने कुछ बताया। (थोडा हँसकर) क्यों कोई बात हो गयी है क्या बेटी ?

मोहिनी ः नहीं, ऐसा तो कोई विशेष नहीं। (चेहरा उतर जाता है। झेंपने की कोशिश करती है) नहीं कुछ बात नहीं हुई। आपसे किसी ने कुछ कहा तो नहीं है ?

उमाकान्त ःनहीं बेटी, हम तो तेरा चेहरा देखकर अंदाज लगा रहे हैं कि तू उदास सी है, इसलिए कोई न कोई बात अवश्य होगी।

मोहिनी ः बस यूँ ही।

अंगूरी देवी ः अगर तेरा मूड ठीक नहीं है तो हमारे साथ चल सकती है, दो-तीन दिन आगरा रहकर हमारे साथ लौट आना। (इस बीच मनोज ऑफिस से आ जाता है। डाइनिंग रूप में प्रवेश करता है।)

मनोज ः प्रणाम पिता जी। प्रणाम माता जी। .....कब आए आप लोग ?

उमाकान्त ःदोपहर को आ गये थे हम लोग। ...यही दोपहर बारह बजे के आसपास।

मनोज ः (जूते खोलते हुए) फोन कर देते तो मैं लेने आ जाता स्टेशन।

उमाकान्त ःबेकार तुम्हें कष्ट होता। स्टेशन से हमने सीधी सात नंबर मिनी बस पकड ली थी। जिसने घर के बाहर उतार दिया। ऑटो वाले अस्सी रुपये माँग रहे थे।

मनोज ः हाँ, ऑटो, मिनीमम अस्सी ही लेते हैं। सामान अधिक न हो तो मिनी बस सबसे बढया है। सात रुपये में घर के बाहर छोड देती है।

अंगूरी देवी ः सिटी बस की सुविधा हमारे वहाँ नहीं है। वहाँ तो ऑटो करो या रिक्शा ढूँढो। रुपये भी पूरे लगते हैं, समय भी खूब लगता है।

उमाकान्त ःबडे शहरों की बात ही और है। ...तुम सुनाओ मनोज, कैसी चल रही है नौकरी।

मनोज ः अच्छी चल रही है पिता जी। बस थोडी-बहुत खींचतान तो चलती ही रहती है ऑफिस हो या घर। (मनोज जल्दी ही मूल समस्या पर आना चाहता था। उसी ने फोन करके सारे घटनाक्रम की सूचना दे दी थी, साथ ही मोहिनी को न बताने के लिए भी कहा था।)

उमाकान्त ःथोडे बहुत तो चलती रहनी चाहिए। ...परन्तु तुमने कहा ऑफिस और घर में दोनों जगह चल रही है खींचतान। घर का क्या मतलब ?

मनोज ः घर का मतलब तो मोहिनी बेहतर बता सकती है।

अंगूरी देवी ः क्यों बेटी, तुम्हीं बताओ, आपस में कुछ कहासुनी हो गयी क्या ?

मोहिनी ः ऐसी तो रोज ही होती है माँ। आप लोगों ने भी ऐसे खूँटे से बाँध दी है कि न मन की कह सको, न मन की कर सको। दबाकर रखना चाहते हैं ये लोग।

अंगूरी देवी ः कैसी बात कर रही हो बेटी? मनोज में क्या कमी है ? अच्छी नौकरी है, अच्छा परिवार है। शहर में मकान है, गाँव में खेत हैं। अच्छी इज्जत है समाज में। स्वभाव भी अच्छा है। कोई शौक नहीं है। ...और क्या चाहती हो तुम ?

मोहिनी ः सब बेकार है माँ। यही हाल रहा तो में यहाँ नहीं रह सकती हूँ। अगर तुम भी मुझको ठुकराओगे तो मैं दुनिया ही छोडकर चली जाऊँगी। तब किसी को कोई परेशानी नहीं होगी मुझसे। आप भी खुश और ये भी खुश।

मनोज ः देख लो आप लोग। कैसी बेतुकी बातें करने लगी है यह।

अंगूरी देवी ः तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है न! शादी के दस साल साथ रहने तथा दो-दो बडे बच्चों के बाद भी तू कहती है मैं यहाँ नहीं रह सकती।

उमाकान्त ःऔर क्या करेगी तू ?

मोहिनी ः मैं अलग रहूँगी। अपना खर्चा खुद उठा लूँगी। अपने बच्चों को भी साथ ले जाऊँगी। नहीं चाहिए मुझे यह सब। नहीं चाहिए ऐसे लोग।

उमाकान्त ःहम तो सोच रहे थे मनोज की गलती होगी तो उसे डाँट-फटकार कर सीधा कर आएँगे, लेकिन यहाँ हमारी बेटी के ही तेवर बदले हुए नजर आ रहे हैं।

मनोज ः जब से नौकरी करने लगी है तब से ना जाने क्या हो गया है ? नौकरी भी स्थायी नहीं है इसकी। फिर भी नौकरी की धौंस।

अंगूरी देवी ः बुरा मत मानना बेटा। साफ शब्दों में पूछ रही हूँ, वहाँ कोई मिल तो नहीं गया है... भडकाने वाला। जो तुम्हारे घर को तोडना चाह रहा हो। पता किया क्या तुमने कभी ? (कान में फुस-फुसाकर पूछती है।)

मनोज ः नहीं मम्मी, मैंने कभी ऐसा शक नहीं किया। इसी का परिणाम है कि आज ये दिन देखने पड रहे हैं। मैंने इसे सपोर्ट ही किया है। फिर भी यह इल्जाम मुझे ही मिल रहा है। (जोर से बोलता है)

मोहिनी ः मुझे सब पता लग गया है मम्मी-पापा, तुम्हें फोन करके बुलाया गया है और तुम मुझसे यानी अपनी बेटी से ही सब कुछ छिपा रहे हो। ..अब मुझे आप लोगों से भी किसी तरह की उम्मीद नहीं है। मैं तो आपको अपना आखिरी सहारा समझा करती थी, किन्तु वह भ्रम भी टूट गया आज। अब मुझे पता चल गया कि आप मेरी तरफ नहीं बोलेंगे।

उमाकान्त ःतुम समझने की कोशिश क्यों नहीं कर रही हो बेटी। गुस्से में लिया गया फैसला तथा जल्दी में उठाया गया कदम सही नहीं हुआ करता है। जीवन में बहुत कुछ सोचना-समझना पडता है। अपने लिए नहीं, दूसरे के लिए भी जीना होता है। तुम ऐसी बात कर रही हो कि सब कुछ तुम ही हो... सही भी तुम ही हो।

मोहिनी ः मैं नहीं ढो सकती हूँ यह बोझ। बहुत ढो लिया।

अंगूरी देवी ः क्या ढो लिया? तुझसे भी अधिक पढी-लिखी लडकियाँ हैं, तुझसे भी अच्छी नौकरी-पेशा हैं। लेकिन वे अपने घर को बिगडने नहीं देती हैं। लडाई तो घर में होती ही रहती है उसका हल ढूँढना चाहिए। अहम् को बढाने से कुछ नहीं होता बेटी। मिल जुलकर ही जीवन चला करता है। तुम अपने विचार बदल लो। किसी को छोड देने से क्या होगा ? ...बाद में पछताने से

तो बढया है कि पहले ही विचार कर लिया जाए। अलग रहना इतना सरल नहीं है जितना तुम समझ रही हो... यही बात मनोज कहता तो तुम क्या करती ? जबकि वो तो कुछ बोल भी नहीं रहा है।

मोहिनी ः मैं आपकी बातों में आने वाली नहीं हूँ। मेरा फैसला अटल है। तुम मनोज की पैरवी करने के लिए आए हो तो करो। मैं तो आपकी कुछ लगती ही नहीं हूँ। मनोज की मानिए आप। वही सब कुछ लगता है। उसी के सुर में बोलिए आप लोग। परन्तु मैं भी कहे देती हूँ मुझे अपने माँ-बाप अर्थात् आपकी दया की भी जरूरत नहीं है।

अंगूरी देवी ः कैसी बहकी-बहकी बात कर रही है तू। कुछ शर्म है कि नहीं है।

मोहिनी ः हाँ-हाँ मैं तो पागलों की सी बातें कर रही हूँ। बेशरम हूँ। शर्मदार तो मनोज बैठा है न आपकी बगल में..... मम्मी-पापा आप मेरी आखिरी बात सुन लें। आप आए आपका स्वागत है। जब तक रहना चाहें तब तक रहें, लेकिन मेरी बात न करें। इसी में आपकी इज्जत है। (कहकर लाल-पीली होती हुई अंदर चली जाती है।)

मनोज ः देख लिया आप लोगों ने। कितना सहन कर रहा हूँ ? कोई दूसरा होता तो पीट-पीट कर आफ यहाँ छोड आता। ...देख लीजिए, आपसे कैसे पेश आ रही है।

अंगूरी देवी ः देख रहे हैं बेटा, तुम्हें ही अपना भला-बुरा सोचना है। वह तो सोचने-समझने की शक्ति खो बैठी है। धैर्य से काम लो बेटा। समय के साथ सब ठीक हो जाएगा।

मनोज ः मेरे झुकने से तो दस साल खिंच गये मम्मी। आगे आप देख ही रही हैं। कुछ उल्टा-सीधा हो जाए तो मुझे दोष मत देना। (ड्राइंग रूम में सुशीला देवी और सोहनलाल का प्रवेश होता है।)

सुशीला देवी ः मनोज! बहू से कह, खाना बना दे। अब तो भूख भी लग आयी होगी।

अंगूरी देवी ः खाना तो खाकर ही आए थे बहिन जी। लेकर भी आए हैं, वही खा लेंगे।

सुशीला देवी ः लेकर क्यों आए हो ? घर नहीं है आपका यह ?

अंगूरी देवी ः बेटी के घर का खाने में हिचक होती है। सोचते हैं अब तक नहीं खाया तो अब क्या खाएँ ?

सुशीला देवी ः अब तो जमाना बदल चुका है। इतनी दूर से कोई आए और खाना नहीं खाए तो हमें भी बुरा लगता है बहिन जी।

उमाकान्त ः जब तक निभ जाए तब तक ठीक है। (आपकी चाय पीकर ही हम शर्मिन्दा हैं।)

सुशीला देवी ः शर्मिन्दा होने की क्या बात है ? जो खाया-पीया है उसके पैसे दे देना। (हँसते हुए)

सोहनलाल ः भाभी जी यह खाने और न खाने का भाव बेटा व बेटी के अंतर को दर्शाता है। आप इतनी दूर से आए हैं और खाएँगे नहीं तो कैसे काम चलेगा? गाँव तो है नहीं कि किसी

और जगह से भोजन बन कर आ जाए। (फिर मोहिनी की ओर देखते हुए) जा बहू खाना बना। तेरे मम्मी-पापा भी क्या सोचेंगे ? (मोहिनी तमतमाती हुई बैठी रहती है।)

सोहनलाल ः यह आपसी लडाई तो प्रेम को बढाती है बहू। यह गाँठ बाँधकर रखने को नहीं होती है। ऐसे द्वेष और बैर पाल लेने से गृहस्थी नहीं चलती है।

अंगूरी देवी ः आप ठीक कह रहे हैं भाई साहब। पति-पत्नी के बीच ऐसे उतार-चढाव तो आते ही रहते हैं। हम दोनों (उमाकांत की ओर इशारा करके) तो दिन में एकाध बार लड न लें तब तक दिन सूना-सूना लगता है। (मोहिनी की ओर देखकर) क्यों बेटी, तू तो शुरू से देख ही रही है न ?

उमाकांत ः(सोहनलाल की ओर देखते हुए) हमारी लडाई में एक खास बात और है भाईसाहब! इसकी शुरुआत (अंगूरी देवी की ओर इशारा करके और सोहनलाल की ओर देखकर) इनके द्वारा ही होती है।

अंगूरी देवी ः (उमाकांत की तरफ घूरकर) यह बात गलत है आपकी। लडाई की शुरुआत आपकी तरफ से होती है। मैंने पहल कभी नहीं की होगी।

उमाकांत ः(अंगूरी देवी की तरफ देखकर) क्यों झूठ बोल रही हो ? अब समधी जी तो घर के आदमी हैं इनसे क्या छिपाना ? शादी के चार-पाँच साल बाद तुमने मुझे तो लडाई के काबिल छोडा ही नहीं।

अंगूरी देवी ः (तुनक कर) सारा दोष मेरा ही है। मैंने आफ पूरे घर-परिवार की इज्जत बना दी इसका अहसान तो मानते नहीं हो। ज्यादा ही बोझ लग रही हूँ तो अब दे दो तलाक। (गुस्से में खडी हो जाती है)

उमाकांत ः मैं मजाक कर रहा हूँ और तुम गुस्से में लाल-पीली हो रही हो ? लडने पर उतर आयी हो।

सोहनलाल ः उमाकांत जी! आज आपने लडाई की शुरुआत की है। भाभी जी की कोई गलती नहीं है। इसलिए पेनल्टी आप पर लगेगी।

सुशीला देवी ः (उमाकांत की तरफ देखकर) आप पुरुषों की यह बुरी आदत है कि महिलाओं पर व्यंग्य कसते हो। हमारे इनको (सोहनलाल की ओर इशारा करके) देखो ये क्या कम हैं ? हर अच्छे काम का श्रेय खुद लेते हैं और खराब हो जाए तो दोषी मुझे बना देते हैं। जैसे मैंने ही कराया है, मैंने ही कहा था या मैंने ही बताया था।

सोहनलाल ः मुझे लगता है (उमाकांत की ओर फिर अंगूरी देवी की तरफ घूमकर) मैंने अगर कुछ भी कहा तो हम दोनों (सुशीला देवी की तरफ देखकर) में भी लडाई हो जाएगी अतः मैं चुप रहकर शांति बनाए रखने में ही योगदान दूँगा।

सुशीला देवी ः चुप रहो जी, बडे आए शांति रखने वाले। आप कौनसे दूध के धुले हैं ? बिना लडे आपकी भी रोटी नहीं पचती है। ये तो रिश्तेदार बैठे हैं इसलिए कह लो, नहीं तो लडाई का कोई न कोई बहाना ढूँढ ही लेते हो।

मनोज ः (बीच में हस्तक्षेप करते हुए) मुझे लगता है (मोहिनी की तरफ इशारा करके) हम दोनों में तकरार होती है तो कोई बुरा नहीं है। यह तो खानदानी परंपरा है जिसका निर्वाह हम कर रहे हैं। क्यों मोहिनी ? (मोहिनी का गुस्सा कम होता है। उसके मुँह पर मुस्कान आ जाती है मगर बोलती नहीं है।)

उमाकांत ः देखो बेटे, यह लडाई उस तरह की लडाई नहीं है जिस तरह शत्रु लडते हैं। यह तो प्रेम की लडाई है।

मनोज ः मैं तो इस बात को समझ रहा हूँ मगर मोहिनी समझे तब न।

मोहिनी ः मैं मूर्ख नहीं हूँ। सब समझ रही हूँ।

मनोज ः समझने से ही काम थोडे ही चलता है। व्यवहार में भी लाना पडता है। तुम लडाई का मतलब लडाई और प्यार का मतलब प्यार समझती हो। पति-पत्नी के बीच लडाई का मतलब भी प्यार और प्यार का मतलब भी प्यार होता है।

मोहिनी ः ज्यादा फिलॉसफी झाडने की जरूरत नहीं है। आपको अपनी आदतें बदलनी होंगी।

मनोज ः मैं मानता हूँ मेरे भीतर कुछ कमियाँ हैं मगर मैं वादा करता हूँ कि उन्हें दूर करूँगा। किन्तु पहले तुम यह मुँह फुलाना छोडो।

(मोहिनी मुस्कुरा जाती है। इसी बीच सिद्धि और सौष्ठव आकर ताली बजाने लगते हैं। ओ हो मम्मी हँस गयी.....मम्मी हँस गयी। मोहिनी उन्हें डाँटने लगती है। मनोज बच्चों को बाहर खेलने की हिदायत देता है।)

सोहनलाल ः जाओ बहू, अब गरमागरम कडक चाय बनाकर ले आओ ताकि माहौल ठंडा और नरम हो जाए।

(मोहिनी रसोई की तरफ जाती है। पीछे-पीछे मनोज भी चला जाता है। कमरे में सामूहिक ठहाका गूँजता है)

(थोडी देर बाद मोहिनी चाय की ट्रे तथा मनोज पानी की ट्रे लेकर आता है।)

सुशीला देवी ः आजकल के पति रसोई में खूब काम करते हैं। पहले के पति रसोई की तरफ झाँकते भी नहीं थे।

सोहनलाल ः क्यों झूठ बोल रही हो ? मैंने कितना काम किया है रसोई में पता है ?

सुशीला देवी ः (चाय का कप रखते हुए) मैं झूठ बोल रही हूँ आप सत्य कह रहे हैं। भला बताओ तो कितना काम किया है आपने रसोई का। सब्जी काटने के अलावा कुछ और किया हो तो बताओ।

अंगूरी देवी ः (बात काटते हुए) भाभी जी, आप रसोई की तो छोडो। आजकल के बाप बच्चों को भी ढंग से रखते हैं, खिलाते हैं, बच्चों को माँ कम पिता ज्यादा रखते हैं। उनका सारा काम पिता करने लगे हैं। पहले पिताओं को पता ही नहीं चलता था और बच्चे बडे हो जाते थे। कैसा जमाना आ गया है ?

मनोज ः मम्मी, बच्चे पर दोनों का अधिकार है इसलिए दोनों को परवरिश में अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए। छोटे परिवारों में बच्चे के लिए माँ व बाप के अलावा तीसरा कोई नहीं होता इसलिए पिता को भी पूरा समय बच्चों को समर्पित करना जरूरी है।

अंगूरी देवी ः तुम्हारे पापा को तो (उमाकांत की ओर देखकर) पता नहीं है। कब बच्चे बडे हो गये ?

सोहनलाल ः भाभी जी आप बात को छिपाओ मत साफ-साफ क्यों नहीं कह देती हैं कि भाई साहब को (उमाकांत की ओर देखकर) तो यह भी पता नहीं कि बच्चे कब हो गये ?

(सभी जोर से ठहाका लगाते है। अंगूरी देवी झेंप जाती है।)

सुशीला देवी ः जरा सोच समझकर बोलो। आप हर समय मजाक के मूड में रहते हैं। बच्चे भी बैठे हैं। इनका भी ख्याल करो। ये क्लब नहीं है घर है। कुछ उम्र की भी शर्म करो। (सोहनलाल चुप हो जाता है)

उमाकांत ः (सुशीला देवी की तरफ देखकर तथा इशारा सोहनलाल की ओर करते हुए) भाई साहब बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। मुझे तो यह भी पता नहीं रहता था कि हमारे बच्चे कौनसी क्लास में पढ रहे हैं। सारी जिम्मेदारी (अंगूरी देवी की तरफ इशारा करके) इन्हीं की थी। एक दिन मोहिनी को स्कूल से जल्दी लाना था। मैं इसकी क्लास और सैक्शन भूल गया। स्कूल वालों ने गर्ल्स स्कूल होने के कारण किसी भी तरह की जानकारी देने से मना कर दिया। वो तो अच्छा हुआ मेरी जेब में इसकी फीस जमा कराने वाली रसीद पडी थी उसी पर क्लास और सैक्शन लिखे हुए थे। वरना.....

मोहिनी ः पापा ने शुरू से ही घर का ध्यान कम रखा और नौकरी का ज्यादा रखा। इन्हें तो किसी के बर्थडे और मैरिज एनीवर्सरी की ही याद नहीं रहती।

अंगूरी देवी ः सच बहुत भुलक्कड हैं ये। एक दिन बाजार सामान लेने गये स्कूटर पर, और लौटे तो साईकिल पर थैला लटका रखा था। पूछा तो बोले बहुत थक गया हूँ आज। जब जेब में स्कूटर की चाबी देखी तब ध्यान आया कि स्कूटर लेकर गये थे। ना जाने भूल में किसकी साईकिल उठा लाये। इससे बडा भुलक्कड और क्या हो सकता है ?

सोहनलाल ः भाभी जी, कभी ऐसा भी हुआ है कि ये आपको भूल आये हों ? (सभी हँसते हैं)

अंगूरी देवी ः कई बार ऐसा भी हो गया। एक बार हम ट्रेन में जा रहे थे। आगरा उतरे तो भीड में ये तो सामान लेकर स्टेशन से बाहर आकर ऑटो करके बैठ गये और मुझे छोड आये पीछे। मैंने दौडकर ऑटो रुकवाया तब इन्हें ध्यान आया कि मैं भी इनके साथ हूँ।

सोहनलाल ः तब तो वाकई बहुत मजेदार है भाई साहब। (धीमी हँसी फूट पडती है अंगूरी देवी की हँसी भी नहीं रुक पाती है।)

सोहनलाल ः काश। ऐसा जीवन साथी मुझे मिल जाता तो ?

सुशीला देवी ः हाँ, हाँ, क्यों नहीं। साफ-साफ कह दो कि मुझसे पीछा छूट जाता आपका। लेकिन पीछा इतना आसानी से छोडने वाली नहीं थी मैं।

सोहनलाल ः छोड कौन रहा है ? खुद ही छोड जाती तुम मुझे। (सभी हँसते हैं)

अंगूरी देवी ः (विषय बदलकर गंभीर होते हुए मोहिनी की तरफ मुखातिब होकर) बेटी, आज रात को ही निकल जाते हैं ताज एक्सप्रेस से। दो-तीन दिन मुकेश के पास रुककर वापस लौटना भी है। (सोहनलाल और सुशीला एक दिन और रुकने का आग्रह करते हैं। फिर दोनों उठकर बाहर चले जाते हैं।)

मोहिनी ः आज रुक जाइये कल चले जाना। (चाय के कप ट्रे में रखते हुए)

मनोज ः एक दिन और रुक जाइये ताकि मोहिनी का मूड भी ठीक हो जायेगा।

मोहिनी ः मेरे मूड को क्या हुआ है ? आप अपना मूड ठीक करें। मेरा तो ठीक है।

मनोज ः तुम्हीं सामान बाँधकर जाने की रट लगा रही थी।

मोहिनी ः तुम चाहते भी यही हो कि मैं यहाँ नहीं रहूँ और रहूँ तो तुम्हारी दासी बनकर रहूँ। ना जाने तुम्हें मुझसे ईर्ष्या क्यों होने लगी है?

मनोज ः मोहिनी तुम बात को फिर बढाना चाह रही हो। अच्छा तो यह होगा कि तुम जाओ और मम्मी-पापा के लिए खाना बनाने की तैयारी करो। दूर से आये हैं भूख लग आयी होगी। और हाँ भूख तो मुझे भी लग रही है। सब्जी मैं ले आया हूँ। (मोहिनी अनसुनी कर देती है)

उमाकांत एवं

अंगूरी देवी ः खाना हम लाये हैं बेटे। परेशान मत होओ।

मनोज ः लाये हैं तो क्या हुआ ? खाना बन रहा है। ताजा खाइयेगा। अब तो आपकी बेटी कमाती भी है।

अंगूरी देवी ः सो तो ठीक है मगर बेटी के घर का खाना हमारे गले नहीं उतरेगा।

(तभी सोहनलाल एवं सुशीला देवी का कमरे में प्रवेश होता है।)

सोहनलाल ः बेटे, बेटी में कोई फर्क नहीं है। एक ही बात है। बेटे का खा सकते हैं तो बेटी का क्यों नहीं खा सकते ? .....जा मनोज, खाना बनवा दे। (मनोज भीतर जाता है।)

अंगूरी देवी ः बहन जी, मोहिनी आपकी बहू है आप ही इसे समझाएँ। हमसे ज्यादा तो आपकी है। जैसा आप चाहेंगी वैसे ही रहेगी।

सुशीला देवी ः आपकी तो बेटी है, आप ज्यादा जानती हैं मोहिनी के बारे में। आजकल की बहुएँ किसी की न सुनती हैं, न मानती हैं। अपनी मर्जी करती हैं।

अंगूरी देवी ः फिर भी आप ध्यान रखना बहन जी। हमारी ओर से कोई शिकायत नहीं आएगी।

सुशीला देवी ः नौकरी-पेशा बहू हो गयी है तुम्हारी मोहिनी। अब वो मोहिनी नहीं रही है।

अंगूरी देवी ः बहन जी, क्या उसके व्यवहार में यह परिवर्तन नौकरी के बाद आया है या पहले भी था ?

सुशीला देवी ः हमने तो अभी देखा है नौकरी के बाद।

(भीतर के कमरे में से मनोज और मोहिनी की तेज-तेज आवाजें आ रही थीं। ड्राइंग रूम में बैठे लोग साफ-साफ सुन रहे थे।)

मनोज ः तो तुम अपने माँ-बाप के लिए खाना नहीं बनाओगी ? उनके सामने भी यही नाटक करोगी क्या ?

मोहिनी ः हाँ-हाँ, नहीं बनाऊँगी खाना। तुम क्यों नहीं बना लेते ? मेरे माँ-बाप का इतना ही ख्याल रखते हो तो खाना भी बनाकर खिला दो, आदर्शवादी दामाद जी।

मनोज ः मैं आखिरी बार पूछता हूँ, तुम खाना बनाती हो या नहीं ?

मोहिनी ः नहीं-नहीं-नहीं, बिल्कुल नहीं।

मनोज ः ठीक है मैं ही बना देता हूँ खाना।

(उठकर रसोई के भीतर जाने लगता है।)

मोहिनी ः तुमसे चाय तो आज तक बनाकर कभी पिलायी नहीं गयी, खाना कहाँ से बनाकर खिलाओगे। खुद का काम तो करते हुए जोर आता है। चड्डी-बनियान तक तो तुमसे धुलते नहीं हैं।

मनोज ः (जाते-जाते) तुमने समझ क्या रखा है ? मैं सब कर लूँगा। क्या तुम्हारे बिना काम नहीं चलेगा ? देखना मैं कितना बढया खाना बनाता हूँ। उँगलियाँ चाट जाएँगे सब ! (कहकर रसोई में पहुँच जाता है।)

(सबकी निगाहें रसोई की ओर टिक जाती हैं।)

(थोडी देर बाद रसोई में खटर-पटर की आवाज आने लगती हैं। थाली और कटोरी के गिरने के झनझनाहट सुनायी देती है। फिर गिलास गिरने की आवाज सुनायी पडती है। चिमटा, संडासी, भगौनी सबकी अलग-अलग आवाजों से पता चलता रहता है कि रसोई में क्या घट रहा है? सभी उत्सुकता से रसोई की ओर देखते रहते हैं।)

मनोज ः (रसोई के भीतर से ही) माचिस कहाँ रखी है मोहिनी ?

मोहिनी ः (उत्तर नहीं देती, मुस्कराने लगती है।)

मनोज ः (थोडी देर बाद) नमक का डिब्बा कौनसी अलमारी में रखा है जरा बताना ?

मनोज ः (भीतर से ही) अरे और कुछ नहीं तो आटे का पीपा ही बता दो कहाँ रखा है ?

(रसोई में खटर-पटर बढ जाती है। मोहिनी मुस्कुराती रहती है।)

(थोडी देर बाज मनोज आटा सने हुए हाथों को आगे फैलाकर तथा कंधों से पसीना पोंछता हुआ बाहर निकलता है। सभी देखकर हँसने लगते हैं।)

मनोज ः (रसोई के बाहर खडे होकर) मोहिनी यह तो बता दो कि आटे में पानी ज्यादा गिर गया है गूँदने में ही नहीं आ रहा। ये देखो लेई जैसा हो गया है अब क्या करना है ? (हाथ दिखाते हुए।)

मोहिनी ः तुम तो खाना बनाने चले थे। बना लो खाना। ये मुँह और मसूर की दाल ! मैंने पहले ही कहा था कि जुबान चला सकते हो, गृहस्थी नहीं चला सकते ? (उठकर रसोई की ओर बढती है।) चलो हटो, हाथ धो लो। मैं ही बना देती हूँ खाना। जिसका काम उसी को साजे।

(मोहिनी के साथ-साथ मनोज भी रसोई में चला जाता है।)

सोहनलाल ः (मुस्कुराकर) यह छोटे-मोटे झगडे तो गृहस्थी के गुलगुले हैं। जो खाए वो भी पछताए और जो न खाए वह भी पछताए। (सभी ठहाका लगाते हैं।)

(परदा गिरता है, मंच पर अँधेरा छा जाता है।)

मोहन थानवी
जन्म ः 8 जुलाई, 1958
शिक्षा ः बी.कॉम., एम.ए. (हिन्दी)
साहित्य ः 1970 से लेखकीय यात्र आरंभ। राष्ट्रीय पत्र्-पत्रि्काओं में विविध रचनाएँ व दस से अधिक नाटक प्रकाशित-पुरस्कृत।
संप्रति ः उप संपादक, दैनिक भास्कर, बीकानेर
पता ः 82, सार्दूल कॉलोनी, बीकानेर
मोबाइल नं. 09799390877

कितना-सा द्वंद्व

मोहन थानवी

एक पात्रीय नाटक

पात्र ः पुरुष, आयु लगभग 20 वर्ष

प्रॉपर्टी

पानी का जग, गिलास, कुर्सी-मेज, पलंग, सफेद चादरें, फर्स्टएड बॉक्स, कागज-कलम, दीवारों पर बदलने के लिए पोस्टर

पार्श्व ः संगीत, रेल और भगदड तथा कुत्ते के रोने की आवाजें

दृश्य एक

(नायक एक अस्पताल के कमरे में मरीजों की ड्रेस में कुर्सी-मेज पर बैठा है और पत्र् लिखते हुए अपना अतीत याद कर रहा है। फर्श पर कागज के टुकडे मुडे-तुडे पडे हैं और नायक अधलिखे पत्र् फेंकता भी जा रहा है, मानो उससे सही तरीके से पत्र् लिखा ही नहीं जा रहा हो। पत्र् लिखते-लिखते खीझ उठता है, गिलास उठाकर पानी पीता है और बडबडाता है।)

नायक-कितना मुश्किल है किसी को खत लिखना। एक लाइन सही नहीं लिखी जा रही।

(अधलिखा पत्र् मोडकर फेंकता है, दूसरे कागज पर लिखना शुरू करता है, पार्श्व से रेल के इंजन की सीटी और उसी से लय मिलाते कुत्ते के रोने की आवाज आती है, लिखना बंद कर परेशान हो कुर्सी से उठ खडा होता है। खिडकी से झाँकता है, पानी पीता है, बडबडाता है)

कुत्तों की आदत कौन बदल सकता है ? रात के सन्नाटे को चीरने के लिए रोते ही हैं।

(धीरे-धीरे रेल की आवाज पास आकर फिर दूर होती चली जाती है, नायक मानो उस आवाज का पीछा कर रहा है कुत्ते के रोने की आवाज भी बंद हो जाती है)

अभी कल ही की तो बात लगती है।

गोधरा रेलवे स्टेशन के बाहर मैं ग्राहकों को चाय-पानी पिलाता था।

ऐसे ही रेल की आवाजें पास आती...दूर जाती रहीं।

मेरी आवाज की तरह।

‘‘चाय गरम-गरम चाय बाबू जी...चाय...चाय...चाय।

(अफसोस जताता है)

आखिर सुनहरे लम्हों को भी साथ ही ले गई...।

चाय-चाय कहता मेरा बचपन गुजरा...कैसे भूल सकता हूँ मैं...?

(यकायक खुश होकर, कुर्सी पर बैठता हुआ)

हाँ, यहीं से खत लिखना शुरू करता हूँ। यही ठीक रहेगा।

(उत्साहित होकर लिखता है बोलता जाता है)

तब मैं चौदह साल का था। अभी बीसवाँ चल रहा है। तब गुजरात के गोधरा में रेलवे स्टेशन के बाहर चाय की थडी पर दिन-रात बीत रहे थे। होली और दीवाली पर मालिक छुट्टी देता था।
(लिखते-लिखते ख्यालों में खो जाता है, उठ खडा होता है और मानो स्वयं को बताता है...)
उन छुट्टियों में गाँव जाकर माँ-बाप से मिलता था।
(खुश होकर...)
चेटीचंड के दिन मालिक गाँव में फोन करने के लिए अलग से पैसे देता था।
(स्वप्निल आँखों से शून्य को उत्साहित हो घूरता है...)
मैं फोन पर अपने माँ-बाप से बातचीत करता था तो मालिक की आँखों की चमक देखने लायक होती थी।
(उमंग से...)
कल की बात की तरह मुझे पल-पल की याद है। उम्र में छोटा जरूर था मगर बडों की आँखों को पढने में मुझे कोई तकलीफ नहीं होती थी। अब भी नहीं होती।
(याद करते हुए...)
उन्हीं दिनों मुझे मालूम चला कि मालिक का परिवार पंजाब के राजपुरा में रहता है। मालिक गोधरा से प्रतिमाह ढाई हजार रुपए राजपुरा भेजता था।
मालिक की आँखों में छुपे सपने मानो मुझे अपनी खुशियाँ लौटाने की गुहार करते थे।
(मानो फिर कुछ याद आया हो उसे लिखने की जल्दी में कुर्सी पर बैठकर कागज कलम संभालता हुआ कहता है...)
मुझे याद है, मेरे पिता एक दिन मुझे गाँव से लेकर आए और गोधरा रेलवे स्टेशन के बाहर चाय वाले लोकूमल के हवाले कर दिया। वापस लौटते वक्त मेरे पिता की आँखों में तैरते जो सपने मैंने देखे थे वे मेरे मालिक के सपनों-से ही थे। उनकी आँखों में मेरा ही सुख निवास करता दिखता था। जैसे बागवान को अपने आमों के बगीचे के सभी पेडों पर आम के सिवाय कुछ दिखाई नहीं देता। लेकिन बाग में फूल और फलों के साथ कुछ ऐसे मुरझाए पत्ते भी थे जिनके नीचे एक कोबरा फन उठाने को बेताब था।
(तेज संगीत के साथ साँप के फुफकारने की आवाजें, रोशनी का झपाका...कुर्सी से उठ खडा होता है...)
एक दिन कोबरा मुझे ही नहीं, बल्कि कितने ही लोगों को डस गया।
(एकाएक सन्नाटा हो जाता है)
चुपचाप। निःशब्द। कोई फुफकार सुनाई नहीं दी।
(अफसोस जताता है, रोता है...)
डस गया वह कोबरा...मुझे...मेरे मालिक को...

(फफक-फफक कर रोता है, फिर सिसकियाँ लेता हुआ)
हाँ, अब दूसरे और बहुत से कोबरे फुफकार रहे हैं।
(उत्तेजित और तेज स्वर में)
गोधरा-गोधरा चिल्लाकर समाज पर खौफ की पहाडी लादना चाहते हैं।
(आक्रोश से चेहरा लाल और पसीने से तर हो जाता है, कुर्सी से उठता हुआ ...अफसोस जताता है)
देश की बेहतरी के लिए ऐसी बातों को स्वाभाविक और जरूरी बता रहे हैं।
(व्यंग्य से)
इन्हीं फुफकारों से ही वे जीतते हैं। ऐसी ही फुफकारें उनको हराती हैं।
(कुर्सी पर बैठकर फिर लिखता है...)
कोबरा के डसे और माँ-बाप से बिछडे लोग अपने अस्तित्व को इन फुफकारों के बीच ढूँढते रह जाते हैं। जैसे मैं। मैं-हरूमल। माँ-बाप से बिछडा। जैसे-लोकूमल। जिसके बच्चे अपने बाप से बिछडे। जिसकी धर्मपत्नी अपने पति को खोज रही है।
(अफसोस जताता है, कुर्सी से उठता हुआ)
इनके साथ बाकी सभी भारतमाता के ही तो बेटे हैं।
संघर्ष करते हुए जीने वाले।
(पार्श्व में रेल एवं पटाखों की आवाज, रंगीन रोशनी के झपाके)
मुझे याद है मेरा गाँव अहमदाबाद और पालनपुर के बीच में था। गोधरा से रात को गाडी में बैठकर मैं सुबह तक गाँव पहुँच जाता था। साल में दो बार। होली और दीवाली। रंग और रोशनी। गुलाल और मिठाई के वे दिन मैं कैसे भूल जाऊँ।
(यकायक शांति हो जाती है, मंच पर अँधेरा घिरने लगता है, नायक सिर पकडकर जमीन पर ही पहले धीरे-धीरे बैठता है फिर लेट जाता है)
पर, एक दिन ऐसा भी आया जो बाकी दिनों को काला कर गया। सबकुछ अँधेरे में गुम हो गया।
(एकदम अँधेरा हो जाता है, तुरंत शनैः-शनैः रोशनी होती है)
जैसे जाग जाने पर सपना टूट जाता है वैसे ही उस दिन का सूर्य उदय होने से पहले ही पश्चिम में दूर अनजान क्षितिज की ओर अस्त हो गया और फिर उदय न हो सका। प्रकाश साथ ले गया एवं अपने पीछे छोड गया अँधेरा।
(तेज रोशनी, पसीने से भीगा नायक उठ खडा होता है, उत्तेजित होकर)
वह रोशनी से गर्माया दिन जो आदमियों को झुलसा गया। मैं भूल सकता हूँ क्या? कभी नहीं! मेरी जगह पर दूसरा कोई भी होता तो वह भी उस आँखों को अँधेरा देने वाली रोशनी के झपाके को भूल नहीं सकता।
(यकायक शांत होकर मानो जो कुछ हो चुका उसे स्वीकार कर लिया हो)

लेकिन वह नर्क की रोशनी देखने वाले मेरे जैसे बहुत थे। शायद मेरी तरह वे भी किसी को मेरी यह कहानी बता रहे हो।

(कुर्सी पर बैठकर फिर कागज कलम संभालता है, भावों के साथ लिखता-बोलता है)

मेरी कहानी ज्यादा लंबी नहीं है। परन्तु दर्द इतना अधिक और तकलीफदेह है जिसे लफ्जों में पिरोना मुश्किल है। दिल की बातें करने वालों को सुनने वाले दिलदार की तलाश रहती है। छोटे दिल वाले बेखौफ होकर ऐसी बातें सुनने से लाचार होते हैं। जैसे कि सियासतदां। सत्ता का सुख भोगने या राजनीति से रोटियाँ सेंकने वाले कभी भी बडे दिल वालों की बातों पर मंथन नहीं करते। कोई करता भी है तो कुर्सी गँवा बैठता है। वह तो सिर्फ अपनी पार्टी और अपनी ईमानदारी की बात करेगा। देश और समाज भले ही गर्त में जाए। भले ही बिछडे बच्चे अपने माँ-बाप को ढूँढते रहें।

(यादों में खो जाता है, कुर्सी से उठकर कमरे में टहलता हुआ..... कुर्सी को घूरकर देखता है, मानो उसे ही कह रहा हो)

पढ रहे हो न मेरा खत। बडी मुश्किल से लिखा है तुम्हें, एक-एक बात याद करके यह पत्र् लिखा है।

(यकायक उत्तेजित होकर)

तुम्हें मेरा पत्र् पढना होगा, पढना ही होगा, हाँ..., देखो...देखो मैंने लिखा है...

(फिर यादों में खोने लगता है, रेल की आवाज के साथ)

करीब छह साल पहले जब मैं गोधरा स्टेशन के बाहर चाय की दुकान पर लोकूमल की शागिर्दी में आ खडा हुआ तब देश में पूरी तरह अमन-चैन था, ऐसी गलतफहमी मुझे नहीं है। तब भी कभी पंजाब तो कभी महाराष्ट्र के मुंबई में धमाके हो चुके थे।

(अफसोस जताता है, कुर्सी को घूरता है)

गोधरा में ऐसा कुछ घट सकता है यह किसी को सपने में भी ख्याल नहीं था।

महँगाई बढती जा रही थी। चाय-पानी की दुकान से गुजारा होना मुश्किल हो गया, तो लोकूमल ने अहमदाबाद की ओर जाना शुरू किया। वहाँ से प्लास्टिक का सामान लाता। गोधरा में बेचता। कभी बडौदा की ओर चला जाता और वहाँ प्लास्टिक बेचकर कपडा ले आता। कभी इलेक्ट्रोनिक आइटम भी ले आता। इस काम में लोकूमल को दो पैसे बचने लगे। वह खुद अपने बच्चों को फोन करने लगा।

(रेल की आवाज बंद हो जाती है, नायक लोकूमल बन काल्पनिक फोन करता है)

हाँ हाँ, मैं ठीक हूँ। तुम कैसी हो !

अरे भाई ठीक से दवा करो। अच्छा रतन को देना।

रतन... कैसे हो बेटा। स्कूल जाते हो न।
अपनी माँ का ख्याल रखा करो।
क्या... हाँ भाई हाँ, आऊँगा...जरूर आऊँगा।
नहीं भाई-दीवाली है न दुकान संभालने वाला छोरा हरूमल अपने गाँव गया हुआ है। आ जाए तो... हाँ हाँ, भाई आ जाऊँगा...।
ठीक है, रखता हूँ, कुछ लाना हो तो बताना...अच्छा अच्छा ओके ओके।
(काल्पनिक फोन रख लोकूमल बना हुआ नायक एक एलबम उठाकर देखता है)
मेरा सोनू रतन...कैसा लगता है... यह फोटो पन्द्रह साल पहले का है। अब मेरा नन्हा रतन सोलह-सत्रह बरस का हो गया।
(बच्चों सा व्यवहार करता हुआ बच्चों की तरह ही कहता है)
फोन पर हमेशा कहता है-बाबा, घर आओ ना ! या हमें गोधरा बुला लो।
(फफककर रो पडता है, धीरे-धीरे सिसकियाँ भरता हुआ कागज कलम उठाते हुए कहता है मानो लिख रहा हो)
देश को आजाद हुए करीब साठ साल होने को आए। इन साठ सालों में कितने ही आदमी जन्मे और मुक्ति को प्राप्त हुए। कितने ही पोते-परपोते वाले हो गए। कितनों को सरकार ने नौकरी दी, कितनों को जमीन मिली कितनों को पुरस्कार सम्मान मिला और कितनों को अपराध करने के कारण सजा में जेल नसीब हुई। इन बातों का अंत नहीं है। इस बीच कितने ही गाँव कस्बों में और कस्बे शहर में तब्दील हो गए। कितने नगर महानगर में शुमार हो गए। कलकत्ता कोलकाता हो गया। दिल्ली में नई दिल्ली बन गई। पंजाब में हरियाणा का अस्तित्व सामने आया तो बिहार की बराबरी में छत्तीसगढ का नाम उठ खडा हुआ। लेकिन आदमी का दर्द किसी ने घटाया नहीं। सभी बातों ने आदमी का दर्द बढाया ही है। जैसे कि मेरा, यानी हरूमल और लोकूमल का दर्द बढ गया है। कभी खत्म न होने के लिए। बढता ही जा रहा है।
(सुबकता हुआ एकाएक जोश में आता है)
यह दर्द माँ-बाप से बिछुडे हुओं को रास्ता बता रहा है-बंद मुट्ठियों के हथियार बनाने के लिए।
लोकूमल को उसके सौलह साल के पुत्र् ने कहा-बाबा, घर आओ ना! या हमें गोधरा बुला लो।
(भावनाओं के अतिरेक से झुरझुरी लेता है)
एक पिता अपने बच्चे से सोलह साल से मिला ही नहीं है। एक बच्चा जब अपनी माँ की गोद में था तब से सोलह साल का होने तक अपने पिता की शक्ल याद रखने की कोशिश कर रहा है।
(आक्रोश में मुट्ठियाँ भींचता हुआ कुर्सी उठाकर फेंक देता है, कुछ और चीजों पर भी गुस्सा उतारता है)
इसके पीछे कारण है-कुर्सी। रोजगार। पैसा। गरीबी।

गरीबी ! ...हाँ ...गरीबी ! अपनी मातृभूमि, जन्मभूमि, अपना घर छोडने का इससे बडा कारण नहीं होता।

(बेबसी जाहिर करता है, अपने पर काबू पाता है। दार्शनिक-सा गंभीर होकर कुर्सी उठाकर वापस रखता है। दूसरा सामान भी व्यवस्थित करता है, फिर कागज कलम उठाकर मेज के पास खडे-खडे ही लिखता हुआ बोलता है)

आज ही नहीं बल्कि सदियों से। जब हिन्दुस्तान से आदमी कमाने के लिए परदेस जाते थे।

(स्वप्निल आँखों से दूर शून्य में ताकता हुआ)

जब हमारी कौम यहाँ से सिन्धु गई थी या फिर सिन्धु से यहाँ आई।

अमेरिका, कनाडा, मस्कत, सउदी अरब, दुबई न जाने कहाँ तक हम जा पहुँचे...

रोजगार के लिए... हाँ हाँ, रोजगार के लिए हम अपनों से बिछडते रहे हैं...बिछडते रहे हैं हम अपनों से... और अपने...? अपने... कहाँ हैं मेरे अपने... कहाँ हैं?

(रोता है, फिर स्वयं पर काबू पाकर लिखने लगता है...)

हजारों सालों से हम हिन्दुस्तान की मिट्टी की सुगंध अपने में समेटे हुए हैं। सिन्धु में रहे तब भी... और परदेस में, किसी दूसरे देश में गए तब भी।

(रेल और हवाई जहाज की आवाज, नायक मानो उन आवाजों का पीछा कर रहा है, कुर्सी की ओर देखता हुआ...)

देखो, मेरे इस खत को तुम पूरा पढना... पूरा,

(रेल व हवाई जहाज की आवाजें बंद हो जाती हैं, नायक फिर लिखने लगता है)

बरस बीत गए, हालात वैसे ही हैं। वैसे ही हैं हालात, कुछ नहीं बदला। नहीं.

आज भी हमें कमाने के लिए अपना गाँव, घर छोडना पडता है।

आज भी यहाँ-वहाँ हम काम करते हैं।

हमारे बच्चे कहते हैं-बाबा, घर आओ ना! या हमें अपने पास बुला लो।

(यकायक सन्नाटा छा जाता है, नायक मुँह छुपाकर आँखें पोंछता है, उसकी ठंडी आवाज मानो सन्नाटे को चीरती है)

मेरे बाबा तो मुझे कहते थे-बेटा, तू सुखी होगा तो हमें गोधरा बुला लेना। गाँव में आजकल गुजारा करना मुश्किल हो गया है।

(एकाएक गुस्से में भरकर)

हमारे देश को तो गाँवों का देश कहा जाता है, किसलिए?

गाँव से निकल कर हरूमल और लोकूमल अपने माँ-बाप, बच्चों से बिछुड जाते हैं इसलिए?

(खडा हो जाता है, जैसे कुछ याद आ गया हो)

ओह! मैं फिर भटक गया।

लिखनी थी लोकूमल और अपनी यानी हरूमल की आपबीती और लिखने लगा गाँवों के हालात। गाँव... जहाँ मेरा हिन्दुस्तान है।

हाँ, लोकूमल ने गोधरा से अपने गाँव जाने के समय यही शब्द मुझे कहे थे।

(उत्साहित हो बैठकर बोलता हुआ फिर लिखता है)

गाँव, जहाँ मेरा हिन्दुस्तान है।

(लिखना बंदकर बडबडाता है...)

मेरा भी तो गाँव है। मेरे भी तो माँ-बाप हैं। मुझे भी तो लोकूमल ने दीवाली पर गाँव भेजा था। तब तो ऐसे नहीं कहा था। अब अपने गाँव जाने के समय...

हाँ, उसने मुझे कहा था-हरू, बेटा देख। मुझे पंजाब में करीब हफ्ताभर लग सकता है। पीछे ध्यान रखना। गाडी का वक्त हो गया है। मैं जा रहा हूँ।

(सुबककर...रोता है)

मैंने कितना कहा,-सामान मैं उठाकर ले चलता हूँ।

पर... लोकूमल ने साफ मना कर दिया। बोला, नहीं, मैं खुद का बोझ उठा सकता हूँ। फिर... जाते-जाते पाँच रुपए हाथ पर रखे। कहा-''गाँव फोन कर देना।''

(कुछ क्षण शून्य को घूरता है, यकायक बुक्का फाडकर रोता है)

मुझे फोन करना पडा, करना पडा मुझे फोन। उसके न रहने की खबर जो देनी थी।

(एक क्षण स्तब्धता, फिर पार्श्व में शोर-शराबा, रेल इंजन की आवाज, कुत्ते के रोने की आवाज, एकाएक नायक खडा होकर मानो कमेन्ट्री सुनाता है)

लोकूमल के जाने के करीब पन्द्रह मिनट बाद गोधरा स्टेशन की ओर से शोर-शराबा सुनकर मैं दुकान के बाहर आया। स्टेशन की ओर से लोग हडबडाए हुए भागते-दौडते आ रहे थे। स्टेशन रोशनी से चमक रहा था।

(भयभीत होता है मानो कुछ याद आया हो...)

हमेशा अँधेरे में गुम रहने वाला स्टेशन रोशनी से क्यों भरा है? रात का वक्त। दूर कुछ लोग एक-दूसरे से आगे निकलने की होड में धकमपेल क्यों कर रहे हैं?

लगता है दंगा-फसाद हो गया है।

(यकायक कमेंट्री करना बंद करता है। सन्नाटा। कुछ क्षण अँधेरा, फिर नायक की जागरूक नागरिक की भूमिका निभाती आवाज)

सियासत के अफसरों की फौज कानून और लोगों की सुरक्षा व्यवस्था के लिए पाबंद हुई।

अभी भी पाबंद है।

(गुमसुम हो जाता है, फिर सिसकते हुए...)

दुकान से बाहर निकलकर जब मैंने एक आदमी से पूछा-भागदौड काहे को है !

उसके पास जवाब नहीं, डर था।

उसे भयाक्रांत देख मैं भी भय से सिहर उठा।
(धीरे-धीरे भयभीत अवस्था में बैठता है, कलम उठाकर शून्य में घूरता है...)
मेरा ये पत्र् तुम्हें पढना होगा। मैं हर बात लिखूँगा। मुझे मालूम है, मेरा लिखा सेंसर होगा, लेकिन मैं यह भी जानता हूँ, संवेदनाओं को सेंसर करना अभी संवेदनहीन लोगों को नहीं आता...
(याद करते हुए बोलकर लिखता है)
कुछ और लोग भी भागते हुए बाजार की ओर आ रहे थे। स्टेशन पर झगडा हुआ था। मैं लोकूमल की चिंता करता वहाँ पहुँचा। स्टेशन पर आदमी-आदमी को नहीं पहचान रहा था। दूसरे के दुःख-दर्द की चिंता किसी को भी नहीं थी। स्टेशन पुलिस के हवाले हो चुका था।
(ठठाकर हँसता है)
पुलिस के हवाले, हा...हा...हा।
(अचानक हँसना बंदकर खडा होकर गुस्से में बोलता है...)
पुलिस किसके हवाले हो गई उस वक्त पता नहीं चला। आज भी किसी को इसकी खबर हो तो मुझे बताए।
(उत्तेजित होकर)
ऐसे माहौल में पुलिस, सियासत या अफसरों की गोटियाँ किसके हाथ में होती ह इसकी खबर तो गाँधी जी के सत्याग्रह के वक्त से आज तक किसी को पता नहीं चली है।
खबर होती तो गोडसे की गोली गाँधी तक पहुँचने से पहले चिन्गारी नहीं छोडती!
शास्त्री जी के मरने से पहले आँधी-तूफान न आ जाता!
इंदिरा गाँधी को सख्त पहरे में भी पहरेदारों में से ही कोई गोलियाँ मार सकता था?
(सन्नाटा...नायक धीरे से कुर्सी पर बैठकर शांत स्वर में बोलता हुआ फिर लिखता है)
ये बातें तो इतनी बडी हैं कि इतिहास कभी इन्हें भूलेगा नहीं। इतिहास ऐसी बडी बातें नहीं भूलेगा और मैं लोकूमल का वह कुर्ता नहीं भूलूँगा जो अधजला प्लेटफार्म पर पडा था। उस कुर्ते की एक बाँह में वह थैली भी अटकी हुई थी जिसमें वह अपने लडके रतन के लिए खिलौने ले जा रहा था।
(याद करते हुए...खडा हो जाता है)
लोकूमल के लिए रतन अभी भी सालभर का ही तो था। गोधरा का एक बेटा मेरे सामने अपने बेटे के लिए खिलौने लेकर रवाना हुआ था।
पता नहीं इतने कितने दूसरे गोधरा के बेटे स्टेशन पर हाय-तौबा के शोर में मुझे दिखाई दिए।
(भगदड की आवाजों के बीच नायक सिसकता है)
फिर क्या हुआ! बताऊँ, सुनो, इस पत्र् को पूरा पढना-जान जाओगे। जरूर पढना एक पगले का पत्र्। लोग कहते हैं उस हादसे के बाद मैं पागल हो गया हूँ। मैं ही क्यों ना जाने कितने पागल हो गये हैं।... पागल...मैं पागल... (रोता है।)

(रोना बंदकर बैठकर लिखता है)

गोधरा का दूसरा बेटा मैं, हरूमल आज यह बात आपको बता रहा हूँ।

लेकिन यह पत्र् आपको लिखने से पहले मुझे अपने इस अस्पताल के डॉक्टरों से परमिशन लेनी पडी है। डॉक्टरों का कहना है कि मेरा यह पत्र् सेंसर होगा। मानसिक रोग चिकित्सालय से बाहर निकलने तक इस पत्र् को कितने ही दूसरे डॉक्टर और सीआईडी के अफसर पढेंगे। यह नियम है। नियम है...नियम...

(निढाल-सा खडा होता है)

नियम किसलिए होते हैं...याद रखने के लिए... फिर भले ही मानवीयता को लोग भूल जाये, परन्तु...परन्तु नियम कोई नहीं भूलेगा।

(एकाएक गुस्से में)

कोई नहीं भूलेगा नियम... कोई नहीं। ये नियम ही तो आदमी को आदमी से जुदा करते हैं... एक के लिए दूसरा नियम और दूसरे के लिए कोई और नियम धर्म के लिए अलग और समाज के लिए अलग नियम गरीब-अमीर के नियम, नौकर-अफसर के नियम...। कोई नहीं भूल सकता ये नियम... कोई नहीं भूल सकता...

(सन्नाटा, शांति। नायक बैठकर बोलता हुआ लिखता है)

हो सकता है इस पत्र् में छुपा दर्द उनको नजर नहीं आए और आप तक पहुँच जाए।

मैं यह मानकर चल रहा हूँ कि यह पत्र् आप तक पहुँच गया है।

(कलम-कागज हाथ में उठाए खडा होता है, पागलों की तरह कमरे को देखता है, फर्स्टएड बॉक्स उठाकर दिखाता हुआ एकदम सामान्य आदमी की तरह कहता है)

तो साथ-साथ यह भी बता दूँ कि मेरा इलाज पागलों के इस अस्पताल में लोकूमल का बेटा रतन ही करवा रहा है। पिता के रूप में अपना सबकुछ खो देने वाला भारत का बेटा रतन ही मेरा इलाज करवा रहा है।

(गंभीर, रुआँसा व सिसकता हुआ धीरे-धीरे बैठ जाता है, शनैः-शनैः अँधेरा होता है)

भगवान अटलानी

जन्म ः 10 मार्च, 1945 लारकाना (सिंध, अब पाकिस्तान)

शिक्षा ः बी.एससी.

साहित्य ः हिन्दी में दस और सिंधी में सात, कुल सत्रह पुस्तकें। इनमें से चार उपन्यास, चार कहानी संग्रह, तीन नाटक, तीन एकांकी संग्रह, एक निबंध संग्रह, नवसाक्षरों के लिए एक कहानी पुस्तिका और एक प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन।

पुरस्कार ः मीरा पुरस्कार, रांगेय राघव पुरस्कार, घनश्याम दास सर्राफ साहित्य सम्मान पुरस्कार, सिन्धी रत्न सम्मान

सम्प्रति ः स्वतंत्र् लेखक एवं पत्र्कार

पता ः डी-183, मालवीय नगर, जयपुर-302017

सपनों की सौगात

भगवान अटलानी

पात्र्

राहुल ः सुदर्शन, गंभीर, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला नौजवान, कृषि इंजीनियर, एम.बी.ए.।

पापा ः राहुल का पिता लगभग पचास वर्षीय मध्यम श्रेणी का पढा-लिखा पुरुष।

प्रिंसिपल ः टाई, सूट में प्रभावशाली प्रौढ पुरुष।

महिला पत्र्कार-लगभग पैंतीस वर्षीय महिला जिसके पास टेपरिकॉर्डर या नोटबुक-पैन और कैमरा है।

राहुल के दो सहपाठी और एक मित्र्-राहुल के समवयस्क।

(एक कोने में मेज रखी है। मेज के एक तरफ रिवाल्विंग चेयर और दूसरी तरफ दो कुर्सियाँ रखी हैं। शेष मंच पर ड्राइंग रूम की सजावट। ड्राइंग रूम में सोफा, सेंटर टेबिल आदि मध्यम श्रेणी के परिवार के अनुरूप हैं। प्रकाश मंच के ड्राइंग रूम वाले भाग पर। राहुल के दोनों सहपाठी सोफे पर बैठे हैं।)

पार्श्व से संगीतबद्ध गीत के बोल उभरते हैं। सपने बसते जिन आँखों में, वे चैन का मतलब क्या जाने। सुख के पैमाने अलग-अलग, सपनों का करतब क्या जाने।।

सहपाठी एक ः कॉलेज वालों की चतुराइयाँ तो पिछले डेढ साल से देख ही रहे हैं। बडी-बडी कंपनियों को कैम्पस में बुला लेना ऐरे-गैरे के लिए आसान नहीं है।

सहपाठी दो ः हाँ, तू ठीक कहता है। फिर हर साल दो-चार नई कंपनियाँ जुड जाती हैं और वे भी नामचीन।

सहपाठी एक ः कल-परसों देखना, अखबार रँगे हुए होंगे। अमुक लडके को अमुक कंपनी ने इतना पैकेज ऑफर किया है। कुल इतने लडके कंपनियों ने चुन लिये हैं। पिछले साल की तुलना में यह संख्या इतनी अधिक है। और भी न जाने क्या क्या लिखा होगा खबरों में।

सहपाठी दो ः अच्छा बता, तू जानता है अखबारों में इस तरह जब चाहें, जिस तरह चाहें, खबरें कैसे छपवा लेते हैं ये लोग ?

सहपाठी एक ः मैंनेजमेंट सिखाने वालों के लिए अखबारों को मैनेज करना कौनसा मुश्किल काम है ?

सहपाठी दो ः नहीं है, यह तो साबित हो चुका मगर करते कैसे हैं अखबारों को मैनेज ?

सहपाठी एक ः दिक्कत यह है कि यहाँ दाखिला लेने वाला हर लडका एमबीए का तमगा लगाकर बाहर निकलता है। मेरा वश चलता तो कम से कम तुझे जरूर कॉलेज से निकाल देता।

सहपाठी दो ः क्यों, ऐसा क्या कह दिया मैंने ?

सहपाठी एक ः यह एक सवाल तेरे बारे में मेरी धारणा को और अधिक पक्का करता है।

सहपाठी दो ः कैसे? तू बताएगा नहीं तो मुझे पता कैसे लगेगा ?

सहपाठी एक ः काम निकलवाने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद में से किसी एक या अधिक का इस्तेमाल करने की बात सुनी है तूने कभी।

सहपाठी दो ः हाँ, सुनी है।

सहपाठी एक ः (ठंडी साँस लेकर) इसने सुनी है, लेकिन कॉलेज वालों ने नहीं सुनी।

(दोनों ठहाका लगाते हैं। राहुल का प्रवेश)

सहपाठी एक ः हैलो मिस्टर ब्राइट, तुझे तो रोक लिया था न बाद में बात करने के लिये कंपनी वालों ने ?

राहुल ः हाँ।

सहपाठी एक ः हो गई बातचीत ?

राहुल ः हाँ।

सहपाठी दो ः क्या बात हुई ?

राहुल ः कुछ खास नहीं।

सहपाठी एक ः अरे, छिपाता क्यों है ? कुछ तो कहा होगा न ? बताने से घट-बढ तो नहीं जायेगा उनका ऑफर ?

राहुल ः नहीं, ऐसी बात नहीं है। मगर बताने लायक कोई खास बात हुई हो तो बताऊँ न ?

सहपाठी दो ः मत बता, तेरी मर्जी।

सहपाठी एक ः इसकी मर्जी कैसे ? बताना पडेगा। (उठकर राहुल के सामने खडा हो जाता है) इतना मारेंगे कि शर्तों की बात अपने-आप मुँह से झडने लगेगी। (मुक्का तानकर) बताता है कि एक्शन शुरू करूँ ?

राहुल ः (सह पाठी एक का हाथ पकडकर मुस्कराते हुए) अच्छा, बैठ। वैसे तो, सचमुच ऐसा कुछ नहीं है जो तुम लोगों से छिपाऊँ। फिर भी जिद कर रहे हो तो सुनो।

दोनों सहपाठी ः (मुट्ठियाँ हवा में उछालकर) हुर्राह !

सहपाठी एक ः जल्दी बता, अच्छे बच्चे इतने नखरे नहीं दिखाते हैं।

राहुल ः सच कह रहा हूँ। मैं न नखरे दिखा रहा था और न छिपा रहा था। आज नहीं तो कल, तुम लोगों के सामने आना ही है सब कुछ।

सहपाठी एक ः ज्यादा फ्लासफर मत बन। झटपट बता, क्या बात हुई तेरी कंपनी वालों से ?

राहुल ः अच्छा पूछो, क्या पूछना है ?

सहपाठी एक ः बडा उस्ताद है! अपनी तरफ से नहीं बतायेगा !!

सहपाठी दो ः कोई बात नहीं है। हम ही पूछ लेते हैं। कितना पैकेज ऑफर किया ?

राहुल ः पचास लाख का।

दोनों सहपाठी ः (उछलकर एक साथ) क्या, पचास लाख ?

राहुल ः (मुस्कराकर) हाँ।

सहपाठी एक ः तू बडा भाग्यशाली है, यार। यहाँ पाँच लाख रुपये के लिये तरस रहे हैं और तू पचास लाख का ऑफर जेब में डालकर भी ऐसा व्यवहार कर रहा है जैसे कुछ हुआ ही न हो।

सहपाठी दो ः फिर तूने क्या जवाब दिया ?

राहुल ः तुम लोग वे बातें जानना चाहते हो न जो कंपनी वालों ने कीं ? मेरे जवाब को अभी से बीच में क्यों ला रहे हो ?

सहपाठी दो ः गाडी, बंगला देंगे ?

राहुल ः हाँ, देंगे।

सहपाठी दो ः गाडी के साथ ड्राइवर भी होगा ?

राहुल ः हाँ, होगा।

सहपाठी दो ः पोस्टिंग कहाँ देंगे ?

राहुल ः न्यूयॉर्क में।

सहपाठी एक ः यू आर सिम्पली वंडरफुल, यार ! इतने शानदार ऑफर मिले हैं और तू बिल्कुल सामान्य बना हुआ है। ठण्डा-ठण्डा, कूल-कूल।

राहुल ः (मुस्कराते हुए) और कुछ जानना है ?

सहपाठी दो ः कोई बांड भरना पडेगा ?

राहुल ः हाँ, पाँच साल का बांड भरवायेंगे।

सहपाठी दो ः इस बीच ?

राहुल ः काम देखकर प्रमोशन भी देंगे और इंक्रीमेंट भी।

सहपाठी एक ः अब बता, तूने क्या जवाब दिया ?

राहुल ः मैंने कहा, सोचकर बताऊँगा।

सहपाठी दो ः क्या सोचना है तुझे ?

राहुल ः कुछ विशेष नहीं।

सहपाठी एक ः फिर सोचने की बात कहने का क्या मतलब जब सोचने को विशेष कुछ है ही नहीं।

राहुल ः पापा से बात करूँगा। दोस्तों से बात करूँगा। मुझे भी कुछ फैसले अभी लेने हैं, उनके बारे में विचार करूँगा। समय तो लगेगा नतीजे पर पहुँचने में।

सहपाठी एक ः यार मिस्टर ब्राइट, तू इतना बैलैन्स्ड क्यों है ? हर चीज की तह में जाना जरूरी होता है क्या ?

(राहुल केवल मुस्कराता रहता है। जवाब नहीं देता।)

सहपाठी दो ः पाँच सालों के लिए बांड भरने वाली शर्त है तो थोडी टेढी मगर जब ऑफर इतना अच्छा है तो बांड भर ही देना चाहिये। इन शर्तों पर पाँच सालों के लिए तो भविष्य निश्चित हुआ।

राहुल ः विचार करना पडेगा सब मुद्दों पर।

सहपाठी एक ः और कौन से मुद्दे हैं, जैसे ?

राहुल ः जैसे यह कि नौकरी करनी भी है या नहीं ?

दोनों सहपाठी- (आश्चर्यपूर्वक) क्या ? क्या कहता है तू ?

राहुल ः भले ही मेरी बात तुम लोगों को बकवास लगे मगर जिन मुद्दों पर मुझे विचार करना है, उनमें से एक मुद्दा यह भी है।

सहपाठी दो ः और क्या है तेरे पास विचार करने के लिये ?

राहुल ः अगर नौकरी करनी है तो भारत में रहकर करनी है या विदेश जाना है ?

सहपाठी एक ः यार, तेरी बातें कम से कम मेरी समझ से तो बाहर हैं। एम बी ए कराने के लिये लाखों रुपये खर्च किये हैं तेरे घरवालों ने। जब कमाने का मौका आया है तो तू पागलों जैसी बातें कर रहा है।

राहुल ः बस, इसीलिये मैं बता नहीं रहा था तुम लोगों को।

सहपाठी एक ः किस्मत को ठोकर मारने पर आमादा लोगों का इलाज कोई नहीं कर सकता मिस्टर ब्राइट! ये हवाई बातें किसी भी मिस्टर ब्राइट को मिस्टर फूल में बदलने के लिये काफी हैं।

(अँधेरा। रोशनी मेज वाले भाग पर। रिवाल्विंग चेयर पर कॉलेज का प्रिंसिपल बैठा है। सामने कुर्सी पर राहुल बैठा है।)

पार्श्व से संगीतबद्ध गीत के बोल उभरते हैं।

कुछ ऐसे सपने होते हैं, जो आँखों में बस जाते हैं। आँखें जब तक खुली रहें, वे धडकन को दौडाते हैं।

इससे पहले दस-बारह लाख का ऑफर भी हम लोगों को बहुत ज्यादा लगता था। पचास लाख रुपये ! मुझे नहीं लगता, कई सालों तक कोई लडका इस रिकॉर्ड को तोड पायेगा।

राहुल ः सर, आपकी दिखाई राह पर चलने के कारण ही मुझे यह प्रस्ताव मिला है।

प्रिंसिपल- हम तो सभी छात्रें को गाइड करते हैं मगर जो समझ, पकड और इंटैलीजैंसी तुममें है, यह ऑफर उसी का नतीजा है। अब जल्दी बांड भरकर भेज दो। देर मत करो।

राहुल ः सर, मुझे सोचने के लिये थोडा वक्त चाहिये।

प्रिंसिपल- मे बी, आई मे हेल्प यू। कोई समस्या है तुम्हारे सामने ?

राहुल ः नहीं सर, समस्या कोई नहीं है, लेकिन मुझे कुछ फैसले अभी करने हैं।

प्रिंसिपल- एतराज न हो तो बता सकते हो कि ऐसे कौनसे फैसले हैं जो तुम्हें अब लेने हैं और जो इस कॉलेज में दाखिला लेने से पहले तुमने नहीं लिये थे ?

राहुल ः क्षमा चाहता हूँ सर, किन्तु क्या इस देश की प्रतिभा को पढ-लिखकर, इस देश के अन्न-जल का उपयोग करने के बाद मजबूत होकर, किसी दूसरे देश को अपने ज्ञान, अपनी विशिष्टताओं से लाभान्वित करने का अधिकार है ?

प्रिन्सिपल- सवाल सोचने लायक है।

राहुल ः क्या जिन्होंने मुझे पाल-पोसकर बडा किया है, उनके प्रति मेरे कर्त्तव्य कुछ नहीं हैं ?

प्रिन्सिपल- बिल्कुल है।

राहुल ः कुछ इस तरह के सवाल हैं सर, जो मेरे दिल और दिमाग में घूम रहे हैं। इन सवालों के जवाब ढूँढकर इसके बाद किसी फैसले पर पहुँचना होगा।

प्रिन्सिपल- राहुल, तुम योग्य हो, होनहार हो इसलिये विदेशी कम्पनी ने कैम्पस प्लेसमेंट के दौरान ही तुम्हें आकर्षक प्रस्ताव दिया है। पाँच सालों के लिये तुम्हें बांड जरूर भरना है मगर इस दौरान तुम इतना पैसा और अनुभव अर्जित कर लोगे कि देश में ही कोई ऐसा सम्मानजनक काम कर सकोगे जिसमें सेवा और योग्यता प्रदर्शन का अवसर हो।

राहुल ः यह दृष्टिकोण भी हो सकता है, किन्तु जो पाँच साल मैं विदेशी कम्पनी की सेवा में गुजारूँगा, वे तो कभी लौटकर नहीं आयेंगे।

प्रिन्सिपल- नहीं आयेंगे लौटकर मगर उन पाँच सालों के बाद आज का राहुल अधिक परिपक्व, योग्य, अनुभवी, कुशल और आत्मविश्वास से लबरेज राहुल में बदल चुका होगा।

राहुल ः पक्ष और विपक्ष में ये सारी दलीलें हैं, इसीलिये निवेदन कर रहा हूँ सर, कि मुझे विचार करके फैसला लेना है।

प्रिन्सिपल- यू आर योअर ओन मास्टर राहुल, फिर भी मैं चाहूँगा कि तुम एक बार कॉलेज के कैरियर काउन्सलर से जरूर मिल लो। मुझे उम्मीद है कि धुंध में से बाहर निकलने में वे तुम्हारी मदद करेंगे।

(अँधेरा। रोशनी। राहुल के मोबाइल की घंटी बजती है। राहुल फोन सुनता है। दूसरी तरफ राहुल के पापा हैं। राहुल को ड्राइंग रूम में और पापा को मेज के पास रिवाल्विंग चेयर पर बैठा हुआ देखा जा सकता है। मंच के दोनों भाग हल्की रोशनी में रोशन हैं। पार्श्व से संगीतबद्ध गीत के बोल उभरते हैं।)

दीवाने सपने बुनते हैं, सपनों की खातिर जीते हैं,
मरना मिटना मंजूर उन्हें, दुनिया के मक्तब क्या जाने.....।

पापा ः बांड भरकर दिया या नहीं ?

राहुल ः अभी नहीं दिया है, पापा !

पापा ः क्यों ? क्यों नहीं दिया है अब तक ?

राहुल ः पापा, मुझे सोचने के लिये थोडा और समय चाहिये।

पापा ः क्या सोचना है ? इतना तो समझाया था। पता नहीं क्यों, तुम जरूरत से ज्यादा आदर्शवादी बनने पर आमादा हो।

राहुल ः पापा, प्लीज.....।

पापा ः बेटा, कोरी भावुकता से दुनिया नहीं चलती। जीने के लिये व्यावहारिक होना जरूरी है।

राहुल ः जानता हूँ पापा, इसीलिये तो फैसला लेने में इतना समय लग रहा है।

पापा ः मैं फिर कहता हूँ, पहले पैसा कमाओ, दुनिया में जहाँ जाना पडे जाओ, मगर खूब पैसा कमाओ। आदर्श की बातें इसके बाद करना।

राहुल ः पापा, सब लोग इस तरह सोचेंगे तो हमारा देश कभी विकसित देशों की कतार में खडा नहीं हो सकेगा।

पापा ः तुम समझते हो तुम्हारे कारण, केवल तुम्हारे कारण आगे बढेगा हमारा देश ?

राहुल ः नहीं, केवल मेरे कारण नहीं मगर मैं भी उनमें से एक होना चाहता हूँ जो अपनी योग्यता और क्षमता का पूरा फायदा देश को पहुँचाने की बात सोचते हैं।

पापा ः क्या ? क्या हो जायेगा इससे ?

राहुल ः पापा, इस देश की हवाओं में मैंने साँस ली है। पानी और मिट्टी ने मुझे जीवन दिया है। मेरे अंग-अंग पर देश के अहसानों के हस्ताक्षर हैं। इन कर्जों को उतारना क्या मेरा कर्त्तव्य नहीं है ?

पापा ः अपना भला करके ही तुम देश का भला कर सकते हो।

राहुल ः मेरा भला विदेश जाकर, विदेशियों की तिजोरियाँ भरने में सहायक बनकर ही होगा क्या ? देश में रहकर कोई काम करने से मेरा अहित हो जायेगा ?

पापा ः यहाँ रहकर तुम इतना धन नहीं कमा सकते जितना विदेश जाकर कमाओगे।

राहुल ः अगर आपकी बात को सच मान लिया जाय तब भी पापा, यहाँ रहकर कम ही सही मगर जो कुछ कमाऊँगा उसका फायदा मुझे तो मिलेगा ही, मेरे देश को भी मिलेगा। विदेशी कम्पनी मुझे अधिक पैसा जरूर देगी लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से देश में गद्दारी की कीमत पर मैं अपना घर भरूँगा।

पापा ः ऐसा नहीं है। विदेशियों से पैसा लेकर अपने देश में बडे पैमाने पर कुछ करने का तुम्हें मौका मिलेगा।

राहुल ः इस प्रक्रिया में पाँच साल, पूरे पाँच साल मैं देश के लिये कुछ नहीं कर सकूँगा।

पापा ः कॉलेज में सलाह ली है किसी से ?

राहुल ः प्रिन्सिपल और कैरियर काउन्सलर से बात हुई है।

पापा ः वे लोग क्या कहते हैं ?

राहुल ः वही बात जो आप कहते हैं।

पापा ः फिर मानते क्यों नहीं हो ? क्यों अडे हुए हो जिद पर ?

राहुल ः कहाँ अडा हूँ जिद पर, पापा ? मेरी सोच और आप सब लोगों की सलाह में अन्तर है इसीलिये तो फैसला करने में समय लग रहा है।

पापा ः कब तक अन्तिम रूप से तय कर लोगे तुम ?

राहुल ः बस पापा, ज्यादा देर नहीं लगेगी। दो-एक दिन में नतीजे पर पहुँच जाऊँगा।

(अँधेरा। रोशनी ड्राइंग रूम वाले भाग पर। राहुल सिर पर हाथ रखकर सोफे पर बैठा है। उसकी आंशिक भाषा से निराशा झलक रही है। मित्र् का प्रवेश)

मित्र् ः तू इस तरह सिर पर हाथ रखकर क्यों बैठा है ?

राहुल ः बस, यों ही।

मित्र् ः कितनी देर से बैठा है इस तरह अकेला, चुपचाप ?

राहुल ः छोड ! बता, तू कैसा है ?

मित्र् ः मैं तो ठीक हूँ मगर तू ठीक नहीं है।

राहुल ः मैं भी ठीक हूँ। देख, एकदम फिट दिखाई दे रहा हूँ या नहीं ?

मित्र् ः (हँसकर) एम.बी.ए. कॉलेज की जगह तुझे एक्टिंग स्कूल में भर्ती होना चाहिये था।

राहुल ः क्यों, ऐसा क्या कर दिया मैंने ?

मित्र् ः न जाने कब से अँधेरे में बैठा है। चेहरे से रंगत गायब है। साफ बोलने से बच रहा है। बता, क्या बात है ? दोस्तों को अपनी तकलीफ नहीं बतायेगा तो घुट-घुटकर मर जायेगा भरी जवानी में।

राहुल ः (फीकी हँसी हँसकर) अच्छा, बैठ तो सही। खडे-खडे ही बातें करता रहेगा क्या ?

मित्र् ः (बैठकर) ले, बैठ गया।

राहुल ः (थोडा रुककर) या, समझ में नहीं आ रहा है, क्या करूँ ?

मित्र् ः क्यों, क्या हो गया ?

राहुल ः तू जानता है, मैंने पचास लाख रुपये का पैकेज और न्यूयार्क में नौकरी का ऑफर छोडकर भारत में अपना व्यवसाय करने का निर्णय लिया था।

मित्र् ः जानता हूँ।

राहुल ः प्रिन्सिपल, कैरियर काउन्सलर, पापा, दोस्त, मिलने-जुलने वाले सभी मेरे फैसले के खिलाफ थे।

मित्र् ः हाँ, थे मैं भी सहमत नहीं था तुझसे। मगर अब क्या हो गया ?

राहुल ः छह महीने हो गये हैं कोशिश करते, कहीं बात बन नहीं रही है।

मित्र् ः क्या दिक्कत आ रही है ?

राहुल ः आर्गेनिक वैजीटेबिल्स यानी जैविक सब्जियों के बिक्री केन्द्र खोलने के लिये मैंने वित्तीय संस्थाओं और बैंकों से सम्फ किया था।

मित्र् ः फिर ?

राहुल ः सब लोग मेरी अपनी पूँजी और अनुभव की बात पूछते हैं। अब ये चीजें मैं कहाँ से लाऊँ ?

मित्र् ः क्या जरूरतें हैं तेरी ?

राहुल ः जैविक खेती के लिये किसानों को तैयार करके उन्हें पेशगी रकम देनी पडेगी। जो पहले ही जैविक सब्जियाँ उगाते हैं, उनसे एकमुश्त सब्जियाँ खरीदकर जरूरी हुआ तो कोल्ड स्टोर में रखनी पडेंगी। इन सभी कामों के लिये पैसे की जरूरत पडेगी।

मित्र् ः तू ठीक कहता है।

राहुल ः बिक्री केन्द्र किराये के भवनों में भी शुरू किये जायें तो फर्नीचर चाहिये। स्टाफ को देने के लिये वेतन चाहिये। विज्ञापन और दूसरे खर्चों के लिये पैसा चाहिये। कोई तैयार नहीं हो रहा है, इन जरूरतों को ध्यान में रखकर पैसा देने के लिये।

मित्र् ः तो किसी दूसरे काम के लिये सोच।

राहुल ः जैविक सब्जियों वाले काम के सभी पहलुओं का विस्तार से सर्वे करके प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार की है। रिपोर्ट वित्तीय संस्थाओं और बैंकों को पसन्द भी है। फिर इसके मुकाबले दूसरा कोई काम मुझे जम नहीं रहा है।

मित्र् ः विचार करेगा, बातचीत करेगा तो तुझे कई काम ऐसे दिखाई देंगे जिनमें तेरी योग्यता का उपयोग संभव है और पूँजी भी ज्यादा नहीं लगेगी।

राहुल ः जैविक सब्जियों का काम जनहित में है और इसलिये भावनात्मक स्तर पर मेने मनोनुकूल है।

मित्र् ः कैसे ?

राहुल ः रासायनिक खाद से पैदा होने वाली सब्जियाँ स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होती हैं।

मित्र् ः (हँसकर) फिर भी हम सब वही खाते हैं।

राहुल ः मैं नहीं चाहता कोई ऐसा काम करना जो मेरे लिये तो मोटी कमाई का साधन हो और उपभोक्ता के साथ किसी भी तरह खिलवाड का कारण बने।

मित्र् ः तो कहीं नौकरी कर ले ?

राहुल ः तू समझता है, अब कोई अच्छी नौकरी मिल सकती है मुझे ?

(एकाएक पापा का प्रवेश। वे कुछ देर से दर्शकों को दिखाई देने वाले विंग के कोने पर खडे, दोनों की बातचीत सुन रहे हैं। उन्हें देखकर दोनों हडबडा कर खडे हो जाते हैं।)

पापा ः (मुस्कराकर) बैठो, दोनों बैठ जाओ। (तीनों बैठते हैं।)

पापा ः मुझे कतई उम्मीद नहीं थी राहुल! कि साहसी, आदर्शवादी, होशियार और आत्मविश्वास से भरपूर मेरा बेटा एक दिन निराशा भरी बातें करेगा।

राहुल ः पापा.....।

पापा ः देखो बेटा, जिन्दगी सपाट रास्ता नहीं है। सपने चाहने भर से पूरे नहीं हो जाते हैं।

राहुल ः आप ठीक कहते हैं पापा, आपकी सलाह मानकर मुझे विदेश में नौकरी का प्रस्ताव स्वीकार कर लेना चाहिये था।

पापा ः नहीं बेटा, मैं तुम्हें हारता हुआ नहीं देख सकता। जो फैसला तुमने लिया था, सब कुछ उसके अनुसार होगा।

राहुल ः मगर कैसे ?

पापा ः तुम देश में रहकर काम करना चाहते हो न ?

राहुल ः हाँ, पापा।

पापा ः अपनी योग्यता का उपयोग देशहित में करना चाहते हो न ?

राहुल ः हाँ, पापा।

पापा ः इस देश के आम नागरिक की बेहतरी के लिये जीना चाहते हो न ?

राहुल ः हाँ, पापा।

पापा ः तुम चाहते हो न कि मुझे और तुम्हारी ममी को हमेशा तुम्हारा साथ-संग हमेशा तुम्हारी सेवा मिलती रहे ?

राहुल ः हाँ, पापा।

पापा ः तुम जो चाहते हो वही होगा राहुल।

राहुल ः मगर जो मैं चाहता हूँ, वह करने के लिये मुझे ढेर सारी रकम चाहिये।

पापा ः और वह तुम्हें मिल नहीं रही है। राइट ?

राहुल ः हाँ, पापा।

पापा ः कोई संस्था, कोई बैंक तुम्हारे प्रोजेक्ट को फाइनेन्स करने के लिये तैयार नहीं है।

राहुल ः हाँ, पापा। मगर आपको किसने बताईं ये बातें ?

पापा ः तुम कितने भी योग्य हो जाओ, कितने भी समझदार और चतुर बन जाओ मगर राहुल, रहोगे मेरे बेटे ही। रहोगे न ?

राहुल ः हाँ, पापा।

पापा ः और मैं क्या रहूँगा ?

राहुल ः मेरे पापा !

पापा ः पापा नह, तुम्हारा बाप !

(तीनों जोर-जोर से हँसते हैं।)

पापा ः तुम कृषि इंजीनियर हो न ?

राहुल ः हाँ, पापा।

पापा ः और एम.बी.ए. भी हो ?

राहुल ः हाँ, पापा।

पापा ः अच्छा बताओ! (इशारा करते हुए) सामने जो सीढयाँ बनी हैं, कहाँ जा रही हैं ?

राहुल ः छत पर।

पापा ः तुम छत पर पहुँचने के लिये क्या करोगे ?

राहुल ः सीढयाँ चढूँगा।

पापा ः (मित्र् से) और भी कोई तरीका हो सकता है क्या छत पर पहुँचने का ?

मित्र् ः हाँ, हो सकता है।

पापा ः क्या है वह तरीका ?

मित्र् ः लिफ्ट या एस्केलेटर हो तो उससे छत पर पहुँचा जा सकता है।

पापा ः अगर लिफ्ट या एस्केलेटर न हो तो ?

मित्र् ः सीढयाँ चढनी पडेंगी।

पापा ः राहुल एमबीए में निश्चय ही तुम्हें एक सच से परिचित नहीं कराया गया होगा।

राहुल ः कौन-से सच से ?

पापा ः परिवार के बडे अगर सक्षम हैं, उनका जमा-जमाया व्यापार या कारखाने चल रहे हैं तो तुम्हारे लिये लिफ्ट और एस्केलेटर तैयार हैं। इनके ऊपर चढो और छत पर पहुँच जाओ। मैंने ठीक कहा है न ?

राहुल ः जी, पापा !

पापा ः और अगर पृष्ठभूमि सामान्य है, व्यापार या कारखाना विरासत में नहीं मिला है तो एक-एक करके सीढयाँ चढकर ही छत पर पहुँचा जा सकता है। नहीं बताया न यह सच तुम्हें एमबीए में ?

राहुल ः नहीं पापा, नहीं बताया।

पापा ः तुम गरीब परिवार से नहीं हो, लेकिन इतनी संपत्ति के मालिक भी नहीं हो कि अमीर कहलाओ।

राहुल ः आप ठीक कहते हैं, पापा।

पापा ः छत पर जाने के लिए तुम्हें खुद सीढयों का निर्माण नहीं करना है। सीढयाँ तुम्हें बनी-बनाई मिली हैं। मगर है सिर्फ सीढयाँ।

राहुल ः जी।

पापा ः फिर, ऊपर जाने के लिए क्या करोगे ?

राहुल ः सीढयाँ चढूँगा।

पापा ः सीढयाँ तो चढोगे, लेकिन कैसे ?

राहुल ः एक-एक करके।

पापा ः बिल्कुल ठीक। सबसे पहले कौन-से पायदान पर कदम रखोगे ?

राहुल ः पहले पायदान पर।

पापा ः इसके बाद ?

राहुल ः दूसरे, तीसरे, चौथे पायदान पर।

पापा ः और इस तरह एक-एक पायदान चढते हुए छत पर पहुँच जाओगे। एक काम और हो सकता है।

राहुल ः कौन सा ?

पापा ः तुम अगर योग्य हो, ऊर्जावान हो, आत्मविश्वास है तुममें तो कभी-कभी दो पायदान एक साथ भी ऊपर चढ सकते हो।

राहुल ः जी हाँ।

पापा ः तुमने सीधा छत पर पहुँचना चाहा था राहुल! तुम्हारे पास न लिफ्ट थी और एस्केलेटर। चाँदी या सोने का चम्मच मुँह में रखकर पैदा हुए नहीं थे तुम। असफलता मिलनी लाजिमी थी।

मित्र् ः और वह मिली।

पापा ः (मुस्कराकर) तो अब क्या करोगे, राहुल ?

राहुल ः एक-एक पायदान चढकर छत पर पहुँचूँगा।

पापा ः इसके लिये क्या करना होगा ?

राहुल ः जैविक सब्जियों का पहले केवल एक बिक्री केन्द्र खोलूँगा।

पापा ः शाबास। हम जिस मकान में रहते हैं, उसकी कीमत ठीक-ठाक है। मकान पर किसी बैंक से हाइपोथीकेशन लोन या सीसी लिमिट ले सकते हो। तुम्हारे पापा हमेशा तुम्हारे साथ हैं, भूलना मत।

राहुल ः पापा.....!

पापा ः बेटा, कई बार सीढयाँ चढते समय रेलिंग का सहारा लेना पडता है।

(अँधेरा प्रकाश ड्राइंग रूम वाले भाग पर। सोफों पर आमने-सामने राहुल और महिला पत्रकार बैठे हैं। महिला पत्रकार के हाथ में नोटबुक-पैन या टेपरिकॉर्डर है। कैमरे से वह राहुल के फोटोग्राफ लेती है।)

पार्श्व से संगीतबद्ध गीत के बोल उभरते हैं।

मानो चाहे तुम मत मानो, सपनों का है भूगोल अलग राहों में फैले काँटे भी, जज्बातों को सहलाते हैं।

महिला पत्रकार ः राहुल जी, केवल छह सालों में आपने शहर के हर इलाके को बिक्री केन्द्र खोलकर जैविक सब्जियों का प्रेमी बना दिया है। आपकी सफलता का रहस्य क्या है ?

राहुल ः मैंने कुछ सपने देखे थे। मैं देश में रहकर अपनी योग्यता, शिक्षा-दीक्षा, क्षमता और संसाधनों का उपयोग देशवासियों के हित में करना चाहता था। शुरू में मैंने केवल एक बिक्री केन्द्र खोलकर जैविक सब्जियों को लोकप्रिय बनाया। एक-एक करके सीढयाँ चढता जा रहा हूँ। बिक्री केन्द्रों की संख्या बढ रही है। मेरी सफलता का मूल मंत्र् है, जेड तक पहुँचने के लिये यात्र की शुरुआत ए से करो।

महिला पत्रकार ः भविष्य में आपकी क्या योजनाएँ हैं ?

राहुल ः रासायनिक खाद का उपयोग बंद हो और जैविक खाद का इस्तेमाल बढे, इसके लिए जरूरी है कि जैविक कृषि पर बल दिया जाये। भारत के हर शहर और कस्बे में मैं जैविक सब्जी के बिक्री केन्द्र खोलना चाहता हूँ। इससे एक तरफ स्वास्थ्य के लिये पोषक सब्जियाँ लोगों को मिलेंगी और दूसरी तरफ माँग बढने से उत्पादन में वृद्धि होगी।

महिला पत्रकार ः जैविक खाद को इस्तेमाल करके सब्जियाँ उगाने का काम क्या आप खुद करते हैं ?

राहुल ः नहीं, मेरे पास एक इंच भी कृषि भूमि नहीं है। प्रोत्साहित करके मैंने किसानों को जैविक खाद का उपयोग करने के लिये तैयार किया है।

महिला पत्रकार ः उनकी सारी उपज आप खरीद लेते हैं ?

राहुल ः जी हाँ।

महिला पत्रकार ः कल कोई दूसरा प्रतियोगी बाजार में खडा हो गया तो क्या करेंगे ?

राहुल ः मुझे खुशी होगी। प्रतियोगियों के आने से जैविक सब्जियों का बाजार बडा होगा। अधिक किसान जैविक खाद का उपयोग करके सब्जियाँ उगायेंगे। अधिक उपभोक्ता जैविक सब्जियों को खरीदेंगे और खायेंगे। मेरी हार्दिक इच्छा है कि हर परिवार जैविक सब्जियों का उपयोग करे।

महिला पत्रकार ः क्यों है आपकी ऐसी इच्छा? ज्यादा मुनाफा कमाने के लिये ?

राहुल ः नहीं, धन कमाना मेरा उद्देश्य नहीं है। मेरा पुराना इतिहास इस बात का गवाह है। रासायनिक खाद के इस्तेमाल से पैदा होने वाली सब्जियाँ स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हैं। जमीन को भी रासायनिक खाद धीरे-धीरे बंजर बनाती है।

महिला पत्रकार ः आपकी सब्जियों की कीमत बाजार में बिकने वाली सब्जियों से ज्यादा होती है। आखिर हर परिवार जैविक सब्जियाँ क्यों खरीदेगा ?

राहुल ः अधिक किसान जैविक सब्जियाँ उगायेंगे तो उनकी कीमत भी घटेगी। इसलिये भी प्रतियोगियों के बाजार में आने से मुझे खुशी होगी।

महिला पत्रकार ः आप कृषि स्नातक और एमबीए हैं। पचास लाख रुपये का पैकेज और न्यूयॉर्क में नौकरी का प्रस्ताव ठुकराकर आपने जैविक सब्जियों का व्यवसाय शुरू किया। क्या कभी इस निर्णय पर पछतावा होता है ?

राहुल ः नहीं, बिल्कुल नहीं होता। उल्टे गर्व होता है कि सबके विरोध के बावजूद मैंने यह निर्णय लिया। माता-पिता का आशीर्वाद मुझे मिल रहा है। देश और देशवासियों की सेवा का सुख मुझे प्राप्त है। इन सबके सामने पैसे की औकात क्या है भला !

(पापा का प्रवेश राहुल खडा हो जाता है।)

राहुल ः आइये पापा, बैठिये। आप पत्रकार हैं और अपने अखबार के लिये बात करने आई हैं।

महिला पत्रकार ः बेटे की सफलताओं को देखकर आप कैसा महसूस करते हैं ?

पापा ः मेरी भावनाएँ एक वाक्य में व्यक्त की जा सकती है। एक जमाना था जब मैं कहता था, राहुल मेरा बेटा है। आज मैं कहता हूँ, मैं राहुल का पापा हूँ।

(कलाकार फ्रीज होते हैं। पार्श्व से संगीतबद्ध गीत के बोल उभरते हैं।)

सपने बसते जिन आँखों में, वे चैन का मतलब क्या जाने

सुख के पैमाने अलग-अलग सपनों का करतब क्या जाने।

(पर्दा गिरता है)

वासुदेव भट्ट

जन्म ः 7 जुलाई, 1943

शिक्षा ः स्नातक एवं संगीत की उपाधि

साहित्य ः श्री वासुदेव भट्ट ने अभिनय के साथ-साथ लगभग 100 नाटक एवं तमाशों का निर्देशन भी किया है। आपने अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिताओं में प्रथम आने वाले-उलझी आकृतियों, एक और युद्ध, दरिन्दे, उत्तर उर्वशी, ख्याल भारमली एवं हर बार में मुख्य भूमिकाएं की।

पता ः वीणा पाणि कला मन्दिर, गेटोर रोड, ब्रह्मपुरी, जयपुर

फो. 0141-2322382

संगीत नाट्य (तमाशा)

शिवरात्र्

वासुदेव भट्ट

(शिव पुराण की कौटिरुद्र संहिता के चालीसवें अध्याय में वर्णित प्रसंग ''अनजान में शिवरात्र्-व्रत करने से एक भील पर भगवान की अद्भुत कृपा'' का जयपुर तमाशा लोक नाट्य शैली में काव्यानुवाद)

(मंच पर लहरिये पर व्याध (भील) का नाचते हुए प्रवेश)

तान पहली-पहाडी भूपाली

व्याध ः प्यारे दर्शक चतुर सुज्ञान
आप सभी को मेरा प्रणाम
गुरुद्रूह है मेरा नाम
इस जंगल में मेरा गाँव (1) प्यारे दर्शक.....

बहुत बडा मेरा परिवार
माई बाप बच्चे घरवार
मेरा सबके ऊपर प्यार
है शिकार मेरा रूजगार (2) प्यारे दर्शक.....

रोज सवेरे जंगल आता
जानवरों पर तीर चलाता
पशुमार कर घर ले जाता
माई बाप बच्चों को खिलाता (3) प्यारे दर्शक.....

भील जाति की मैं संतान,
निपट मूर्ख हूँ मैं अज्ञान
धर्म कर्म भक्ति क्या होती
मुझे नहीं है इसका ज्ञान (4) प्यारे दर्शक.....

आज सुबह घर वाली बोली
जाओ जंगल जल्दी से,
बच्चे भूखे हैं दो दिन से
भोजन लाओ जल्दी से। (5) प्यारे दर्शक.....

सुबह से आया शाम हुई
थकित इन्द्रियाँ म्लान हुई
कोई पशु नहीं पाया मार
ढूँढ-ढूँढ कर गया में हार (6) प्यारे दर्शक.....

तान दूसरी-शंकरा

व्याध ः मिला न कोई शिकार अब तक
शाम हो गई सुबह से ढूँढ रहा हूँ थक कर
चूर हो गया-मिला न कोई शिकार.....

अंतरा (1)

मेरा धंधा शिकार करना
मार जानवर पेट ये भरना
बिना शिकार के कुटुम्ब का उपवास
हो गया - मिला न कोई शिकार -

(2)

नदी किनारे आ पहुँचा मैं
सोच रहा हूँ कोई मृग अब
जल पीने आए तो मेरा
काम हो गया - मिला न कोई शिकार

(वहीं नदी के पास एक टूटा मंदिर व वृक्ष देखता है)

तान तीसरी-भैरवी

व्याध ः अहाह...

शिव का भवन पुराना रे जिस पर वृक्ष सुहाना रे। विल्व वृक्ष की इस डाली पर तू चढ जाना रे। डाली पर ही बैठे-बैठे रात बिताना रे।। शिव का-

जल का तूंबा साथ में तेरे प्यास बुझाना रे।
आते जाते पशुओं पर तू लगा निशाना रे।। शिव का-

जों ही कोई पशु आ जाए तीर चलाना रे
भूख से व्याकुल घर वालों की भूख मिटाना रे।। शिव का-

(व्याध जाकर बिल्व वृक्ष की डाली पर बैठ जाता है, रात का प्रथम प्रहर हो जाता है। एक हिरणी नदी पर जल पीने आती है-व्याध कहता है)

तान चौथी-अहाहा

व्याध ः देखो आई रे आई रे, आई रे, हिरणी जल पीने
प्रथम पहर हो गया रात का अब ये हिरणी आई।
प्यासी चकित चौकडी भरती फिरती है इठलाई। देखो आई- मृगी देख कर हर्षित है मन पाया खूब शिकार।
धनुष चढा संधान बाण कर पल में दूँगा मार।। देखो आई-

(धनुष बाण संधान करने से हाथ की टक्कर से तूंबे में से पानी छलक जाता है साथ में बिल्व पत्र् भी झडते हैं। पानी और बिल्व पत्र् नीचे शिव जी के मस्तक पर गिरते हैं)

तान पाँचवीं-कोरस

धनुष बाण संधान किया जब हाथ का धक्का खाया।
तूम्बे का जल छलक-छलक शिव के मस्तक पर आया।
धिन धाक थेई थेई-

बिल्व वृक्ष का पान टूट शिव के मस्तक चढ आया।
प्रथम प्रहर की पूजा पूरी व्याध स्वतः कर पाया।।
धिन धाक थेई थेई-

तान छठी-भैरवी

हिरणी ः वनचर दया करो श्रीमान, तानों मत मुझ पर ये बाण।
क्यों कर मुझ पर बाण चढाया क्या चाहते हैं आप
मुझ अबला को मार के लेते क्यों अपने सिर पाप।। वनचर-

व्याध ः हिरणी सावधान हो जा, तुझे मैं मार के खाऊँगा।

आज भूख से व्याकुल है मेरे परिवार के लोग।

तुझे मार कर उन्हें खिलाऊँ लूँगा तेरा भोग।। हिरणी ः

हिरणी ः धन्य है मेरी काया को जो परहित आवे काम।

पर उपकार का फल मिलता है कोटि जन्म अविराम।। वनचर-

व्याध ः कोटि जन्म को मैं क्या जानूँ वर्तमान से काम।

तुझे मारने से पहले मैं नहीं लूँगा विश्राम।। -हिरणी

हिरणी ः लेकिन मेरे बच्चे रहते आश्रम में अनजान।

निकट बहन के छोड शीघ्र मैं आती हूँ श्रीमान।। वनचर-

व्याध ः बच्चों की बातें कर हिरणी मत फिसलावे मोय।

मेरे तीर बाण के आगे साबुत बचा कोय।। हिरणी

हिरणी ः शीघ्र आऊँगी सत्य बोलती सत्य बडा बलवान।

इसी सत्य पर टिके हुए हैं ये धरती असमान।। वनचर-

व्याध ः सत्य वत्य मैं कुछ ना जानू मेरा सत्य शिकार-

भूख लगी है जोर से हिरणी हो जा अब तैयार-

(जब व्याध विनती स्वीकार नहीं करता तो हिरणी फिर विनय करती है)

तान सातवीं-सिन्ध काफी

व्याध मानले मोरी रे वनेचर मान ले मोरी।।

सौगन्ध ऐसी, सन्मुख तेरे, खाती हूँ सुन ले रे।

वापस नाहीं, मैं लौटूँ तो, भोगूँ पाप घनेरे।। वनेचर मान ले

वेद बिचैया, सन्ध्या तजिया, पापी द्विज जैसे रे

वापिस जो ना, आऊँ व्याध, ऐसे पाप लगे रे- वनेचर मान ले

पति अपकारी, स्वेच्छा चारी, नारी श्राप लगे रे

जो मैं झूंठी, कहलाऊँ तो, लिपटे ताप घनेरे- वनेचर मान ले

व्याध ः अच्छा हिरणी। तुम अपने बच्चों को अपनी बहन को

सम्भला कर शीघ्र वापस लौट आओ। जाओ।-

(हिरणी का प्रस्थान)

तान आठवीं-कोरस

ज्यों ही हिरणी गई रात का, प्रथम प्रहर भी बीता।

जगते जगते समय व्याध का, निराहार ही रीता।।

धिन धाक थेई थेई-

तभी दूसरी मृगी नदी तट आई प्यास बुझाने।

उसे देखकर भील राज ने साधा तीर निशाने।।

धिन धाक थेई थेई-

बिल्व पत्र् जल पुनः गिरे शिव के मस्तक पर आए।

पूजा दूजे प्रहर व्याध की पूर्ण हुई अनचाहे।।

धिन धाक थेई थेई-

(दूसरी हिरणी पर व्याध तीर तान कर कहता है)

तान नवीं-बरवा पीलू

व्याध ः सावधान हो जाना, हिरणी, अभी मारी जाएगी तू
मेरे घर वाले भूखे हैं भोजन तेरा चाहूँ।
तीर चलाकर प्राण निकालूँ खाऊँ और खिलाऊँ - हिरणी

हिरणी ः तीर को थामे रखना व्याध, दयाभाव रखता तू-
घर में छोटे बच्चे मेरे स्वामी को संभलाऊँ
उनकी रक्षा साधन करके शीघ्र लौटकर आऊँ - व्याध दया...

व्याध ः नहीं भरोसा तेरा हिरणी तू फिर आए न आए
सन्मुख रखी थाली को यूँ बिरथा कौन गँवाए - हिरणी

हिरणी ः यदि लौटकर ना आऊँ तो सारे पुण्य गँवाऊँ

धर्म उल्लंघी ईश्वर निन्दा का मैं पाप कमाऊँ - व्याध दया...

व्याध ः अच्छा हिरणी। मैं तुझ पर विश्वास करके तुझे जाने की आज्ञा देता हूँ। शीघ्र लौटना-

(हिरणी का प्रस्थान)

तान दसवीं-कोरस

हिरणी के जाते ही दूजा प्रहर रात का बीता।

जगते जगते समय व्याध का निराहार फिर बीता।।

धिन धाक थेई थेई-

तीजा प्रहर शुरू होने तक मृगी को फिर ना देखा।

नजरें फेंकी नदी मार्ग पर, मोटा हिरणा देखा।।

धिन धाक थेई थेई-

हृष्ट पुष्ट मृग देख वनेचर धनुष बाण ले टूटा।

प्रभु कृपा से बिल्व पत्र् जल फिर शिव जी पर छूटा।।

धिन धाक थेई थेई-

कृपा पाई व्याध न ऐसी पाए न कोई दूजा।

पूर्ण करी व्याध ने शिव की तीन प्रहर की पूजा।

तान ग्यारवीं-हिरण का प्रवेश (पीलू)

व्याध ः हिरणा चला रहा हूँ बाण, पल में उड जाएँगे प्राण

सुनो हिरण मेरे घरवाले भूखे हैं बिन खाए।
तेरा भोजन उन्हें कराऊँ प्राण भले ही जाये।।

हिरणा चला रहा हूँ बाण.....

हिरण ः व्याध हो तेरा कल्याण, काहे चला रहा है बाण
धन्य भाग जो मेरी काया परिहित काम में आए
पर उपकार बिना ये प्राणी घोर नरक में जाए

व्याध हो तेरा कल्याण-

पर इकबार मुझे जाने दे तुरत लौटकर आऊँ। बच्चों को माता को सौंपूँ धैर्य बँधाकर आऊँ

व्याध हो तेरा कल्याण-

व्याध ः जो आए सो बात बनाकर गए नहीं फिर लौटे। झूठ बोल तुम भी जाओगे वचन तुहारे खोटे।।

हिरणा चला रहा हूँ-

हिरण ः व्याध जो मैं कुछ कहता हूँ सो सुन लो कान लगाय। झूठी वाणी बोले उसका पुण्य नष्ट हो जाए।।

व्याध हो तेरा कल्याण-

सन्ध्या मैथुन शिवरात्र् में दिन मैं व्यंजन खाऊँ।
पर धन हडपूँ मिथ्या बोलूँ शिव के गुण नहीं गाऊँ।। ब्राहमण सन्ध्या नहीं करे उसका सा पाप कमाऊँ।
सारे पाप मुझे लग जाएँ जो न लौटकर आऊँ।।

-व्याध हो तेरा कल्याण, नहीं चला रहा है बाण-

व्याध ः अच्छा भाई हिरण तुम भी जाओ। लेकिन शीघ्र लौटना।

(हिरण का प्रस्थान)

आश्रम में हिरण और उसका परिवार

(दो दृश्य एक साथ होते हैं। एक दृश्य में हिरणी हिरण व उसका परिवार विचार विमर्श की मुद्रा में तथा दूसरे दृश्य में कोरस)

तान बारह-कोरस

मृग और मृगी मिले आश्रम में, आपस में ये विचारा।

वचन दिया है व्याध को तो फिर मरना काम हमारा।।

धिन धाक थेई थेई-

वचन दिया निश्चित मानेंगे, सबने निश्चय किया।
बच्चों को आश्वासन देकर, व्याध तरफ मुख किया।

धिन धाक थेई थेई-

कौन बलि देगा इस बाबत मच गई सब में दौड।
मृगी और मृग में लग गई थी, बलिदानों की होड।।

धिन धाक थेई थेई-

जेही मृगी प्रथम यूँ बोली है बालक नादान।
रुक जाए श्रीमान आप और, इनका रखें ध्यान।।

धिन धाक थेई थेई-

पहले मैंने करी प्रतिज्ञा मैं दूँगी बलिदान।
रहे आप दोनों आश्रम में, कृपा करें श्रीमान।।

धिन धाक थेई थेई-

छोटी मृगी तभी बोली मैं, बहन आपकी दासी।
व्याध वचन पूरा करने को, मैं उद्यत अभिलाषी।।

धिन धाक थेई थेई-

मृग बोला बच्चों की, रक्षा करना माँ का काम।
मैं ही पहले बलि चढूँगा जग में होगा नाम।।
धिन धाक थेई थेई-

धर्म दुहाई देकर हिरणी, बोली ये क्या कहते।
है धिक्कार हमें तुम बलि दो, दो पत्नियों के रहते।।

धिन धाक थेई थेई-

वचन निभाने की थी आखिर सबके मन में चाह।
सभी चले उस व्याध निकट जो देख रहा था राह।।

धिन धाक थेई थेई-

(मृगी मृग और बच्चे व्याध के पास पहुँच जाते हैं)

तान तेरहवीं

व्याध- देखो आई रे आई रे आई रे हिरणी फंदे में
हिरणी आई, हिरण भी आया, बच्चों को भी साथ में लाया एक बाण ऐसा मारूँ, हो जाए अभी सफाया-

देखो आई रे...

तान चौदहवीं-लावणी

कोरस- जब सन्धान किया व्याध ने, धनुष बाण पर हाथ धरे।
फिर जल छलका तूम्बे से और बिल्व वृक्ष से पत्र् झरे।। व्याध के पिछले पाप शंभु ने तुरत वहीं पर चूर्ण करे।
पूजा चौथे पहर व्याध की महादेव सम्पूर्ण करे।।
ज्यों ही पूजा पूर्ण हुई, उस व्याध में, परिवर्तन आया।

शुद्ध हो गई, आत्मा उसकी और हुई निर्मल काया।
हत्या, लूट, डकैती, चोरी, क्रूर कर्म सब बिसराया।
प्रेम, दया, करुणा, भक्ति का भाव हृदय में भर आया।।

(हिरणी हिरण व्याध के समक्ष प्रस्तुत होते हैं)

तान पन्द्रहवीं-राग आसावरी जौनपुरी या केदार

हिरण-हिरणी ः जी हम प्रस्तुत हैं श्रीमान।
हर लें शीघ्र हमारे प्राण।।
सत्य वचन पालन करने का नाथ हमारा ध्येय।
व्याध शिरोमणि प्राण हरण कर करो सार्थक देह।।

जी हम प्रस्तुत हैं श्रीमान.....

तान सोलहवीं-राग आसावरी जौनपुरी

(व्याध के हृदय परिवर्तन के बाद)

व्याध ः जीते जी घर जाओ रे मृग।

अब निर्भय हो जाओ रे मृग।

अब घर जाओ निर्भय होके।

ज्ञानहीन पशु होने पर भी जीते हो उपकारी होके।

मैंने तो मानव तन पाया, फिर भी रहा निरर्थक होके।।

अब घर जाओ.....

अपने तन को पाला मैंने, पर के तन को पीडा दे के।

निज कुटुम्ब का पालन किया, हत्या और डकैती करके।।

अब घर जाओ.....

पाप ही पाप किये हैं मैंने, मेरी गति क्या रहेगी होके।

है धिक्कार मेरे जीवन को, धन्य-धन्य मृग तुम पशु होके।।

अब घर जाओ.....

(व्याध हिरण-हिरणी के सामने नत मस्तक हो जाता है इतने में भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं, और आशीर्वाद देते हैं)

तान सत्रहवीं-कालिगंडा

शंकर ः क्या वर माँगता रे, तुझ पर रीझ गया शम्भू।

जीवन मुक्त हुआ तू व्याध करो दिव्य उपभोग

वंश बढे तेरा तू पाए प्रभु राम संजोग

क्या वर.....

आत्मा तेरी शुद्ध हो गई गुह्य नाम निष्काम

जब तक ये संसार रहेगा, अमर रहेगा नाम

क्या वर.....

(संगीत के साथ नाट्रक समाप्त होता है।)

डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'

जन्म ः 8 अप्रैल, 1929

शिक्षा ः एम.ए., एल.एल.बी., पीएच.डी., साहित्य रत्न और सिद्धांत भास्कर

साहित्य ः 16 काव्य संग्रह, 4 कथा संग्रह, 4 नाटक संग्रह, 2 एकांकी संग्रह, 2 उपन्यास, 11 शोध समीक्षा ग्रंथ प्रकाशित

पुरस्कार ः मीरा पुरस्कार, विशिष्ट साहित्यकार सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान विद्या वाचस्पति, विश्व हिन्दी सम्मान

पता ः 228-बी, विजय भवन, सिविल लाइन्स, कोटा-324001

दूरभाष ः 0744-232467

कुम्भलगढ विजय

(ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित नाटक)

डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'

दृश्य एक

(कुंभलगढ दुर्ग से उतरते, सूबेदार शाहबाज तथा सेनापति इब्राहीम वार्तालाप करते हुए आते हैं।)

शाहबाज ः सेनापति इब्राहीम किस मुँह से अब मैं सीकरी लौट सकता हूँ। (हाथ मलते हुए) पत्थरों के सिवा हमें यहाँ कुछ न मिला। कुंभलगढ फतह कर भी हम हार गये। (रुककर) राणा चुपचाप निकल भागा, कायर कहीं का।

इब्राहीम ः हमें गुप्त मार्ग का पता लगाना चाहिए। देवडा और वह मालिन अवश्य जानते होंगे।

शाहबाज ः साँप तो निकल गया। घीसट पीटने से अब क्या लाभ है। (रुककर) मैंने जीवित या मृत, किसी भी अवस्था में शहंशाह के सामने उसे पेश करने का वचन दिया था। (बाईं हथेली पर दाई मुट्ठी ठोकते हुए) ओफ।

इब्राहीम ः महाराणा न जाने किस मिट्टी का बना है। इतनी बडी सल्तनत से अकेला लड रहा है। (रुककर) उसके छापामार युद्ध को समझना बडा कठिन है। सारे रजवाडे झुक गये पर.....।

शाहबाज ः उसे अपनी रजपूती पर बडा अभिमान है। वह समझता है, मेवाड स्वतंत्र् है, तो देश स्वतंत्र् है। एक बार हाथ तो लग जाये...। मेरा भी नाम सूबेदार शाहबाज नहीं।

इब्राहीम ः इतना ही मर्द था, तो आता न मैदाने जंग में। मरने के लिए उस बेचारे सोनगरा भाण को भेज दिया।

इब्राहीम ः सूबेदार, तुमने अपनी आँखों से देखा है। दोनों हाथों में तलवारें ले, घोडे के पीठ पर बैठा सोनगरा भाण कैसा लड रहा था। पीछे से आकर बाण न लगा होता तो।

शाहबाज ः तुम जैसे डरपोक सेनापति के कारण ही तो सेना उलटे मुँह लौट पडी थी इब्राहीम। शिविर से निकल मैंने नहीं ललकारा होता तो....। राणा यदि खुद लडने आता तब देखते तुम मेरा युद्ध। छठी का दूध याद नहीं दिला देता तो मेरा भी नाम शाहबाज नहीं।

इब्राहीम ः सूबेदार, वह भी शूरवीर है। हल्दीघाटी में हाथी पर घोडे को चढा भाले से मान सिंह पर वार करने वाला वह क्या मामूली योद्धा होगा ?

शाहबाज ः इब्राहीम, बकवास बंद करो। शत्रु की तारीफ करते तुम्हारी जीभ नहीं जल रही। जानता हूँ तुम्हें शहंशाह अकबर ने मेरी चौकसी करने भेजा है। महाराणा से लडने नहीं।

इब्राहीम ः गुस्ताखी मुआफ हो सूबेदार सा.।

शाहबाज ः मैं ऐसी कायराना बातें सुनने का आदी नहीं हूँ सेनापति इब्राहीम। जाओ सेना को कह दो। इलाके का चप्पा-चप्पा छान डाले। मैं उसे बंदी बनाये बिना यहाँ से नहीं लौटूँगा। जाओ.... मुँह क्या देख रहे हो। (कहते हुए शाहबाज का शिविर की ओर प्रस्थान)

दृश्य-दो

(घनघोर जंगल बीच फूँस के झोपडे में महाराणा प्रताप तथा उनके श्वसुर ईडर नरेश नारायण दास बैठे वार्तालाप कर रहे हैं।)

नारायणदास ः महाराणा सा. यह ऐसा दुर्गम स्थान है। जहाँ शाहबाज क्या, उसका बाप भी नहीं पहुँच सकता।

महाराणा ः ईडर नरेश आपको मेरी खातिर कितना कष्ट उठाना पड रहा है ?

नारायणदास ः जवाई राज यह क्या फरमा रहे हैं आप। आप हिन्दुवां सूरज हैं। स्वतंत्रता की मशाल जलाये हैं। बाकी क्षत्रियों ने तो अपनी मूँछें नीची कर ली हैं।

महाराणा ः हममें से किसी एक को तो यह दायित्व संभालना ही था। भगवान एकलिंग ने यह दायित्व मुझे दिया है।

नारायणदास ः इसीलिए देश की आँखें आप पर टिकी हैं। आपकी सुरक्षा देश की स्वतंत्रता की सुरक्षा है। आपका जीवन मूल्यवान है।

महाराणा ः हमें हमारी फूट ही खा रही है। वरना इन मुगलों की क्या औकात थी जो देश को गुलाम बना लेते आज भी ये रजवाडे यदि मेरे पीछे खडे हो जायें, तो इन मुगलों को खैबर पार कराते मुझे देर नहीं लगेगी।

नारायणदास ः एक होना ही तो कठिन है महाराणा सा.। हम अपनी-अपनी रियासतों को ही देश समझे बैठे हैं। राष्ट्र भाव किसी में नहीं दिखता।

महाराणा ः ईडर नरेश, यदि रजवाडे भी मुगलों का सहयोग करना बंद कर दें तो मैं अकेला ही मुगलों के लिए काफी हूँ। वह तो हमीं को हमीं से लडा कर मजे लूट रहा है।

नारायणदास ः हल्दीघाटी में आपकी वीरता सब देख चुके हैं। आप पर देश को गर्व है। (रुककर) इन रजवाडों की थोथी मनसबदारियों का मोह टूट तब तो-। बहिन बेटियाँ तक इन्हें विधर्मियों को देते लज्जा नहीं आती।

महाराणा ः उदयपुर के अपमान के बाद भी आमेर की आँखें नहीं खुलीं। वे तो उलटे मुगलों के और निकट चले गये....।

नारायणदास ः आप दूर दृष्टि सम्पन्न हैं महाराणा सा.। जिन्हें बहिन बेटियाँ देते दुःख नहीं उनके लिए देश जाये भाड में।

भील युवा ः (ग्रामीण भील वेश में प्रवेश) - क्षमा हो महाराज। सूबेदार शाहबाज ने सेना को इलाके का चप्पा-चप्पा छान डालने का हुक्म दिया है। उसके सैनिक पहाडों, दर्रों तथा जंगलों में घूम रहे हैं।

नारायणदास ः मैं ईडर से कुछ और सैनिक आपकी सेवा में भेज देता हूँ।

महाराणा ः आपका यही सहयोग बहुत है। फिर ये भील युवा हैं न ? पल-पल की खबर ला देते हैं। कुम्भलगढ ने शाहबाज को पगला दिया है। सोनगरा भाण ने अपने बलिदान से स्वतंत्रता के इतिहास में एक नया पृष्ठ जोडा है। मुझे उसके चले जाने का बहुत दुःख है।

नारायणदास ः काश, यही भाव राजस्थान के रजवाडों में भी जगे, आप अपनी सुरक्षा रखें।

महाराणा ः जिसे आप जैसा सहयोगी मिला है, उसका कोई कैसे बाल बाँका कर सकता है?

नारायणदास ः यह तो आप मुझे अनावश्यक महत्त्व दे रहे हैं, महाराणा सा.। यह तो मेरा आत्मीय कर्त्तव्य है। आज्ञा हो तो मैं चलूँ। जय एकलिंग।

महाराणा ः (खडे होकर) आप चिंता न करें। भगवान एकलिंग रक्षा करने वाले हैं।

(प्रस्थान)

दृश्य - तीन

वन में महाराणा का आवास, परिवार यहीं रहता है। अपराह्न का समय। महाराणा की छोटी पोती रोटी खा रही है। रोटी उसके हाथ में है। रोटी खाते-खाते वह बाहर आ जाती है। तभी वन बिलाव आता है और पोती के हाथ की रोटी लेकर भाग जाता है। पोती रोने लगती है। रोने की आवाज सुन महारानी बाहर आती है।

महारानी ः क्या हुआ ? क्यों रो रही है। (पोती रोती रहती है।) कहाँ गई तेरी रोटी ?

पोती ः (रोते हुए अटक-अटक हिचकिया लेते हुए) वो वन बिलाव ले गया। (कहकर फिर रोने लगती है।)

महारानी ः(महारानी गोदी में उठाते हुए) रो मत। तुझे काटा तो नहीं ? (पोती बोलती नहीं) ला तेरा हाथ बता। (यह कहते हुए महारानी उसका हाथ खींच देखते हुए) चल, कुछ नहीं हुआ। अच्छी बच्ची, रोते नहीं। (कन्धे से चिपका हिलाते हुए) चुप होजा, रोते नहीं।

सेविका ः लाइये मुझे दीजिए। (महारानी से पोती को लेते हुए तथा कन्धे से चिपका हिलाते हुए) भँवर बाई सा., आप तो समझदार हैं न ? ऐसे रोते हैं क्या ?

पोती ः (रोते हुए) मैं तो रोटी लूँगी। (फिर रोने लगती है)

सेविका ः भँवर बाई सा., अब रोटी कहाँ। सीताफल खा ले।

महारानी ः हाँ हाँ, ठीक है। ला इसे मुझे दे। तू भीतर से सीताफल ले आ।

पोती ः सीताफल नहीं। मैं रोटी खाऊँगी रोटी खाऊँगी। (रोने लगती है) (सेविका सीताफल लेकर आती है)

महारानी ः ऐ देख, वह सीताफल ले आई। (पोती को नीचे उतारती है।)

पोती ः नहीं, मैं सीताफल नहीं खाऊँगी। (फिर रोते रोते भूमि पर लेट जाती है। मचलने लगती है। रोटी खाऊँगी, रोटी खाऊँगी।)

(सेविका पोती को उठाने की चेष्टा करती है। पोती उठती नहीं है। और जोर-जोर से हाथ पैर पटक कर रोने लगती है। उसके रोने की आवाज सुनकर महाराणा अपने फूस के झोंपडे से निकल उधर आते हैं। सेविका महाराणा को आता देख पोती को जबरदस्ती उठा लेती है।)

महाराणा ः महारानी साहिबा, क्या बात है। भँवर बाई सा क्यों रो रही है ?

महारानी ः हाथ की रोटी वन बिलाव छीन कर ले गया।

महाराणा ः बस इतनी सी बात है। (सेविका से, ला मुझे दे) (भँवर बाई सा. को लेते हुए) तुम तो अच्छी बच्ची हो न। अच्छे बच्चे नहीं रोया करते। (महारानी सीताफल आगे बढाती है। महाराणा सीताफल लेकर। हाँ हाँ, लो सीताफल खाओ। बडा मीठा है।)

पोती ः नहीं, मैं तो रोटी खाऊँगी। (सीताफल फेंक देती है)

महाराणा ः (महारानी से) रोटी दे दो न इसे।

महारानी ः रोटी होती तो बात ही क्या थी। हमीं नहीं दे देते।

महाराणा ः (सेविका से) इसके लिए रोटी बना दो न। (पोती से) अच्छा चुप हो जाओ। अभी तुम्हारे लिए रोटी बनकर आती है। (सेविका महारानी की ओर देख चुप रहती है। जाती नहीं है।) क्या बात है?

महारानी ः आटा सुबह से ही बीता हुआ है। मँगवाया है। लाता होगा। (बच्ची फिर रोने लगती है।) लाओ इसे मुझे दो। (महाराणा से बच्ची लेते हुए) हमारे कष्टों का भगवान न जाने कब अन्त करेगा।

महाराणा ः महारानी साहिबा, स्वतंत्रता तश्तरी में रखा आहार नहीं है।

महारानी ः यह तो सही है। पर क्या स्वतंत्रता का ठेका हमीं ने ले रखा है। और भी तो रजवाडे हैं।

महाराणा ः सिंहासन काँटों का ताज है। स्वतंत्र् होकर बैठना और बात है और पराधीन होकर बैठना और बात। मेवाड कभी पराधीन होकर नहीं जिया है।

महारानी ः और रजवाडे कैसे मजे लूट रहे हैं ?

महाराणा ः आपको आज क्या हो गया है ? वीरता पूर्ण बातें करने वाली, हमें स्वतंत्र् होकर जीने का पाठ पढाने वाली महारानी जी के मन में यह कायरता कहाँ से आ गई ? क्या औरों की तरह मैं भी विधर्मियों को बहिन-बेटियाँ देकर संधि कर लूँ। देश को पराधीन हो जाने दूँ ?

महाराणा ः आप अकेले के स्वतंत्र् रहने से क्या देश स्वतंत्र् रह लेगा ? हम बीहडों में दर-दर भटक कहाँ तक यह कष्टपूर्ण जीवन जीते रहेंगे। (पोती को हिलाते हुए) चुप हो जा। (आँखों में आँसू आ जाते हैं।) आँसू पोंछते हुए। भगवान एकलिंग न जाने कब तक हमारी परीक्षा लेते रहेंगे। (पोती फिर रोती है)।

पोती ः रोटी लूँगी। रोटी लूँगी। (मचलने लगती है)

महाराणा ः (क्रोध में भर) आपकी यही इच्छा है तो मैं आज ही संधि का पत्र् लिख भेजता हूँ। (लौटते हैं) (महारानी एक टक फटी-फटी आँखों से महाराणा का जाना देख चिंताग्रस्त हो जाती है। आँसू आ जाते हैं।)

महारानी ः (पोती को हिलाते हुए सेविका से कहती है।) ले इसे भीतर उपरानी जी के पास ले जा। (पोती को देकर गालों पर हथेली से हल्की थपकी देते हुए) आप अच्छी लडकी हैं न। अच्छी लडकियाँ इस तरह रोती नहीं। जागो। (सेविका से) जा ले जा। (सेविका का प्रस्थान)

स्वगत ः महाराणा सा. बाहर से जितने कठोर हैं, हृदय से उतने ही कोमल हैं। चलूँ। कहीं सचमुच ही संधि का पत्र् न लिख बैठें। (चलते हुए) जरा सी बात पर अभी तक स्वतंत्रता के लिए की हुई सारी कठोर तपस्या कहीं भंग न हो जाये। चलूँ रोकूँ। (प्रस्थान)

दृश्य-चार

(महारानी राणा जी के आवास के फूस के झोंपडे के द्वार पर चुपचाप आकर बाहर ही रुक भीतर झाँकती है। देखती है राणा सचमुच में संधि पत्र् लिख रहे हैं। दौडकर तेजी से भीतर पहुँच राणा के हाथ की लेखनी थाम लेती है।)

महारानी ः(आँखों से आँसू लुढक संधि पत्र् पर गिरते हैं) जरा सी बात ने तोड दिया। (संधि पत्र् को उठा फेंकते हुए) यह कैसी कायरता जगा ली। जो शरीर हल्दीघाटी में लडते नहीं थरथराया, वह बच्ची के विलाप पर टूट गया। आप अपने प्रण तक को भूल गये। रजवाडों बीच गौरव के साथ ऊँचा उठा यह सिर क्या झुक जायेगा? आफ जिस त्याग और बलिदान को प्रजा श्रद्धा के साथ पूज रही है, कल क्या वह इसी तरह पूजा जायेगा। आप पर सारे देश की आँखें टिकी हैं। इतिहास आपकी ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है, वे आँखें पथरा जायेंगी। आप पुनर्विचार करें। इस समय देश और धर्म दोनों संकट में हैं। विधर्मी हमारी पवित्र् सनातन संस्कृति को रौंद रहे हैं। मोह छोड कर्त्तव्य विचारें।

महाराणा ः क्षमा करें महारानी जी ! मैं मोहवश अपना कर्त्तव्य भूल गया था। आपने पधारकर मेरी मोह मुँदी आँखें खोल दी हैं। बच्ची की भूख ने मुझे विचलित कर दिया था। आपने मेरे मन पर पडा मोह का पर्दा हटा दिया है। आपने मुझ डूबते को ज्ञान का हाथ बढा बचा लिया। मैं आपकी सौगंध खाकर कहता हूँ, आगे जीवन में कभी संधि की बात नहीं होगी। लो आफ सामने ही यह लेखनी फेंकता हूँ। कल से सिर पर शस्त्रें का छत्र् होगा और अश्व पीठ ही मेरी शय्या होगी। (खडे होकर भाला उठाते हुए) यह मेरा भाला इस संधिपत्र् को उडा देगा। (क्रोध से भाले को उठा भूमि पर पडे संधि पत्र् की छाती पर पटक उसे तीर कर देते हैं।)

महारानी ः आप धन्य हैं। आप भारत के स्वतंत्रता के सूर्य हैं। प्रजा की आशा भरी आँखें आप पर टिकी हैं।

महाराणा ः आप थोडा इधर आओ। लाओ आपकी आँखों के ये आँसू पोंछ दूँ। (राणा स्वयं आगे बढकर रूमाल से महारानी के आँसू पोंछते हैं।) किसी ने सही कहा है, पत्नी पत्नी ही नहीं होती, वह पुरुष की मार्गदर्शिका भी होती है, उसकी चेतना होती है, उसका संबल होती है।

महारानी ः पत्नी पति से पृथक होती ही कब है महाराणा सा.। पाणिग्रहण केवल सप्तपदी तक ही सीमित नहीं होता, वह तो जीवन भर के सहयोग का प्रतीक है।

(तभी बाहर से ताली की ध्वनि आती है। शायद कोई आया है। मैं चलती हूँ।) (महारानी का प्रस्थान) (सेवक का प्रवेश)

सेवक ः पानरवा के भील राजा सा. पधारे हैं। मिलना चाहते हैं।

महाराणा ः उन्हें भिजवा दो। (सेवक का प्रस्थान। महाराणा शिष्टाचारवश खडे हो द्वार तक आते हैं। भील राजा का प्रवेश।)

भीलराजा ः (झुककर अभिवादन करते हुए) जय एकलिंग भगवान की।

महाराणा ः आओ, बैठो। (महाराणा भी अपने आसन पर बैठते हैं। भील राजा सामने के आसन पर बैठते हैं।) भील राजा हल्दीघाटी से ही आपका मुझे पूरा सहयोग मिल रहा है। सुना है सूबेदार शाहबाज स्वयं घूम-घूमकर मुझे खोज रहा है।

भीलराजा ः अकबर ने इस बार हिन्दू सिपाहियों पर विश्वास नहीं कर, उसके साथ मुस्लिम सैनिकों की ही एक बडी फौज भेजी है।

महाराणा ः मान सिंह को हटाने के पीछे भी यही भाव था। जबकि वह पूरी निष्ठा से अपना फर्ज निभा रहा था। मेरे किये अपमान ने भी उसे मुगलों से अलग नहीं किया था।

भीलराजा ः सुना है शाहबाज को अपनी वीरता पर बडा घमण्ड है। वह पूरी ताकत से आफ पीछे लगा है।

महाराणा ः मुझे मेवाड में तुम्हीं लोगों पर भरोसा है। प्रजा की इच्छा से ही मैंने कुंभलगढ छोडा। चूलिया को सुरक्षित नहीं समझ, इस एकान्त बीहड में आकर रह रहा हूँ। लेकिन मेरा मन कह रहा है मुझे यह एकान्त छोड मैदान में कूद पडना चाहिए।

भीलराजा ः युद्ध तो अवश्यंभावी है। वह तो होना ही है। लेकिन पहले परिवार को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचाना परम आवश्यक है। मुझे आज ही बताया कि बच्ची के हाथ से वन बिलाव रोटी ले गया। उससे दुःखी होकर आपने...।

महाराणा ः वह पडा लीर-लीर हुआ संधि पत्र्। मैंने प्रण लिया है कि अब अश्व ही मेरी शय्या होगा। युद्ध ही मेरा धर्म-कर्म।

भीलराजा ः प्रजा में यह बात उड गई है। दीवारों के भी कान होते हैं। इसीलिए भागा भागा आया हूँ। अब मुझे प्रसन्नता है। यह स्थान अब सुरक्षित नहीं रहा है। तत्काल यह स्थान बदल लेना है।

महाराणा ः क्या जावर के जंगल ठीक रहेंगे। पानरवा के पास भी है। वहाँ परिवार की सुरक्षा हो सकेगी। निश्चित होकर हम भविष्य की योजना भी बना सकेंगे।

भीलराजा ः आपका सुझाव उचित है। मैं वहाँ सारी व्यवस्था करवा देता हूँ। कल ही आपको वहाँ पहुँच जाना है। सारे भील युवा कल रात को ही पूरे परिवार को वहाँ पहुँचा देंगे। आज्ञा हो तो मैं चलूँ।

दृश्य-पाँच

फतहपुर सीकरी में अकबर का दीवानखाना। अकबर अपने कुछ सभासदों के साथ बैठा है। जिनमें अब्दुल रहीम खानखाना तथा कवि पृथ्वीराज राठौर बैठे दिख रहे हैं।

अब्दुल रहीम ः बादशाह सलामत, हमें चित्तौड से ध्यान हटाकर उत्तरी-पश्चिमी सीमांत खानखाना की ओर ध्यान देना चाहिए। वहाँ बगावत बढ रही है। हर रोज नई-नई खबर आ रही है।

अकबर ः खानखाना, अगर हम मेवाड अधीन कर लेते तो हम निश्चिंत होकर उत्तरी सीमांत की ओर बढ सकते थे। लगता है तुम महाराणा का अहसान नहीं भूले हो।

खानखाना ः ऐसा नहीं है जहाँपनाह। वह आदमी के वेश में फरिश्ता है।

अकबर ः तुमने उसकी तारीफ में जो कसीदे गढे हैं, वे मैं सुन चुका हूँ।

खानखाना ः जहाँपनाह वे बेजा नहीं हैं। वह शख्स इसी तारीफ के काबिल है। वह झुकेगा नहीं। चाहे मिट जाये। वह आजादी का दीवाना है। आजादी की शमा पर मर मिटने वाला परवाना है।

अकबर ः कविराज, आपका क्या ख्याल है ?

पृथ्वीराज ः मेरा भी यही सोचना है। हमें वहाँ से ध्यान हटा सीमांत की ओर देखना चाहिये।

(बाहर से द्वारपाल का प्रवेश।)

द्वारपाल ः आलमपनाह अजमेर के सूबेदार सा. का कोई आदमी उनका खत लेकर आया है।

अकबर ः भेज दो उसे।

(आदाब के साथ हलकारे का प्रवेश)

हलकारा ः हुजूर सूबेदार सा. ने खिदमत में यह खत भिजवाया है। (दोनों हाथों की हथेली राव के आगे करता है।)

खानखाना ः ला मुझे दे। (पत्र् खानखाना की ओर बढाता है। खानखाना पत्र् खोलते हैं।)

अकबर ः पढये क्या लिखा है।

खानखाना ः (पत्र् खोलकर पढते हुए) सुना है, मेवाड के राणा प्रताप ने कुंभलगढ से निकल भागने के बाद हमारे द्वारा उनका पीछा करने से परेशान होकर उसने आपकी खिदमत में संधि का प्रस्ताव भिजवाया है। सुना है जंगल में उनकी पोती के हाथ से बन बिलाव रोटी ले गया। उसने उसे पिघला दिया। पूरे इलाके में यह बात चर्चा का विषय बनी है।

अकबर ः अब कहिये कविराज, क्या कहना है।

पृथ्वीराज ः यह तो शाहबाज की सुनी-सुनाई बात है। गलत भी हो सकती है। मैं इसकी सच्चाई का पता लगवाता हूँ।

अकबर ः अब आप कहें खानखाना। आप बडी तारीफ कर रहे थे उस शूरमा की।

खानखाना ः मुझे भी शक है। उस शख्स ने ऐसा किया होगा। राठौड सा. आप जल्दी ही इसकी सच्चाई का पता लगायें।

अकबर ः आप पता लगाते रहें। अब हम पश्चिमी सीमांत के लिए शांति से निकल सकेंगे।

दृश्य-छह

पृथ्वीराज राठौड का सीकरी में आवास। राठौड पलंग की कुर्सी के सहारे बैठे चिंताग्रस्त हैं। भौंहों में बल तथा ललाट पर सलवटें उभरी हैं।

(स्वगत) यह सत्य नहीं हो सकता कि महाराणा संधि पत्र् लिख भेजें। संधि पत्र् लिखा भी तो रानियों का मन रखने के लिए लिख लिया होगा। लोगों ने उसी को आधार बना बात का बतंगड बना दिया होगा। शाहबाज को उडती सी खबर मिली होगी। उसने बादशाह की प्रशंसा मिले, इस भाव से पत्र् लिखकर भिजवा दिया। जो रजवाडों को जगाता रहा हो, वह स्वयं सो जाये, मैं नहीं मानता।

(वे दरवाजे की ओर करवट ले लेते हैं। देखा रानी जी आ रही हैं।)

रानी ः अकेले क्या पहेलियाँ बुझाई जा रही हैं। अकेले अपने आप से ही बातें कर रहे हैं। स्वस्थ तो हैं न ?

राठौड ः अच्छा हुआ आप आ गईं। मेरा सिर भन्ना रहा है। मन मानने को तैयार ही नहीं है।

रानी ः तो ऐसा क्या हो गया ?

राठौड ः गजब हो गया, जहाँपनाह के पास सूबेदार शाहबाज का पत्र् आया है, जिसमें उसने महाराणा द्वारा संधि पत्र् लिख भेजने की बात लिखी है। यदि ऐसा हो गया तो समझो राजस्थान का स्वतंत्रता सूर्य ही डूब गया। देश पूरी तरह पराधीन हो गया।

रानी ः संधि पत्र् तो नहीं है न ? खबरें उडती रहती हैं। अफवाहें अफवाहें होती हैं। बिना प्रमाण के उन्हें मान लेना सही नहीं है। आप क्यों नहीं महाराणा सा. को ही किसी के हाथ पत्र् भिजवाकर सत्यता का पता लगा लेते हैं। बात समाप्त।

राठौड ः आप ठीक कह रही हैं। मैं भी यही सोच रहा था। कवि हूँ न। काव्य की पंक्तियाँ बन रही थीं।

रानी ः तो ठीक। आप काव्य में पत्र् लिखें। मैं आती हूँ। (रानी का प्रस्थान)

राठौड ः (पलंग से उतर राठौड पृथ्वीराज गद्दी पर बैठ कागजों पर कुछ लिखने लगते हैं। साथ ही गुनगुनाते भी जा रहे हैं।)

पातल जो पतसाह बोले मुख हुंतां बयण।
मिहिर पछम दिसमांह उग कासपराव उत।
पटकूँ मूँछा पाण, के पटकूँ नि तन करद,
दीजै लिख दीवान, इण दो महती बात इक।

(लिखने के बाद एक बार फिर कागज सामने कर पढते हैं। पढते समय आवाज के साथ उसे दुहराते हैं। रानी तीव्र गति से आकर राठौड से सटकर बैठ जाती है।)

रानी ः हाँ, क्या, लिख लिया ? बडी जल्दी कविता बन गई।

राठौड ः आप आई थ न पहले, तब पलंग पर लेटे-लेटे ही ये चारों पंक्तियाँ बन गई थीं, अभी तो लिखी भर है।

रानी ः मुक्तावस्था में कविता निर्झर की तरह बहती है। कागज कलम में बँधकर तो चिंतन भी बँध जाता है।

राठौड ः अरे आप तो काव्य की रचना प्रक्रिया से भी परिचित हैं।

रानी ः परिचित कैसे नहीं हूँगी। आखिर मैं पत्नी किसकी हूँ। रोजाना देखती नहीं क्या ?

राठौड ः ठीक है ?

रानी ः इसमें पूछने की क्या बात है। राज कवि ही ठीक नहीं लिखते तो और कौन लिखेगा ? संकेत से सारी बात कह दी। प्रतीकों में कही कविता ही कविता होती है ?

राठौड ः अरे तुम तो रचना प्रक्रिया की भी व्याख्या करने लग गई ? महिलाओं की सौंदर्य दृष्टि की तो देवता भी प्रशंसा करते नहीं अघाते।

रानी ः सौंदर्य दृष्टि की या सौंदर्य की। (राठौड यह सुनकर मुस्कुराहट के साथ रानी को मदभरी दृष्टि से देखते हैं) लाओ, इसे मैं रेशमी वस्त्र् में लपेट तैयार कर देती हूँ।

(रानी डेस्क में से रेशमी वस्त्र् निकाल पत्र् को बाँधती है।) लीजिए।

राठौड ः (लेते हुए) आज रात्र् को ही सांडनी सवार रवाना करा देता हूँ। समाचार आ जाये तो चैन की नींद सो सकूँ।

रानी ः अब आप जाने चलूँ। किरण प्रतीक्षा कर रही होगी। (प्रस्थान)

दृश्य-सात

(जावर से महाराणा चूलिया वापस आ गये हैं। ईडर नरेश कुशल समाचार लेने आये हैं। भीतर बैठ दोनों वार्तालाप कर रहे हैं।)

महाराणा ः पानरवा के भीलराजा ने जावर में परिवार के रहने की क्या व्यवस्था की, मैं परिवार की ओर से निश्चिंत होकर आबूमंडल के रजवाडों को अपने साथ जोडने निकल गया। लोयणा के ठाकुर देवलराय धवल का आमंत्र्ण बार-बार आ रहा था।

नारायणदास ः सफलता मिली ?

महाराणा ः सफलता ही नहीं, पारिवारिक रिश्तों में लोयणा ही नहीं, सिरोही को भी मैंने बडी पोती का संबंध कर बाँध लिया है।

नारायणदास ः जवाईंराज आपने दूरदृष्टि से काम लिया है। बिना संगठित शक्ति के लडना शक्ति खोना है।

महाराणा ः देवलराय को जहाँ राणा की उपाधि से विभूषित किया, वहीं बाग-बावडी बनवा प्रजा का विश्वास भी जीता है।

नारायणदास ः आपने यह अच्छा किया।

महाराणा ः सीकरी ने शाहबाज से अप्रसन्न होकर उसे वापस बुला बंगाल भेज दिया है। उसके बाद रूस्तम आया। उसे तो शेरपुरा के वीरों ने ही वहीं मार गिराया। इसके बाद अब्दुल रहीम खानखाना को भेजा। राजकुमार अमर सिंह ने उसे शेरपुरा में ही घेर लिया। उसकी बेगमों को पकड लाया। मैंने ससम्मान उन्हें वापस शेरपुरा क्या लौटाया, खानखाना ने तो मेरी प्रशंसा के पुल ही बाँध दिये। ऐसी स्थिति में जावर में रहने का कोई औचित्य नहीं था। वापस चूलिया सबको ले आया हूँ। यहीं से युद्ध संचालन का निश्चय किया है।

नारायणदास ः मेरे योग्य और कोई सेवा हो वह बतायें।

महाराणा ः आफ सहयोग से ही तो अब तक सुरक्षित हैं। जगन्नाथ कछवाहा को सूबेदार बनाकर भेजा है। वह भी खोज खाज कर थक गया है। दो साल तक वह बहुत पीछे पडा। पर भील राजा का धन्यवाद। उसके युवा पल-पल की सूचना देते रहे थे।

नारायणदास ः युद्धारंभ से पहले सभी को पूरी तरह विश्वास में ही न लें, अपने साथ सक्रियता से रणभूमि में भी जोडे रखें। अच्छा में चलूँ। (राणा के चरणों में झुक प्रणाम करते हैं) (प्रस्थान)

महाराणा ः (स्वगत) अपना होता है वही इतनी चिंता करता है। कितना सहयोग कर रहे हैं बार-बार आकर सँभाल रहे हैं यही क्या कम है ?

(तभी सेवक का प्रवेश।)

सेवक ः सीकरी से कोई सांडनी सवार आया है। कहता है, वह कविराज राठौड पृथ्वीराज का पत्र् लाया है।

महाराणा ः उसे भिजवा दो। (सेवक का प्रस्थान/सांडनी सवार का प्रवेश। आते से झुककर प्रणाम निवेदित करता है तथा रेशमी वस्त्र् में लिपटा पत्र् दोनों हथेलियों पर रख प्रस्तुत करता है।)

सांडनी सवार ः श्रीमान् की सेवा में कविराजा ने यह आवश्यक पत्र् भिजवाया है। इसका शीघ्र ही उत्तर मँगवाया है।

महाराणा ः ठीक। तुम बैठो। (प्रस्थान)

(महाराणा पत्र् को खोलकर पढते हैं।) ओह, इस कक्ष तक की बात वहाँ तक भी पहुँच गई। बातों के भी हवा के पंख लगे होते हैं।... (गर्दन पीछे टिकाकर आकाश की ओर देखते हुए विचार मग्न हो जाते हैं।) आखिर है तो राजस्थानी रक्त ही। राठौड हो या सिसोदिया। (फिर चिंता में डूबते हैं।) पाथल मुझे सचेत करना चाह रहे हैं या मेरा मजाक उडाना। (फिर चिंताग्रस्त) इसी भाषा में उत्तर देना है। (फिर सोच मग्न) कवि कविता की भाषा ही पसंद करता है। (सीधे सचेत होकर सामने रखी मेज पर झुक लेखनी उठा कागज पर लिखते हैं) शब्द लिखते हैं। प्रसन्नता मुख पर खेलती चलती है। एक-एक पंक्ति लिख ठहर उसे पढते हैं। ठीक समझ आश्वस्त होते हैं। पूरा लिख जाने पर, फिर ग्रीवा पीछे टिका पत्र् को सामने कर गुनगुनाते हैं। तभी महारानी साहिबा का प्रवेश। महाराणा सावधान हो बैठते हैं।

महारानी ः सुना है बीकानेर से कोई पत्र् आया है ?

महाराणा ः हाँ, यह रखा। देख लो। (महारानी एक ओर बैठ पत्र् पढती है)।

महारानी ः यह बात वहाँ कैसे पहुँच गई।

महाराणा ः लोगों को बात का बतंगड बनाते क्या देर लगती है। मैंने इसी भाषा में यह उत्तर भी लिख दिया है।

महारानी ः ओह तो महाराणा सा. अपनी रचित कविता को ही पढ-पढ मुग्ध हो रहे थे।

महाराणा ः किसे अपना कवित्त आनंद नहीं देता।... भाषा से अधिक आनंद भाव का होता है।

महारानी ः यह तो है ही। सुनाइये न! क्या लिखा है ?

महाराणा ः लो सुनो ! रचना को सुनाकर रचयिता को बडा सुख मिलता है। (महाराणा सुनाते हैं)

तुरक कहासी मुख पतौ इण तन सूँ इकलिंग
ऊगै जाँही ऊगसी प्राची बीच पतंग।

खुशी हूँत पीथल कमर्ध पटको मूँछं प्राण,
पछटण है जे तौ पतौ, कलमाँ सिर के बाण।

महारानी ः (प्रसन्न हो ताली बजा उछल पडती हैं।) वाह, वाह। मजा आ गया। बडा सटीक उत्तर है। महाराणा सा. रणभूमि के ही शूरमा नहीं हैं। साहित्य के भी धुरंधर पंडित हैं।

महाराणा ः लो आप इसी (रेशमी वस्त्र् में उसी तरह इस पत्र् को बँधवा दो। सांडनी सवार बाहर प्रतीक्षा कर रहा होगा)

(महारानी पत्र् को सावधानी से उसी प्रकार बाँधती है।)

महारानी ः मैं सेवक को भेजती हूँ। बीकानेर के हलकारे को बुलवा उसे समझा कर इसे दे, तुरंत रवाना करा दे। ताकि उनकी चिंता तो दूर हो। (रानी का प्रस्थान)

(महाराणा फिर पीछे गर्दन टिका भविष्य विचार कर स्वयं ही कुछ कहने लगते हैं।)

महाराणा ः (स्वगत) मुस्लिम सूबेदारों से ये अपने ही खिसियाये हिन्दू सूबेदार अधिक खतरनाक हैं। जबसे यह कछवाहा जगन्नाथ आया है, कितना पीछा कर रहा है। सिरोही गोडवाणा का सहयोग मिल गया है। अब सारी चिंता छोड विजित किले मुक्त करा कुंभलगढ पर यह केसरिया फिर फहराना है, तभी मुझे शांति मिलेगी। कुंभलगढ मैं आ रहा हूँ... धीरज मत छोडना।

(सेवक का प्रवेश)

सेवक ः रामपुर मालवा से भामाशाह तथा ताराचंद दो भाई आपसे मिलने के लिए पधार रहे हैं। भील युवकों ने आकर सूचना दी है।

महाराणा ः क्या कहा-भामाशाह ताराचंद आ रहे हैं। किधर हैं।

सेवक ः वे आ रहे।

महाराणा ः चलो मैं चलता हूँ। (राणा तेजी से बढते हैं तभी दोनों का प्रवेश। आते ही राणा के चरण स्पर्श करते हैं। राणा दोनों हाथों से भामाशाह को उठा गले से लगाते हैं। फिर ताराचंद को मिलते हैं।) मैं आप दोनों भाइयों को याद कर ही रहा था। आओ। (राणा उन्हें लिवा कर लाते हैं, तथा बिठाते हैं।) कहाँ थे अब तक?

भामाशाह ः कुंभलगढ से आफ पधार आने के बाद, शत्रु सेना ने दुर्ग में रसद आने के सारे मार्ग अवरुद्ध कर दिये थे। कोठागारों का अन्न बीत चला था। नौगुणी वापी का पानी रीतने लगा था। परिवारों को लेकर वहाँ रहना कठिन हो गया था। अचानक तोप के फट जाने से शस्त्रगारों में आग लग गई। कोई उपचार न देख यही निर्णय रहा कि दुर्ग का नेतृत्व सोनगरा भाण संभालें। खुले युद्ध से पूर्व महिलाओं को लेकर हम किसी सुरक्षित स्थान पर चले जायें। चावण्ड के राठौडों का विश्वास था, पर उन्होंने आश्रय नहीं दिया। हम दोनों भाई वहाँ से सीधे मालवा निकल गये। रामपुरा में राव दुर्गा ने हमें आश्रय ही नहीं दिया। पूरी रक्षा का आश्वासन भी दिया। वन बिलाव की घटना जब कानों में पडी, तब से चैन नहीं था। मिलने की लगन लगी थी। तारा ने आसपास के मुगल सूबेदारों पर आक्रमण कर उनसे धन इकट्ठा किया। सोचा उसे आपको नजर करूँ (तारा की ओर मुडकर। तारा ने थैले में रखे छोटे बक्सों को खोल, भामा को दिया) ये बीस सहस्र मोहरें तथा पच्चीस लाख रुपये ही हम अब तक जुटा पाये थे। लीजिये भामा की यह यत्किंच भेंट।

महाराणा ः (उसे स्वीकार कर एक ओर रखते हुए) आप आ गये हैं तो व्यथा समुद्र में तैरते इस मेवाड राज्य में फिर शक्ति आ गई है। भामा जी भगवान एकलिंग की शपथ खाकर कहता हूँ, जिस कुंभलगढ को मैंने और आपने छोडा है, उसे वापस लेकर और मेवाड राज्य का यह केसरिया ध्वज उस पर लहरा कर ही मैं चैन से बैठूँगा। कब से हृदय में उस हुतात्मा वीर सोनगरा भाण का बलिदान साल रहा है। किस वीरता से दोनों हाथों में तलवारें लेकर वह वीर लडा था। मुगलों की विशाल सेना उल्टे पाँव भाग खडी हुई थी। न जाने किसका तीर उसके गले पर आकर लगा और वह वीर...(महाराणा का गला रुँध जाता है।)

भामाशाह ः तारा तो इतना क्रोधित हुआ कि यह राव दुर्गा की सहायता से बसी तक आ गया था। यहाँ शाहबाज से इसकी भिडन्त हो गई थी। तलवार के वार से इसके पैर में चोट आ गई थी बसी राव ने इसे शरण दी। चिकित्सा करवाई।

महाराणा ः आप दोनों भाई कुशल प्रशासक ही नहीं, बडे वीर योद्धा भी हो। मैं तो चित्तौड से ही यह सब देखता आ रहा हूँ। हल्दीघाटी में भी तो आप दोनों साथ थे।

महाराणा ः भामा जी, आपको प्रसन्नता होगी। गोडवाडा और सिरोही का पूरा सहयोग अब हमारे साथ है। पानरवा और ईडर तो प्रारंभ से ही हमारी सहायता कर रहे हैं। आफ पधार आने से मैं अब निश्चित हो गया हूँ। पूरी शक्ति से अब अपने को युद्ध में झोंक सकूँगा। आप आज से ही इस राज्य के प्रधान हैं। अब सारा भावी नीति विधान आप ही तय करेंगे। ताराचंद सादडी में रहकर गोडवाडा को देखेंगे।

भामाशाह ः महाराणा सा., हम तो वैसे ही आफ हैं। इस घोषणा की क्या आवश्यकता थी।

महाराणा ः मुझे आपको चूलिया का नहीं, कुंभलगढ का वही ऐश्वर्य प्रदान करना है। अकबर सीमांत की लडाइयों में उलझा है। कुंभलगढ के मार्ग में दिवेर का ही एक बडा किला है जहाँ अकबर का चाचा सुल्तान थानाधिकारी है। वहाँ शत्रु की भारी सेना भी पडी है। उसे योजना से यदि जीत लिया तो फिर कुंभलगढ दूर नहीं है। घाटी में बहलोल है। उसे हराने के बाद तो हमीरसर ले लेना चुटकी का काम होगा। आप विश्वास रखें। विजय हमारी सुनिश्चित है।

भामाशाह ः भगवान एकलिंग हमारे सहायक हों।

ताराचंद ः (खडा होकर) भगवान एकलिंग की...जय।

सभी समवेत स्वर में जय निनाद करते हैं।

दृश्य-आठ

(कुंभलगढ। दुर्ग पर केसरिया ध्वज लहरा रहा है। नीचे किसान गढ से उतर रास्ते में बैठे, आपस में वार्ता करते दिखते हैं।)

किसान-1 ः धन्य हैं महाराणा। हिम्मत नहीं हारी। कष्टों पर कष्ट उठा लिए। कुंभलगढ पर फिर केसरिया लहरा कर ही चैन लिया।

किसान-2 ः सुना है भामाशाह ने उन्हें काफी धन लाकर दिया है। उसी से भीलों की नई सेना खडी की है।

किसान-3 ः पुरुषार्थी को सहायता स्वयं आकर मिलती है। उसे खोजनी नहीं पडती। सुना है गोडवाडा और सिरोही के राजाओं ने पूरा साथ दिया है।

किसान-1 ः तभी तो दिवेर का सुल्तान खाँ मारा गया। उसके पास तो बहुत बडी फौजी ताकत थी।

किसान-2 ः सुना है, युवराज अमर सिंह का भाला उसके सीने में ऐसा घुसा कि काढे नहीं कढा। युवराज ने ठोकर से उसे निकाला।

किसान-3 ः यह नहीं सुना, मरते-मरते जब उसने पानी माँगा, तब महाराणा सा. ने उसके लिए गंगाजल भिजवाया। इससे चचा पानी-पानी हो गया। महाराणा सा. की जय-जयकार करने लगा था।

किसान-1 ः महाराणा सा. तो महाराणा सा. हैं। जनता के दिलों पर राज करना कोई आसान काम नहीं है। उसकी सज्जनता की कोई क्या होड करेगा। देखा नहीं। कुंभलगढ जीतते ही भामाशाह को बुला, बडा दीवान बना दिया। सारा राजकाज सँभला दिया।

किसान-2 ः भामाशाह तो पहले ही यहाँ बडे दीवान ही थे। आते ही नौ गुणा बावडी ही नहीं, पानी के सभी कुएँ कुण्ड साफ करवा दिये। किले की दीवारें चुनवाईं।

किसान-3 ः यह सब नहीं होता तो हम वापस क्यों लौटते। इलाके में शांति है।

किसान-1 ः दिवेर जीतते ही घाटी में घबराहट बढ गई थी। बहलोल में क्या दम था तो टिकता। राणा की तलवार ने एक ही वार में काम तमाम कर दिया। वे लोग राणा की बढती सेना का नाम सुनकर ही थाने छोडकर भाग खडे हुए। हमीरसर का मियां जी ऐसा भागा कि इलाके में कहीं अता-पता भी नहीं है। महाराणा को हमीरसर में तो लडना ही नहीं पडा।

किसान-2 ः तो कुंभलगढ में कौनसा लडना पडा था महाराणा सा. को। किलेदार तो सेना के आने का समाचार सुनकर ही खाली कर भाग खडा हुआ था।

किसान-3 ः सुना है भामाशाह किला छोडकर जब गये थे तब खजाने को ऐसी जगह छिपा गये थे जो ढूँढे भी किसी के बाप को न मिले।

किसान-1 ः उसी से ही भामाशाह ने आते ही गढ का जीर्णोद्धार कर दिया। अब लगने लगा है कुंभलगढ मेवाड की राजधानी है। महाराणा सा. भी अब महाराणा लगने लगे हैं।

किसान-2 ः अब तो मेवाड के बाकी गढों को भी जीतते क्या देर लगेगी।

किसान-3 ः वो तो जीतेंगे ही। महाराणा सा. की महानता ही कहिये, पानरवा के जिस भीलराजा ने उन्हें जावर में शरण दी थी। जावरों जीतते ही जावर जा जीता और भीलराजा को पानरवा का फिर राजा बना दिया।

किसान-1 ः सुना नहीं, महाराणा सा. ने मुगलों के पिट्ठू छप्पनियाँ से राठौडों को ऐसा मजा छकाया कि जिंदगी भर याद रखेंगे। भामाशाह जब कुंभलगढ से परिवारों को लेकर निकले थे, तब इन राठौडों ने उन्हें अपने यहाँ रखने से ही मना कर दिया था।

किसान-2 ः यही हाल चावण्ड के लूणा का किया। राणा सा. से वह मन ही मन बहुत जलता था।

किसान-3 ः सुना है महाराणा सा. इस ऊँचे पहाड से नीचे जनता की सुविधा के लिए चावण्ड को अपनी नई राजधानी बना रहे हैं। उन्हें चावण्ड सुरक्षा की दृष्टि से भी बहुत अच्छा लगा है।

किसान-1 ः सुरक्षा की दृष्टि से तो कुंभलगढ का कोई मुकाबला नहीं। पर बहुत ऊँचाई पर है। जनता की सुविधा की दृष्टि से चावण्ड ठीक है।

किसान-2 ः चलो रास्ता खाली करो। देखो सेना कहीं से विजय कर लौट रही है।

किसान-3 ः चलो चलें। अब तो विजय ही विजय है। मेवाड के भाग जागे हैं।

किसान-1 ः जा कहाँ रहे हो। देखो-देखो सेना नहीं महाराणा सा. ही स्वयं पधार रहे हैं। शायद चावण्ड से आ रहे हैं। इनके साथ तो दूसरी पालकी में भामाशाह भी हैं।

(महाराणा और भामाशाह की पालकी के आते ही)

तीनों किसान (समवेत स्वर में) मेवाड अधिपति, हिन्दुवां सूरज महाराणा सा. की जय हो। (फिर समवेत स्वर में) जय हो जय हो।

महाराणा ः रोको पालकी रोको। (पालकी रुकती है) महाराणा नीचे उतरते हैं। भामाशाह पालकी से आते हैं। काम ठीक से चालू हो गया न ? कोई कठिनाई हो तो बतायें।

किसान-1 ः आपने रुककर हमारी खैर पूछी। यही क्या कम है। आपको पाकर मेवाड गौरवान्वित है।

महाराणा ः (भामाशाह से) आप स्वयं ध्यान दें। किसान ही राज्य की रीढ हैं। किसान खुशहाल हैं, तो पूरा राज्य खुशहाल है।

भामाशाह ः किसान भाइयों के लिए नई-नई योजनाएँ बनाई जा रही हैं। तालाब खुदाये जा रहे हैं। ताकि सिंचाई हो सके। कुँओं के लिए सहायता का प्रावधान किया है।

किसान-2 ः जय हो जय हो। मेवाड आपको पाकर धन्य हो गया है।

किसान-3 ः मेवाड अधिपति महाराणा सा. की।

सभी-(समवेत स्वर में) जय हो जय हो। (महाराणा सा. का प्रस्थान) (उन्हीं के साथ पीछे-पीछे किसानों का प्रस्थान।)

सपना महेश

जन्म ः 11 अप्रैल 1963, जयपुर

शिक्षा ः राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर नाट्य विभाग से नाट्यशास्त्र् सर्टिफिकेट कोर्स में स्वर्ण पदक

साहित्य ः चार लंबे नाटकों की पुस्तक, 'मौलसिरी के पेड के नीचे' प्रकाशित (साहित्य अकादमी के सहयोग से)

कोलाज विधा में निर्मित चित्रें की तीन एकल प्रदर्शनियाँ

'वो रात' ध्वनि नाटक, आकाशवाणी जोधपुर से प्रसारित।

पुरस्कार ः भारत सरकार संस्कृति विभाग से फैलोशिप प्रदत्त (एवार्ड), जयपुर जवाहर कला केन्द्र से नाटक 'बकुल और उन तीनों के फंदे' नाटक पुरस्कृत।

सम्प्रति ः बीटीवी जयपुर में वरिष्ठ प्रोड्यूसर कार्यरत

डॉक्यूमैंट्री व कार्यक्रमों का निर्माण

पता ः के-35, मनु विहार, हिम्मत नगर, टोंक रोड, जयपुर (राज.)

कोई बात नहीं है

सपना महेश

एक कमरे का सेट पीछे एक बालकनी का फ्रेम

एक टेलीफोन, दो आराम कुर्सियाँ, एक टेलीविजन

और छोटी टेबल, सेंटर टेबल और एक टेलीफोन

(मंच सज्जा निर्देशक के इमेजिनेशन पर निर्भर करेगा)

पात्र्

महिला ः उम्र लगभग 35 से 40 साल के बीच या फिर निर्देशक की कल्पना पर निर्भर करेगा।

पुरुष-1 ः मध्यम आयु

मंच सज्जा ः दो बोर्ड पर क्रोमोजोम चिह्न बने हैं या निर्देशक स्त्री और पुरुष को दर्शाता अपनी कल्पना के अनुरूप बना सकता है।

साउंड तेज ट्रेफिक और सुबह-सुबह चिडयाओं का साउंड विविध भारती की सिगनिचर टून समय के अनुरूप। नाटक का आरंभ शाम से होगा। (मंच पर महिला बैठी है)

महिला ः लो अब चलने में बहुत तकलीफ होती है, भागना तो एकदम मुश्किल है, बरसात और सर्दी के मौसम में तो बहुत दर्द होता है, बैठती हूँ तो सहारे से ही उठा जा सकता है। देखिए मेरा ये पाँव थोडा सा मुड गया है ना ? शुक्र है अभी स्कर्ट पहनने की और सुंदर लगने की उम्र चली गई वरना मेरा ये पाँव बहुत बेहुदा हो गया है एकदम बदसूरत। लोग कहते हैं शुक्र मनाओ जान तो बच गई....हाँ, ये भी ठीक है.....किसी पर डिपेन्डेंट नहीं हूँ.....जीवन में किसी पर निर्भर होना बहुत बुरी खबर है। (घडी की तरफ देखती है)

(पुरुष का प्रवेश-मानो ऑफिस से आया है)

पुरुष ः बडबडाता हुआ-मुझे लगता है ये बजट, चुनावों में एक तरह की कैम्पन है श्रनेज ेमम दव जंगमे गैस के दाम भी नहीं बढे (कुर्सी पर बैठकर जूते उतारता है)। क्या कर रही हो ? चाय पिलाओ यार आज बडा मजा आया, बॉस की मैंने उतार दी।

महिला ः (बीच में बात काटकर) पाँव में दर्द है।

पुरुष ः क्यों कल दर्द वाली दवा ली थी ? (टीवी का रिमोट उठाता है) टीवी में क्या आ रहा है। अरे आज तुमने पराठों में नमक कितना कम डाला था .....यार (फोन की घंटी) हैलो हाँ,

हा...हा.....हा.....हा..... मुझे पता था वो ये ही बोलेगा उसे खुद को पता ही नहीं है। मैंने एक्चुली फाइल दबा ली थी। साले हमें सिखायेंगे।

महिला ः (चाय बनाने नहीं जाती है पुरुष को देखती है और स्वयं से दर्शकों की तरफ देख कर बोलती है। पुरुष फोन पर बतिया रहा है)।

लोग कहते हैं मुझे उस हादसे से बाहर आ जाना चाहिये-मैं बाहर ही हूँ। थोडा-थोडा डर बाकी है मगर मैं उससे बाहर हूँ। देखो भगवान कैसी मशीन बनाता है, याद की टोकरी एकदम छोटी हम सब भूल जाते हैं। गम भी और खुशी भी यहाँ तक की अहसास भी।

हमारे बाग में एक जामुन का पेड था और एक अमरूद का, जामुन का पेड बहुत ऊँचा और अमरूद का पेड मुडा हुआ (समझाते हुए) मतलब ऐसे जैसे माँ की गोद में हम सभी भाई-बहन.....उस पेड पर चढकर बैठ जाते थे उसमें बहुत मीठे अमरूद लगते थे। जामुन के पेड में ढेर सारे जामुन-पूरे चौक में जामुनों का बिस्तर बिछ जाता था और माँ डाँट-डाँट कर पढने बैठा देती थी, मैंने तो अपने बाग के अमरूद जामुन पूरी तरह खाये ही नहीं और बाबा ने घर बेच दिया।

पुरुष ः (अभी भी फोन पर जोर से बोल रहा है) साले मुझसे लफडा करना चाहते हैं? मैं कहता हूँ कि मैंने कह दिया तो कह दिया। फाइल ही दबा लो। कहता है बॉस से कहेगा। अरे बॉस तक पहुँचने का रास्ता मैं हूँ। बस जेब ढीली करो और करा लो काम। सिम्पल। (फोन रखता है)। (चिढकर) अरे, तुमने चाय नहीं बनाई (अंतराल) कितने बजे हैं ? आज सीरियल कौनसा आएगा। (महिला अंदर जाती है, पुरुष टीवी देखकर बडबडाता है) घूसखोरों से भरा है देश इनकी वजह से देश बर्बाद हो गया।

फ्रेम में जडा कढाई काढते हुए महिला मंच पर आती है एक हाथ में कप है दूसरे में कढाई का फ्रेम।

(पुरुष टीवी के चैनल बदलता है-चाय पुरुष को थमाती है। पुरुष चाय रखकर टीवी देखता रहता है)।

महिला ः (पुरुष से) चाय ठंडी हो रही है।

(पुरुष गर्दन हिलाता है) जब चाय पीनी होती है तभी बोलते हैं (पुरुष को कोई मतलब नहीं है) (फोन की घंटी बजती है)।

महिला ः हैलो (इशारा करती है) फोन है।

पुरुष ः हैलो, हाँ, क्या हो गया। मुझसे राय ले रहा था। हाँ, यार जल्दी आ गया। तनख्वाह देते हैं आना, और काम करवाते हैं सेर भर का। मैंने भी कहा (हँसता है) हा, हा, हा, कौन नहीं,

नहीं तू शो मत कर, हाँ, यार लेडिज की यही प्रॉबल्म है। दिखा.....(झिझक) तू तो उसे काम मत करने दे बस सीधी सी बात है। अरे यार तेरे को कौन कहेगा, तू तो वैसे भी काम नहीं कर रहा था। बस उसे काम मत करने दे, देख लेडिज को वैसे भी परेशान करना आसान है। अरे दास बाबू, हा हा हा तू झूठ कहाँ बोल रहा है। उसी के पास तो बैठी रहती है।

महिला ः जीवन के सात रंग होते हैं (इशारा पीछे पुरुष की तरफ) उन्हीं सातों का एक रंग यह भी है। पता नहीं कौनसा ? ऐसा लग रहा है किसी ऑफिस में बैठी हूँ।

पुरुष की आवाज तेज ः अरे यार औरत को भी हैंडल नहीं कर सकता ? बस कहा ना काम मत करने दे। अरे छोटी लाइन-बडी लाइन को किताबों में रहने दे। (आवाज धीमी)

(कढाई कर रही है)

महिला ः (पुरुष से) क्या कोई परेशानी है ?

पुरुष ः (व्यंग्य से) कौन बोला ? ओ हो तुम-तुम नहीं समझोगी। (फिर फोन पर)

महिला ः मेरे बाबा दफ्तर से आकर माँ से बोलते ''दिन भर से घर में थी। कहीं चलना है ? माँ कहती, ''नहीं''।

कोई जमीन पर दरिया ले आता है और लोग दरिया के आसपास गाँव बसाते हैं उससे जीते हैं उसके लिए मरते हैं।

(कुकर की सीटी की आवाज)

(पुरुष जो फोन पर बात कर रहा था फोन रखता है। आवाज तेज होती है)

दर्शकों से ः आज सर्दी बहुत है और बाहर बारिश भी है। ये सर्दियों की बारिश बहुत डिपरेस करती है। साले पेडों पर पत्ते नहीं और बारिश। कहीं छुप भी नहीं सकते हैं। लोग कहते है सर्दियों की बारिश में फसल को फायदा होता है अगर ओले ना गिरें तो.....

(अचानक महिला से) तुम किससे बातें करती रहती हो ? बहुत चुप रहती हो। (दर्शकों को इशारा) तुम इनसे बातें करती हो ? ये दर्शक हैं। बिल्कुल सफेद दीवार की तरह। उस कहानी वाले नाई के पेड से भी गये गुजरे ....ये सुनेंगे और यहाँ से उठकर चले जाएँगे। भई बात किया करो। क्या बात है पाँव में दर्द है ? एक्चुली कोई बोलता नहीं तो मुझे बोरियत होने लगती है। बोला करो हँसा करो, कुछ भी बोला करो कुछ भी.....मैं तो साफ बोलता हूँ काम करो दूसरों का, फायदा उठाओ अपना। ऑफिस मैं भी बहुत धाक है। और होशियार इतना हूँ कि हमेशा दूसरों का कंधा इस्तेमाल करता हूँ यहाँ तक की कंधे को पता भी नहीं चलता कि उसका इस्तेमाल हो रहा

है। साला, बॉस तक बात को ऐसे पहुँचाओ की उसको पता भी नहीं चले कि किसी की शिकायत हो रही है.....। खाने में क्या बनेगा ?

(कुकर की सीटी की आवाज)

महिला ः दाल (उदासीन)।

पुरुष ः दाल क्यों ?

महिला ः तो ?

पुरुष ः मुर्गा बनाओ, यार दाल खाने में ऐसा लगता है बीमारों का खाना है। जबकि इतनी महँगी हो गई है। यानी दाल बनाने के लिए भी दाल गलानी पडती है। (हँसता है। ऐसे हँसता है जैसे चुटकुला सुनाया हो महिला नहीं हँसती है)

अब मतलब वैसे देखा जाए तो ज्यादा बोलने की तो जरूरत ही नहीं है। (कुर्सी पर बैठता है) अच्छा एक बात बताओ तुम हर वक्त दर्द है-दर्द है क्यों बोलती रहती हो ? च् मेरी बात सुनो-हर समय पास्ट टैंस में जीना। क्या मतलब है इस बात का मुझसे सीखो।

महिला ः क्योंकि दर्द है।

पुरुष ः दर्द ?

महिला ः दर्द।

पुरुष ः कितना दर्द है ?

(महिला जवाब नहीं देती है)

पुरुष ः बोलो।

महिला ः बहुत दर्द है।

पुरुष ः अच्छा चाय बनाकर लाओ। ध्यान डाइवर्ट होगा और तुम्हें दर्द कम लगेगा। चाहो तो खुद के लिये भी बना लेना।

(महिला प्रस्थान)

पुरुष ः (दर्शकों से) साला दर्द। मुझे तो इतना पता है दर्द तो देने की चीज है (मुँह बिगाड कर) दर्द है.....दर्द है.....दर्द करके दया बटोरते हैं, खुद का दर्द दूसरों पर थोपो साले (मजाकिया) डू और डाय-मैं तो कहता हूँ इससे बडा दर्द क्या है कि राज किसके नाम और राज करे कोई..... पूरा राज चलाते हैं हम। पूरा राज भरा पडा है फाइलों में, मुझ से बडा कोई नहीं। ये चुप रहती है ना ना ना चुप रहने वाले गंभीर, सहज ज्ञान, टेक्नीकली साउंड-अरे, अब मेरी जूती के नीचे।

(व्यंग्य) दर्द....दर्द है मुझे नहीं होता है दर्द ? अपना दर्द दूसरों को दो बस इतनी सी बात साले। (चाय लेकर आती है)

महिला ः चाय।

पुरुष ः चालाक बनना जरूरी है। वो जमाने लद गए जब काम की फिक्र करने वालों की कीमत थी। अब तो काम का जिक्र करते रहने वालों की कीमत है। (चाय पीता है) चाय फीकी है थोडा मीठा डालो..... भई एकदम मीठी..... अरे यार मीठे के लिए ही तो चाय पीते हैं (हँसता है) क्या है काम करते-करते चार बार चाय पीओ, चाय में कैसे ताकत है-चाय की शक्ल में कैसा अपनापन होता है। बस बात हो तो चाय पीओ बात ना हो तो चाय पीओ। चाय यानी प्रेमिका (फोन की घंटी बजती है) मेरे इतने फोन आते हैं तुम्हारा एक भी नहीं? (फोन उठाता है)

महिला ः बात कभी होती ही नहीं है। बातें तो बनायी जाती हैं। शांत हम सभी साथ बैठकर खाना खाते थे। बाबा टेबल कुर्सी पर और हम तीनों भाई-बहन बडी सी रसोई में जमीन पर दरी बिछाकर चूल्हे के पास। घर में निकाला मक्खन और बहुत स्वाद खाना खाते, बतियाते, माँ सबसे आखिर में वहीं चूल्हे को बुझाकर पहले से बनाई रोटी के साथ थाली बनाती और खाना खाती थी। पहले रसोई साफ करती। फिर बरतन और तब कहीं बैठती थी। कहती थी खाना खाने के बाद काम करने की इच्छा नहीं करती है, नींद आने लगती है। और तब भी सोती नहीं थी कुछ सीती-पिरोती रहती थी। वो आज भी ऐसा ही करती हैं.....आदमी को हर जीवन में माँ मिल जाती है और औरत को कभी माँ नहीं मिलती। .....अच्छा बुरा वो ही बनाती है। रोटी सेकती है, खाट बिछाती, टेलीफोन पर बात करती, भोली भाली माँ कभी-कभी रूठ जाती थी। मत बात करो, मत बात करो, हम उसे मनाते थे.....और आज भी हम लोगों को मना रहे हैं। हम किसी के रूठने से घबरा जाते हैं.....वो छोटी सी बच्ची हमेशा मुझमें जिंदा रहती है जो अपनी रूठी हुई माँ को रसोई के किवाड से झाँककर देखती रहती है। माँ के मुस्कुराने का इंतजार करती है और दौडकर माँ की गोद में समा जाती है।

पुरुष ः (फोन पर बात) अबे, उसे नचा यार। एकदम गधा है तू.....उसे नचा। तू साले अगर उसकी आँखों में देखता रहेगा तो वो वैसे ही तुझे बॉस नहीं कह पाएगी। हाँ.....हाँ क्या हुआ उसका ? साले तूने फाइल निकाली ही क्यों ? अरे, ऐसे तो सभी रोएँगे तो तू भी रो। क्या यार एक काम ढंग से नहीं कर सकता है। मेरी एक अलग सरकार चलती है (महिला से) अरे यार, ऐसे मत देखो। ये बात हर ऑफिस में होती है। हम काम करते नहीं और किसी को काम करने देते नहीं हैं। (वापस टेलीफोन पर) अरे, नहीं-नहीं उससे बात कर रहा था।

(पुरुष फोन पर है जब महिला बोलेगी पुरुष की आवाज धीमी और हो जाए)

महिला ः कभी-कभी मेरा मजाक बनता है। सब कुछ बाजार में मिलता है फिर भी तुम लगी रहती हो मिर्च कूटने से लेकर पापड बनाने तक....कभी आपने पापड का लोया खाया है ? माँ एक बडा सा रोल बनाती थी। पाँव के अँगूठे में धागा बाँधती और हाथ से खैंचकर रोल में धागा लपेटती और लोये खटाक-खटाक पराती में गिरते जाते थे। हम तीनों भाई-बहन लोयों के नीचे हथेली धरते और लोयों को अपनी हथेली पर गिराते (धीमे से हँसती है) बडे मजे आते थे। और अब.....(गर्दन हिलाती है)

(फोन पर है आवाज जोर से महिला पुरुष को देखने लगती है)

पुरुष ः एक्चुली होता क्या है काम कोई नहीं करता है। सब अपनी नौकरी बचाते हैं बस। क्या है जब तक अफसर को पता नहीं चले अफसर बने रहो। काम करने वालों की इतनी शिकायत करो कि सालों की कि वो भी काम करना छोड दें (हँसता है) रखता हूँ यार वो देख रही है (फुसफुसाता है फोन रखता है)

(महिला से) तुम मुझे ऐसे क्यों देखती हो ? नौकरी करना आसान नहीं है। बिना बात के, बात बनानी पडती है, चमचागिरी करनी पडती है। डाँट खानी पडती है। तब पैसे आते हैं घर में....देखो भई अपना तो इतना सा उसूल है पैसा। प्रभाव और प्रभुत्व ही देखा जाता है। ईमानदारी गई तेल लेने (हँसता है) जरा चाय तो बनाना.....मीठी रखना ये फीकी चाय मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है।

(महिला जाती है टेलीफोन की घंटी बजती है)। टीवी में गाना बजता है पुरुष आराम कुर्सी पर पाँव फैलाकर आराम से पीछे सहारा लगाकर बैठ गया है। बैक ग्राउण्ड में गाना बज रहा है-बचपन के दिन भूला न देना आज हँसे.....पुरुष चैनल बदलता है टीवी की स्क्रीन दर्शकों की तरफ नहीं है। न्यूज की आवाज। बार-बार चैनल बदलता है थोडी देर सुनता है। चैनल बदलता है.....घडी देखता है विंग्स में देखता है-

पुरुष ः चुप रहती है मगर उसका ना होना अखरता है। डरती नहीं है-अच्छी बातें करती है.....मगर आजकल अच्छी बातें सुनता कौन है ?.....यार ....बोरियत होती है। साले टेलीफोन पर अगर क्रॉस कनेक्शन हो जाए तो कैसा एक्साइटमेंट होता है। (महिला का आना चाय के साथ)

पुरुष ः अच्छा बताओ औरत को नौकरी क्यों करनी चाहिये ?

औरत ः (उसे देखती है)

पुरुष ः बताओ ?

औरत ः आत्मनिर्भरता के लिये।

पुरुष ः कैसी आत्मनिर्भरता ? सारा काम तो पुरुष करता है।

औरत ः चाय ठंडी हो रही है।

पुरुष ः तुम यह जताना चाहती हो कि मुझमें प्रश्न पूछने की अक्ल नहीं है।

महिला ः मैंने ऐसा नहीं कहा।

पुरुष ः मैं बताता हूँ। औरत नौकरी करे ताकि समाज में जगह-जगह रिश्वत ली जाती है वो भरे और आदमी की तनख्वाह से घर चले (हँसता है) क्यों ठीक है ना।

(घर के अंदर चला जाता है)

महिला ः हम लोग छोटे-छोटे बच्चे उस शहर के बगीचे में घूमने गए थे। मेरे बाबा हम तीनों भाई बहन और माँ.....मैंने जिद की थी इस बग्घी में बैठना है। माँ ने कहा ये घोडे से चलती है बेटा और भाई भी जिद करने लगा ...वो रोने लगा, बैठना है.....बाबा ने हम तीनों को बग्घी में बैठा दिया और खुद बग्घी में जुत गए। हम तीनों तालियाँ बजाकर हँसने लगे, बग्घी थोडी दूर चली हम खिलखिलाने लगे। माँ एकदम स्तब्ध हम तीनों को नीचे उतारकर वहीं धुनाई शुरू....बोली बाबा को बाबा का मान दो और माँ को माँ का.....ये बात अब समझ आई है।

(अंदर से बोलता-बोलता आता है)

पुरुष ः (महिला से) अच्छा तुमको लगता है मेरा स्टेण्डर्ड नीचे है और तुम्हारा ज्यादा ऊँचा, इसलिए मुझसे बात नहीं करोगी। मैं ऑफिस में काम करता हूँ तुम घर में रहती हो।

मोटर साइकिल पर किक लगाता हूँ तो एक हाथ रेस पर रहता है दूसरा पाँव जमीन पर बैलेंस के लिए-मोटर साईकिल चलाना जानती हो ?

महिला ः मैं सोचती हूँ व्यक्ति को संवेदनशील होना चाहिये।

पुरुष ः मतलब ?

महिला ः मेरे दर्द है।

पुरुष ः तो ?

महिला ः तुम्हें लगता है हमें बात जारी रखनी चाहिये ?

पुरुष ः हाँ। (फोन की घंटी बजती है)

महिला ः फोन बज रहा है।

पुरुष ः इस बात को पूरा करना है। (फोन उठाता है)

महिला ः बहुत दम घुटने लगा है। दूसरे के दर्द को बहाना और अपने दर्द को ..... (बात बीच में काटती है) नहीं-नहीं शिकायत नहीं.....दर्द तो मेरा ही है ना। (पुरुष की आवाज तेज)

पुरुष ः सभी ऑफिसों के सामने थडयाँ होती हैं चाय, सिगरेट-पान-मसाला वहाँ पर आधा ऑफिस डिस्कस होता है। सारे निर्णय वहीं होते हैं फाइल के ऊपर और फाइल के नीचे (हँसता है) (गाली जिसे बीप की आवाज से इस्तेमाल करें)

पुरुष ः (फोन पर) हाँ, बोलो ! (रोब से) मुझे पता था। अपना तो क्या है सारी स्ट्रेटेजी दिमाग में ही बना लेता हूँ। नहीं देख एक बात बताता हूँ (हँसता है) बस इतनी सी बात है पेच डालकर रखो।

(फोन पर है स्त्री इसलिए संवाद पर पुरुष का स्वर धीमा)

महिला ः शाम को चार बजते ही मेरी बहुत सुंदर छरहरी गौरी माँ अंगीठी जलाती थी। रसोई के मसोते से लीरी फाडकर तेल में भिगोती अंगीठी की जाली के बीच बत्ती रखती और जलाती। फिर हम दोनों बहनें उसके आसपास कच्चे कोयले जलाते और जब कोयले लौ पकडते तो उन पर पक्के कोयले डालते। भाई पुरानी कॉपी के गत्ते से हवा देता। हवा से अंगीठी जल जाती-बाबा भुट्टों से भरे बोरे से भुट्टे निकालते और हम सभी भुट्टे अंगीठी पर सेकते-खाते। माँ अपने काम को रोक-रोककर भुट्टे सेंकती और हँसती रहती। उसे कोई काम कहो तो खुशी से करती, कहती मेरा काम है। माँ कहती ये मेरा काम है कभी किसी से शिकायत नहीं.....रात में थक जाती.....और बैठे-बैठे अपने पाँव दबाती बडे से सुंदर से पलंग पर बैठी रहती। बाबा आते और दरवाजा बंद हो जाता।

बत्ती बुझ जाती.....आँखों में सपने तैर जाते.....नींद में.....नींद.....मीठी नींद सामने दिखाई देती।

सुबह-सुबह फिर माँ हमें नहाई धोई भीगी घुँघराले बालों वाली सामने दिखाई देती। जीवन में जीवन हमेशा होता है। जीवन का मतलब ऑफिस और थडयाँ नहीं है।

(पुरुष-महिला संवाद के समय फोन पर बात करते-करते नेपथ्य में चला गया था वापस लौटकर आता है)।

पुरुष ः (पुरुष की आवाज तेज) तुझे कहा है ना कि जगह को छोडा मत कर .....साले.....फाइलों को दबाकर रख.....खुद देने जाया कर। लोगों को लगेगा कितना काम करता है.....अबे, एक दिन जल्दी क्या आ गया तूने सब सत्यानाश कर दिया.....अरे, बूढा आदमी था तो तेरा बाप था क्या .....हम अपने लिये नहीं लेते हैं.....हम भी दूसरों को देने के लिए....अरे, उसकी छोड यार मैडम.....मैडम.....उसे तो थडी पर छोडकर आया कर.....साले हर वक्त दिमाग पर लादे

रखता है.....अब तू सुन देख अपना फायदा इसमें होता है जब अफसर को काम नहीं आता है.....(चिल्लाकर) अरे, चुप रे.....साले खुद पर इतना डिपेंडेंट कर दो कि..(पुरुष की आवाज धीमी)

महिला ः (और जोर से गुस्से में) वो कहते हैं पुरानी बातें मत करो मैं तो करूँगी। उसी में हमारे संस्कार हैं। एक-दूसरे को पछाडने में कुछ नहीं रखा है। मेरे पाँव में दर्द है तो क्या, मैं बिना शिकायत चाय बनाती हूँ, खाना बनाती सब काम करती हूँ। यहाँ ऑफिस के सिवा और बात ही नहीं। कितने साल बीत गये अभी भी बाबा-माँ के चौक से निकल नहीं सकी, ये भी कोई बात है ? उफ्फ अब तो.....(पुरुष ठहाका लगाता है।)

पुरुष ः साले तू अब तक आदम युग में ही जी रहा है। अबे उससे बाहर निकल ....कौन है अपना? कोई नहीं.....कोई थप्पड मारे तो तू मार साले को घूँसा। यार हम भी सरकारी नौकर हैं। वो भी.....हमको कौन निकाल सकता है ? अब अदालतें किसलिये हैं ? दामाद बनकर फिर धमक जायेंगे.....आसान नहीं है कोई बात साबित करना.....तू मस्त रह.....क्या ? क्या कह रहा तू ?

पुरुष ः (फोन रखकर) उसने मुझे जवाब दिया.....मुझे.....मैं बताऊँगा अब कि काम कैसे होता है.....अजीब बात है। दो अफसर.....एक डरपोक.....एक मूर्ख.....अरे यार ऐसे जगह भी काम नहीं कर सकते ? लानत है। (हताश) साले ने फँसा दिया (बौखलाया हुआ, जूते पहनता है दरवाजा बंद कर लेना वापस जा रहा हूँ)। (बाहर जाता है)।

महिला ः ऑफिस घर से बाहर निकल गया। जल्दी ही फिर लगेगा.....यहाँ.....थडी की तरह.....बेतुकी बातें.....संवेदनहीन.....पत्थर के बुत.....फाइलों का जंगल.....बोर हो गई हूँ भटकते हुये....

महिला ः (उठती है फोन के नंबर डायल करती है, फोन पर बोलती है-हैलो (उधर से सुनती है)।

हाँ, मैं बोल रही हूँ। आफ साथ बैठकर एक कप गर्म चाय पीनी है।

(पर्दा गिरता है)

डॉ. मनोहर प्रभाकर

जन्म ः 14 सितम्बर, 1932 राजस्थान के लब्धप्रतिष्ठ कवि एवं लेखक हैं। पिछले पाँच दशक से वे साहित्य, पत्रकारिता और जनसंफ के क्षेत्र् में अपना मूल्यवान योगदान करते रहे हैं।

शिक्षा ः एम.ए. (हिन्दी-अग्रेंजी) पी.एच.डी.

साहित्य ः विभिन्न विधाओं में उनकी 40 से अधिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। विदा की साँझ, अर्चना, गान्धारी, महुए महक गये, कुछ और, आप बीती, राजस्थान-दिग्दर्शन, आज का राजस्थान, राजस्थानी साहित्य और संस्कृति और कथा-संगम।

पुरस्कार ः राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा विशिष्ट साहित्यकार सम्मान, कन्हैयालाल सहल पुरस्कार, बाल साहित्य के लिए दो बार पुरस्कृत

पता ः सी-118, मंगल मार्ग, बापूनगर, जयपुर ।

उत्सर्ग

(गीति-नाट्य)

(बादल-बिजली-बरसात की तूफानी रात)

वाचक ः पावस की वह रात गहन अंधियारी थी,
सुध-बुध खोकर सो रही मेदिनी सारी थी।
लेकिन पन्ना की आँखों में थी नींद कहाँ-
उसकी दुनिया में अभी हुई थी रैन कहाँ ?

वाचिका ः राजमहल में बैठ उदय सिंह के सिरहाने,
सजा रही थी वह भविष्य के स्वप्न सुहाने।
सोच रह थी सांगा की यह अमर धरोहर,
वात्सल्य की इस छाया में पोषित होकर,
कभी करेगी गर्वोन्नत स्वदेश का माथा,
बन जायेगी युग-युग की जो शाश्वत गाथा।

वाचक ः आत्मलीन हो खाई थी वह इसी ध्यान में,
उलझ रही थी भावों के मधुमय वितान में।
टूटी तन्द्रा तभी अचानक चीत्कार से,
निकल रही थी जो कि किसी के कंठ-द्वार से।

वाचिका ः सिहर उठी वह किसी अशुभ की आशंका से,
रोम-रोम था कम्पित भय-मिश्रित शंका से।
इतने में ही भृत्य एक जो सम्मुख आया,
बरबादी से भरा संदेशा वह था लाया-

(सेवक का प्रवेश)

सेवक ः हो गया गजब लो ! टूट पडी है गाज हाय !
बस हो जायेंगे सब अनाथ हम आज धाय !
‘बनवीरा’ की जगी आज है रक्त-पिपासा,

रौद्र रूप रख आता इधर है रुधिर का प्यासा।
उदय सिंह पर उसकी निर्मम दृष्टि पडी है,
मृत्यु कुँवर की समझो सम्मुख हुई खडी है।
करो युक्ति कुछ अगर तुम्हें झट सूझ पडे तो,
डूबे समझो तुम्हें न यदि कुछ बूझ पडे तो।

वाचक ः सुनकर डोल उठी पन्ना की जर्जर काया,
लगा उसे ज्यों एक बवंडर भू पर आया,
आया या भूचाल कहीं धरती अम्बर में,
प्रलय भैरवी गूँजी या विनाश के स्वर में।
काँप रही या थर-थर थर-थर सारी धरती,
मरण-क्षणों में ज्यों लम्बी साँसें-सी भरती।
लगा उसे ज्यों वह पागल हो जायेगी,
या सदैव को सचमुच पहले सो जायेगी।

वाचिका ः मनःस्थिति पर किन्तु नियंत्रण उसने पाया,
मिली उसे ज्यों ही विवेक की शीतल छाया।
दूर हटे उसके मन से असमंजस के घन,
जाग उठी कर्त्तव्यशीलता तभी तत्क्षण।

वाचक ः चूमा उसने उदय सिंह के वाम गाल को,
या कि चुनौती दी उसके विकराल काल को।
रक्खा झट से उसे एक फल की डलिया में,
ढाँक दिया फिर पत्तों की मृदु चद्दरिया में।
सेवक को अपने पुनः कान के पास बुला,
धीमे-से उसके अधरों का यों द्वार खुला

पन्ना ः राजमहल के गुप्त मार्ग से तुम ले निकलो,
'बैरिस' सरि के तट पर जब आऊँ तो मिल लो।

करो प्रतीक्षा वहाँ न जब तक मैं आ पाऊँ,

आगे का आदेश तुम्हें आकर दे जाऊँ।

(सेवक तुरन्त टोकरी लेकर बाहर निकल जाता है।)

वाचिका ः कहकर इतना पन्ना निज शय्या पर आई,

'चन्दन' को ज्यों देखा तो आँखें भर आईं।

उस माता का एक मात्र् आधार यही था,

उसके वात्सल्य का बस संसार यही था।

वाचिका ः कर्मनिष्ठ थी पर पन्ना पूरी क्षत्रणी,

'सर्वोपरि कर्त्तव्य' यही थी उसकी वाणी।

निर्मम उसने अपने प्यारे इकलौते को,

शून्य चेतना पडे हुये निर्भय सोते को-

ले आई वह उसे वहीं झट उस शय्या पर,

जिस पर प्रसुप्त था कुछ क्षण पहले उदय कुँवर।

वाचिका ः लिपट चुका था वह भी शाही परिधानों में,

या कि मौत के लिए कफन के ही बानों में।

चूमा उसने 'चन्दन' के उस भोले मुख को,

जो कि छोडने को परवश था जीवन सुख को।

वाचक ः बैठ गई वह खिन्नमना उसके सिरहाने,

पर विषाद का भाव भाल पर दिया न आने।

और जोहने लगी बाट उस मतिमारे की,

कुटिल, क्रूर, पामर, हतभागे हत्यारे की।

(अचानक बनवीर का हाथ में नंगी तलवार लिए हुए प्रवेश)

बनवीर ः बोल ! बोल !! झट बोल !! अरी पन्ना की बच्ची !

जो पूछ रहा हूँ वह बतलादे सच्ची-सच्ची।

उदय सिंह है सोया बोलो तो पडा किधर ?
सो रहा कहीं अन्यत्र् या कि है यहीं इधर ?

वाचक ः पन्ना ने पाषाण हृदय पर जैसे रख कर,
निर्मम अंगुली से इंगित बस कर दिया उधर।
सोया लिपटा जिधर लाडला उसका चन्दन,
जो सदैव को करने को था बस नींद वरण।

(नेपथ्य में मृत्यु गीत के स्वर सुनाई पडते हैं। बनवीर तलवार के एक ही झटके में बिस्तरों में सोये हुये बच्चे के दो टुकडे कर डालता है।)

मृत्युगीत ः जीवन-वीणा का टूटा किसका मृदुल तार ?
निष्फल होती लो किसकी यह कातर पुकार !
दसों दिशाओं में यह कैसा घोर बवंडर,
भू-अम्बर में कैसा यह तूफान भयंकर !
रे नन्दनवन किसकी आशा का हुआ क्षार !
जीवन-वीणा का टूटा किसका मृदुल तार !
किसकी साँसों का आज समीरण रुका अरे !
क्या महानाश के सम्मुख जीवन झुका अरे ?
लो जीत गया तम आज, ज्योति की हुई हार,
जीवन-वीणा का टूटा किसका मृदुल तार ?

वाचक ः रक्त पिपासा पूरी कर निकला हत्यारा,
तोड चुका था चन्दन तो जग की यह कारा।

वाचिका ः 'बेरिस' सरि के तट पर आई सत्वर पन्ना,
लिए 'उदय' को खडा जहाँ सेवक चौकन्ना।
'सिंहराव' के पास उसे दोनों ले निकले,
उसके प्राणों को जहाँ तनिक भी शरण मिले।

वाचक ः बाघ सिंह का बेटा, पर वह कायर निकला,

पन्ना को दी उसने निज परवशता दिखला।

सिंहराव ः सोचो, खतरे से खाली यह तो बात नहीं,

'बनवीरा' से छिपी रह सकेगी घात कहीं ?

करनी मुझको नहीं दुश्मनी उससे सुन लो,

इन खतरों के लिए किसी अन्य को चुन लो।

वाचिका ः हो निराश तब दोनों आये डूँगरपुर में,
'एशकर्ण' भी बोला, लेकिन कातर स्वर में-

एशकरण ः मेरे वश की यह तो लगती है बात नहीं,

मैं तो रख सकता इसे एक भी रात नहीं।

योग्य और कुछ कार्य मुझे तुम बतलाओ,

चुपचाप नगर से बाहर बस झट हो जाओ।

वाचिका ः डूबा गहन निराशा में था पन्ना का मन,

धैर्य रहा था सदा किन्तु उस रमणी का धन।

कुछ विश्वासी भीलों से वह रक्षित होकर,

'कमलमेर' गढ पहुँची दुर्गम पथ से होकर।

वाचक ः दिया यहाँ के शासक 'आशाशाह' ने प्रश्रय,
अमर हो गई कीर्ति जगत में जिसकी अक्षय।

(समयान्तर)

वाचिका ः कुछ वर्षों में आखिर वह शुभ दिन भी आया,
'बनवीरा' ने दुष्कर्मों का फल जब पाया।

वाचक ः राज्याभिषेक की गूँज उठी मंगल शहनाई,

ली जनता के सुप्त भाग्य ने फिर अंगडाई।

आज हुई थी पूर्ण धाय के मन की चाहें,

बदल रही थीं आज 'वाह' में उसकी आहें।

वाचिका ः उदय सिंह हो गया सुशोभित सिंहासन पर,
गूँज उठा था नभ में पन्ना की जय का स्वर।

सहगान ः अमर हो गई युग-युग को पन्ना क्षत्रणी।

फहरी जग में उसके यश की धवल पताका,

स्वामिभक्ति बन चमकी उसकी निर्मल राका।

कर्मनिष्ठ बन जग में धन्य हुई कल्याणी,

अमर हो गई युग-युग को पन्ना क्षत्रणी।

हुई जगत में त्याग-मूर्ति वह ऐसी नारी,

महिमा-मंडित जिससे जग की महिला सारी।

गाथा जिसकी गा कृतज्ञ कवियों की वाणी,

अमर हो गई युग-युग को पन्ना क्षत्रणी।।

गई जगत को बलिदानों का पाठ पढाकर।

बलिवेदी पर दिल का टुकडा स्वयं चढाकर।

किन्तु प्रेरणा अभी दे रही रजपूताणी,

अमर हो गई युग-युग को पन्ना क्षत्रणी।

(सुखद संगीत)

राधेश्याम तिवारी

जन्म ः 5 फरवरी 1944

राधेश्याम-साहित्य, रंगमंच, टीवी और पत्रकारिता से स्वतंत्र् रूप से काम करते रहने का अनुभव पटना, दिल्ली, जयपुर के रंगमंच पर नाट्य निर्देशन, इलाहाबाद नाट्य प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ नाट्य लेखन पुरस्कार, आकाशवाणी, दूरदर्शन के लिए नाटकों का प्रसारण बच्चों के साहित्य में योगदान केरल एवं महाराष्ट्र सरकार के टैक्स्ट बुक में बच्चों की कहानियों का चयन।

आदरणीय डैडी, अपने बचाव में, अफीम के फूल, डाकू रानी चंबल वाली जैसे नाटकों का लेखन-निर्देशन।

पता ः 12/156, मालवीय नगर, जयपुर - 302017

उनके लौटने तक

(बाल एक पात्रीय नाटक)

राधेश्याम तिवारी

परदा उठने पर एक ड्राइंग रूम नजर आता है। ड्राइंग रूम की सजावट में 10 वर्षीय बालक रोहन खोया हुआ सा लगता है। वह एक सोफे पर बैठकर कॉमिक्स की किताब पढ रहा है। संगीत के साथ प्रकाश के कई रंग उभरते हैं और मिटते हैं। फिर अंत में एक दो मिनट के बाद प्रकाश व्यवस्था नार्मल हो जाती है जिसमें रोहन बैठा हुआ नजर आता है। एक बार रोहन सिर उठाकर मंच से दर्शकों की ओर देखता है। किताब रखकर मंच के आगे आकर कहता है-

रोहन ः आप मुझे देख रहे हैं ?...क्या आप मुझे देख रहे हैं ? और तो कोई है नहीं। मुझे देख रहे हैं आप ? इस घर में मैं अभी अकेला हूँ। तभी तो आप देख रहे हैं मुझे... यदि मैं अकेला नहीं होता तो अभी मम्मी और पापा होते मैं यदि सोफे पर इस प्रकार खडा होता तो पापा फौरन डाँट देते रोहन यह क्या हो रहा है ? लेकिन आप देख रहे हैं अभी मैं इस पर कूद सकता हूँ। इस प्रकार... (वह सोफे पर जाकर कूदने लगता है। पीछे से संगीत के साथ नृत्य की कई मुद्राएँ दिखलाता है) इस प्रकार अभी तो मैंने नाच भी लिया, लेकिन पापा होते तो ऐसा कभी नहीं करने देते। (तभी फोन की घंटी बजती है) यह फोन जरूर पापा का होगा। पापा और मम्मी दोनों फिल्म देखने गए हैं। पापा तुरन्त पूछेंगे-रोहन क्या कर रहे हो ? तुम ने खाना खाया या नहीं ? तुमने पढाई की या नहीं ? अरे बाप रे... अब पहले तो पूछेंगे इतनी देर में फोन क्यों उठा रहे हो ? (वह दौडकर फोन उठाता है) मैं अभी पढाई कर रहा हूँ पापा... देर कहाँ हुई। आफ फोन की घंटी बजी मुझे सुनाई पडी मैं खडा हुआ और दौडकर फोन के पास आ गया। जी पापा...जी पापा...(मुँह बनाकर फोन रखता है।) शटअप...शटअप...शटअप...ढिचकांय...शटअप...रोहन बकवास नहीं ...रोहन चुप रहो (मुँह पर ऊँगली रख लेता है) बस रोहन चुप...रोहन इस बार 90 पर्सेंट नंबर लाना है तुम्हें...बेटा तुम पढाई नहीं कर रहे हो ? टीवी नहीं...ज्यादा टीवी देखने से आँखें खराब हो जाती हैं...बच्चे अंधे हो जाते हैं...इस तरह... (आँख बंद करके अंधा होने का अभिनय करता है...मंच पर कुछ देर के लिए अंधे होने की कई मुद्राएँ दिखाता है। मंच के पीछे जाकर एक छोटा सा डंडा उठाकर लाता है, फिर अंधा बनता है तभी फोन की घंटी बजती है) अरे अब किसका

फोन है भाई ...(मंच के नेपथ्य को देखते हुए) पापा बोल दो मैं घर पर नहीं हूँ...पापा सुना नहीं बोल देना मैं घर पर नहीं हूँ। ढिचकांय...ढिचकांय...(दर्शकों की ओर इशारा करके फोन की ओर लपकता है) अरे यार नन्दू तू है ...मैंने समझा पापा का फोन है। अरे फिल्म देखने गए हैं। यार मुझे नहीं ले गए बोले एडल्ट मूवी है, तुम्हें बाद में ले चलेंगे। वे हमेशा एडल्ट मूवी देखते हैं। मुझे उनके साथ जाने का मौका नहीं मिलता...अरे वही ...जो मैंने तुम्हारे साथ वीडियो पर देखी थी न ? क्या नाम था...डोन्ट लव स्ट्रेंजर्स...हाँ, यार...वे लोग क्या देखते हैं यार...कितनी गंदी मूवी है..तुम्हारे पापा मम्मी भी नहीं हैं। यार मैं आ जाता, लेकिन घर छोडकर कैसे आऊँ ? यार फिर आऊँगा कभी...अभी होमवर्क भी करना है मुझे ...अच्छा तो पापा तुझे डॉक्टर बनाना चाहते हैं...ओह यार...मेरे पापा अफसर बनाने में लगे हुए हैं,...रोहन 90 पर्सेंट नंबर लाना है...छोडो, सारे पापा ऐसे ही होते हैं यार...मैं तो एक्टर बनूँगा एक्टर...फिल्म एक्टर...अमिताभ बच्चन...नहीं...शाहरूख खान...अरे कुछ भी बनूँगा यार...हाँ, यार वहीं बनूँगा...कमीज खोलकर नाचूँगा...पापा खेलने ही नहीं देते..एक महीने से कह रहा हूँ पापा एक बल्ला खरीद दो सुनते ही नहीं ... छोडो यार...अभी मैं मस्त हूँ। आज का अखबार है न ? देखता हूँ... (वह अखबार खोलकर देखता है) किस पेज पर...17 पर...हाँ.., अरे यह तो मस्त लडकी है यार...कितनी गंदी लग रही है...तुमने इसे काट लिया है...यार यदि पापा को पता चल गया तो मेरा बैंड बजा देंगे ...तुमने काट लिया तो रखोगे कहाँ ? मम्मी तो रोज तुम्हारा बैग देखती है...अरे मम्मी तो पीछे ही पडी रहती है। परसों टीवी पर एक गाना देख रहा था। मम्मी आई और टीवी ऑफ करके मुझे डाँटने लगी ...इतने गंदे प्रोग्राम देखते हो ? शर्म नहीं आती ? मारूँगी एक थप्पड ...जब भी टीवी खोलता हूँ बस मम्मी देखने आ जाती है...(नकल उतारते हुए) देखो रोहन...तुम्हें 90 पर्सेंट लाना है ज्यादा टीवी मत देखो...मैं नहीं काट सकता...पापा समझ लेंगे...ठीक है...ओके नन्दू..(वह फोन रखकर अखबार में छपे चित्र् देखने लगता है। क्षण भर तक मंच पर टहलता हुआ देखता है। फिर अखबार के पेज को मोडकर रखता है। फिर कुछ सोचते हुए अखबार को दोबारा खोलता है। चित्र् देखता है) तुम मुझे देख रही हो ? आ...तुम मुझे देख रही हो...मुझे ? देख रही हो? (पीछे मुडकर देखता है) तुम मुझे देख रही हो ? मुझे ... लेकिन मैं तुम्हें नहीं देखना चाहता। (वह अखबार को तोड-मरोडकर फेंक देता है, एक क्षण उसकी ओर देखकर) रोहन यह क्या है ? घर में डस्टबिन नहीं है क्या ? (सिर हिलाकर उस अखबार के टुकडे को बाहर फेंक आता है। अचानक कमीज खोलकर नृत्य करने लगता है। कमीज को सोफे पर फेंक देता है। फिर रुककर)

रोहन खाना खा लो बेटा देर हो रही है...(वह जल्दी-जल्दी मुँह चलाने लगता है) असभ्य की तरह खाना नहीं खाते बेटा.. चबा-चबाकर खाते हैं (वह बिल्कुल धीरे-धीरे मुँह चलाने लगता है) बेटा, जल्दी खाओ ना ...देर हो रही है। मजाक नहीं करते बेटे...पापा इंतजार कर रहे हैं...(दर्शकों की ओर) ढिचकांय...ढिचकांय...)

आफ घर में बच्चे हैं ? आफ घर में रोहन है ? नहीं ? पापा, इनको बोल दो मैं ये शादी नहीं करूँगी। इनके पास रोहन नहीं...टंटडण...(वह फोन मिलाने लगता है) आंटी...रोची है क्या ? मैं रोहन बोल रहा हूँ..तू क्या कर रही है ? पढ रही हूँ ? और कोई काम नहीं है ? खाना खाया ? मैंने नहीं खाया। मैं कॉमिक्स पढ रहा हूँ। पापा अभी नहीं हैं इसलिए पढ रहा हूँ। नहीं तो देखते ही कहते रोहन यह क्या कर रहे हो बेटे ? अपनी किताबें पढो। तुम्हें 90 पर्सेंट लाना है...तुम्हें अफसर बनना है...तुम्हारे पैरेंट्स नहीं रोकते? अभी क्या पढ रही थी? नॉवेल पापा ने देखकर भी कुछ नहीं कहा...अंकल तो अच्छे पापा हैं। यार, मैं अफसर-अफसर नहीं बनूँगा...मैं तो एक्टर बनूँगा...एक्टर...र। मैं अभी क्या करूँ कुछ समझ में नहीं आता...टीवी नहीं देख सकता यार...एक ही तरह के कपडे एक ही तरह के नाच गाने...ऊब गया हूँ यार...फिर भी पापा कहेंगे...रोहन आजकल काफी टीवी देखने लगे हो अच्छी बात नहीं है बेटे...बंद करो ...तुम्हारे पापा नहीं रोकते क्या बात है ? बडे अच्छे हैं तुम्हारे पापा...? अभी एक घंटा हुआ है दोबारा फोन आ गया ...रोहन क्या कर रहे हो ? यार तुम अपना होमवर्क करके मुझे भी लिखा देना...प्लीज रोची ओके...गुडबाय...। जैसे ही फोन रखकर चिल्लाता है इंये...होमवर्क...फोन की घंटी बजती है।) ओह नो पापा...मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ...(वह फोन उठाता है।) हलो...हा,ॅ मम्मी बस अभी जरा सी देर के लिए रोची से बात कर रहा था...बस...अब उपदेश मत दो खाना खा लूँगा...तुम फिल्म देख रही हो या कहीं और गई हो ? बार-बार तो मुझसे पूछ रही हो ? क्या कर रहे हो रोहन...पापा भी यही पूछते हैं..यार तुम लोग जाते ही क्यों हो ? घर में बैठा लो और तुम दोनों मुझे ही देखते रहो...मेरी जुबान लंबी नहीं हुई है। उतनी ही छोटी है...(मुँह खोलकर जीभ निकालता है) ठीक है मामा खा लूँगा...तुम फिल्म देखो ...बस...। (दर्शकों की ओर) यार दोनों गए क्यों हैं फिल्म देखने ? (फिर फोन की घंटी) वह दौडकर अपनी कमीज पहन लेता है और आराम से फोन उठाता है। हलो पापा ? ...ओ तू है...अरे यार मेरे पापा घर पर नहीं हैं फिल्म देखने गए है। बार-बार पूछते हैं रोहन क्या कर रहे हो ? समय बर्बाद मत करो...पढाई लिखाई करो...90 पर्सेंट लाना है बेटा। पहले कहते थे 80 पर्सेंट अब कहते हैं 90 पर्सेंट बोर हो

गया यार..नहीं यार नहीं आ सकता...देख रितु तू मेरा दोस्त है न ? मेरी बात मान ले...आज मैं घर छोडकर नहीं आ सकता...बस...तू जिद मत कर मान जा...मैं फिर तुमसे बात नहीं करूँगा। तुम्हारे पापा भी मेरे पापा जैसे है ...मैं तो 95 पर्सेंट नहीं ला सकता। मैं तो पापा को बोल दूँगा...मुझसे नहीं होगा। गुटका अच्छा लगता है तुम्हें ? मैं तो नहीं खा सकता यार ...मेरे दाँत खराब हो जाएँगे ...तुम्हें पापा ने पीटा...क्यों खाते हो गुटका यार...मुझे बिल्कुल ही अच्छा नहीं लगता...अरे यार दाँत खराब हो जाते हैं...हँसने में शर्म आएगी। तू जा रहा है ? कल स्कूल में मिलेंगे रतनदीप से पंगा नहीं लेना स्कूल का दादा है यार। भाटिया मैम उससे डरती है। उसके पापा बहुत अमीर आदमी हैं...मैं फिर कह रहा हूँ पंगा मत लेना ओके-बाय (फोन रख देता है) ढिचकांय-ढिचकांय...(नेपथ्य में जाता है। वहाँ से प्लेट में भरकर खाना लाता है। सोफे पर सोकर खाता है फिर उठकर) रोहन सोकर खाना नहीं खाते बेटे (वह उठकर खडा होता है और नाचने लगता है।) रोहन नाचते हुए खाना नहीं खाते बेटे...मेरी बात नहीं सुन रहे तुम ? आने दो पापा को...नहीं खाना है तो मत खा ...(इतने संवाद वह अपनी माँ की शैली में बोलता है फिर स्वाभाविक रूप से) हाँ, मुझे खाना नहीं खाना है...(वह खाना नेपथ्य में रख आता है फिर दर्शकों से) अब पापा कहेंगे-रोहन तूने खाना क्यों नहीं खाया बहुत बदतमीज हो गए हो ? जाओ खाना खाओ और होमवर्क करो। तुम्हें पता है मेरे मैनेजर का लडका 18 घंटे पढाई करता है और क्लास में 95 पर्सेंट माक्र्स लाता है...और तुम ? हमेशा खेलते रहते हो ? जाओ खाना खाओ...(वह गर्दन झुकाकर नेपथ्य की ओर जाता है जैसे कि आज्ञा का पालन कर रहा हो) (वह खाना लेकर मंच पर नाचता हुआ आता है और खाने की एक्टिंग करता है (जोर से)) मम्मी देखो मैं खाना नहीं खा रहा हूँ...(एक क्षण पापा की आवाज बदलकर) रोहन, फिर से शैतानी ? मैं तेरी धुलाई कर दूँगा...चुपचाप खाना खा लो...यह लो...नहीं सुना क्या ? मैं आ रहा हूँ...(वह जल्दी-जल्दी मुँह चलाने लगता है) मम्मी बोल दो मैं खाना खा रहा हूँ ...सुनो भाई रोहन खाना खा रहा है मत आना... (रोहन माँ की आवाज की नकल करता है और सोफे पर जाकर बैठ जाता है वहाँ से एक कॉपी निकालकर पढता हुआ) जानवर कई तरह के होते हैं लेकिन अधिकतर जानवर चौपाएँ होते हैं चार पैरों की सहायता से चलते है, लेकिन आदमी के पास केवल दो पैर होते हैं और दो पैरों को हाथ की तरह इस्तेमाल करते हैं। जैसे बंदर...दो पैरों पर खडे हो सकते हैं। चौपाये की तरह चल भी सकते हैं और जरूरत पडने पर हाथों की तरह इस्तेमाल भी कर लेते हैं। (वह पुस्तक बंद कर सोफे पर उछलने लगता है। फिर पापा की आवाज में) रोहन बंदर की तरह क्यों उछल रहे हो ? सोफा टूट जाएगा। सुनते नहीं हो क्या ? (तभी चेहरे पर थप्पड मारते हुए)

तुमको इतनी देर से समझा रहा हूँ समझ नहीं रहे हो ? (कहकर जोर से रोने लगता है...मम्मी पापा ने मार दिया। इस घर में मैं नहीं रहूँगा...सुन रही हो मम्मी। अब मम्मी रोकेगी) मत रो रोहन, ऐसे नहीं करते बेटा...बडी मुश्किल से तो तुम्हारे पापा ने एक सोफासेट घर में लाये हैं...टूट गया तो क्या होगा ? और सुनो तुम हर बात पर बच्चे को पीटा मत करो...ऐसे कोई बच्चों को पीटता है क्या ? (तभी दरवाजे की घंटी बजती है) वह दाँत को जीभ से काटकर सोफे पर गहरी नींद में सोने का अभिनय करता है। एक दो बार घंटी बजती है वह दरवाजा नहीं खोलता। फिर क्षण भर बाद उसे लगता है कि कोई चला गया तो दरवाजे की ओर आराम से देखता हुआ उठता है। फोन की घंटी बज उठती है। हलो ...शिल्पा...ओह माय गॉड मैं घर पर था। मैंने समझा पापा आए हैं सो मैं जल्दी से सो गया। यदि नहीं सोता तो बीस सवाल पूछते मुझसे क्या कर रहे थे ? क्यों कर रहे थे ? पढाई की या नहीं? मैं क्या कहता? फिर से आ जाओ...बाय गाड की कसम आ जाओ ...मैं नहीं आ सकता। मैं घर पर अकेला हूँ ताला-चाबी भी नहीं है मैं बंद हूँ बंद...? मैं एक खिडकी खोलकर तुम्हें अंदर बुला लेता..क्या मेरे माँ-बाप हैं...? मुझे ताला में बंद करके चले गए हैं...सिनेमा देखने.. ओके फिर आना...मेरी कसम...?

वह कमरे का एक चक्कर लगाकर दादा जी के फोटो के पास जो एक किनारे में टँगा है और उस पर माला चढा हुआ है...? दादा जी...मैं तो कहता हूँ आप फिर से आ जाओ। पापा को बता दो कि मैं 95 पर्सेंट नहीं ला पाऊँगा और उन्होंने ज्यादा जिद की तो किसी दिन भाग जाऊँगा बस...इतना पढता हूँ कुछ याद ही नहीं होता है। याद करता हूँ फिर भूल जाता हूँ। अब क्या करें कुछ समझ में नहीं आता पापा की समझ में भी कुछ नहीं आता और मम्मी तो आप समझते ही हो...हर बात पापा से कहती है, देखो रोहन ने यह किया...आज प्लेटें तोड दीं...

सच कहूँ दादा जी...कल न मैंने सचमुच गुस्से में प्लेट तोड दी थी क्या करता ? मैं खाना खा रहा हूँ पापा मैथ समझा रहे हैं। मम्मी अलग जिद कर रही थी। रोहन दूध पी लो...रोहन ब्रेड खा लो...न तो मेरी दूध पीने की इच्छा थी और न ब्रेड खाना चाहता था। उस पर पापा के मैथ...मुझे लग रहा था मेरे पास पंख होते न सचमुच उड जाता कभी नहीं आता।

रोहन मंच के मध्य में आकर अपनी बाँहें फैलाकर चिडया की तरह मुँह से आवाजें निकालता हुआ चारों ओर दौडने लगता है। (रुककर)

रोहन...रोहन क्या कर रहे हो ? शोर नहीं करते...सुना नहीं तुमने...रोहन क्या हो रहा है ? शोर नहीं...क्लास में बिल्कुल शोर नहीं। अच्छे बच्चे कभी शोर नहीं मचाते...(फिर वैसे ही दौडने लगता है फिर रुककर) रोहन...बदतमीज होते जा रहे हो ? घर में पढाई नहीं करते क्या ? कोई तुम्हें बताता नहीं...? (आवाज बदलते हुए) नहीं सर कोई नहीं बताता। पापा काम करते रहते हैं और मम्मी को दफ्तर जाना पडता है...और मैं अकेला रह जाता हूँ...इसलिए कभी-कभी उडने की इच्छा होती है...चिडया की तरह यूँ...(वह फिर उडने की कोशिश करता है।) लेकिन नहीं उड सकता कितना अच्छा होता हमारे पास भी दो पाखें होतीं...क्लास रूम से दूर निकल जाता...हवा में तैरते हुए...हवाई जहाज की तरह...मैं कभी नहीं थकता...पहाडों से भी दूर निकल जाता ...उस दिन सर ने बताया था आदमी भी उडने लगेगा...लेकिन कब ? जब मैं बडा हो जाऊँगा...पापा की तरह या अंकल की तरह...फिर उडने का क्या फायदा ? मोटू अंकल तो उड ही नहीं सकते...पापा भी नहीं उड सकते ...उनकी तोंद भी निकलती जा रही है तोंद वालों से उडा नहीं जाता और बच्चे उड नहीं सकते हैं भगवान...(मुँह बनाता है फिर जोर से) भगवान बच्चे क्यों नहीं उड सकते ? (टोन बदलते हुए) इस क्लास में सबसे ज्यादा शोर कौन मचाता है ? रोहन ? रोहन इधर आ ...तू नहीं सुधरेगा ?

तुम्हारे फादर रोज फोन करते हैं। किसी तरह तुम को 95 पर्सेंट माक्र्स लाना है और मैं देखता हूँ तुम्हें इसकी कोई चिन्ता नहीं...गलत बात है रोहन...अगर नहीं मेहनत करोगे तो जिन्दगी भर पछताते रह जाओगे लोग कहेंगे वो देखो...रोहन जा रहा है।

वह बोलकर क्रिकेट की बॉलिंग करने लगता है। मैं क्रिकेटर बनूँगा मैं बहुत अच्छी बॉलिंग करता हूँ...किसी को भी आउट कर सकता हूँ...कौन खेलेगा मेरे साथ कोई टिक नहीं सकता सबको आउट कर सकता हूँ (वह बॉलिंग करता हुआ खिलाडयों की तरह चीखता है) हाउज दैट मैं क्रिकेट-क्रिकेट खेलूँगा...खिलाडी बनूँगा...कहता हुआ चारों ओर दौडता है।

(फिर दादा जी के फोटो के सामने आकर ठहर जाता है)।

दादा जी ? आप भी तो कहते थे...रोहन अच्छा लडका है उसे समझने की कोशिश करो...कहते थे न ? आप एक बार फिर कहिए दादा जी पापा को आप वैसे ही डाँट लगाइये, जैसे वे मुझे डाँटते हैं।

जानते हैं दादा जी मेरे स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम था मैंने पापा से कहा तो नाराज हो गए ? खबरदार रोहन तुमने इसमें पार्टिसिपेट किया तो...समय की बर्बादी होती है, लेकिन उनका रिहर्सल देख-देखकर मैंने भी एक नाच सीख लिया। दिखाऊँ...देखना दादा जी...(तैयारी करते हुए वन टू थ्री फोर...ए ए जाने जाना...तुम्हें ढूँढे सारा जमाना ...वह नृत्य के कुछ स्टेप्स दिखाता है इसके बाद। आपको अच्छा लगा दादा जी ? ओके.

दादा जी अगर मैं आपसे मिलना चाहूँ तो आज कहाँ मिलेंगे ? स्वर्ग में या आसमान में रात को जब भी आसमान को देखता हूँ तो आप को ढूँढता हूँ... कोई चेहरा...कोई परछाई आप जैसी दिखे तो मैं पहचान लूँगा...मैं आप को भूला नहीं हूँ दादा जी आप बहुत याद आते हैं... यह कितनी खराब बात है कि मरकर कोई वापस नहीं आता क्यों दादा जी ? (फोन की घंटी बजती है। उसका ध्यान टूटता है फोन उठाकर) हलो ...हलो...बोलो भी...आपको बात नहीं करनी थी तो फोन क्यों किया? हलो...जाओ मैं भी बात नहीं करता। रांग नंबर यह जरूर मेरे पापा का होगा। जानने की कोशिश में होंगे कि मैं क्या कर रहा हूँ ? क्या हैं मेरे पापा भी...कुछ नहीं यार...सबके पापा के 95 पर्सेंट होते हैं।

अच्छा हो पापा और मम्मी घर पर नहीं आये बाहर रहे मैं पूरे घर में अकेले रहूँगा...मुझे किसी से कोई डर नहीं लगता...चोर से भी नहीं...मैं जूडो-कराटे जानता हूँ... (वह मुद्रा बनाकर जैसे किसी काल्पनिक दुश्मन को देखकर कह रहा हो...) आओ...आओ...मैं ऐसी किक दूँगा कि खिडकी से बाहर चले जाओगे...ओह सॉरी...ड्राइंग रूम में तो खिडकी है ही नहीं कोई बात नहीं होती तो उसी से मैं बाहर फेंक देता...। (वह काल्पनिक दुश्मन पर हमला कर देता है) बोल...बोल क्या चाहता है तू...इस घर की ओर नजर उठाकर देखा भी तो हड्डी पसली एक कर दूँगा...निकम्मे की औलाद...जा भाग जा...तुम्हें छोड दिया...और तू भूत है...? मैं भूत फूत से नहीं डरता...अरे, तू है कहाँ ? हिम्मत है तो सामने आकर दिखा...लेकिन मैं जानता हूँ कि तू नहीं है। यदि होता तो सामने आ जाता...चारों तरफ देखकर कहाँ है उन भूत...फूत ...बाहर निकल सामने आ जा...मैं तेरे डरावने दाँत तोड दूँगा निकल, बाहर आ...हा हा हा हा...ही ही...(एक बार चारों तरफ देखकर) भूत नहीं है उसे पता है कि इस घर में मेरे पापा रहते हैं हाँ, भूत तो रहता है ...95 पर्सेंट का भूत...वह भूत पापा के साथ रहता है। हर पापा के साथ ...लेकिन मैं नहीं डरता उसकी जरा भी चिंता नहीं है, लेकिन पापा को यह भूत कभी नहीं

छोडता...देखो रोहन, तुम्हें अपने क्लास में सबसे आगे रहना है इसीलिए मैं आगे बैठता हूँ, लेकिन पापा को भूत छोडता नहीं मैं भूत से डरता नहीं...(तभी टेलीफोन की आवाज वह सुनता है और देखते-देखते फोन की लाईन कट जाती है)।

अगर किसी भूत का फोन हुआ तो ? भूत बोलो तो पापा का भूत...(रोहन क्या कर रहे हो ? तुम्हारी टाँग टूट गई है क्या ? कब से तुम्हें पुकार रहा हूँ बहरे हो क्या ? कभी कहेंगे अंधे हो क्या दिखाई नहीं देता ? लेकिन न मैं बहरा हूँ और न अंधा सब कुछ देखता हूँ...सुनता हूँ...राजू मेरा बडा अच्छा दोस्त है। मैं उससे बात करूँगा... (नंबर लगाकर इंजतार करता है)। हलो राजू...? तू क्यों रो रहा है ? मम्मी-पापा बाहर गए हैं क्या ? बाहर से ताला बंद है ओह सिट...तू रोता क्यों है ? डर रहा है ? किससे ? तू डरा मत कर...मेरी तरह बन...हिम्मत रख...मेरा दरवाजा भी बंद है मेरे पापा भी बाहर गए है मैं नहीं डरता (बनाकर) डरोगे तो मरोगे राजू ...यह दुनिया तुम्हें जीने नहीं देगी...मैं तुम्हारे साथ हूँ राजू हा हा हा हा ...अब मूड ठीक हुआ। (दरवाजा खुलने की आवाज) लगता है हमारे मम्मी पापा आ गए बाय राजू...दरवाजा खुलने से पहले ही वह कूदकर सोफे पर आ जाता है। किताब खोलकर बैठ जाता... प्रकाश धीरे-धीरे केन्द्रित होता है...वह किताब से नजरें हटाकर दर्शकों की ओर देखकर प्लीज, आप पापा से मत कहिए कि मैं खेल कर रहा था प्लीज ...नहीं।

प्रकाश धीमे-धीमे उस पर केन्द्रित होता है संगीत के साथ परदा गिरता है।